उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी

MAJY-202

ज्योतिषशास्त्रीय विविध योग एवं दशाफल विचार

मानविकी विद्याशाखा

ज्योतिष विभाग

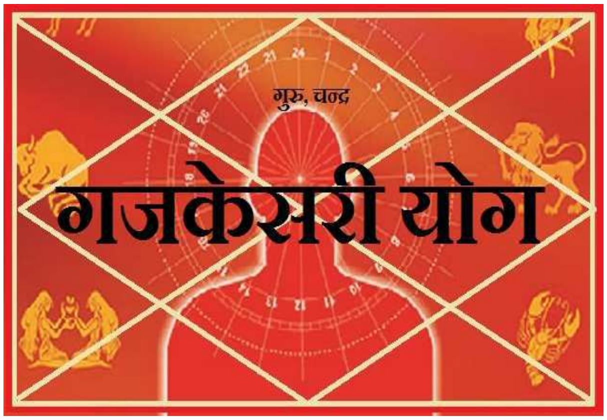

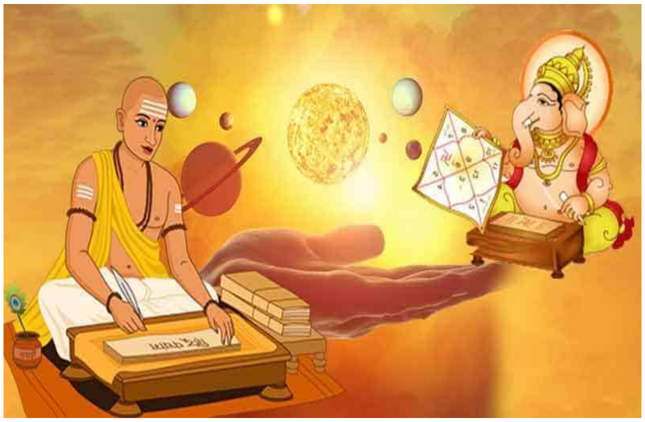
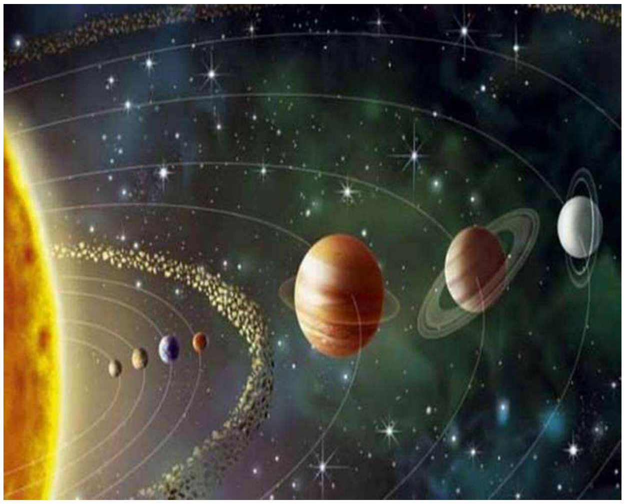

तीनपानी बाईपास रोड , ट्रॉन्सपोर्ट नगर के पीछे

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139

फोन नं – ०05946-288052

टॉल फ्री न0- 18001804025

Fax No.- 05946-264232, E-mail- info@uou.ac.in

http://uou.ac.in

पाठ्यक्रम समिति एवं अध्ययन समिति

प्रोफेसर एच.पी. शुक्ल
निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

डॉ. देवश कुमार मिश्र
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी

प्रोफेसर देवीप्रसाद त्रिपाठी
अध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।

प्रोफेसर चन्द्रमा पाण्डेय
पूर्व अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

प्रोफेसर शिवाकान्त झा
अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ. कामेश्वर उपाध्याय
राष्ट्रिय महासचिव, अखिल भारतीय विद्वत परिषद्
वाराणसी

पाठ्यक्रम सम्पादन एवं संयोजन

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

इकाई लेखन	खण्ड	इकाई संख्या
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**1**	**1, 2, 3, 4, 5**
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**2**	**1, 2, 3, 4, 5**
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**3**	**1, 2, 3, 4, 5**
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**4**	**1, 2, 3, 4, 5**

कापीराइट @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

प्रकाशन वर्ष - 2020
प्रकाशक - उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।
मुद्रक: - सहारनपुर इलैक्ट्रिक प्रेस, बोमनजी रोड, सहारनपुर (उ0प्र0) ISBN No. -

नोट : - (इस पुस्तक के समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।)

एम.ए. (ज्योतिष) **MAJY-202**

ज्योतिषशास्त्रीय विविध योग एवं दशाफल विचार

अनुक्रम

प्रथम खण्ड – विविध योग विचार	**पृष्ठ- 2**
इकाई 1: नाभस योग विचार	3-18
इकाई 2: राज योग	19-36
इकाई 3: चन्द्रादि योग	37-52
इकाई 4: दारिद्रय योग	53-63
इकाई 5 : मारक योग	64-75
द्वितीय खण्ड - दशा साधन	**पृष्ठ-76**
इकाई 1: विंशोत्तरी दशा साधन	77-88
इकाई 2: अष्टोत्तरी दशा साधन	89-105
इकाई 3: योगिनी दशा साधन	106-116
इकाई 4: अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा	117-124
इकाई 5: सूक्ष्म दशा व प्राण दशा	125-132
तृतीय खण्ड – दशा फल विचार	**पृष्ठ- 133**
इकाई 1: महादशा दशा फल विचार	134-156
इकाई 2: अन्तर्दशा फल विचार	157-171
इकाई 3: प्रत्यन्तर्दशा फल विचार	172-203
इकाई 4: सूक्ष्मान्तर दशा फल विचार	204-232
इकाई 5: प्राण दशा फल विचार	233-251
चतुर्थ खण्ड – प्रकीर्ण फल विवेचन	**पृष्ठ- 252**
इकाई 1: पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरूष फल विचार	253-263
इकाई 2: सत्वादि गुणफल	264-271
इकाई 3: मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण	272 –291
इकाई 4: शकुन फल विचार	292-312
इकाई 5: शुभाशुभ स्वप्न फल विचार	313-339

एम. ए. (ज्योतिष)

द्वितीय वर्ष – द्वितीय पत्र

ज्योतिषशास्त्रीय विविध योग एवं दशाफल विचार

MAJY-202

खण्ड - 1

विविध योग विचार

इकाई – 1 नाभस योग विचार

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 नाभस योग परिचय

1.3.1 नाभस योग लक्षण

1.3.2 नाभस योगों का फल

1.4 सारांश

1.5 पारिभाषिक शब्दावली

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई MAJY-202 के प्रथम खण्ड की पहली इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है– नाभस योग विचार। इससे पूर्व आपने फलित ज्योतिष से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'नाभस योग' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

नाभस योग का सम्बन्ध ज्योतिष शास्त्र के फलित स्कन्ध से है। फलित ज्योतिष में 32 प्रकार के नाभस योगों का भेद प्राप्त होता है तथा इनके 1800 प्रभेद हैं। प्राय: फलित के लगभग समस्त ग्रन्थों में आचार्यों द्वारा 'नाभसयोगाध्याय' का वर्णन किया गया है।

आइए इस इकाई में हम लोग अब 'नाभस योगों' के बारे में विस्तार से अध्ययन करते है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- नाभस योग को परिभाषित कर सकेंगे।
- नाभस योगों के प्रकार को समझा सकेंगे।
- 32 प्रकार के नाभस योगों को जान जायेंगे।
- नाभस योग के महत्व को प्रतिपादित कर सकेंगे।
- फलित ज्योतिष में नाभस योग की भूमिका को जान लेंगे।

1.3 नाभस योग परिचय

ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्त्तक महर्षि पराशर द्वारा लिखित 'वृहत्पराशरहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ के नाभसयोगाध्याय में वर्णन करते हुए लिखा गया है कि नाभस योग के ३२ भेद एवं १८०० प्रभेद हैं। उन ३२ भेदों में से ३ आश्रय योग हैं, २ दल योग हैं, २० आकृति योग हैं तथा ७ संख्या योग कहे गये हैं। इस प्रकार नाभस योग को आश्रय, दल, आकृति एवं संख्या योगों में वर्गीकृत किया गया है। मूल श्लोक इस प्रकार है –

अधुना नाभसा योगा: कथ्यन्ते द्विजसत्तम्।
द्वात्रिंशत् तत्प्रभेदास्तु शतघ्नाष्टादशोन्मिता:।।
आश्रयाख्यास्त्रयो योगा दलसंज्ञं द्वयं तत:।
आकृतिर्विंशति: संख्या: सप्त योगा: प्रकीर्तिता:।। (श्लोक संख्या -१,२)

यहाँ द्वात्रिंशत् का अर्थ ३२ है। शतघ्नाष्टादश का अर्थ १८०० है। आश्रयाख्यास्त्रयो का अर्थ तीन

प्रकार का आश्रय योग, दलसंज्ञं द्वयं का अर्थ २ दलयोग, आकृतिर्विंशति: का अर्थ २० प्रकार के आकृति योग तथा संख्या: सप्त योगा: का अर्थ ७ प्रकार के संख्या योग है।

नाभस योगों के नाम –

रज्जुश्च मुसलश्चैव नलश्चेत्याश्रयास्त्रय:।
मालाख्य: सर्पसंज्ञश्च दलयोगौ प्रकीर्तितौ।।
गदाख्य: शकटाख्यश्च श्रृगांटक विहंगमौ।
हल वज्र यवाश्चैव कमलं वापियूपकौ।।
शर-शक्ति-दण्ड-नौका-कूट-च्छत्र-धनूंषि च।
अर्धचन्द्रस्तु चक्रं च समुद्रश्चेति विंशति:।।
संख्याख्या वल्लकी-दाम-पाश-केदार-शूलका:।
युगो गोलश्च सप्तैते युक्ता दन्तमिता द्विज।। (श्लोक संख्या ३-६)

अर्थात् नाभस के ३२ भेदों में से रज्जु, मुसल तथा नल ये ३ आश्रय योग हैं। माला एवं सर्प –ये दो दलयोग कहे गये हैं। गदा, शकट, श्रृंगाटक, विहंगम (पक्षी), हल, वज्र, यव, कमल, वापी, यूप, शर, शक्ति, दण्ड, नौका, कूट, छत्र, चाप, अर्धचन्द्र, चक्र एवं समुद्र- ये २० आकृतियोग कहे गये हैं। बल्लकी, दाम, पाश, केदार, शूल, युग और गोल – ये ७ संख्यायोग कहे गये हैं। इस प्रकार ये सभी नाभस योग कहलाते हैं।

स्पष्टार्थ चक्र

संज्ञा	**योगों का नाम**
आश्रय	रज्जु, मुसल तथा नल
दल	माला एवं सर्प
आकृति	गदा, शकट, श्रृंगाटक, विहंगम (पक्षी), हल, वज्र, यव, कमल, वापी, यूप, शर, शक्ति, दण्ड, नौका, कूट, छत्र, चाप, अर्धचन्द्र, चक्र एवं समुद्र
संख्या	बल्लकी, दाम, पाश, केदार, शूल, युग और गोल

1.3.1 नाभस योगों के लक्षण

आश्रय योग के लक्षण –

सर्वैश्चरे स्थितै रज्जु: स्थिरस्थैर्मुसल: स्मृत:।
नलाख्यो द्विस्वभावस्थैराश्रयाख्या इमे स्मृता:।। (श्लोक संख्या -७)

यदि समस्त ग्रह चर (१,४,७,१०) राशि में स्थित हों तो **'रज्जु'** नामक योग होता है। सभी ग्रह यदि स्थिर (२,५,८,११) राशि में स्थित हों तो **'मुसल'** नामक योग होता है और सभी ग्रह द्विस्वभाव (३,६,९,१२) राशि में हों तो **'नल'** नामक योग होता है। **ये सभी चरादि राशियों के आश्रित होने के कारण आश्रय योग कहलाते हैं।** इन सभी योगों को आप कुण्डली में आप इस प्रकार भी समझ सकते हैं –

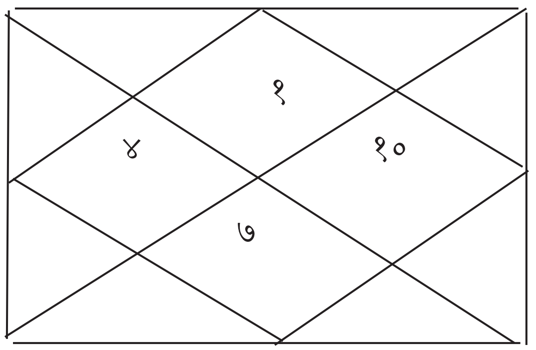

यदि समस्त सूर्यादि ग्रह कुण्डली के उक्त दिए गए चार स्थान में हो तो **रज्जु** नामक योग बनेगा।

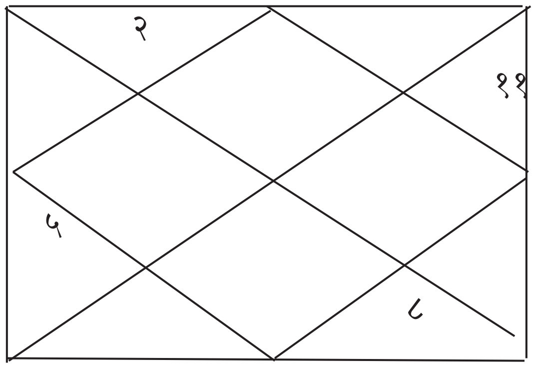

यदि सूर्यादि समस्त ग्रह कुण्डली के उक्त दिए गए चार स्थान में हो तो **मुसल** नामक योग बनेगा।

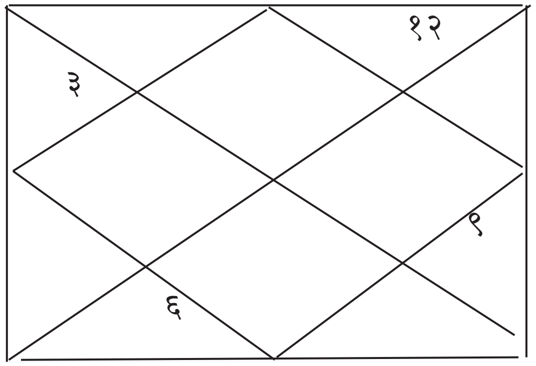

यदि सूर्यादि समस्त ग्रह कुण्डली के उक्त चार स्थान में हो तो **नल** नामक योग बनेगा।

दलयोग के लक्षण –

केन्द्रत्रयगतै: सोम्यै: पापैर्वा दलसंज्ञकौ।
क्रमान्मालाभुजंगाख्यौ शुभाऽशुभफलप्रदौ।। (श्लोक संख्या -८)

अर्थात् तीन केन्द्र में सभी शुभ ग्रह हों या तीन केन्द्र में समस्त पापग्रह हों तो क्रम से वे माला एवं सर्प योगनामक दलयोग कहलाते हैं। ये योग शुभ और अशुभ फलदायक होते हैं। तीन केन्द्र से तात्पर्य यहाँ १,४,७,१० स्थानों में से किसी तीन में है।

विशेष - केन्द्रेष्वपापेषु सितज्ञजीवै: केन्द्रत्रिसंस्थै: कथयन्ति मालाम्।
सर्पस्त्वसौम्यैश्च यमारसूर्यैर्योगाविमौ द्वौ कथितौ दलाख्यौ।।

इसके अनुसार बुध, गुरु, शुक्र – ये तीनों यदि तीन केन्द्र (१,४,७,१० में से किसी तीन में) हों तथा पापग्रह केन्द्र से अन्यत्र हो तभी माला योग होता है। इसी प्रकार रवि, शनि तथा भौम ये ३ केन्द्र में हों और शुभ ग्रह केन्द्र से अन्य स्थानों में हो तभी सर्पयोग कहलाता है।

आकृति योगों के लक्षण –

आसन्नकेन्द्रद्वयगै: सर्वैर्योगो गदाह्वय:।
शकटं लग्नजायास्थै: खाम्बुगैर्विहग: स्मृत:।।
योग: श्रृंगाटकं नाम लग्नात्मजतप:स्थितै:।
अन्यस्थानात् त्रिकोणस्थै: सर्वैर्योगो हलाभिध:।।
लग्नजायास्थितै: सौम्यै: पापाख्यै: खाम्बुसंस्थितै:।
योगो वज्राभिध: प्रोक्त: विपरीतस्थितैर्यव:।। (श्लोक संख्या – ९-११)

समीपस्थ दो केन्द्र में सभी ग्रह बैठे हों तो **गदा** नामक योग होता है। लग्न तथा सप्तम में समस्त ग्रह हों तो **शकट** नामक योग होता है। चतुर्थ तथा दशम स्थान में सभी ग्रह स्थित हों तो **विहग** (पक्षी) नामक योग होता है। यदि लग्न से त्रिकोण (१,५,९) स्थान में सभी ग्रह बैठे हों तो **श्रृंगाटक** योग होता है। लग्न से भिन्न स्थान से त्रिकोण (२,६,१० अथवा ३,७,११ वाँ इस प्रकार से किसी तीन स्थान) में सभी ग्रह स्थित हों तो **हल** नामक योग होता है। लग्न, सप्तम में सभी शुभ ग्रह बैठे हों एवं चतुर्थ दशम में सभी पापग्रह बैठे हों तो **वज्र** नामक योग होता है। विपरीत होकर बैठे हों तो **यव** नामक योग होता है।

कमल तथा वापी योग के लक्षण –

सर्वकेन्द्रगतै: सर्वैर्मिश्रै: कमलसंज्ञक:।

केन्द्रादन्यत्रगै: सर्वैर्योगो वापीसमाह्वय:।। (श्लोक संख्या -१२)

अर्थात् समस्त ग्रह केन्द्र (१,४,७,१०) में ही स्थित हों तो **कमल** नामक योग होता है। यदि सभी ग्रह केन्द्र से भिन्न स्थानों (पणफर तथा आपोक्लिम) में ही बैठे हों तो **वापी** नामक योग होता है।

यूप, शर, शक्ति और दण्डयोगों के लक्षण –

यूपो लग्नाच्चतुर्भस्थै: शरस्तुर्याच्चतुर्भगै:।

शक्तिर्मदाच्चतुर्भस्थैर्दण्डो मध्याच्चतुर्भगै:।।

लग्न से क्रमश: ४ स्थानों में सभी ग्रह स्थित हों तो **यूप** नामक योग होता है। चतुर्थ से ४ स्थान में सभी ग्रह बैठे हों तो **शर** और सप्तम से ४ स्थान में सभी ग्रह हों तो **शक्ति** नामक योग होता है। दशम स्थान से ४ स्थान में सभी ग्रह हों तो **दण्ड** नामक योग होता है।

नौका-कूट-छत्र और चाप योगों के लक्षण –

लग्नात् सप्तमगैर्नौका कूटस्तुर्याच्च सप्तमै:।

छत्राख्य: सप्तमादेवं चापं मध्याद् भसप्तगै:।।

लग्न से लगातार ७ सात स्थान में सभी ग्रह हों तो **नौका** नामक योग होता है। चतुर्थ स्थान से सात स्थान में सभी ग्रह स्थित हों तो **कूट** नामक योग होता है। सप्तम स्थान से सात स्थानों में सभी ग्रह स्थित हों तो **छत्र** नामक योग होता है। इसी प्रकार दशम स्थान से सात स्थानों में सभी ग्रह बैठे हों तो **चाप** नामक योग होता है।

चक्र एवं समुद्रयोग के लक्षण –

लग्नादेकान्तरस्थैश्च षड्भगैश्चक्रमुच्यते।

धनादेकान्तरस्थैस्तु समुद्र: षड्गृहाश्रितै:।।

लग्न से प्रारम्भ कर एकान्तर से ६ स्थानों अर्थात् (१,३,५, ७, ९,११) में सभी ग्रह स्थित हों तो **चक्र** नामक योग होता है। इसी प्रकार धन (द्वितीय) भाव से एकान्तर स्थानों अर्थात् (२,४,६,८,१०,१२) में सभी ग्रह विद्यमान हों तो **समुद्र** नामक योग होता है। ये २० योग अपनी-अपनी आकृति के अनुरूप होने के कारण **आकृति** योग कहे गये हैं।

सात संख्यक योगों के लक्षण –

एकराशिस्थितैर्गोलो युगाख्यो द्विभसंस्थितै:।

शूलस्तु त्रिभगै: प्रोक्त: केदारस्तु चतुर्भगै:।।

पंचराशिस्थितै: पाशो दामाख्य: षड्गृहाश्रितै:।

वीणा सप्तभगै: सर्वैर्विहान्यानुदीरितान्।।

अर्थात् सभी ग्रह एक राशि में स्थित हों तो **गोलयोग**, २ राशि में सभी ग्रह हों तो **युग योग**, ३ राशि में समस्त ग्रह के रहने पर **शूलयोग,** ४ राशि में सभी ग्रह स्थित हों तो **केदारयोग,** ५ राशि में सभी ग्रह हों तो **पाशयोग,** ६ राशि में सभी ग्रह रहने पर **दामयोग** और ७ राशि में सभी हों तो **वीणा** नामक योग होता है। इससे पूर्व कथित योग के लक्षण न हों तभी इन योगों को जानना चाहिए। यदि पूर्वोक्त लक्षण हों तो पूर्वकथित योग ही जानना चाहिए।

बोध प्रश्न –

1. नाभस योग के भेदों की संख्या कितनी है।
   क. ३४ ख.३२ ग.३६ घ. ३८
2. वृहत्पराशरहोराशास्त्र ग्रन्थ के अनुसार नाभस योग के प्रभेदों की संख्या कितनी है।
   क. ३२ ख. ३८ ग.१८०० घ.१६००
3. आकृति योगों की संख्या है –
   क. ३ ख.२ ग.५ घ. २०
4. सभी ग्रह एक राशि में स्थित हों तो कौन सा योग बनता है।
   क. युग योग ख. गोल योग ग. शूल योग घ. वीणा योग
5. लग्न से लगातार ७ सात स्थान में सभी ग्रह हों तो योग होता है-
   क. नौका योग ख. छत्र योग ग. चामर योग घ. शूल योग
6. समस्त ग्रह केन्द्र (१,४,७,१०) में ही स्थित हों तो कौन सा योग होता है।
   क. कमल योग ख. छत्र योग ग. चामर योग घ. युग योग
7. सभी ग्रह यदि स्थिर (२,५,८,११) राशि में स्थित हों तो योग होता है –
   क. मुसल योग ख. कमल योग ग. छत्र योग घ. वीणा योग

1.3.2 ३२ नाभस योगों के शुभाशुभ फल –

रज्जु – अटनप्रिया: सुरूपा: परदेशस्वास्थ्यभागिनो मनुजा:।
क्रूरा: खलस्वभावा रज्जुप्रभवा: सदा कथिता:।।

मुसल - मानज्ञानधनाद्यैर्युक्ता भूपप्रिया: ख्याता:।
बहुपुत्रा: स्थिरचित्ता मुसलमुत्था भवन्ति नरा:।।

नल - न्यूनातिरिक्तदेहा धनसंचयभागिनोऽतिनिपुणाश्च।
बन्धुहिताश्च सुरूपा नलयोगे सम्प्रसूयन्ते।।

रज्जु योग में उत्पन्न जातक भ्रमणप्रिय, सुन्दर रूप वाला, परदेश में जाने से स्वास्थ्य लाभ करने वाला, क्रोधी और दुष्ट स्वभाव वाला होता है। मुसल योग में उत्पन्न पुरूष मानी, ज्ञानी, धनादि से युक्त, राजमान्य, विख्यात, अधिक पुत्र वाला और स्थिर स्वभाव वाला होता है। नल योग में समुत्पन्न जातक कम या अधिक देह वाला, धन संग्रह करने वाला, अत्यन्त चतुर, बन्धुओं का प्रिय और सुन्दर रूप वाला होता है।

माला – नित्यं सुखप्रधाना वाहनवस्रान्नभोगसम्पन्ना:।

कान्ता: सुबहुस्त्रीका मालायां सम्प्रसूता: स्यु:।।

सर्प - विषमा: क्रूरा नि:स्वानित्यं दु:खार्दिता: सुदीनाश्च।

परभक्षपाननिरता: सर्पप्रभवा भविन्त नरा:।।

माला योग में उत्पन्न जातक नित्य सुख भोगने वाला, वाहन, वस्र, अन्नादि के भोग से सम्पन्न, सुन्दर और अधिक पत्नी वाला होता है। सर्प योग में उत्पन्न जातक विषम प्रकृति वाला, क्रूर, धनहीन, नित्यदु:खी, दीन और दूसरों से अन्न मांगकर खाने वाला होता है।

गदा - सततोद्युक्तार्थवशा यज्वान: शास्त्रगेयकुशलाश्च।

धनकनकरत्नसम्पत्संयुक्ता मानवा गदायां तु।।

शकट - रोगार्ता: कुनखा मूर्खा: शकटानुजीविनो नि:स्वा।

मित्रस्वजनविहीना: शकटे जाता भवन्ति नरा:।।

पक्षी - भ्रमणरूचयो विकृष्टा दूता: सुरतानुजीविना धृष्टा:।

कलहप्रियाश्च नित्यं विहगे योगे सदा जाता:।।

श्रृंगाटक - प्रियकलहा: समरसहा: सुखिनो नृपते: प्रिया: शुभकलत्रा:।

आढया युवतिद्वेष्या: श्रृंगाटकसम्भवा मनुजा:।।

गदा योग में उत्पन्न जातक सदैव धनोपार्जन में रत, यज्ञकारक, शास्त्र एवं संगीत में दक्ष, धन, सुवर्ण एवं रत्नादि धातुओं से युक्त होता है। शकट योग में उत्पन्न जातक रोग से पीड़ित, कुनखी, मूर्ख, गाड़ी से जीविका संचालन करने वाला, निर्धन एवं मित्रादि स्वजनों से हीन होता है। पक्षी रोग में उत्पन्न जातक भ्रमणकारी, परतन्त्र, दूत, सुरत से प्राप्त जीविका वाला, ढीठ तथा कलहप्रिय होता है। श्रृंग योग में समुत्पन्न जातक कलहकारक, युद्धकारक, सुखी, राजा का प्रिय, मनोहर पत्नी वाला, धनी और स्त्री का द्वेषी होता है।

हल - बह्वाशिनो दरिद्रा: कृषीबला दु:खिताश्च सोद्वेगा:।

बन्धुसुहृद्भि: शक्ता: प्रेष्या हलसंज्ञके सदा पुरुषा:।।

वज्र – आद्यन्तवय: सुखिन: नरा: सुभगा निरीहाश्च।
भाग्यविहीना वज्रे जाता: खला विरूद्धाश्च।।

यव - व्रतनियममंगलपरा वयसो मध्ये सुखार्थपुत्रयुता:।
दातार: स्थिरचित्ता यवयोगभवा: सदा पुरुषा:।।

कमल- विभवगणाढया: पुरुषा: स्थिरायुषो विपुलकीर्तय: शुद्धा:।
शुभशतका: पृथ्वीशा: कमलभवा मानवा नित्यम्।।

वापी - निधिकरणे निपुणधिय: स्थिरार्थसुखसंयुत: सुतयुताश्च।
नयनसुखसम्प्रहृष्टा वापीयोगेन राजान:।।

यूप - आत्मविदिज्यानिरत: स्त्रिया युत: सत्वसम्पन्न:।
व्रतनियमरतमनुष्यो यूपे जातो विशिष्टश्च।।

शर - इषुकारा: बन्धनपा: मृगयाधनसेविताश्च मांसादा:।
हिंस्रा: कुशिल्पकारा: शरयोगे मानवा: प्रसूयन्ते।।

शक्ति - धनरहितविफलदु:खितनीचालसाश्चिरायुष: पुरुषा:।
संग्रामबुद्धिनिपुणा: शक्त्यां जाता: स्थिरा: शुभगा:।।

दण्ड - हतपुत्रदारनि:स्वा: सर्वत्र च निर्घृणा: स्वजनबाह्या:।
दु:खितनीचप्रेष्या दण्डप्रभवा भवन्ति नरा:।।

अर्थात् **हल** योग में उत्पन्न जातक अधिक भोजन करने वाला, दरिद्र, कृषक, दु:खी, चिन्ताकुल, मित्र एवं बन्धुओं से युत और नौकर होता है। **वज्र** योग में उत्पन्न जातक बाल्य तथा वृद्धावस्था में सुखी, शूर, सुन्दर, नि:स्पृह, भाग्यहीन, दुष्ट एवं दूसरों से वैरभाव करने वाला होता है। **यव** योग में उत्पन्न जातक व्रत, नियम एवं अन्य मंगल कृत्य में रत, मध्यमावस्था में सुखी, धन, पुत्रों से युक्त, दानी तथा स्थिर चित्तवाला होता है। **कमल** योग में उत्पन्न जातक धनी, गुणों से युक्त, दीर्घायु, विख्यात कीर्ति वाला, शुद्ध, सैकड़ों शुभ कार्य करने वाला एवं राजी होता है। **वापी** योग में उत्पन्न पुरुष धनसंग्रह करने में निपुण, स्थिर धन एवं सुखों से युक्त, पुत्रों से युक्त, नाटक-नृत्यादि को देखने में सुखी और राजा होता है। **यूप** योग में समुत्पन्न जातक आत्मा का ज्ञाता, यज्ञकर्ता, स्त्री से युक्त, बलवान, व्रत-नियम में रत रहने वाला और विशिष्ट पुरुष होता है। **शर** योग में उत्पन्न जातक बाण बनाने वाला, कारागार का स्वामी, शिकार के माध्यम से धन प्राप्त करने वाला, मांसभक्षी, हिंसक और कुकर्म करने वाला होता है। **शक्ति** योग में समुत्पन्न मनुष्य अर्थहीन एवं फलहीन जीवन वाला, दु:खी, नीच, आलसी, दीर्घायु, युद्धकारक, स्थिर चित्त वाला एवं सुन्दर होता है। **दण्ड** योग में उत्पन्न

जातक, पुत्र, स्त्री और धन से वंचित, निर्दयी, स्वजनों से परित्यक्त, दु:खी, नीच और नौकर होता है।

नौका योग –

सलिलोपजीविविभवा: बह्वाशा: ख्यातकीर्तयो दुष्टा:।
कृपणा मलिना लुब्धा नौसंजाता: खला: पुरुषा:।।

कूट योग –

अनृतकथनबन्धपा निष्किञ्चना: शठा: क्रूरा:।
कूटसमुत्था नित्यं भवन्ति गिरिदुर्गवासिनो मनुजा:।।

छत्र योग – स्वजनाश्रयो दयावान्नानानृपवल्लभ: प्रकृष्टमति:।
प्रथमेऽन्त्ये वयसि नर: सुखवान् दीर्घायुरातपत्री स्यात्।।

चाप योग - आनृतिकगुप्तपालाश्चौरा: कितवाश्च कानने निरता:।
कार्मुकयोगे जाता भाग्यविहीना: शुभा वयोमध्ये।।

अर्धचन्द्र योग - सेनापतय: सर्वे कान्तशरीरा नृपप्रिया बलिन:।
मणिकनकभूषणायुता भवन्ति योगेऽर्धचन्द्राख्ये।।

चक्र योग – प्रणताऽऽशेषनराधिप किरीटरत्नप्रभा स्फुरितपाद:।
भवति नरेन्द्रो मनुजश्चक्रे यो जायते योगे।।

समुद्र योग - बहुरत्नधनसमृद्धा भोगयुता धनजनप्रिया: ससुता:।
उदधिसमुत्था: पुरुषा: स्थिरविभवा: साधुशीलाश्च।।

अर्थात् नौका योग में उत्पन्न जातक जलोत्पन्न (मोती, शंख आदि) वस्तुओं से जीविका चलाने वाला, धनी, महत्वाकांक्षी, विख्यात कीर्ति वाला, दुष्ट कंजूस, मलिन और लोभी होता है।

कूट योग में उत्पन्न मनुष्य मिथ्यावादी, जेल का अधिकारी, दरिद्र, शठ, क्रूर, कूटज्ञ तथा पर्वत या दुर्ग में रहने वाला होता है। छत्र योग में उत्पन्न मुनष्य अपने जनों का आश्रित, दयालु, अनेक राजाओं का मान्य, उत्तम बुद्धि से युक्त, प्रथम तथा अन्तिमावस्था में सुखी, दीर्घायु तथा आतपत्री होता है। चाप योग में उत्पन्न मनुष्य मिथ्यावादी, गुह्यपाल (जेलर), चोर, धूर्त, जंगलचारी, भाग्यरहित एवं मध्य अवस्था में सुखी होता है। अर्धचन्द्र योग में समुत्पन्न मनुष्य सेनापति, सुन्दर शरीर, राजा का प्रिय, बलवान एवं मणि–सुवर्णादि भूषणों से युक्त होता है। चक्र योग में उत्पन्न जातक अशेष (सम्पूर्ण) राजाओं से वन्दित हैं चरण जिनके, ऐसा चक्रवर्ती राजा होता है। समुद्र योग में उत्पन्न मनुष्य समधिक रत्नादि से परिपूर्ण, भोगवान, जनों का प्रिय, पुत्रयुक्त, स्थिर सम्पत्ति वाला और सुन्दर शील वाला होता है।

वीणा योग – प्रियगीतनृत्यवाद्या निपुणा: सुखिनश्च धनवन्त:।
नेतारो बहुभृत्या वीणायां कीर्तिता: पुरुषा:।।

दाम योग - दाम्नि सुजनोपकारी नयधनयुक्तो महेश्वर: ख्यात:।
बहुसुतरत्नसमृद्धो धीरो जायेत विद्वांश्च।।

पाश योग - पाशे बन्धनभाज: कार्ये दक्षा: प्रपंचकाराश्च।
बहुभाषिणो विशीला बहुभृत्या: सम्प्रतानाश्च।।

केदार योग - सुबहूनामुपयोज्या: कृषीबला: सत्यवादिन: सुखिन:।
केदारे सम्भूताश्चलस्वभावा धनैर्युक्ता:।।

शूल योग - तीक्ष्णालसधनहीना हिंस्रा: सुबहिष्कृता महाशूरा:।
संग्रामे लब्धयशा शूले योगे भवन्ति नरा:।।

युग योग - पाखण्डवादिनो वा धनरहिता वा बहिष्कृता लोके।
सुतमातृधर्मरहिता युगयोगे ये नरा जाता:।।

गोल योग - बलसंयुक्ता विधना विद्याविज्ञानवर्जिता मलिना:।
नित्यं दु:खितदीना गोले योगे भवन्ति नरा:।।
सर्वास्वपि दशास्वेते भवेयु: फलदायिन:।
प्राणिनामिति विज्ञेया: प्रवदन्ति तवाग्रजा:।।

इस प्रकार **वीणा योग** में उत्पन्न मनुष्य गाने तथा नाचने में एवं बजाने में प्रेम रखने वाला तथा निपुण, सुखी, धनी, नेता और अधिक नौकर वाला होता है। **दाम योग** में उत्पन्न मनुष्य दूसरे का कल्याण करने वाला, नीति के द्वारा धनोपार्जन करने वाला, अधिक ऐश्वर्यवान, विख्यात, पुत्ररत्नादि से युक्त, धीर तथा विद्वान होता है। **पाश योग** में उत्पन्न जातक कारागार का भागी, कार्य में दक्ष, प्रपंची, अधिक वक्ता, शीलरहित, अधिक नौकरवाला और अधिक परिजन वाला होता है। **केदार योग** में उत्पन्न सभी का उपकार करने वाला कृषि कार्यकारक, सत्य बोलने वाला, सुखी, चंचल स्वभाव वाला और धनवान होता है। शूल योग में उत्पन्न जातक तीक्ष्ण स्वभाव वाला, आलसी, धनहीन, हिंसक, समाज से बहिष्कृत, अत्यन्त वीर एवं युद्ध में यश प्राप्त करने वाला होता है। युग योग में उत्पन्न जातक पाखण्डी, धनहीन, समाज से बहिष्कृत एवं पुत्र, माता, पिता तथा धर्म से हीन होता है। गोल योग में उत्पन्न जातक बलवान, धनहीन, विद्या तथा विज्ञान से हीन, मलिन, सदैव दु:खी एवं दीन होता है।

उक्त फल तत् तत् ग्रहों की दशा में प्राणियों को प्राप्त होता है, ऐसा ऋषियों का वचन हैं।

आचार्य वैद्यनाथ कृत जातकपारिजात ग्रन्थ के अनुसार भी नाभसयोग पूर्वोक्तानुसार मुख्यत: चार प्रकार के होते हैं – 1. आकृति योग 2. आश्रययोग 3. दलयोग और 4. संख्यायोग। आकृतियोग के यूप, इषु आदि २० भेद होते है। आश्रय योग के रज्जु, मुसल और नल तीन भेद, दल योग के स्रक् और सर्प- दो भेद तथा संख्यायोग के वीणा, वरदाम आदि – सात भेद होते हैं। इस प्रकार नाभस योग के कुल बत्तीस (32) भेद होते हैं।

जातकपारिजात ग्रन्थ में कथित नाभसयोग का मूल श्लोक –

यूपेषुशक्तियवदण्डगदासमुद्र-
च्छत्रार्द्धचन्द्रशकटाम्बुजपक्षियोगा:।
नौचक्रवज्रहलकार्मुककूटवापी
श्रृंगाटकाश्च विविधाकृतिविंशति: स्यु:।।
रज्जुर्नलश्च मुसलस्त्रितयाश्रयाख्या:
स्रग्भोगिनौ तु दलयोगभवौ भवेताम्।
वीणादयश्च कथिता वरदामपाश
केदारशूलयुगगोलकसप्तसंख्या:।।

अर्थात् यूप, इषु, शक्ति, यव, दण्ड, गदा, समुद्र, छत्र, अर्धचन्द्र, शकट, अम्बुज, पक्षि, नौका, चक्र, वज्र, हल, कार्मुक, कूट, वापी और २० श्रृंगाटक ये बीस योग आकृति योग नाम से जाने जाते हैं। रज्जु , मुसल और नल – ये आश्रय योग के नाम से प्रसिद्ध है। स्रक और भोगिन ये दल योग है तथा वीणा, वरदाम, पाश, केदार, शूल, युग और गोलक इन सात योगों को संख्या योग कहते हैं। नाभसयोगों की संख्या के सम्बन्ध में वराहमिहिर का निम्न वचन द्रष्टव्य है –

नवदिग्वसवस्त्रिकाग्निवेदैर्गुणिता द्वित्रिविकल्पजा: स्यु:।
यवनास्त्रिगुणा हि षट्शती सा कथिता विस्तरतोऽत्र सत्समासत:।।

योगों में परस्पर समानता

योगा व्रजन्त्याश्रयजा: समत्वं यावाब्जवज्राण्डगोलकाद्यै:।
केन्द्रोपगै: प्रोक्तफलौ दलाख्यावित्याहुरन्ये न पृथक् फलौ तौ।।

अर्थात् आश्रय योग का फल यव, कमल, वज्र, पक्षि, गोलक, केदार और शूल योगों के समान तथा दलयोगद्वय का फल केन्द्रस्थ ग्रहों के समान होने से इनके फल अलग से नहीं कहा है।

नाभस योगों की संख्या विवेचन –

प्रथम नाभस योगों के आकृति- संख्या- आश्रय और दल ये ४भेद होते हैं। इनमें आकृतियोग

के २०, संख्यायोग के ७, आश्रययोग के ३ और दलयोग के २ भेद होते हैं।

उक्त चारों भेदों में से आकृतियोग अकेला होने के कारण २० ही प्रकार का रहता है। परन्तु और अन्य दो-दो, तीन-तीन, चार-चार अर्थात् आकृति-संख्या, आकृति-संख्या-आश्रय और आकृति-संख्या-आश्रय-दल ये आपस में बदलने के कारण, ९,१०,८ को क्रम से ३,३ तथा ४ से गुणने पर जितने अंक हों उतने भेद होते हैं।

अर्थात् आकृति और संख्या के आपस में बदलने से ९× ३ = २७, आकृति-संख्या-आश्रय इनके आपस में बदलने से १० × ३ =३० और आकृति –संख्या-आश्रय-दल इनके आपस में बदलने से ८×४ = ३२ भेद होते हैं। वृहज्जातकम् में वराहमिहिर ने इन्हें संक्षेप में कहा है जबकि यवनों ने इनके विस्तारपूर्वक १८०० भेद कहे हैं।

यवन मत से आकृति योग के २३ भेद और संख्यादि ती योगों के आपस में बदलने से १२७ भेद ये दोनों भेद मिलकर १५० हुए। यही सब बारह राशियों के बदलने से १८०० हो जाते हैं। जैसे –

एक ही लग्न में सातों ग्रहों के बदलाव से भेद संख्या -	७	
दो-दो ग्रहों के बदलाव से भेद संख्या -	२१	
तीन-तीन ग्रहों के बदलाव से भेद संख्या -	३५	
चार-चार ग्रहों के बदलाव से भेद संख्या -	३५	
पाँच-पाँच ग्रहों के बदलाव से भेद संख्या -	२१	
छः-छः ग्रहों के बदलाव से भेद संख्या -	७	
सातों ग्रहों के बदलाव से भेद संख्या -		१
	कुल योग =	१२७

आकृति योग यवनाचार्यों के मत से २३ = १५०

अब एक लग्न में १५० तो १२ लग्नों में क्या होगा?

१५० × १२ = १८०० भेद हुए।

कल्याणवर्मा कृत् सारावली में यवनादि आचार्यों द्वारा कथित १८०० प्रकार के नाभस योगों का वर्णन पूर्वोक्त के अनुसार ही है। वहाँ ३२ प्रकार के नाभस योगों का मूल श्लोक इस प्रकार है-

> नौच्छत्रकूटकार्मुकशृंगाटक्वज्रदामनीपाशा:।
> वीणासरोजमुसला वापीहलशरसमुद्रचक्राणि।।
> माला सार्पार्धेन्दु यवकेदारौ गदाविहगयूपा:।
> युगशकटशूलदण्डा रज्जु: शक्तिस्तथा नलो गोल:।।

सचराचरस्य जगतो योगैरेभि: प्रकीर्त्यते प्रसव:।
आश्रयजातान् प्राहुर्माणित्था मुसलरज्जुनलयोगान्।।

पूर्वोक्त ग्रन्थानुसार ही इस श्लोक में भी नाभस योगों का नाम बतलाया है। इसी प्रकार मन्त्रेश्वर कृत् फलदीपिका नामक ग्रन्थ में भी नाभस योगों का उल्लेख मिलता है, जो लगभग पूर्व के अनुसार ही है।

1.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्त्तक महर्षि पराशर द्वारा लिखित 'वृहत्पराशरहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ के नाभसयोगाध्याय में वर्णन करते हुए लिखा गया है कि नाभस योग के ३२ भेद एवं १८०० प्रभेद हैं। उन ३२ भेदों में से ३ आश्रय योग हैं, २ दल योग हैं, २० आकृति योग हैं तथा ७ संख्या योग कहे गये हैं। इस प्रकार नाभस योग को आश्रय, दल, आकृति एवं संख्या योगों में वर्गीकृत किया गया है। प्रथम नाभस योगों के आकृति-संख्या- आश्रय और दल ये ४भेद होते हैं। इनमें आकृतियोग के २०, संख्यायोग के ७, आश्रययोग के ३ और दलयोग के २ भेद होते हैं। चारों भेदों में से आकृतियोग अकेला होने के कारण २० ही प्रकार का रहता है। परन्तु और अन्य दो-दो, तीन-तीन, चार-चार अर्थात् आकृति-संख्या, आकृति-संख्या-आश्रय और आकृति-संख्या-आश्रय-दल ये आपस में बदलने के कारण, ९,१०,८ को क्रम से ३,३ तथा ४ से गुणने पर जितने अंक हों उतने भेद होते हैं। अर्थात् आकृति और संख्या के आपस में बदलने से ९× ३ = २७, आकृति-संख्या-आश्रय इनके आपस में बदलने से १० × ३ =३० और आकृति –संख्या-आश्रय-दल इनके आपस में बदलने से ८×४ = ३२ भेद होते हैं। वृहज्जातकम् में वराहमिहिर ने इन्हें संक्षेप में कहा है जबकि यवनों ने इनके विस्तारपूर्वक १८०० भेद कहे हैं। आश्रय योग का फल यव, कमल, वज्र, पक्षि, गोलक, केदार और शूल योगों के समान तथा दलयोगद्वय का फल केन्द्रस्थ ग्रहों के समान होने से इनके फल अलग से नहीं कहा है।

1.5 पारिभाषिक शब्दावली

नाभस योग – वृहत्पराशरहोराशास्त्र के अनुसार नाभस योग के ३२ प्रकार के भेद एवं १८०० प्रभेद बतलाए गये है। वस्तुत: नाभस योग भी राज योग के अन्तर्गत ही आता है।

आकृति योग – ३२ प्रकार के नाभस योग के अन्तर्गत यूप, इषु आदि २० प्रकार आकृति योग के कहे गये है।

दल योग – दल योग २ प्रकार के हैं।

आश्रय योग – आश्रय के तीन भेद कहे गयें है।

संख्या योग – संख्या योग के ७ भेद कहे गये हैं।

गोल योग – सभी ग्रह एक राशि में स्थित हो तो गोल योग बनता है।

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. घ
4. ख
5. क
6. क
7.क

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - नाभसयोगाध्याय।
2. वृहज्जातकम् – नाभसयोगाध्याय :।
3. जातकपारिजात – नाभसयोगाध्याय:।
4. सारावली – नाभसयोगाध्याय:।

1.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1. फलदीपिका – मूल लेखक – आचार्य मन्त्रेश्वर। टिकाकार – गोपेश ओझा।
2. सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा। टिकाकार- मुरलीधर चतुर्वेदी।
3. वृहज्जातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार- आचार्य सत्येन्द्र मिश्र।
4. लघुजातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार – कमलाकान्त पाण्डेय।

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. नाभस योगों का विस्तृत वर्णन कीजिये।
2. आश्रय योग के भेदों का वर्णन करें।
3. दल योग क्या है? स्पष्ट कीजिये।
4. संख्या योग से आप क्या समझते है?
5. आकृति योग के भेद का उल्लेख कीजिये।
6. नाभस योग के भेद-प्रभेदों का स्पष्टतया उल्लेख कीजिये।

इकाई - 2 राज योग

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 राज योग परिचय

2.3.1 विविध ग्रन्थानुसार राज योग विचार

2.3.2 राज योग के स्वरूप एवं प्रभाव

2.4 सारांश

2.5 पारिभाषिक शब्दावली

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.8 सहायक पाठ्यसामग्री

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई MAJY-202 के प्रथम खण्ड की दूसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – राज योग। इससे पूर्व आपने नाभस योग से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'राज योग' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

'राज योग' फलित ज्योतिष का ही नहीं वरन् मानव जीवन से जुड़ा भी एक महत्वपूर्ण अंग है। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में राजा की तरह जीवन व्यतीत करने हेतु इच्छुक रहता है। किसके जीवन में राज योग होगा अथवा नहीं? इन समस्त विषयों का अध्ययन हम इस इकाई में करेंगे।

अत: आइए इस इकाई में हम लोग 'राज योग' के बारे में उसके स्वरूप, महत्व एवं फल का विधिवत् शास्त्रानुसार अनुशासन करते हैं।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- राज योग क्या है? इसको परिभाषित कर सकेंगे।
- राज योग को समझा सकेंगे।
- राज योग कैसे बनता है, इसकी जानकारी प्राप्त कर लेंगे।
- विविध प्रकार के राजयोगों का अध्ययन कर सकेंगे।
- मानव जीवन में राज योग की महत्ता को बतला सकेंगे।

2.3 राज योग परिचय

ज्योतिष शास्त्र के फलित या होरा स्कन्ध के अन्तर्गत 'राज योग' एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है, जिसका मानव जीवन के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। यदि देखा जाय तो प्रायः प्रत्येक मानव अपने जीवन में राज योग की इच्छा या अभिलाषा रखता है, किन्तु सभी मानव के जीवन में राजयोग हो यह कथमपि संभव नहीं है। वस्तुतः राजयोग का निर्माण भी मानव द्वारा पूर्वजन्म में कृत्य शुभाशुभ कर्म फल पर ही आधारित होता है।

ज्योतिषशास्त्र के जातक या होरास्कन्ध के अन्तर्गत जितने भी प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं उनका अध्ययन करने पर प्राय: सभी ग्रन्थों में राजयोग का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। इस इकाई में मेरा यह प्रयास रहेगा कि आप सभी जिज्ञासु अध्येताओं के लिए फलित ज्योतिष के कुछ प्रमुख ग्रन्थों का उल्लेख करते हुए आपको राजयोग से सम्बन्धित तथ्यों से अवगत करा सकुँ।

राज योग क्या है? यदि इस पर विचार किया जाय तो सामान्यतः जिस मनुष्य का जीवन राजा के समान व्यतीत हो, उसे 'राजयोग' कहा जाता है। राज योग का शाब्दिक अर्थ भी है - राजा के समान योग। ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्त्तकों एवं आचार्यों ने ग्रहों की स्थिति के आधार पर मानव के जीवन में होने वाले राजयोगों का उल्लेख विविध प्रकार से अपने-अपने ग्रन्थों में किया है।

2.3.1 विविध ग्रन्थानुसार राज योग विचार

सर्वप्रथम वराहमिहिर कृत् **'वृहज्जातकम्'** नामक ग्रन्थ से आरम्भ करते हैं। वृहज्जातकम् के राजयोगाध्याय में यवनाचार्य और जीवशर्मा के मतानुसार 'राजयोग' का वर्णन हमें इस प्रकार मिलता है। **मूल श्लोक-**

प्राहुर्यवनाः स्वतुंगैः क्रूरैः क्रूरमतिर्महीपतिः।
क्रूरैस्तु न जीवशर्मणः पक्षे क्षित्यधिपः प्रजायते।।

श्लोक का अर्थ है कि यदि किसी जातक के जन्मकाल में एक से अधिक शुभग्रह यदि अपने उच्च स्थान में स्थित हों तो वह जातक सुबुद्धि वाला राजा होता है। यदि क्रूरग्रह अपने उच्चस्थान में स्थित हो तो पापबुद्धि वाला राजा होता है। यह यवनाचार्य का मत है।

अपने उच्चस्थानों में क्रूरग्रहों के रहने से वह राजा नहीं होता है किन्तु राजा के तुल्य धनवान् होता है। यह जीवशर्मा का मत है।

बत्तीस प्रकार के राजयोग -

वक्रार्कजार्कगुरूभिः सकलैस्त्रिभिश्च।
स्वोच्चेषु षोडश नृपाः कथितैकलग्ने।।
द्वयेकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्ने।
स्वक्षेत्रगे शशिनि षोडश भूमिपाः स्युः।। (वृहज्जातकम् राजयोगाध्याय, श्लोक-2)

अर्थात् जन्मकुण्डली में यदि भौम-शनि-सूर्य और गुरू ये चारों ग्रह अपने उच्चस्थानों में स्थित होकर इनमें से एक लग्न में स्थित हों तो चार प्रकार के राजयोग होते हैं। जैसे- मेष में सूर्य, कर्क में वृहस्पति, तुला में शनि और मकर में मंगल हो तथा शेषग्रह अन्यत्र कहीं भी हों तब लग्न में मेष राशि हो तो **एक**, कर्क राशि हो तो **दो**, तुला राशि हो तो **तीन** और मकर राशि हो तो **चार** ये **राजयोग** होते हैं।

इन्हीं चारों में से तीन ग्रह यदि अपने उच्चस्थानों में स्थित हों और उनमें से एक लग्न में हो तो बारह प्रकार के राजयोग होते हैं। जैसे- मेष में सूर्य, कर्क में गुरू और तुला में शनि तथा शेष ग्रह कहीं भी हों तब ऐसे में लग्न में मेष राशि हो तो **एक**, कर्क राशि हो तो **दो** और तुला राशि हो तो **तीन**।

मेष में सूर्य, कर्क में वृहस्पति और मकर में मंगल हो तथा शेषग्रह कहीं भी हों तब लग्न में मेष राशि हो तो **चौथा**, कर्क राशि हो तो **पाँचवाँ** और मकर राशि हो तो **छठा**।

मेष में सूर्य, तुला में शनि तथा मकर में मंगल हो और शेष ग्रह कहीं भी हों तब लग्न में मेष राशि रहे तो **सात**, तुला राशि रहे तो **आठ** और मकर राशि रहे तो **नव**।

कर्क में वृहस्पति, तुला में शनि और मकर में मंगल हो तथा शेषग्रह कहीं भी हो तब लग्न में कर्क राशि रहे तो **दश**, तुला राशि रहे तो **ग्यारह** और मकर राशि रहे तो **बारह**।

उपरोक्त बारह और चार मिलाकर सोलह राजयोग होते हैं। पूर्वोक्त चारों ग्रहों में से दो ग्रह अपने उच्च स्थानों में स्थित होकर लग्न में स्थित हों और चन्द्रमा अपनी राशि में हो तो बारह प्रकार के राजयोग होते हैं।

जैसे मेष में सूर्य तथा कर्क में चन्द्रमा और वृहस्पति दोनों हों, शेष ग्रह कहीं भी हों तो लग्न में मेष राशि हो तो **एक** और कर्क राशि हो तो **दो**।

मेष में सूर्य तथा कर्क में चन्द्रमा तुला में शनि और शेष ग्रह अन्यत्र हों तब लग्न में यदि मेष राशि हो तो **तीन**, तुला राशि हो तो **चार**।

मेष में सूर्य तथा कर्क में चन्द्रमा और मकर में मंगल हो शेषग्रह अन्यत्र हों तब लग्न में यदि मेष राशि हो तो **पाँच**, मकर राशि हो तो **छः**।

कर्क में वृहस्पति और चन्द्रमा, तुला में शनि हो शेषग्रह अन्यत्र हों तब लग्न में यदि कर्क राशि हो तो **सात** और तुला राशि हो तो **आठ**।

कर्क में वृहस्पति और चन्द्रमा, मकर में मंगल और शेषग्रह कहीं हो, तब लग्न में कर्क राशि हो तो **नव** एवं मकर राशि हो तो **दश**।

तुला में शनि, मकर में मंगल और कर्क में चन्द्रमा तथा शेषग्रह कहीं अन्यत्र हों तो लग्न में तुला राशि हो तो **ग्यारह** और मकर राशि हो तो **बारह**।

पूर्वोक्त सोलह और ये बारह मिलकर (16+12) = 28 राजयोग होते हैं। पूर्वोक्त चारों ग्रहों में एक ग्रह अपने उच्चस्थान में रहकर लग्न में स्थित हो और चन्द्रमा अपने ही स्थान में हो तो चार प्रकार के राजयोग होते हैं।

जैसे - कर्क में चन्द्रमा, मेष में सूर्य और शेष ग्रह अन्यत्र हों तब लग्न में मेश राशि हो तो **एक**। कर्क में चन्द्रमा तथा वृहस्पति और शेष ग्रह कहीं अन्यत्र हो तब लग्न में कर्क राशि हो तो **दो**। कर्क में चन्द्रमा, तुला में शनि और शेष ग्रह कहीं अन्यत्र हों तब लग्न में तुला राशि हो तो **तीन**। कर्क में चन्द्रमा, मकर में मंगल और शेष ग्रह कहीं अन्यत्र हों तब लग्न में मकर राशि हो तो **चार**। इस प्रकार

28 और ये चार मिलकर (28+4)= **कुल 32** प्रकार के राजयोग होते हैं।

अब 44 प्रकार के राजयोग कहते हैं -

वर्गोत्तमेगते लग्ने चन्द्रे वा चन्द्रवर्जितैः।

चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपा द्वाविंशतिः स्मृताः।। (श्लोक संख्या -3)

अर्थात् वर्गोत्तम में लग्न हो और उसको (चन्द्रमा को छोड़) अन्य चार, पॉच या छः ग्रह देखते हों तो 22 राजयोग और चन्द्रमा यदि वर्गोत्तम नवमांश में स्थित हों और उसको भी चार, पॉच या छः ग्रह देखते हों तो भी 22 राजयोग इस तरह दोनों मिलकर 44 राजयोग होते हैं।

जैसे - वर्गोत्तम लग्न को देखने वाले सूर्य -मंगल-बुध और वृहस्पति हों तो **एक**

सूर्य-मंगल-बुध और शुक्र हों तो **दो,**

सूर्य-मंगल-बुध और शनि हों तो **तीन,**

सूर्य-मंगल-बृहस्पति और शुक्र हों तो **चार,**

सूर्य-मंगल-वृहस्पति और शनि हों तो **पॉच**,

सूर्य-मंगल-शुक्र और शनि हों तो **छः**,

सूर्य-बुध-वृहस्पति और शुक्र हों तो **सात**,

सूर्य-बुध-वृहस्पति और शनि हों तो **आठ**,

सूर्य-बुध-शुक्र तथा शनि हों तो **नव**,

सूर्य-वृहस्पति-शुक्र और शनि हों तो **दश**,

मंगल-बुध-वृहस्पति और शुक्र हों तो **ग्यारह**,

मंगल-बुध-वृहस्पति और शनि हों तो **बारह**,

मंगल-बुध-शुक्र और शनि हों तो **तेरह**,

मंगल-बृहस्पति-शुक्र तथा शनि हों तो **चौदह**,

बुध-वृहस्पति-शुक्र तथा शनि हों तो **पन्द्रह**,

वर्गोत्तम लग्न को देखने वाले सूर्य-मंगल-बुध-वृहस्पति और शुक्र हों तो **एक**,

सूर्य-मंगल-बुध-वृहस्पति तथा शनि हों तो **दो**,

सूर्य-मंगल-बुध- शुक्र और शनि हों तो **तीन,**

सूर्य-मंगल-वृहस्पति-शुक्र और शनि हों तो **चार,**

सूर्य-बुध-वृहस्पति-शुक्र और शनि हों तो **पॉच,**

मंगल-बुध-वृहस्पति-शुक्र और शनि हों तो **छः**

और शनि हों तो 22 ये राजयोग होते हैं।

ऐसे ही वर्गोत्तम में स्थित चन्द्रमा को चार, पॉंच तथा छः ग्रहों को देखने से 22 राजयोग होते हैं। पूर्वोक्त 22 योग मिलाकर कुल 44 राजयोग होते हैं। यहॉं एक-एक राशियों का नियम रखने पर इन योगों की संख्या 528 (44×12) होगी।

पाँच प्रकार के राजयोग –

यमे कुम्भेऽर्केऽजे शशिनि गवि तैरेव तनुगै।
नृयुक्सिंहालिस्थैः शशिजगुरुवक्रैर्नृपतयः।।
यमेन्दू तुंगेऽगे सवितृशशिजौ षष्ठभवने।
तुलाजेन्दुक्षेत्रैः ससितकुजजीवैश्च नरपौ।।(रा0यो0अ0 श्लोक४)

अर्थात् कुम्भ में शनैश्चर, मेष में सूर्य तथा वृष में चन्द्रमा हो तथा यहीं राशिलग्न रहे और बुध-वृहस्पति-मंगल ये क्रमश: मिथुन-सिंह तथा वृश्चिक राशियों में स्थित हों तो **तीन राजयोग** होते हैं।

जैसे – शनि कुम्भ में- सूर्य मेष में- चन्द्रमा वृष में- बुध मिथुन में – वृहस्पति सिंह में – मंगल वृश्चिक में और शेष ग्रह कहीं अन्यत्र हों, तब कुम्भ लग्न हो तो **एक**, मेष हो तो **दो**, वृष हो तो **तीसरा राजयोग।**

शनि और चन्द्रमा अपने उच्चस्थानों में स्थित होकर लग्न में स्थित हो और सूर्य-बुध कन्या राशि में स्थित हों तथा तुला-मेष कर्क इन राशियों में क्रमश: शुक्र मंगल एवं वृहस्पति हों तो **दो राजयोग** होता है।

शुक्र-शनि तुला में- चन्द्रमा वृष में- सूर्य-बुध कन्या में – मंगल मेष में वृहस्पति कर्क में और शेष ग्रह अन्यत्र कहीं हो तब लग्न में तुला हो तो **एक** और वृष हो तो **दूसरा** राजयोग होता है। **यही दो और पूर्वोक्त तीन मिलकर (2+3= 5) पाँच राजयोग होते हैं।**

तीन प्रकार के राजयोग –

कुजे तुंगेऽर्केन्द्वोर्धनुषि यमलग्ने च कुपतिः।
पतिर्भूमेश्चान्यः क्षितिसुतविलग्ने सशशिनि।।
सचन्द्रे सौरेऽस्ते सुपरपतिगुरौ चापधरगे
स्वतुंगस्थे भानावुदयमुपयाते क्षितिपतिः।।

अर्थात् मंगल अपने उच्चस्थान मकर में हों और सूर्य तथा चन्द्रमा धनु राशि में और शनि मकरस्थ होकर लग्न में रहे तो उत्पन्न बालक राजा होता है।

मकर राशि लग्न में हो, उसी में चन्द्रमा और मंगल हों और सूर्य धनुराशि में स्थित हो तो जातक राजा होता है।

मेषराशि लग्न में हो और उसी में १० अंश के मध्य में सूर्य हो तथा धनुराशि में वृहस्पति, तुलाराशि में चन्द्रमा और शनि स्थित हों तो जातक राजा होता है। इस प्रकार ये तीन राजयोग हुए।

दो प्रकार के राजयोग –

वृषोदये मूर्तिधनारिलाभगै: शशांकजीवार्किसितैर्नृपोऽपर:।

सुखे गुरौ खे शशितिग्मदीधितीयमोदये लाभगतैर्नृपोऽपरै:।।(वृहज्जातक- रा0यो0अ0,श्लोक-१७)

अर्थात् जन्मकाल में वृषलग्न हो और उसी में चन्द्रमा स्थित हो तथा वृहस्पति मिथुन में शनि तुला में एवं शेषग्रह मीन में स्थित हों तो यदि वह राजा का पुत्र हो तो राजा होता है, अन्य हो तो धनवान होता है।

वृहस्पति चतुर्थ स्थान में, चन्द्रमा और सूर्य दशमस्थान में, शनि लग्न में तथा शेषग्रह ग्यारहवें स्थान में स्थित हों तो यदि वह राजा का पुत्र हो तो राजा होता है, अन्य हो तो धनवान होता है।

अन्यं च –

मेषूरणायतनुगा: शशिमन्दजीवा

ज्ञारौ धने सितरवी हिबुके नरेन्द्र:।

वक्रासितौ शशिसुरेज्यसितार्कसौम्या

होरासुखास्तशुभखाप्तिगता: प्रजेश:।।(वृहज्जातक- रा0यो0अ0,श्लोक-१८)

इस श्लोक का अर्थ है कि चन्द्रमा दसवें स्थान में, शनि ग्यारहवें स्थान में, वृहस्पति लग्न में, बुध व मंगल दूसरे स्थान में तथा शुक्र और सूर्य चौथे स्थान में स्थित हो तो यदि वह राजा का पुत्र हो तो राजा होता है, अन्य हो तो धनवान् होता है।

मंगल व शनि लग्न में, चन्द्रमा चतुर्थ में, वृहस्पति सातवें में, शुक्र नवें में, सूर्य दसवें में और बुध ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तो यदि वह राजा का पुत्र हो तो राजा होता है अन्य कुल में पैदा हो तो धनवान होता है।

एक प्रकार का राजयोग –

स्वोच्चसंस्थे बुधे लग्ने भृगौ मेषूरणाश्रिते।

सजीवेऽस्ते निशानाथे राजा मन्दारयो: सुते।। (वृहज्जातक- रा0यो0अ0,श्लोक-११)

अर्थात् कन्या लग्न हो तथा उच्च स्थान (कन्या) स्थित बुध लग्नस्थ हो और दसवें (मिथुन) स्थान में

शुक्र, वृहस्पति के साथ चन्द्रमा सप्तम (मीन) में तथा पॉचवें (मकर) में शनि एवं मंगल स्थित हों तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक राजा होता है।

उच्चत्रिकोणगैर्बलसंस्थैस्त्रयाद्यैर्भूपतिवंशजा नरेन्द्राः।

पञ्चादिभिरन्यवंशजाता हीनैर्वित्तयुता न भूमिपाः स्युः।।(वृहज्जातक- रा0यो0अ0,श्लोक-१३)

अर्थात् जिनके जन्मकाल में तीन या चार ग्रह अपने उच्चस्थान या मूल त्रिकोण में बली होकर स्थित हों तो वे यदि राजवंश में उत्पन्न हुए हों तो राजा होते है और एक या दो ग्रहों के उच्चस्थ या मूल त्रिकोणस्थ होने से राजा नहीं होते, किन्तु राजा के तुल्य वैभवशाली होते हैं।

जिनके जन्मकाल में पाँच- छ: या सात ग्रह अपने उच्चस्थान या मूल-त्रिकोण में बली होकर स्थित हों तो वे नीचकुल में जन्म लेकर भी राजा होते हैं और यदि पाँच कम तीन या चार ग्रह उच्चस्थ या मूल त्रिकोणस्थ हों तो राजा नहीं होते, परन्तु धनवान अवश्य होते है।

अपि च –

लेखास्थेऽर्केऽजेन्दौ लग्ने भौमे स्वोच्चे कुम्भे मन्दे।

चापं प्राप्ते जीवे राज्ञः पुत्रं विद्याद् भूमेर्नाथम्।।(वृहज्जातक- रा0यो0अ0,श्लोक-१४)

इसका अर्थ है कि यदि मेष लग्न हो तथा उसमें सूर्य एवं चन्द्रमा स्थित हों और मंगल अपने उच्च राशि (मकर) में, कुम्भ राशि में शनि तथा वृहस्पति धनुराशि में स्थित हो तो ऐसे योग में उत्पन्न राजा का पुत्र राजा होता है। कुछ विद्वान लेखास्थे पद के स्थान में लेयस्थे का उल्लेख करते हैं। जिसका अर्थ है कि सिंह में सूर्य स्थित हो और शेष ग्रह पूर्वोक्त हों तो भी राजयोग समझना चाहिए।

स्वर्क्षे शुक्रे पातालस्थे धर्मस्थानं प्राप्ते चन्द्रे।

दुश्चिक्यांगप्राप्तिप्राप्तैः शेषैर्जातः स्वामी भूमेः।।(वृहज्जातक- रा0यो0अ0,श्लोक-१५)

अर्थात् शुक्र यदि अपनी राशि में स्थित होकर चतुर्थ स्थान में स्थित हो और चन्द्रमा नवम स्थान में स्थित हो तथा शेषग्रह 3, 1 और 11 वें स्थान में स्थित हो तो ऐसे योग में उत्पन्न राजा का पुत्र राजा होता है।

सौम्ये वीर्ययुते तनुसंस्थे वीर्याढये च शुभे शुभयाते।

धर्मार्थोपचयेष्वथ शेषैर्धर्मात्मा नृपजः पृथिवीशः।।(वृहज्जातक- रा0यो0अ0,श्लोक-१६)

श्लोकार्थ है कि बली होकर बुध लग्न में एवं शुभग्रह अर्थात् वृहस्पति या शुक्र इन दोनों में से कोई भी नवम स्थान में तथा शेषग्रह 9,2, 3,6,10 एवं ग्यारहवें स्थानों में स्थित हों तो यदि वह राजपुत्र हो तो धर्मात्मा राजा होता है, यदि अन्य हो तो धर्मात्मा तथा धनवान होता है। कुछ आचार्य इस श्लोक में

शुभ याते पद के स्थान पर सुख याते ग्रहण करते हैं वहाँ सुख से चतुर्थ स्थान समझना चाहिए।

सारावली ग्रन्थानुसार राजयोग -

राजकुलोत्पन्न राजयोग व निम्नकुलोत्पन्न राजयोग एवं धनवान योग ज्ञान –

मूल श्लोक –

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्रयाद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजात:।
पञ्चादिभिर्जनपदप्रभवोऽपि सिद्धो
हीनै: क्षितीश्वरसमो न तु भूमिपाल:।। (सारावली, अध्याय-३५,श्लोक-२)

श्लोक का अर्थ है कि यदि जन्म के समय में तीन या चार ग्रह अपने उच्च में वा स्वमूलत्रिकोण में अथवा अपने घर में बलवान हों तो राजकुल में उत्पन्न पुरुष राजा होता है। यदि जन्म के समय पाँच अथवा छ: ग्रह पूर्वोक्त स्थिति में हों तो निम्न कुलोत्पन्न भी राजा होता है। यदि दो या एक ग्रह उच्च या मूलत्रिकोण या स्वगृह में हो तो राजा के समान होता है न कि राजा होता है।

अखिलभूमण्डल पालक योग ज्ञान –

उदयिगिरिनिविष्टैर्मेषसंस्थैर्ग्रहेन्द्रै:।
शशिरुधिरसुरेडयैर्जायते पार्थिवेन्द्र:।।
जलनिधिरशनाया: पालक: सर्वभूमे-
र्हतरिपुपरिवार: सर्वत: फूत्करोति।। (सारावली, अध्याय-३५,श्लोक-८)

श्लोकार्थ है कि यदि जन्म के समय लग्नस्थ मेष राशि में चन्द्रमा, मंगल, गुरु हों तो जातक समुद्र रूपी मेखला से वेष्टित समस्त भूमण्डल का पालन करने वाला राजाधिराज होता है, तथा शत्रुदल का नाश करके चारों तरफ हुंकार करता है।

अधिक लक्ष्मी से युत राजयोग ज्ञान –

शिशिरकिरणे स्वोच्चे लग्ने पयोम्बुनिधे: समे।
घटधरगते भानो: पुत्रे मृगाधिपतौ रवि:।।
अलिगृहगतो वाचां नाथ: स्फुरत्करराजितो
यदि नरपति: स्फीतश्रीकस्तदा बदुवाहन:।।

अर्थात् यदि कुण्डली में परिपूर्ण चन्द्रमा वृष लग्न में हो तथा कुम्भ राशि में शनि, सिंह राशि में सूर्य, वृश्चिक राशि में शोभित किरणों से युक्त गुरु हो तो जातक अधिक लक्ष्मी व वाहनों से युत

राजा होता है।

उदाहरण द्वारा स्पष्ट चक्र –

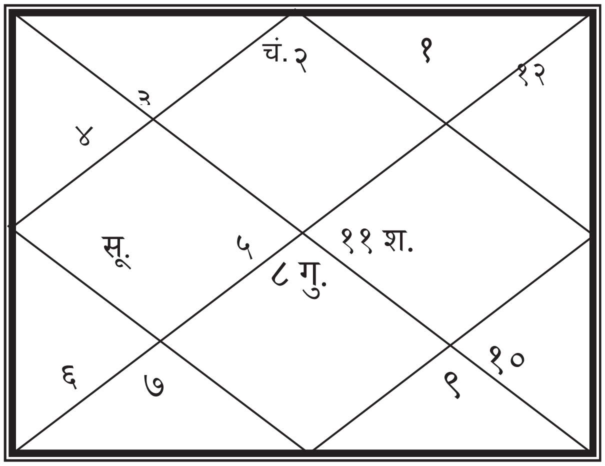

इन्द्र तुल्य राजयोग ज्ञान –

मृगे मन्दे लग्ने कुमुदवनबन्धुश्च तिमिग-
स्तथा कन्यां त्यक्त्वा बुधभवनसंस्थः कुतनयः।
स्थितो नार्यां सौम्यो धनुषि सुरमन्त्री यदि भवेत्
तदा जातो भूपः सुरपतिसमः प्राप्तमहिमा।।

इसका अर्थ है कि यदि कुण्डली में मकर लग्न में शनि, चन्द्रमा मीन राशि में तथा कन्या राशि को छोड़कर बुध के घर में अर्थात् मिथुन में भौम, कन्या में बुध, धनु राशि में गुरु हो तो जातक इन्द्र के समान महिमा (प्रशंसा) पाने वाला राजा होता है।

स्वभुजबल से पृथ्वीपति योग ज्ञान –

उदयति गुरुच्चे तप्तहेमप्रभावो
हरिततुरगनाथो व्योममध्यावगाही।
यदि शशिबुधशुक्रा यस्य सूतो नरस्य
स्वभुजविजितभूमिः सर्वतः पार्थिवेन्द्रः।।

अर्थात् यदि कुण्डली में तपे हुए सुवर्ण की आभा के सदृश गुरु कर्क राशि में लग्न गत हो तथा सूर्य दशम भाव में व वृष राशि में चन्द्रमा-बुध-शुक्र हों तो जातक अपनी भुजाओं के बल से समस्त पृथ्वी को जीतने वाला राजा होता है।

अपारकीर्तिमान राज योग ज्ञान –

कार्मुके त्रिदशनायकमन्त्री भानुजो वणिजि चन्द्रसमेत:।
मेषगस्तु तपनो यदि लग्ने भूपतिर्भवति सोऽतुलकीर्ति:।।

श्लोक का अर्थ है कि यदि कुण्डली में मेष लग्न में सूर्य हो व धनु राशि में गुरु, शनि चन्द्रमा के साथ तुला में हो तो जातक अपार कीर्तिमान राजा होता है।

<u>वृहत्पराशरहोराशास्त्र ग्रन्थानुसार राज योग विचार</u> –

'वृहत्पराशरहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ पराशर मुनि के द्वारा लिखा गया है। पराशर मुनि ज्योतिषशास्त्र के अष्टादश प्रवर्त्तक में से एक है। उनके द्वारा कथित राजयोग का वर्णन इस प्रकार है-

महाराज योग –

लग्नेशे पंचमे भावे पंचमेशे च लग्नके।
पुत्रात्मकारकौ विप्र! लग्ने च पंचमे स्थिते।
स्वोच्चे स्वांशे स्वभे वाऽपि शुभग्रहनिरीक्षिते
महाराजाख्ययोगोऽत्र जात: ख्यात: सुखान्वित:।।

अर्थात् लग्नेश पंचम भाव में हो और पंचमेश लग्न में हो एवं आत्मकारक तथा पुत्रकारक दोनों लग्न या पंचम में अपनी उच्च राशि का होकर या अपने नवमांश में होकर शुभ ग्रह के द्वारा अवलोकित हों तो यह महाराजनामक योग होता है। इसमें जन्म लेने वाला जातक विख्यात और सुख से युक्त होता है।

राज योग –

भाग्येश: कारको लग्ने पंचमे स्पतमेऽपि वा।
राजयोगप्रदातारौ शुभखेटयुतेक्षितौ।।
लग्नेशात् कारकाच्चापि धने तुर्ये च पंचमे।
शुभखेटयुते भावे जातो राजा भवेद् ध्रुवम्।।
तृतीये षष्ठमे ताभ्यां पापग्रहयुतेक्षिते।
जातो राजा भवेदेवं मिश्रे मिश्रफलं वदेत्।।

भाग्येश तथा आत्मकारक दोनों लग्न, ५,७ भाव में हों, शुभग्रह से दृष्ट या युत हो तो वे राजयोगकारक होते हैं। लग्नेश या कारक से द्वितीय, चतुर्थ, पंचम शुभ ग्रह हो तो जातक निश्चय ही राजा होता है अथवा लग्न एवं कारक से ३,६ भाव में केवल पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो भी

राजयोगकारक होता है। लग्न या कारक से ३,६ भाव में मिश्रित (शुभ, पापग्रह) ग्रह बैठे हों तो मिश्रित (धनवान) फल होता है।

जातक पारिजात ग्रन्थानुसार अनुसार राज योग –

कन्यामीननृयुग्मगोहरिधनुः कुम्भस्थितैः खेचरैः।
सेनामत्तमतंगवाजिविपुलो राजा यशस्वी भवेत्।।
तौलिच्छज्ञगवृषावनागृहगैर्जातोऽखिलक्ष्मापति।
गौचापान्त्यभकेन्द्रगैः पृथुयशाः पृथ्वीश्वरो जायते।।

अर्थात् जन्मांग में समस्त ग्रह कन्या, मीन, मिथुन, वृष, सिंह, धनु और कुम्भ राशियों में स्थित हों तो जातक सेना, मत्त हाथी, घोड़े आदि के विपुल समूह से युक्त यशस्वी राजा होता है।

तुला, मेष, वृष और मीन राशियों में यदि समस्त ग्रह स्थित हों तो जातक समस्त पृथ्वी का अधिपति होता है।

वृष, धनु, मीन राशियों में स्थित ग्रह यदि केन्द्रस्थ हों तो जातक अनेक यश-कीर्ति से युक्त राजा होता है।

कन्यामेषतुलामृगेन्द्रघटगैर्जाजो महीपालको।
दुश्चिक्यप्रतिभारसातलगतैर्बह्वर्थदेशाधिपः।।
खेटा विक्रमबन्धुपुत्रगृहगा द्वौ वित्तधर्मस्थितौ।
शेषौ लग्नकलत्रराशिसहितौ राजा भवेद्धार्मिकः।।

यदि समस्त ग्रह कन्या, मेष, तुला, सिंह और कुम्भ राशियों में स्थित हों तो इस ग्रहयोग में उत्पन्न जातक राजा होता है।

तृतीय, पंचम और चतुर्थ भावों में यदि समस्त ग्रह स्थित हों तो अतुल धन-वैभवादि से युक्त अनेक देशों का राजा होता है।

यदि तृतीय, चतुर्थ, पंचम, द्वितीय, नवम, लग्न और सप्तम भावों में सभी ग्रह स्थित हों तो जातक धार्मिक राजा होता है।

इन्हीं योगों के सदृश अन्य जातक ग्रन्थों में सिंहासन योग, चतुश्चक्र योग, एकावली योग, चतु:सागर योग, प्रचण्ड योग एवं श्रीछत्र योग (भावकुतूहल ग्रन्थ में), तथा कनकदण्ड योग, डमरूक योग एवं ध्वज योग, राजहंस योग, गृद्धपुच्छ योग एवं चिह्नपुच्छ योगादि का उल्लेख (सोमजातक ग्रन्थ में), प्राप्त होता हैं।

अन्य राज योग –

चापाजसिंहभवनोदयगे धराजे
मित्रेक्षिते निजबलार्जितराज्यकर्ता।
दुश्चिक्यधर्मसुतगा रविचन्द्रजीवा
वीर्यान्विता यदि कुबेरसमो नृपाल:।।

अर्थात् धनु, मेष अथवा सिंह राशि के लग्न में स्थित भौम यदि अपने मित्रग्रह (सूर्य, चन्द्रमा, और वृहस्पति) से दृष्ट हो तो इस योग में उत्पन्न जातक स्वार्जित राज्य का स्वामी होता है। सूर्य, चन्द्रमा और वृहस्पति यदि तृतीय, नवम और पंचम भावों में बलवान होकर स्थित हों तो जातक कुबेर के समान वैभवादि सम्पन्न राजा होता है।

नीचस्थितग्रहनवांशपतौ त्रिकोणे।
केन्द्रेऽथवा चरगृहे यदि जन्मलग्ने।।
तद्भावपे चरगृहांशसमन्विते वा।
जातो महीपतिरतिप्रबलोऽथवा स्यात्।।

अर्थात् नीचराशिगत ग्रह के नवमांशपति यदि त्रिकोण या केन्द्र में स्थित हो अथवा चरराशि का लग्न हो और जन्मलग्नाधिपति चरराशि के नवमांश में हो तो जातक राजा अथवा प्रबल प्रतापी होता है।

जातकपारिजात ग्रन्थ के राजयोगाध्याय का अध्ययन करने पर हमें उसके अन्तर्गत पंचमहापुरूष योग, सुनफादि योग, भास्कर, इन्द्र, मरूत, बुधादि योग, भौमादि पंचताराग्रहोत्पन्न सुनफादि योग फल, गजकेसरी योग तथा नाभस योगादि समस्त योग का उल्लेख मिलता है।

सर्वार्थचिन्तामणि ग्रन्थानुसार राजयोग –

षड्भिर्ग्रहैरूच्चसमन्वितै: स्याद्राजाधिराजो बहुदेशभर्त्ता।
उच्चस्थितै: पंचभिरत्र राजा शक्त्यान्वितो देवगुरो विलग्ने।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि षड्ग्रह (6 ग्रह) अपनी उच्चराशि में स्थित हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य निश्चय कर राजाधिराज होकर अनेक देशों का पालनहार होता है। यदि कुण्डली में पंचग्रहों की स्थिति अपनी-अपनी उच्च राशिगत हो तथा लग्नभाव में गुरूस्थित हो, तो मनुष्य सामर्थ्यशाली राजा होता है।

राजा होने का योग कथन –

लग्ने वृषे तत्र गते शशांके षड्भिग्रहैरूच्चगतैर्नृप: स्यात्।

कस्मिन् गृहे स्वोच्चयुते तु सर्वैः स्वक्षेत्रगैर्भूपतितुल्यजातः।।

अर्थात् जिस किसी की कुण्डली में यदि वृष लग्न में चन्द्रमा और षड्ग्रह अपनी-अपनी उच्च राशि में अवस्थित हो, तो इस योग में मनुष्य राजा होता है। सभी ग्रह कुण्डली के जिस किसी भी भाव में अवस्थित होकर उच्चस्थ होना चाहिए, तो मनुष्य राजा होता है, सभी ग्रह यदि स्वराशिगत हों, तो मनुष्य इस योग में केवल राजा के तुल्य होता है।

सम्राट योग कथन –

दृश्यते युज्यते वापि चन्द्रजेन वृहस्पतिः।
शिरसा शासनं तस्य धारयन्ति नृपास्तदा।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि बुध से देखा जाता हो अथवा युक्त हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य की आज्ञा को राजे-महाराजे अपने शिर पर धारण करने वाले होते हैं अर्थात् मनुष्य सम्राट होता है।

धार्मिक व चक्रवर्ती नीच भंग राजयोग कथन -

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽथ तदुच्चनाथः।
स चेद्विलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती।।

श्लोक का अर्थ है कि जिस किसी की कुण्डली में यदि कोई ग्रह अपनी नीच राशि में स्थित हो और उस ग्रह की उच्चराशि का स्वामी अथवा जिस राशि में वह ग्रह स्थित है, उस राशि का स्वामी ग्रह जन्मलग्न से केन्द्र में स्थित हो, तो इस योग में उत्पन्न होने पर मनुष्य धार्मिक और चक्रवर्ती राजा होता है।

भूपतितुल्य भाग्यवान योग कथन –

निशाकरे केन्द्रगते विलग्नं त्यक्त्वा त्रिकोणे यदि जीवदृष्टे।
शुक्रेण दृष्टे बलपूर्णयुक्ते जातो नरो भूपतितुल्यभागः।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि बलवान चन्द्र लग्न को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव ४,७,१० में अथवा त्रिकोण ५,९ भाव में स्थित होकर गुरु अथवा शुक्र से देखा जाता हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य राजा के तुल्य भाग्यवान होता है।

नीचोच्च भंग राजयोग कथन –

नीचस्थिता जन्मनि ये ग्रहेन्द्राः स्वोच्चांशगा राजसमानभाग्याः।

उच्चस्थिता चेदपि नीचभागा ग्रहा न कुर्वन्ति तथैव भाग्यम्।।

अर्थात् जिस किसी की कुण्डली में यदि कोई ग्रह अपनी नीच राशि में होकर नवमांश में अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो इस स्थिति में मनुष्य राजा के समान भाग्यवान होता है।

कुण्डली में यदि कोई ग्रह अपनी उच्चराशि में होकर नवमांश में वह अपनी नीच राशि में स्थित हो, तो इस स्थिति में मनुष्य का राजा के समान भाग्य नहीं होता है।

राजयोग भंग योग कथन –

तुलायां दशमे भागे स्थित: पंकजबोधन:।
सहस्रराजयोगानां फलं नीचत्वमाप्नुयात्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि अपनी नीचराशि तुला के दस (१०) अंश में स्थित हो, तो इस स्थिति के प्राप्त रहने पर मनुष्य सहस्र या हजार राजयोगों के रहने पर भी हीनता को प्राप्त हो जाता है।

भृगो: पुत्रोऽपि नीचस्थो राजयोगविनाशद:।
उल्कापातद्यप्रकाशे ग्रहे जातोऽपि भंगग:।।

अर्थात् जिस किसी की कुण्डली में यदि शुक्र भी नीच राशिगत हो, तो मनुष्य के राजयोग का विनाश हो जाता है तथा जन्म के समय उल्का, पात आदि अप्रकाश ग्रह लग्न में स्थित होकर राजयोग को नष्ट करते हैं।

बोध प्रश्न –

1. राज योग का अर्थ है।

   क. राजा के समान योग ख. राजा ग. राज्याधिपति घ. कोई नहीं

2. किसी जातक के जन्मकाल में एक से अधिक शुभग्रह यदि अपने उच्च स्थान में स्थित हों तो वह जातक राजा होता है।

   क. सुबुद्धि वाला ख. दुर्बुद्धि वाला ग. विद्यावान घ. चतुर

3. वृहज्जातक में कितने प्रकार के राजयोग का वर्णन है।

   क. २४ ख.३२ ग.२६ घ. २८

4. जातकपारिजात निम्न में किसकी रचना है।

   क. वैद्यनाथ ख. पराशर मुनि ग. वराहमिहिर घ. गणेश

5. जिस जातक की कुण्डली में शुक्र नीच राशि गत हो तो क्या होता है।

क. राजयोग ख. राजयोग का विनाश ग. विद्यावृद्धि घ. शत्रुवृद्धि

6. जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि बुध से देखा जाता हो अथवा युक्त हो तो कौन सा योग बनता है।

क. सम्राट योग ख. रंक योग ग. दानवीर योग घ. धार्मिक योग

7. निम्न में सारावली नामक ग्रन्थ के लेखक कौन है।

क. वराहमिहिर ख. कल्याणवर्मा ग. कमलकार घ. भास्कर

2.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि ज्योतिष शास्त्र के फलित या होरा स्कन्ध के अन्तर्गत 'राज योग' एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है, जिसका मानव जीवन के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। यदि देखा जाय तो प्रायः प्रत्येक मानव अपने जीवन में राज योग की इच्छा या अभिलाषा रखता है, किन्तु सभी मानव के जीवन में राजयोग हो यह कथमपि संभव नहीं है। वस्तुतः राजयोग का निर्माण भी मानव द्वारा पूर्वजन्म में कृत्य शुभाशुभ कर्म फल पर ही आधारित होता है।

ज्योतिषशास्त्र के जातक या होरास्कन्ध के अन्तर्गत जितने भी प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं उनका अध्ययन करने पर प्राय: सभी ग्रन्थों में राजयोग का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। इस इकाई में मेरा यह प्रयास रहेगा कि आप सभी जिज्ञासु अध्येताओं के लिए फलित ज्योतिष के कुछ प्रमुख ग्रन्थों का उल्लेख करते हुए आपको राजयोग से सम्बन्धित तथ्यों से अवगत करा सकुँ।

राज योग क्या है? यदि इस पर विचार किया जाय तो सामान्यतः जो राजा के समान जीवन व्यतीत करें, उसे राजयोग कहा जाता है। राज योग का शाब्दिक अर्थ भी है - राजा के समान योग। ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्त्तकों एवं आचार्यों ने ग्रहों की स्थिति के आधार पर मानव के जीवन में होने वाले राजयोगों का उल्लेख विविध प्रकार से अपने-अपने ग्रन्थों में किया है।

2.5 पारिभाषिक शब्दावली

राज योग – राजा के समान योग।

भृगु – शुक्र

इज – वृहस्पति

केन्द्र – १,४,७,१० भाव को केन्द्र कहते है।

आर – मंगल

त्रिकोण – ५ एवं ९ स्थान को त्रिकोण कहते है।

नवमांश – राशि का नवॉं अंश नवमांश कहलाता है। ३ अंश २० कला १ नवमांश का मान होता है।

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. क
3. ख
4. क
5. ख
6. क
7. ख

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहज्जातकम् - राजयोगाध्याय:।
2. जातकपारिजात – राजयोगाध्याय:।
3. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – राजयोगाध्याय:।
4. सारावली – राजयोगाध्याय:।
5. सर्वार्थचिन्तामणि – राजयोगाध्याय:।
6. फलदीपिका – राजयोगाध्याय:।

2.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1. फलदीपिका – मूल लेखक – आचार्य मन्त्रेश्वर। टिकाकार – गोपेश ओझा।
2. सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा। टिकाकार- मुरलीधर चतुर्वेदी।
3. वृहज्जातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार- आचार्य सत्येन्द्र मिश्र।
4. लघुजातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार – कमलाकान्त पाण्डेय।

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. वृहज्जातक ग्रन्थानुसार दो प्रकार के राजयोगों का विस्तृत वर्णन कीजिये।
2. ग्रन्थाधारित बत्तीस प्रकार के राजयोगों का व्याख्या कीजिये।
2. वराहमिहिर के अनुसार पाँच प्रकार के राजयोग का उल्लेख करें।।
3. जातकपारिजात के अनुसार राजयोग का वर्णन कीजिये।
4. राज योग किसे कहते हैं? सोदाहरण विस्तार पूर्वक लिखिये।
5. नीचोच्च भंग राजयोग से आप क्या समझते है?
6. वृहत्पराशर होराशास्त्र एवं सारावली के अनुसार राजयोग का महत्व प्रतिपादित कीजिये।

इकाई - 3 चन्द्रादि योग

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 चन्द्रादि योग परिचय
3.3.1 चन्द्रमा से बनने वाले योग
3.4 अन्य विविध योग
3.5 सारांश
3.6 पारिभाषिक शब्दावली
3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.9 सहायक पाठ्यसामग्री
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -104 के प्रथम खण्ड की तीसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – चन्द्रादि योग। इससे पूर्व आपने 'राज योग' से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'चन्द्रादि योग' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

'चन्द्रादि योग' से तात्पर्य है – चन्द्रमा आदि ग्रहों से बनने वाले योग। फलित ज्योतिष में चन्द्रमा सबसे प्रमुख माना गया है। मनुष्य के मन से लेकर उसके समस्त जीवन पर स्वगत्यानुसार इसका तीव्रतर प्रभाव होता है।

अत: आइए इस इकाई में हम लोग 'चन्द्रादि योग' के बारे में उसके स्वरूप तथा फलाफल के बारे में अध्ययन करते हैं।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- चन्द्रादि योग को परिभाषित कर सकेंगे।
- चन्द्रादि योग कितने प्रकार के होते हैं, समझा सकेंगे।
- चन्द्रमा से बनने वाले योगों को समझ लेंगे।
- चन्द्रादि योगों के शुभाशुभ फल को समझा सकेंगे।

3.3 चन्द्रादि योग

चन्द्रादि योग से तात्पर्य है – चन्द्रमा ग्रह द्वारा बनने वाला योग। प्राय: फलित ज्योतिष के समस्त ग्रन्थों में चन्द्रादि योग का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। सुनफा, गजकेसरी आदि अनेक योग इसके उदाहरण है। चन्द्रमा को ग्रहों में सूर्य के समान ही राजा कहा गया है। जैसा कि वराहमिहिर कहते है- राजा रवि: शशिधरश्च...0। चन्द्रमा मन का कारक ग्रह है। अत: जातक के मन को सबसे ज्यादा चन्द्रमा ही प्रभावित करता है। प्रस्तुत इकाई में चन्द्रमा से बनने वाले प्रमुख योगों का वर्णन किया जा रहा है। आचार्य वराहमिहिर कृत वृहज्जातकम् नामक ग्रन्थ में चन्द्रमा से बनने वाले योग इस प्रकार है।

3.3.1 चन्द्रमा से बनने वाले योग

सूर्य के स्थान से चन्द्रस्थितवश फल –

अधमसमवरिष्ठार्ककेन्द्रादिसंस्थे।
शशिनि विनयवित्तज्ञानधीनैपुणानि।।

अहनि निशि च चन्द्रे स्वेऽधिमित्रांशके वा।

सुरगुरुसितदृष्टे वित्तवान् स्यात् सुखी च।।

अर्थात् जिसके जन्मकाल में सूर्य के स्थान से चन्द्रमा केन्द्र १,४,७,१० में स्थित हो तो उसके शील,धन, शास्त्रज्ञान, बुद्धि और चातुर्य ये अधम होते हैं अर्थात् नहीं होते हैं। पणफर २,५,८,१ में स्थित हो तो सम अर्थात् न कम न अधिक और आपोक्लिम ३,६,९,१२ में स्थित हो तो वरिष्ठ अर्थात् उत्तम होते हैं।

धनसुख योग – जिसका जन्म दिन में हुआ हो और चन्द्रमा जिस किसी राशि में अपने या अधिमित्र के नवमांश में स्थित हो तथा उसे वृहस्पति देखता हो अथवा रात्रि में जन्म हुआ हो और चन्द्र की उपरोक्त स्थिति हो तथा उसे शुक्र देखता हो तो वह जातक धनवान तथा सुखी होता है।

अधियोग नामक योग –

सौम्यैः स्मरारिनिधनेष्वधियोग इन्दो

स्तस्मिंश्चमूपसचिवक्षितिपालजन्म।

सम्पन्नसौख्यविभवा हतशत्रवंश्च।

दीर्घायुषो विगतरोगभयाश्च जाताः।।

अर्थात् चन्द्रमा के स्थान से छठे-सातवें और आठवें इन तीनों में या दो में अथवा एक ही स्थान में शुभग्रह स्थित हो तो अधियोगनामक योग होता है। यह सात प्रकार का होता है। जैसे – छठे स्थान में सभी शुभग्रह स्थित हो तो एक सातवें में दो आठवें में तीन छठें, सातवें में चार, छठे आठवें में पाँच, सातवें आठवें में छः और छठे सातवें-आठवें में सात।

इस अधियोग में जिसका जन्म हो वह सेनापति मन्त्री या राजा होता है। अर्थात् वे शुभग्रह यदि निर्बल हो तो सेनापति, मध्यबली हो तो मन्त्री और यदि पूर्ण बली हो तो राजा होता है।

इस योग वाले सेनापति मन्त्री या राजा सुखयुत ऐश्वर्ययुत, शत्रुहीन, दीर्घायु और रोगभयविहीन होते हैं। यदि शुभाशुभ ग्रह इन स्थानों में हो शुभाशुभ फल होता है और यदि पापग्रह हो तो पापफल होता है।

हित्वार्क सुनभानभाधुरुधुराः स्वान्त्योभयस्थैर्ग्रहैः।

शीतांशोः कथितोऽन्यथा तु बहुभिः केमद्रुमोऽन्यैस्त्वसौ।।

केन्द्रे शीतकरेऽथवा ग्रहयुते केमद्रुमो नेष्यते।

केचित् केन्द्रनवांशकेषु च वदन्त्युक्तिप्रसिद्धा न ते।।

सूर्य को छोड़कर अन्य पंचतारा ग्रहों में कोई एक यदि चन्द्रमा से दूसरे-बारहवें या दोनों स्थानों में

स्थित हो तो क्रम से सुनफा, अनफा और दुरूधरा ये तीन योग होते हैं अर्थात् दूसरे स्थान सुनफा, बारहवें में अनफा और दोनों में दुरूधरा योग होता है।

इससे अन्यथा अर्थात् चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह नहीं हो तो केमद्रुम योग होता है। ऐसा बहुत आचार्य कहते है। कतिपय आचार्य कहते हैं कि चन्द्रमा अन्य ग्रहों से युक्त हो या लग्न से १,४,७,१० में स्थित हो तो केमद्रुम योग नहीं होता है। कुछ आचार्य कहते हैं कि चन्द्रमा से ४ स्थान में सूर्य को छोडकर कोई ग्रह स्थित हों तो सुनफा दसवें स्थान में अनफा दोनों में दुरूधरा तथा ४,१० स्थान में कोई भी ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है।

सुनफा अनफा आदि योगों के भेद –

त्रिंशत् सरूपा सुनभानभाख्या:।
षष्टित्रयं धौरूधुरा: प्रभेदा:।।
इच्छाविकल्पै: क्रमशोऽभिनीय
नीते निवृत्ति: पुनरप्यनीति:।।

अर्थात् चन्द्रमा से दूसरे स्थान में मंगल बुध, गुरु, शुक्र और शनि इनमें से एक, दो, तीन, चार एवं पाँच ग्रहों के रहने से ३१ प्रकार के सुनफा योग होता है। ऐसे ही १२ वें स्थान से ३१ प्रकार का अनफा योग भी होता है।

२ और १२ वें इन दोनों स्थानों में उक्त ग्रहों में से भिन्न-2 एक और एक, दो और एक, तीन और एक, चार और एक, एक ओर तीन, एक और चार, एक और दो, दो और दो, तीन और दो तथा दो और तीन ग्रहों के रहने पर १८० प्रकार का दुरूधरा योग होता है।

सुनफा अनफा योगों के फल –

स्वयमधिगतवित्त: पार्थिववस्तत्समो वा।
भवति हि सुनभायां धीधनख्यातिमांश्च।।
प्रभुरगदशरीर: शीलवान् ख्यातकीर्ति
र्विषयसुखसुवेषो निर्वृतश्चानभायाम्।।

अर्थात् जिसके जन्मकाल में सुनफायोग हो वह जातक अपने ही कमाये हुए धन से धनवान् और राजा या राजा के समान एवं उत्तम बुद्धि-धन व कीर्ति से युक्त होता है। अनफा योग हो तो वह जातक समर्थ, रोगरहित, शीलयुक्त, विख्यातकीर्ति सांसारिक सुख से युक्त सुन्दर वस्त्राभूषण धारण करने वाला तथा संतुष्ट स्वभाव वाला होता है।

दुरूधरा – केमद्रुम योगों के फल –

उत्पन्नभोगसुखभाग् धनवाहनाढय
स्त्यागान्वितो धुरूधुराप्रभवः सुभृत्यः।
केमद्रुमे मलिनदुःखितनीचनिस्स्वः।
प्रेष्यः खलश्च नृपतेरपि वंशजातः।।

जन्मकाल में दुरूधरा योग हो तो वह जातक किसी तरह से प्राप्त सामग्री से सुखभोगी धन व वाहन से युक्त दाता और सुन्दर दासवाला होता है। जिसके जन्मकाल में केमद्रुम योग हो वह देहादि से मलिन दुःखित नीचकर्म करने वाला निर्धन दासकार्य करने वाला और दुष्टस्वभाव का होता है। यदि वह राजवंश में उत्पन्न हुआ तो तब भी ऐसा ही होता है।

सुनफादि योगकारक भौमादिग्रहवश फल –

उत्साह शौर्यधनसाहसवान् महीजे
सौम्ये पटुः सुवचनो निपुणः कलासु।
जीवेऽर्थधर्मसुखभांक नृपपूजितश्च
कामी भृगौ बहुधनो विषयोपभोक्ता।।

अर्थात् सुनफा अनफा योगकारक यदि मंगल हो तो उक्त योगोत्पन्न जातक उद्यमी, रणप्रिय धनवान तथा साहसी होता है। बुध हो तो चतुर, मीठे वचन वाला, तथा कारीगरी में बहुत निपुण होता है। वृहस्पति हो तो धर्मयुक्त सुखभोगी और राजाओं से पूज्य होता है। शुक्र हो तो कामी बहुत धनवान और विषयभोगी होता है।

योगकारक शनिफल –

परविभवपरिच्छदोपभोक्ता
रवितनये बहुकार्यकृद् गणेशः।
अशुभकृदुडुपोऽह्नि दृश्यमूर्ति
र्गलिततनुश्च शुभोऽन्यथान्यदूह्यम्।।

शनि योगकारक हो तो जातक पराये धन तथा वस्तुओं का भोग करने वाला बहुत से कार्य करने वाला और बहुतों का स्वामी होता है। उक्त योगकारक यदि एक से अधिक ग्रह हों तो केवल योग का ही फल होता है। वहाँ ग्रहों का फल नहीं होता।

दिन में जन्म हो और जन्मकाल में चन्द्रमा दृश्यचक्रार्द्ध (सातवें से लग्न पर्यन्त) में स्थित हो तो अशुभकारक ओर अदृश्यचक्रार्द्ध (लग्न से सातवें स्थान तक) में स्थित हो तो शुभकारक होता है।

यदि रात्रि में जन्म हो तब चन्द्रमा अदृश्यचक्रार्द्ध में स्थित हो तो अशुभकारक और दृश्यचक्रार्ध में स्थित हो तो शुभकारक होता है।

लग्न व चन्द्र से उपचय स्थित शुभग्रहों का फल –

लग्नादतीव वसुमान् वसुमांछशांकात्
सौम्यग्रहैरूपचयोपगतैः समस्तैः।
द्वाभ्यां समोऽल्पवसुमाश्च तदूनताया
मन्येषु सत्स्वपि फलेष्विदमुत्कटेन।।

जन्मकाल में लग्न से उपचय अर्थात् ३,६,१०,११ वें स्थान में सभी शुभग्रह स्थित हों तो वह जातक अतिशय धनवान होता है। यदि चन्द्रमा से उपचय स्थान में सभी शुभग्रह स्थित हो तो धनवान होता है। यदि २ ही शुभग्रह उक्त स्थान में हो तो मध्यम धन वाला होता है। यदि एक ही शुभ ग्रह हो तो अल्प धनवान और यदि कोई ग्रह नहीं हो तो दरिद्र होता है। यदि कुण्डली में अन्य बहुत से कुयोग हों और यह योग हो तो इसी का पूर्ण फल होता है अन्य कुयोगों का फल नहीं होता।

वृहत्पराशरहोराशास्त्र ग्रन्थानुसार कथित चन्द्रादि योग -

अल्पमध्यमोत्तम योग

सहस्त्ररश्मितश्चन्द्रे कण्टकादिगते क्रमात्।
धनधीनैपुणादीनि न्यूनमध्योत्तमानि हि।।

सूर्य से चन्द्रमा यदि केन्द्र (1, 4, 7, 10) में हो तो जातक को धन, बुद्धिमान, यश आदि स्वल्प होता हैं; पणकर (2, 5, 8, 11 भाव) में हो तो मध्यम एवं यदि आपोक्लिम (3, 6, 9, 12 भाव) में हो तो जातक को धन, बुद्धि, कौशलता आदि उत्तम कोटि के होते हैं।

शुभ तथा अशुभ योग

स्वांशे वा स्वाधिमित्रांशे स्थितश्च दिवसे शशी।
गुरुणा दृश्यते तत्र जातो धनसुखान्वितः।।
स्वांशे वा स्वाधिमित्रांशे स्थितश्च शशभृन्निशि।
शुक्रेण दृश्यते तत्र जातो धनसुखान्वितः।।
एतद्विपर्ययस्थे च शुक्रेज्यानवलोकिते।
जायतेऽल्पधनी बालो योगेऽस्मिन्निर्धनोऽथवा।।

जातक का जन्म दिन में हो और चन्द्रमा अपने या अधिमित्र के नवमांश में हो तथा उस पर गुरू की दृष्टि हो तो जातक धनवान और सुखी होता हैं। रात्रि का जन्म हो और चन्द्रमा अपने या

अधिमित्र के नवमांश में स्थित हो, उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धनी और सुखी होता हैं। इससे विपरीत हो और शुक्र ये दृष्ट न हो तो जातक अल्प धनी या निर्धन होता हैं।

अधियोग

चन्द्राद्रन्ध्रारिकामस्थैः सौम्यैः स्यादधियोगकः।
तत्र राजा च मन्त्री च सेनानीश्च बलक्रमात्।।

चन्द्रमा से 8, 6, 7 भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो अधियोग होता हैं। उसमें जन्म लेने वाला जातक ग्रहों के बलाबलानुसार राजा, मन्त्री अथवा सेनानायक होता हैं।

उत्तम-मध्यम-अल्प धनयोग

चन्द्राद् वृद्धिगतैः सर्वैः शुभैर्जातो महाधनी।
द्वाभ्यां मध्यधनो जात एकेनाऽल्पधनो भवेत्।।

चन्द्रमा से वृद्धि (3, 6, 10, 11) स्थान में समस्त शुभ ग्रह बैठे हों तो जातक महाधनी होता हैं। दो शुभ ग्रह हों तो मध्य धनी और एक शुभ ग्रह हो तो जातक अल्प धनी होता हैं।

सुनफा-अनफा तथा दुरूधरा योग

चन्द्रात् स्वान्त्योभयस्थे हि ग्रहे सूर्यं विना क्रमात्।
सुनफाख्योऽनफाख्यश्च योगो दुग्धराह्वयः।।

सूर्य को छोड़कर अन्य ग्रह चन्द्रमा में द्वितीय भाव में हो तो सुनफा, द्वादश भाव में ग्रह हों तो अनफा और दोनों स्थान में ग्रह स्थित हों तो दुरूधरा नामक योग होता है।

सुनफा-अनफा दुरूधरा योगफल-

राजा वा राजतुल्यो वा धीधनख्यातिमांगनः।
स्वभुजार्जितवित्तश्च सुनफायोगसम्भवः।।
भूपोऽगदशरीरश्च शीलवान् ख्यातकीर्तिमान्।
सुरूपश्चाऽनफाजातो सुखैः सर्वैः समन्वितः।।
उत्पन्नसुखभुग् दाता धनवाहनसंयुतः।
सद्भृत्यो जायते नूनं जनो दुरधराभवः।।

सुनफा योग में उत्पन्न जातक राजा ये राजतुल्य, मतिमान, धनी, विख्यात एवं अपने बाहुबल से उपार्जित धन से युक्त होता हैं। अपफा योग में उत्पन्न पुरूष राजा, गद (रोग) से हीन, सुशील, विख्यात, कीर्तियुक्त, सुन्दर तथा समस्त सुख से युक्त होता हैं। दुरधरा नामक योग में जन्म लेने वाला जातक सुखी, दाता, धन-वाहनादि से परिपूर्ण एवं कुशल नौकर वाला होता हैं।

केमद्रुम योग

चन्द्रादाद्यधनाऽन्त्यस्थो विना भानुं न चेद् ग्रहः।
कश्चित् स्याद्वा विना चन्द्रं लग्नात् केन्द्रगतोऽथ वा।।
योगः केमदुरमो नाम तत्र जातोऽतिगर्हितः।
बुद्धिविद्याविहीनश्च दरिद्रापत्तिसंयुतः।।

चन्द्रमा के साथ या चन्द्रमा से 2, 12 भाव में सूर्य को छोड़कर अन्य ग्रह न हों अथवा लग्न से केन्द्र में चन्द्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह न हों तो केमद्रुम नामक योग होता हैं। इनमें जन्म लेने वाला जातक अत्यन्त निन्दित, बुद्धि-विद्या से हीन, दरिद्र और आपत्ति से युक्त होता हैं।

चन्द्रयोग में विशेषता

अन्ययोगफलं हन्ति चन्द्रयोगो विशेषतः।
स्वफलं प्रददातीति बुधो यत्नाद् विचिन्तयेत्।।

पूर्वोक्त शुभाशुभ चन्द्रजन्य योग अन्य योगों का नाश करके अपना फल देता हैं। इसीलिए विद्वानों को यत्नपूर्वक सर्वप्रथम इस योग को देखना चाहिए।

3.4 अन्य विविध योग -

शुभ एवं अशुभ योग

लग्ने शुभयुते योगः शुभः पापयुतेऽशुभः।
व्ययस्वगैः शुभैः पापैः क्रमाद्योगौ शुभाऽशुभौ।।

लग्न शुभ ग्रहों से युक्त हो तो शुभ योग एवं लग्न केवल पाप ग्रहों से युक्त हो तो अशुभ योग होता हैं। यदि लग्न में ग्रह न जो एवं द्वितीय तथा द्वादश में शुभ ग्रह हों तो शुभ योग और द्वितीय-द्वादश में केवल पाप ग्रह हों तो अशुभ योग होता हैं।

शुभाशुभ योग के फल

शुभयोगोद्भवो वाग्मी रूपशीलगुणान्वितः।
पापयोगोद्भवः कामी पापकर्मा परार्थयुक्।।

शुभ योग में उत्पन्न जातक वाचाल तथा रूप, शील एवं गुणों से युक्त होता हैं। अशुभ योग में उत्पन्न जातक कामी, पापकर्मी तथा दूसरे के धन को अपहरण करने वाला होता हैं।

गजकेशरी योग

केन्द्रे देवगुरौ लग्नाच्चन्द्राद्वा शुभदृग्युते।
नीचास्तारिगृहैर्हीने योगोऽयं गजकेशरी।।

गजकेसरिस...तस्तेजस्वी धनवान् भवेत्।

मेधावी गुणसम्पन्नो राजप्रियकरो नरः।।

लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में गुरू हो और केवल शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तथा गुरू नीच, अस्त या शत्रुगृही न हो तो गजकेशरी नामक योग होता हैं। इस **गजकेशरी** योग में जिस जातक का जन्म होता हैं, वह जातक तेजस्वी, धनवान, मेधावी, सभी गुणों से सम्पन्न एवं राजप्रिय होता हैं।

अमल कीर्तियोग

दशमेऽङ्गात्तथा चन्द्रात् केवलैश्च शुभैर्युते।

स योगोऽमलकीर्त्याख्यः कीर्तिराचन्द्रतारकी।।

राजपूज्यो महाभोगी दाता बन्धुजनप्रियः।

परोपकारी धर्मात्मा गुणाढयोऽमलकीर्तिजः।।

लग्न या चन्द्रमा से दशम भाव में केवल शुभग्रह बैठे हों तो अमलकीर्ति नामक योग होता हैं। इस योग में उत्पन्न जातक जब तक चन्द्र, तारायें रहते हैं तब तक कीर्ति युक्त होता हैं और राजपूज्य, महाभोगी, दाता, बन्धुजनों का प्रिय, परोपकारी, धर्मात्मा, गुणी तथा सुन्दर यश से युक्त होता हैं।

पर्वतयोग

सप्तमे चाऽष्टमे शुद्धे शुभग्रहयुतेऽथवा।

केन्द्रेषु शुभयुक्तेषु योगः पर्वतसंज्ञकः।।

भाग्यवान् पर्वतोत्पन्नः वाग्मी दाता च शास्त्रवित्।

हास्यप्रियो यशस्वी च तेजस्वी पुरनायकः।।

सप्तम-अष्टम भाव में कोई ग्रह विद्यमान न हो अथवा केवल शुभ ग्रह हो तथा समस्त शुभ ग्रह केन्द्र में बैठे हों तो पर्वत नामक योग होता हैं। पर्वत योग में समुत्पन्न जातक भाग्यवान, वक्ता, शास्त्रज्ञाता, हास्यप्रिय, यशस्वी, तेजवान और नगराधिपति होता हैं।

काहल योग

सुखेशेज्यौ मिथः केन्द्रगतौ बलिनि लग्नपे।

काहलो वा स्वभोच्चस्थे सुखेशे कर्मपान्विते।।9।।

ओजस्वी साहसी धूर्तश्चतुरङ्गबलान्वितः।

यत्किंचद् ग्रामनाथश्च काहले जायते नरः।।10।।

लग्नाधिपति बलयुक्त हो, सुखेश और गुरू परस्पर केन्द्रगत हों अथवा सुखेश और कर्मेश एक साथ होकर अपने उच्च, स्वराशि में हो तो दोनों तरह से काहल नामक योग होता हैं। इस योग में उत्पन्न जातक ओजस्वी, साहसी, धर्त, चतुर, बली और कुछ गाँवों का अधिपति हाता हैं।

चामरयोग

लग्नेशे तुङ्गे केन्द्रे गुरुदृष्टे तु चामरः।
शुभद्वये विलग्ने वा नवमे दशमे मदे।।

लग्नाधिपति अपने उच्च का होकर केन्द्र में हो और उस पर गुरू की दृष्टि हो अथवा दो शुभ ग्रह लग्न, नवम, दशम या सप्तम में बैठे हों तो चामर नामक योग होता हैं।।

चामरयोग का फल

राजा वा राजपूज्यो वा चिरजीवी च पण्डितः।
वाग्मी सर्वकलाविद्वा चामरे जायते जनः।।

चामर योग में उत्पन्न मनुष्य राजा या राजपूज्य, दीर्घायु, पण्डित, वक्ता और समस्त कलाओं का ज्ञाता होता हैं।

शङ्खयोग

सबले लग्नपे पुत्र-षष्ठपौ केन्द्रेगौ मिथः।
शङ्खो वा लग्नकर्मेशौ चरे बलिनि भाग्यपे।।
धनस्त्रीपुत्रसंयुक्तो दयालुः पुण्यवान् सुधीः।
पुण्यकर्मा चिरंजीवी शङ्खयोगोद्भवो नरः।

लग्नेश बलवान हो और पंचमेश तथा षष्ठेश परस्पर केन्द्र में स्थित हों अथवा भाग्येश बलयुक्त हो और लग्नेश तथा दशमेश चर राशि में बैठे हों तो शङ्ख नामक योग होता हैं। इस योग में उत्पन्न जातक धन, स्त्री, पुत्र से युक्त, दयालु, पुण्यात्मा, बुद्धिमान पुण्यकर्मी और चिरंजीवी होता हैं।

भेरी योग

सबले भाग्यपे भेरी खगैः स्वान्त्योदयास्तगैः।
सबले भाग्यपे वाऽसौ केन्द्रे शुक्रेज्यलग्नपैः।।

भाग्येश बली हो और 2, 12, 1, 7 भावों में सभी ग्रह बैठे हों अथवा भाग्येश बली हो और शुक्र, गुरू तथा लग्नाधिपति केन्द्र में हो तो भेरी नामक योग होता हैं।

भेरी योग का फल

धनस्त्रीपुत्रसंयुक्तो भूपः कीर्तिगुणान्वितः।

अचारवान् सुखी भोगी भेरीयोगे जनो भवेत्।।

भेरी योग में उत्पन्न जातक धन, स्त्री एवं पुत्र से युक्त, राजा, यशस्वी, गुणी, आचारवान्, सुखी और भोगी होता हैं।

मृदंगयोग

सबले लग्नपे खेटाः केन्द्रे कोणे स्वभोच्चगाः।
मृदङ्गयोगो जातोऽत्र भूपो वा तत्समः सुखी।।

लग्नेश बलयुक्त हो और अपने उच्च या स्वराशि में हो तथा अन्य ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो तो मृदङ्ग नामक योग होता हैं। इसमें उत्पन्न जातक सुखी एवं राजा या राजसदृश होता हैं।

श्रीनाथयोग

कामेशे कर्मगे तुङ्गे कर्मेशे भाग्यपान्विते।
योगः श्रीनाथसंज्ञोऽत्र जातः शक्रसमो नृपः।।

सप्तमेश दशम में स्वोच्च का होकर बैठा हो और कर्मेश नवमेश से युक्त हो तो श्रीनाथ नामक योग होता हैं। इसमें उत्पन्न जातक इन्द्र के तुल्य राजा होता हैं।

शारदयोग

कर्मेशे सुतगे केन्द्रे बुधेऽर्के सबले स्वभे।
चन्द्रात् कोणे गुरौ ज्ञे वा कुजे लाभे च शारदः।।
धनस्त्रीपुत्रसंयुक्तः सुखी विद्वान् नृपप्रियः।
तपस्वी धर्मसंयुक्तः शारदे जायते जनः।।

कर्मेश पंचम भाव में हों, बुध केन्द्र में हो और बलयुक्त सुर्य स्वराशि (5) में हो, अथवा चन्द्रमा से कोण (5, 9) में गुरू या बुध हो, आय में भौम हो तो शारद नामक योग होता हैं। इस योग में उत्पन्न जातक धन, स्त्री, पुत्रादि से युक्त, सुखी, विद्वान, राजा का प्रिय, तपस्वी और धार्मिक होता हैं।

मत्स्ययोग

धर्मलग्नगते सौम्ये पंचमे सदसद्युते।
पापे च चतुरस्त्रस्थे योगोऽयं मत्स्यसंज्ञकः।।

धर्म तथा लग्न में शुभ ग्रह बैठे हों, पंचम में शुभ, अशुभ ग्रह बैठे हों, 4, 8 भाव में पाप ग्रह बैठे हों तो मत्स्य नामक योग होता हैं।

मत्स्ययोग का फल

कालज्ञः करुणामूर्तिर्गुणधीबलरूपवान्।

यशोविद्यातपस्वी च मत्स्ययोगे हि जायते॥

मत्स्य योग में उत्पन्न जातक काल को जानने वाला, करूणा का प्रतिरूप, गुरू, बल, रूप, यश, विद्या और तपस्या से युक्त होता हैं॥22॥

कूर्मयोग

पुत्रारिमदगाः सौम्याः स्वभोच्चसुहृदंशगाः।
त्रिलाभोदयगाः पापाः कूर्मयोगः स्वभोच्चगाः॥
कूर्मयोगे जनो भूपो धीरो धर्मगुणान्वितः।
कीर्तिमानुपकारी च सुखी मानवनायकः॥

शुभ ग्रह 5, 6, 7 में हो और पाप ग्रह 3, 11, 1 भाव में, अपने-अपने उच्च, अपनी राशि में बैठे हों तो कूर्मयोग होता हैं। कूर्म योग में उत्पन्न मानव राजा, धीर, धर्मात्मा, गुणी, कीर्तियुक्त, उपकरी, सूखी और मनुष्यों का नायक (नेता) होता हैं।

खड्ग योग

भाग्येशे धनभावस्थे धनेशे भाग्यभावगे।
लग्नेशे केन्द्रकोणस्थे खड्गयोगः स कथ्यते॥
खड्गयोगे समुत्पन्नो धनभाग्यसुखान्वितः।
शास्त्रज्ञो बुद्धिवीर्याव्यः कृतज्ञः कुशलो नरः॥

भाग्येश धनाभाव में हो और धनेश नवम भाव में हो तथा लग्नेश केन्द्र-त्रिकोण में बैठा हो, तो खड्गयोग होता है। खड्ग योग में उत्पनन जातक धन, भाग्य-सुखों से युक्त शास्त्रज्ञाता, बुद्धि तथा बल से युक्त, कृतज्ञ और कुशल मानव होता हैं।

लक्ष्मी योग

केन्द्रे मूलत्रिकोणस्थे भाग्येशे वा स्वभोच्चगे।
लग्नाधिपे बलाढये च लक्ष्मीयोगः प्रकीत्र्यते॥
सुरूपो गुणवान् भूपो बहुपुत्रधनान्वितः।
यशस्वी धर्मसम्पन्नो लक्ष्मीयोगे जनो भवेत्॥

लग्नेश बलवान हो और भाग्येश अपने मूल त्रिकोण या अपने उच्चे अथवा स्वगृह में होकर केन्द्र में बैठा हो तो लक्ष्मी नामक योग होता हैं। इस योग में उत्पन्न जातक सुन्दर, गुणी, राजा, बहुत पुत्र एवं

धन से समन्वित, यशस्वी और धर्मात्मा होता हैं।

कुसुमयोग

लग्ने स्थिरे भृगौ केन्द्रे चन्द्रे कोणे शुभान्विते।
मानस्थानगते सौरे योगोऽयं कुसुमाभिधः।।
भूपो वा भूपतुल्यो वा दाता भोगी सुखी जनः।
कुलमुख्यो गुणी विद्वान् जायते कुसुमाह्वये।।

स्थिर राशि का लग्न हो, शुक्र केन्द्र में और चन्द्रमा त्रिकोण में शुभ ग्रह से युक्त हो और दशम भाव में शनि बैठा हो तो कुसुम योग होता हैं। इसमें उत्पन्न मानव राजा या राजा के समान, दाता, भोगी, सुखी, वंश मे उत्तम, गुणी और विद्वान होता हैं।

कलानिधियोग

द्वितीये पंचमे जीवे बुधशुक्रयुतेक्षिते।
क्षेत्रे तयोर्वा सम्प्राप्ते योगः स च कलानिधिः।
कलानिधिसमुत्पन्नो गुणवान् भूपवन्दितः।
रोगहीनः सुखी जातो धनविद्यासमन्वितः।।

द्वितीय या पंचम भाव में गुरू हो और बुध शुक्र के युत या दृष्ट हो अथवा बुध शुक्र के क्षेत्र में स्थित हो तो कलानिधि योग होता हैं। इस योग में जन्म लेने वाले मनुष्य गुणी, राजपूज्य, नीरोग, सुखी, धनाढय और विद्या से सम्पन्न होते हैं।

कल्पद्रुमयोग

लग्नेश-तद्गतर्क्षेश-तद्रर्क्षेश-तंदशपाः
केन्द्रे कोणे स्वतुङेग वा योगः कल्पद्ुरमो मतः।।
सर्वैश्वर्ययुतो भूपो धर्मात्मा बलसंयुतः।
युद्धप्रियो दयालुश्च पारिजाते नरो भवेत्।।

लग्नाधिप तथा लग्नेशनिष्ठ राशि का स्वामी, पुनः वह जिस राशि में हो उसका स्वामी और उसका नवमांशपति-ये सभी केन्द्र-त्रिकोण में अथवा अपने-अपने उच्च में बैठे हों तो कल्पद्रुम नामक योग होता हैं। इस योग में उत्पन्न जातक समस्त सम्पत्ति से युक्त, राजा, धर्मात्मा, बली, समरप्रिय और दयालु होता हैं।

हरि-हर ब्रह्म-योग

स्वांन्त्याष्टस्थैद्र्वितीयेशाद् हरियोगः शुभग्रहैः।

कामेशाद् बन्धुधर्माष्टस्थितैः सौम्यैर्हराभिधः।।

लग्नेशाद् बन्धुकर्माय-स्थितैब्र्रह्मह्वयः स्मृतः।

एषु जातः सुखी विद्वान् धनपुत्रादिसंयुतः।।

धनाधिप से 2, 8, 12 में शुभ ग्रह हों तो हरि योग होता हैं। सप्तमेश से 4, 9, 8 स्थान में शुभ ग्रह बैठे हों तो हर योग होता हैं। लग्नेश से 4, 10, 11 भाव में शुभ ग्रह हो तो ब्रह्म योग होता हैं। पूर्वाक्त तीनों योगों में उत्पन्न जातक सुखी, विद्वान एवं धन-पुत्रादि से परिपूर्ण होता हैं।

लग्नाधियोग

लग्नान्मदाष्टगैः सौम्यैः पापदृग्योगवर्जितैः।

योगो लग्नाधियोगोऽस्मिन् महात्मा शास्त्रवित्सुखी।।

लग्न से 7, 8 भाव में शुभ ग्रह बैठे हों और उन पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तथा युति भी न हो तो लग्नाधि योग होता हैं। इसमें जन्म लेने वाला मनुष्य महात्मा, शास्त्रज्ञाता और सुखी होता हैं।

पारिजातादि वर्गस्थित लग्नेश फल

लग्नपे पारिजातस्थे सुखी वर्गोत्तमे ह्यरुक्।

गोपुरे धनधान्याढया भूपः सिंहासने स्थिते।।

विद्वान् पारावते श्रीमान् देवलोके सवाहनः।

ऐरावतस्थिते जातो विख्यातो भूपवन्दितः।।

लग्नेश पारिजातादि योग में बैठे हों तो जातक सुखी, अपने वर्गोत्तम में हों तो नीरोग, गोपुरांश में रहने पर धन-धान्य से परिपूर्ण, सिंहासन में हो तो राजा, पारावत में लग्नेश हो तो विद्वान, देवलोक में हो तो श्रीमान् एवं ऐरावतांश में लग्नेश हो तो विख्यात और राजमान्य होता हैं।

बोध प्रश्न –

1. वृहज्जातकम् के लेखक कौन है।
   क.वराहमिहिर ख. कल्याण वर्मा ग. भास्कर घ. कमलाकर
2. निम्न में सुनफा योग किस ग्रह से बनता है।
   क. सूर्य ख. चन्द्रमा ग. भौम घ. गुरु
3. सूर्य को छोड़कर अन्य पंचतारा ग्रहों में कोई एक यदि चन्द्रमा से १२ वें स्थान में कौन सा योग बनता है।
   क. अनफा ख.सुनफा ग. दुरूधरा घ. केमद्रुम
4. धनाधिप से 2, 8, 12 में शुभ ग्रह हो तो योग होता हैं।

क. हरिहर ख. हर ग. कमल घ. चामर

5. शुभ ग्रह 5, 6, 7 में हो और पाप ग्रह 3, 11, 1 भाव में, अपने-अपने उच्च, अपनी राशि में बैठे हों तो कौन सा योग होता हैं।

क. राजयोग ख. केमद्रुम योग ग. कूर्म योग घ. हरि योग

6. सुनफा योग में उत्पन्न जातक कैसा होता है।

क. राजा ख. रंक ग. दानवीर घ. धार्मिक

7. वृहत्पराशर होरा शास्त्र के प्रणेता है।

क. वराहमिहिर ख. पराशर मुनि ग. कमलकार घ. भास्कर

3.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि चन्द्रादि योग से तात्पर्य है – चन्द्रमा ग्रह द्वारा बनने वाला योग। प्राय: फलित ज्योतिष के समस्त ग्रन्थों में चन्द्रादि योग का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। सुनफा, गजकेसरी आदि अनेक योग इसके उदाहरण है। चन्द्रमा को ग्रहों में सूर्य के समान ही राजा कहा गया है। जैसा कि वराहमिहिर कहते है- राजा रवि: शशिधरश्च...0। चन्द्रमा मन का कारक ग्रह है। अत: जातक के मन को सबसे ज्यादा चन्द्रमा ही प्रभावित करता है। जिसके जन्मकाल में सूर्य के स्थान से चन्द्रमा केन्द्र १,४,७,१० में स्थित हो तो उसके शील,धन, शास्त्रज्ञान, बुद्धि और चातुर्य ये अधम होते हैं अर्थात् नहीं होते हैं। पणफर २,५,८,११ में स्थित हो तो सम अर्थात् न कम न अधिक और आपोक्लिम ३,६,९,१२ में स्थित हो तो वरिष्ठ अर्थात् उत्तम होते हैं। जिसका जन्म दिन में हुआ हो और चन्द्रमा जिस किसी राशि में अपने या अधिमित्र के नवमांश में स्थित हो तथा उसे वृहस्पति देखता हो अथवा रात्रि में जन्म हुआ हो और चन्द्र की उपरोक्त स्थिति हो तथा उसे शुक्र देखता हो तो वह जातक धनवान तथा सुखी होता है।

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

चन्द्रादि योग – चन्द्रमा आदि ग्रहों बनने वाला योग।

आर – मंगल

सुनफा – चन्द्रमा से बनने वाला योग

केन्द्र – १,४,७,१० भाव को केन्द्र कहते है।

आपोक्लिम – ३,६,९,१२

केन्द्र – १,४,७,१० स्थान को केन्द्र कहते है।

हरिहर योग – धनाधिप से 2, 8, 12 में शुभ ग्रह हों तो हरि योग होता हैं।

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क

2. ख

3. क

4. क

5. ग

6. क

7.ख

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहज्जातकम् - चन्द्राध्याय:।

2. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – चन्द्रादियोगाध्याय:।

3.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. फलदीपिका – मूल लेखक – आचार्य मन्त्रेश्वर। टिकाकार – गोपेश ओझा।

2. सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा। टिकाकार- मुरलीधर चतुर्वेदी।

3. वृहज्जातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार- आचार्य सत्येन्द्र मिश्र।

4. लघुजातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार – कमलाकान्त पाण्डेय।

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. चन्द्रादि योग से क्या तात्पर्य है।

2. चन्द्रमा से बनने वाले प्रमुख योगों का वर्णन कीजिये।

3. सुनफा, अनफा, दुरूधरा योग एवं उसके फल लिखिये।

4. केमद्रुम योग का विस्तृत वर्णन कीजिये।

5. कूर्म, खड्ग, लक्ष्मी, कुसुम, कलानिधि एवं हरिहर योग का वर्णन कीजिये।

इकाई - 4 दारिद्र्य योग

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 दारिद्र्य योग परिचय
4.3.1 विविध प्रकार के दारिद्र्य योग विचार
4.3.2 अन्य विचार
4.4 सारांश
4.5 पारिभाषिक शब्दावली
4.6 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.8 सहायक पाठ्यसामग्री
4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -104 के प्रथम खण्ड की चतुर्थ इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – दारिद्रय योग। इससे पूर्व आपने चन्द्रादि योग से जुड़े विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'दारिद्रय योग' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

'दारिद्रय योग' से तात्पर्य दरिद्रता अथवा निर्धनता से है। कुण्डली में कैसे ग्रहों की स्थितियों के कारण यह योग उत्पन्न होता है। इस योग के होने से मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। इन सभी विषयों का आप इस इकाई में अध्ययन करेंगे।

आइए इस इकाई में हम लोग 'दारिद्रय योग' के बारे में उसकी विभिन्न स्थितियों एवं शुभाशुभ फलों जानने का प्रयास करते है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- दरिद्र योग को परिभाषित कर सकेंगे।
- विभिन्न प्रकार के दारिद्रय योग से परिचित हो जायेंगे।
- फलित ग्रन्थों में वर्णित दरिद्र योग को समझा सकेंगे।
- दारिद्रय योग के प्रभाव को समझ लेंगे।
- फलादेश कथन में इस योग को प्रतिपादित करने में समर्थ हो सकेंगे।

4.3 दारिद्रय योग

सर्वविदित है कि मानव जीवन सदैव खुशियों से भरा नहीं होता। कभी सुख तो कभी दु:ख और कभी-कभी व्यक्ति किंकर्तव्यविमूढ भी हो जाता है। राजा या दरिद्र होना मानव का उसके कर्मफल पर आधारित है। ज्योतिष शास्त्र में ग्रह योग के आधार पर यह ऋषियों ने अनुसंधान कर पता लगाया है कि कैसे कोई जातक ग्रह के प्रभाव तथा उसके दशादि में दरिद्रता को प्राप्त करता है। विविध ग्रन्थों के आधार पर, ऋषियों एवं आचार्यों के कथनानुसार इस इकाई में आप सभी के ज्ञानार्थ दारिद्रय योग का उल्लेख किया जा रहा है।

दारिद्रय योग का अर्थ है- दरिद्रता या निर्धनता। इस योग के प्रभाव से जातक की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय एवं कमजोर हो जाती है, जिसके फलस्वरूप वह अपने व अपने परिवार का पालन करने में समर्थ नहीं रह जाता है। अतएव आइए सर्वप्रथम वृहत्पराशरहोराशास्त्र के प्रणेता

पराशर मुनि के वचनों का अध्ययन करते हैं। मैत्रेय के पूछे जाने पर आचार्य पराशर जी ने दारिद्रय योग का वर्णन करते हुए इस प्रकार कहा है कि -

मूल श्लोक: -

पराशर उवाच

लग्नेशे च व्ययस्थाने व्ययेशे लग्नमागते।
मारकेशयुते दृष्टे निर्धनो जायते नरः।।
लग्नेशे षष्ठभावस्थे षष्ठेशे लग्नमागते।
मारकेशन युगदृष्टे धनहीनः प्रजायते।।
लग्नेन्दू केतुसंयुक्तौ लग्नपे निधनं गते।
मारकेशयुते दृष्टे जातो वै निर्धनो भवेत्।
षष्ठाष्टमव्ययगते लग्नपे पापसंयुते।
धनेशे रिपुभे नीचे राजवंश्योऽपि निर्धनः।।
त्रिकेशेन समायुक्ते पापदृष्टे विलग्नपे।
शनियुक्तेऽथवा सौम्यैरदृष्टे निर्धनो नरः।।
मन्त्रेशो धर्मनाथश्च क्रमात् षष्ठव्ययस्थितौ।
दृष्टौ चेन्मारकेशेन निर्धनो जायते नरः।।

श्लोक का अर्थ है कि पराशर जी ने कहा – यदि लग्नेश व्यय भाव में हो और व्ययेश लग्न में हो तथा मारकेश से युत या दृष्ट हो तो जातक निर्धन होता हैं। लग्नेश षष्ठ में हो और षष्ठेश लग्न में हो तथा मारकेश से युत या दृष्ट हो तो जातक धनहीन होता हैं। लग्न या चन्द्रमा केतु से युत हो और लग्नेश अष्टम में हो तथा मारकेश से युत या दृष्ट हो तो जातक निर्धन होता हैं। लग्नेश 6, 8, 12 भाव में हो; पाप ग्रह से युक्त हो तथा धनेश अपनी नीच राशि का हो या शत्रुभाव में हो तो जातक राजवंश में उत्पन्न होने पर भी निर्धन होता हैं। त्रिक (6, 8, 12) स्थान के स्वामी से युक्त तथा शनि से युक्त लग्नेश हो, पाप ग्रह से दृष्ट एवं शुभ ग्रह से अदृष्ट हो तो जातक निर्धन होता हैं। पंचमेश षष्ठ में एवं नवमेश व्यय भाव में हो और मारकेश से दृष्ट हो तो जातक निर्धन होता हैं।

पापग्रहे लग्नगते राज्यधर्माधिपौ विना।
मारकेशयुते दृष्टे जातः स्यान्निर्धनो भवेत्।।
त्रिकेशा यत्र भावस्था तद्भावेशास्त्रिकस्थिताः।
पापदृष्टयुता बालो दुःखाक्रान्तश्च निर्धनः।।

चन्द्राक्रान्तनवांशेशो मारकेशयुतो यदि।
मारकस्थानगो वाऽपि जातोऽत्र निर्धनो नरः।।
लग्नेशलग्नभागेशौ रिष्फरन्ध्रारिगौ यदि।
मारकेशयुतौ दृष्टौ जातोऽसौ निर्धनो नरः।।
शुभस्थानगताः पापाः पापस्थानगताः शुभाः।
निर्धनो जायते बालो भोजनेन प्रपीडितः।।
कोणेशदृष्टिहीना ये त्रिकेशैः संयुता ग्रहाः।
ते सर्वे स्वदशाकाले धनहानिकराः स्मृताः।।
कारकाद् वा विलग्नाद् वा रन्ध्रे रिष्फे द्विजोत्तम!।
कारकाङगपयोर्दृष्टया धनहीनः प्रजायते।।

यदि दशमेश और नवमेश को छोड़कर अन्य पाप ग्रह लग्नगत हों तथा मारकेश से युक्त या दृष्ट हों तो जातक निर्धन होता हैं। त्रिक (6, 8, 12) स्थान के स्वामी जिस भाव में हों और उन भावों के स्वामी 6, 8, 12 भाव में बैठे हों तथा पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो तो जातक दुःखों से आक्रान्त एवं निर्धन होता हैं। चन्द्राक्रान्त नवमांश का स्वामी यदि मारकेश से युत या मारक स्थानगत हो तो जातक निर्धन होता हैं। लग्नेश तथा लग्न का नवंमाशपति दोनों 6, 8, 12 में मारकेश के साथ हो या दृष्ट हो तो जातक निर्धन होता हैं। शुभग्रह की राशि में पाप ग्रह और पाप ग्रह की राशि में शुभ ग्रह बैठे हों तो जातक भोजन से भी पीड़ित रहता हैं और निर्धन होता हैं। जो ग्रह त्रिकोणेश की दृष्टि से हीन हो और 6, 8, 12 के स्वामी से युक्त हो उस ग्रह की दशा या अन्तर्दशा-काल में धन की हानि होती हैं। आत्मकारक से या लग्न से 8, 12 भाव में आत्मकारक और लग्नेश की दृष्टि हो तो भी जातक धनहीन (दरिद्र) होता हैं।।

कारकेशो व्ययं स्वस्मात् लग्नेशो लग्नतो व्ययम्।
वीक्षते चेत्तदा बालो व्ययशीलो भवेद् ध्रुवम्।।

आत्मकारक राशि का स्वामी कारक से द्वादश भाव को एवं लग्नेश लग्न से द्वादश भाव को देखते हों तो जातक अधिक खर्च करने वाला होता हैं।।

दारिद्रयभंग योग -

अथ दारिद्रययोगांस्तु कथयामि सभङगकान्।
धनसंस्थौ तु भौमार्की कथितौ धननाशकौ।।
बुधेक्षितौ महावित्तं कुरुते नात्र संशयः।

निःस्वतां कुरुते तत्र रविर्नित्यं यमेक्षितः।।

महाधनयुतं ख्यातं शन्यदृष्टः करोत्यसौ।

शनिश्चापि रवेर्दृष्टया फलमेवं प्रयच्छति।।

अर्थात् यदि धनभाव में भौम-शनि हों तो धननाशक योग होता हैं; परन्तु यदि उन पर बुध की दृष्टि हो तो जातक महाधनी होता हैं-इसमें कोई सन्देह नहीं हैं। धनभाव में रवि हो और उस पर शनि की दृष्टि हो तो जातक निर्धन होता है; किन्तु यदि शनि की दृष्टि नहीं हो तो जातक महाधनी होता हैं। धनभाव में शनि हो और उस पर सूर्य की दृष्टि रहे तो जातक निर्धन होता हैं, परन्तु रवि की दृष्टि न हो तो जातक महाधनी होता हैं।

जातकपारिजात के अनुसार दरिद्र योग –

भाग्येश्वरादतिबलो निधनेश्वरो वा

लग्नाधिपस्त्रिदशनाथगुरुर्यदि स्यात्।।

केन्द्राद्बहिर्दिनकरस्य कराभितप्तो।

लाभाधिपो यदि विहीनबलो दरिद्रः।।

अर्थात् अष्टम भाव का स्वामी यदि भाग्याधिपति से बलवान हो अथवा लग्न, तृतीय या दशम भाव का स्वामी वृहस्पति हो और केन्द्रेतर भाव में सूर्य सान्निध्य से निस्तेज एवं निर्बल होकर स्थित हो तथा एकादश भाव का स्वामी बलहीन हो तो जातक दरिद्र होता है।

लाभारिव्ययरन्ध्रपुत्रगृहगा जीवारमन्देन्दुजा।

नीचस्थानगता यदा रविकरच्छन्नास्तदा भिक्षुकः।।

भाग्यस्थानगतो दिनेशतनयः सौम्येतरैरीक्षितो

लग्नस्थः शशिनन्दनो रवियुतो नीचांशगो भिक्षुकः।।

यदि वृहस्पति, भौम, शनि और बुध लग्न से ११,६,१२,८,५ वें भावों में स्थित हो तथा अपनी-2 नीच राशि में हो अथवा सूर्यरश्मि से निस्तेज हों तो जातक भिक्षुक होता है। यदि शनि भाग्यस्थान में स्थित हो तथा उस पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि हो, सूर्य के साथ बुध अपनी नीच राशि के नवमांश में लग्नस्थ हो तो जातक भिक्षुक होता है।

जीवज्ञशुक्ररविनन्दनभूमिपुत्रा

रन्ध्रारिरिः फसुतकर्मगता यदि स्यात्।

लग्नेश्वरादतिबली व्ययभावनाथो

नीचस्थितो रविकराभिहतो दरिद्रः।।

वृहस्पति, बुध, शुक्र शनि और मंगल यदि ८,६,१२,५,१० भावों में स्थित हो तथा रि:फेश १२ लग्नेश से बलवान हो और अपनी नीचराशि में सूर्यरश्मियों से आहत होकर निस्तेज हो तो इस योग में उत्पन्न जातक दरिद्र होता है।

लग्ने चरे चरनांशगतेऽसितेन।
दृष्टे च नीचगुरुणा यदि भिक्षुक: स्यात्।
जातो विनाऽमरपुरोहितलग्नराशिं
जीवे रिपुव्ययगते तु भवेद्दरिद्र:।।

अर्थात् लग्न में चरराशि और चरराशि का नवांश हो और शनि तथा नीचराशि के वृहस्पति से दृष्ट हो तो जातक भिक्षुक होता है। जन्मकाल में गुरु स्वराशि से भिन्न राशि का होकर यदि ६,१२ में हो तो जातक दरिद्र होता है।

उदाहरण –

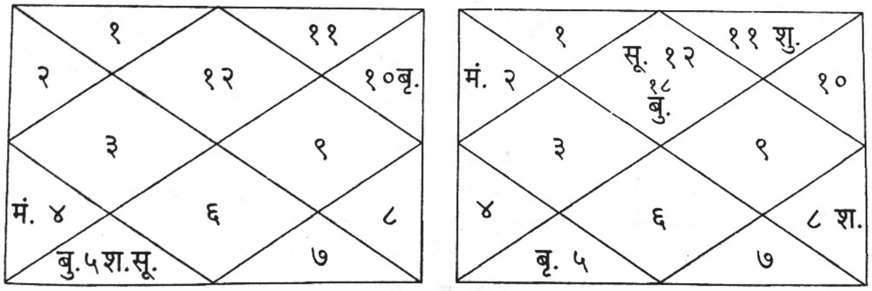

दरिद्रयोग

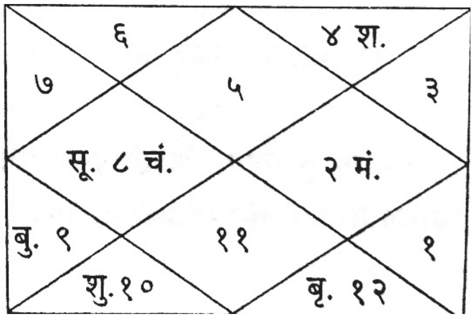

दरिद्र योग

फलदीपिका ग्रन्थ के अनुसार दारिद्रय योग –

दुस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमा
द्धावैः स्युस्त्ववयोगनिः स्वमृतयः प्रोक्ताः कुहूः पामरः।
हर्षो दुष्कृति रित्यथापि सरलो निर्भाग्यदुर्योगकौ
योगा द्वादश ते दरिद्रविमले प्रोक्ता विपश्चिज्जनैः।।

श्लोक का अर्थ है कि यदि लग्न या लग्नेश अशुभ ग्रह से युत या देखा जाता हो और लग्नेश दुःस्थान में हो तो अवयोग होता है। जो अवयोग में जन्म लेता है उसकी स्थिति बहुत चंचल होती है। ऐसा व्यक्ति असज्जनों के साथ रहता है, न उसका शरीर अच्छा रहता है, न उसका चरित्र अच्छा होता है। जातक स्वल्पायु और अप्रसिद्ध रहता है, और **घोर दरिद्रता** तथा अपमान को प्राप्त करता है। फलदीपिका के रचयिता मन्त्रेश्वर जी का कथन है कि लग्न और लग्नेश के बलवान होने से समस्त कुण्डली का सुधार हो जाता है, अन्यथा कुण्डली निरर्थक हो जाती है।

अप्रसिद्धिरतिदुसहदैन्यं स्वल्पमायुरवमानमसद्धिः।
संयुतः कुचरितः कुतनुः स्याच्चंचलस्थितिरिहाप्यवयोगे।।
सुवचनशून्यो विफलकुटुम्बः कुजनसमाजः कदशनचक्षुः।
मतिसुतविद्याविभवविहीनो रिपुहृतवित्तः प्रभवति निःस्वे।।

यदि दूसरे गृह का स्वामी पापग्रह से युत अथवा देखा जाता हो या ६,८,१२ इन तीनों स्थानों में से कहीं हो और दूसरे घर में पापग्रह बैठे हों या पापग्रह दूसरे भाव को देखते हो तो 'निःस्वयोग' होता है। जिसके पास अपना कुछ नहीं होता अर्थात् वह **दरिद्र** होता है। यहाँ निःस्व का अर्थ दरिद्र है। ऐसे जातक के दाँत और नेत्र खराब होते है। वह कटुवाणी बोलता है। उसका कुटुम्ब भी विफल होता है। द्वितीय भाव से विचारणीय समस्त विषयों धनादि का उसे सदैव अभाव रहता है।

अरिपरिभूतः सहजविहीनो
मनसि विलज्जो हतबलवित्तः।
अनुचितकर्मश्रमपरिखिन्नो
विकृतिगुणः स्यादिति मृतियोगे।।

यदि तृतीय स्थान का स्वामी दुःस्थान में स्थित हो और तृतीय भवन और तृतीयेश अशुभ ग्रहों से युत या देखा जाता हो तो **'मृति'** योग होता है। ऐसे योग में उत्पन्न मनुष्य शुत्रुओं से पराजित, अनुचित कर्म करने वाला, परिश्रम से खिन्न और निर्लज्ज होता है। उसके बल और धन का हरण हो जाता है और उसे भाई-बहन का सुख भी नहीं मिलता। ऐसा व्यक्ति अनियंत्रित होता है।

मातृवाहनसुहृत्सुखभूषाबन्धुभिर्विरहित: स्थितिशून्य:।
स्थानमाश्रितमनेन हतं स्यात् कुस्त्रियामभिरत: कुहुयोगे।।

अर्थात् यदि लग्न से चतुर्थ गृह या चतुर्थेश अशुभ ग्रहों से युत या देखा जाता हो और चतुर्थेश ६,८,१२ इन स्थानों में से किसी में हो, तो कुहूयोग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक को माता, वाहन, मित्र, आभूषण तथा बन्धुओं का सुख प्राप्त नहीं होता। चतुर्थ गृह सुख स्थान कहलाता है और इस गृह के खराब हो जाने से मनुष्य सुखहीन होता है। ऐसे व्यक्ति को कहीं आश्रय नहीं मिलता। कोई न कोई संकट सदैव बना रहता है।

विशेषत: यहाँ टिकाकार का कथन है कि शनि यदि चौथे घर में हो और चौथे घर का स्वामी भी अशुभ हो तो बुढ़ापा बहुत दरिद्रता में व्यतीत होती है। नीचे दी गयी कुण्डली में जातक का युवावस्था में तो राज योग रहा किन्तु बुढ़ापा अत्यन्त दरिद्रता में व्यतीत हुआ।

उदाहरण –

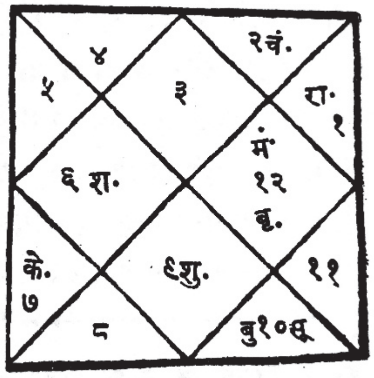

पित्रार्जितक्षेत्रगहादिनाशकृत्
साधून गुरुन्निन्दति धर्मवर्जित:।
प्रत्नातिजीर्णाम्बरधृच्च दुर्गतो
निर्भाग्ययोगे बहुदु:खभाजनम्।।

यदि कुण्डली के नवें स्थान का स्वामी लग्न से ६,८,१२ वें भाव में हो और नवमेश तथा नवम गृह पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो या वहाँ अुशभ ग्रह बैठे हों तो **'निर्भाग्य'** योग होता है। जो व्यक्ति इस योग में पैदा होता है वह बहुत दु:ख उठाने वाला, पुराने कपड़े पहनने वाला तथा दुर्गति को प्राप्त करता है। नवम भाव धर्म भाव है यह बिगड़ने से मनुष्य साधुओं और गुरुओं की निन्दा करता है। ऐसे व्यक्ति को जो कुछ पैत्रिक सम्पत्ति प्राप्त होती वह भी सब नष्ट हो जाती है और वह परम दरिद्रता को प्राप्त

करता है।

ऋणग्रस्त उग्रो दरिद्राग्रगण्यो
भवेत्कर्णरोगी च सौभ्रात्रहीन:।
अकाग्रप्रवृत्तो रसाभासवादी
परप्रेष्यक: स्याद् दरिद्राख्ययोगे।।

अर्थात् यदि जन्मकुण्डली में ११ वें भाव का स्वामी दु:स्थान में हो तो **दारिद्रय योग** होता है। भावेश दु:स्थान में हो और वह अशुभ ग्रहों से देखा जाता हो तो विविध योग होते है। किन्तु इसका अपवाद है कि यदि भाव में सर्वत्र अशुभ ग्रह होने से अशुभ योग बने तो एकादश भाव में पापग्रह बैठने से दारिद्रय योग बनता चाहिये? किन्तु ज्योतिषियों का आप्त वाक्य है कि लाभे सर्वे प्रशस्त:। सारावली में भी कल्याण वर्मा ने लिखा है कि –

लग्नस्था: सुखसंस्था: दशमस्थापि कारका: सर्वे।
एकादशमपि केचित् वांछन्ति न तन्मतं मुनीन्द्राणाम्।।

अत: इसका अर्थ है कि यदि एकादशेश त्रिक ६,८,१२ में हो या अशुभ ग्रहों से युत हो अथवा देखे जाते हो तो दारिद्रय योग होता है। जिसकी जन्मकुण्डली में यह योग हो वह कर्जदार, अत्यन्त दरिद्र, कान की बीमारी से पीड़ित, अच्छे भाईयों से हीन, दुष्कर्म करने वाला, अप्रशस्त वचन बोलने वाला, दूसरे का नौकर और दु:ख उठाने वाला होता है।

बोध प्रश्न –

1. फलदीपिका के लेखक कौन है?
   क.मन्त्रेश्वर ख. कल्याण वर्मा ग. भास्कर घ. कमलाकर
2. यदि लग्नेश व्यय भाव में हो और व्ययेश लग्न में हो तथा मारकेश से युत या दृष्ट हो तो जातक क्या होता हैं?
   क. सुखी ख. दु:खी ग. निर्धन घ. राजा
3. निम्न में त्रिक् स्थान कौन सा है।?
   क. १,४,७ ख.६,८,१२ ग. ४,९,१२ घ. २,५,८
4. यदि धनभाव में भौम-शनि हों तो कौन सा योग होता है?
   क. धनवृद्धि योग ख. धननाशक योग ग. राज योग घ. कोई नहीं
5. यदि कुण्डली के नवें स्थान का स्वामी लग्न से ६,८,१२ वें भाव में हो और नवमेश तथा नवम गृह पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो या वहाँ अुशभ ग्रह बैठे हों तो योग होता है?

क. निर्भाग्य ख. चामर योग ग. कूर्म योग घ. धनहीन

6. यदि जन्मकुण्डली में ११ वें भाव का स्वामी दु:स्थान में हो तो क्या होता है?

क. दारिद्रय ख. राज ग. दानवीर घ. धार्मिक

4.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि सर्वविदित है कि मानव जीवन सदैव खुशियों से भरा नहीं होता। कभी सुख तो कभी दु:ख और कभी-कभी व्यक्ति किंकर्तव्यविमूढ भी हो जाता है। राजा या दरिद्र होना मानव का उसके कर्मफल पर आधारित है। ज्योतिष शास्त्र में ग्रह योग के आधार पर यह ऋषियों ने अनुसंधान कर पता लगाया है कि कैसे कोई जातक ग्रह के प्रभाव तथा उसके दशादि में दरिद्रता को प्राप्त करता है। विविध ग्रन्थों के आधार पर, ऋषियों एवं आचार्यों के कथनानुसार इस इकाई में आप सभी के ज्ञानार्थ दारिद्रय योग का उल्लेख किया जा रहा है।
दारिद्रय योग का अर्थ है- दरिद्रता या निर्धनता। इस योग के प्रभाव से जातक की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय एवं कमजोर हो जाती है, जिसके फलस्वरूप वह अपने व अपने परिवार का पालन करने में समर्थ नहीं रह जाता है।

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

दारिद्रय योग – निर्धन योग।

लग्नेश – लग्न का स्वामी

त्रिक् – ६,८,१२ स्थान।

केन्द्र – १,४,७,१० भाव को केन्द्र कहते है।

आपोक्लिम – ३,६,९,१२

त्रिकोण – ५,९ स्थान को त्रिकोण कहते है।

पणफर – २,५,८,११

व्यय भाव – १२ वाँ भाव

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. ग
3. ख

4. ख

5. क

6. क

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – दारिद्रय योगाध्याय:।

2. जातकपारिजात – जातकभंगाध्याय:।

2. फलदीपिका – षष्ठाध्याय:।

4.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. फलदीपिका – मूल लेखक – आचार्य मन्त्रेश्वर। टिकाकार – गोपेश ओझा।

2. सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा। टिकाकार- मुरलीधर चतुर्वेदी।

3. वृहज्जातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार- आचार्य सत्येन्द्र मिश्र।

4. लघुजातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार – कमलाकान्त पाण्डेय।

5. सर्वार्थचिन्तामणि – मूल लेखक – श्री वेंकटेश

6. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ

4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. दारिद्रय योग से क्या तात्पर्य है।

2. पराशरोक्त दारिद्रय योग का वर्णन कीजिये।

3. फलदीपिका के अनुसार दारिद्रय योग लिखिये।

4. दारिद्रय योग पर टिप्पणी लिखिये।

5. स्वकल्पित उदाहरण द्वारा दारिद्रय योग एवं दारिद्रय भंग योग को समझाइये।

इकाई - 5 मारक योग

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 मारक योग परिचय
5.3.1 विभिन्न प्रकार के मारक योग का विचार
5.3.2 मारक योग का प्रभाव
5.4 सारांश
5.5 पारिभाषिक शब्दावली
5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर
5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
5.8 सहायक पाठ्यसामग्री
5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -104 के प्रथम खण्ड की पाँचवी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – मारक योग। इससे पूर्व आपने फलित ज्योतिष से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'मारक योग' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

मारक योग का अर्थ है- मृत्युतुल्य कष्ट प्रदान करने वाला योग। वस्तुत: कुण्डली में प्रधानतया द्वितीय एवं सप्तम भाव को मारक स्थान कहा गया है। इसलिए द्वितीयेश एवं सप्तमेश मारकेश कहे जाते हैं। अष्टम स्थान मृत्यु का होता है। आप मारक योग के कारक ग्रहों के साथ-साथ अन्य मारक योग के बारे में इस इकाई में अध्ययन करेंगे।

आइए इस इकाई में हम लोग 'मारक योग' के बारे में तथा उसके फलित सिद्धान्तों को जानने का प्रयास करते है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- मारक योग को परिभाषित कर सकेंगे।
- मारक योग के कारक ग्रह को जान लेंगे।
- मारक ग्रह कौन-कौन होते हैं, यह बता सकेंगे।
- कुण्डली फलादेश में मारक योग को समझा सकेंगे।
- मारक योग का महत्व जान लेंगे।

5.3 मारक योग

मृत्यु मानव जीवन का शाश्वत् सत्य है। कोई भी जीव इस मृत्युलोक में जन्म लेने के पश्चात् एक न एक दिन मृत्यु को अवश्य ही प्राप्त होता है, इसमें कथमपि संशय नहीं है। ज्योतिष शास्त्र कुण्डली के ग्रहों के आधार पर मारक योग का निर्धारण करता है। कुण्डली में २ एवं ७ वें स्थान को मारक स्थान कहते है। अष्टम स्थान मृत्यु का होता है। इन्हीं स्थानों एवं उनमें स्थित ग्रहों के आधार पर एवं अन्यान्य आधार पर भी ऋषियों ने मारक योग की कल्पना की है। यद्यपि हम सब जानते है कि जीवन-मृत्यु सब विधि के हाथ से नियन्त्रित होता है। तथापि एकमात्र ज्योतिष शास्त्र मारक योग का निर्धारण करने में सक्षम है। अत: इस इकाई में हम ऋषियों द्वारा अनुसन्धान किये गये उन्हीं

विविध मारक योगों का आपके ज्ञानार्थ उल्लेख करने जा रहे है।

वृहत्पराशर होराशास्त्र में आचार्य पराशर जी ने मैत्रेय से मारक योग का वर्णन करते हुए कहा कि -

मूल श्लोकः -

पराशर उवाच

तृतीयमष्टमस्थानमायुःस्थानं द्वयं द्विज!।
मारकं तद्व्ययस्थानं द्वितीयं सप्तमं तथा।।
तत्रापि सप्तमस्थानाद् द्वितीयं बलवत्तरम्।
तयोरीशौ तत्र गताः पापिनस्तेन संयुताः।।
ये खेटाः पापिनस्ते च सर्वे मारकसंज्ञकाः।
तेषां दशाविपाकेषु सम्भवे निधनं नृणाम्।।
अल्प-मध्यम-पूर्णायुः प्रमाणमिह योगजम।
विज्ञाय प्रथमं पुंसां मारकं परिचिन्तयेत्।।

पराशर ने मैत्रेय से कहा कि हे द्विज! प्राणियों के तृतीय तथा अष्टम स्थान आयुस्थान होते हैं। इन दोनों के व्यय स्थान, द्वितीय तथा सप्तम भाव मारक स्थान होते हैं। उन दोनों मारक स्थानों में द्वितीय स्थान प्रबल मारक स्थान होता हैं। उन (सप्तम, द्वितीय) स्थानों के तथा उन (सप्तम, द्वितीय) स्थानों में रहने वाने पाप ग्रह, द्वितीयेश तथा सप्तमेश के साथ रहने वाले पाप ग्रह-ये सभी मारक-संज्ञक होते हैं। उन्हीं ग्रहों की दशा या अन्तर्दशा में अल्प, मध्य, पूर्णायु आयुर्दाय के अनुरूप मृत्यु की सम्भावना होती हैं। अतएव पहले योगज के अनुसार अल्प, मध्य, दीर्घ आदि आयुर्दाय का ज्ञान करके तदनन्तर मारक का विचार करना चाहिए।

अलाभे पुनरेतेषां सम्बन्धेन व्ययेशितुः।
क्वचिच्छुभानां च दशास्वष्टमेशदशासु च।
केवलानां च पापानां दशासु निधनं क्वचित्।
कल्पनीयं बुधैर्नृणां मारकाणामदर्शने।।

गणित से समुत्पन्न आयुर्दाय के योगानुसार प्राणियों को पूर्वकथित मारक का समय उपलब्ध न हो तो व्ययेश के सम्बन्धी शुभ ग्रह की दशा में भी मरण होता हैं एवं अष्टमेश की दशा में या केवल पाप ग्रह की दशा में भी कभी-कभी मरण होता हैं। इस प्रकार पूर्वोक्त मारकेश के अभाव में प्राणियों के मरण का विचार विद्वानों को कल्पना द्वारा करना चाहिए।

सत्यपि स्वेन सम्बन्धे न हन्ति शुभभुक्तिषु।

हन्ति सत्यप्यसम्बन्धे मारकः पापभुक्तिषु।।

मारक-कारक ग्रह अपने सम्बन्धी होने पर भर शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में नहीं मारता परन्तु अपने से सम्बन्धित न होने पर भी पापग्रह की अन्तर्दशा में मृत्युदायक होता हैं।

मारकग्रहसम्बन्धान्निहन्ता पापकृच्छनिः।
अतिक्रम्येतरान् सर्वान् भवत्यत्र न संशयः।।

यदि शनि पाप फलप्रद हो और मारकेश के साथ उसका सम्बन्ध (दृष्ट, युतादि) हो तो सभी मारक-कारक ग्रहों को हटाकर स्वतः मारक होता हैं, इसमें सन्देह नहीं हैं।

अथाऽन्यदपि वक्ष्यामि द्विज! मारकलक्षणम्।
त्रिविधाश्चायुषो योगाः स्वल्पायुर्ममध्यमोत्तमाः।।
द्वात्रिंशत् पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततः परम्।
चतुष्षष्ट्याः पुरस्तात्तु ततो दीर्घमुदाहृतम्।।
उत्तमायुः शतादूध्र्वं ज्ञातव्यं द्विजसत्तम!।
जनैर्विंशतिवर्षान्तमायुर्ज्ञातुं न शक्यते।।
जप-होम-चिकित्साद्यैर्बालरक्षां हि कारयेत्।
म्रियन्ते पितृदोषैश्च केचिन्मातृग्रहैरपि।।
केचित् स्वारिष्टयोगाच्च त्रिविधा बालमृत्यवः।
ततः परं नृणामायुर्गणयेद् द्विजसत्तम!।।

हे द्विज! और भी मारक ग्रह के लक्षण कहता हूँ। पूर्व में जो अल्पायु, मध्यमायु और पूर्णायु - यह तीन प्रकार का आयुर्दाय बताया गया हैं, उनमें 32 वर्ष से पूर्व अल्पायु, तदनन्तर 64 वर्षपर्यन्त मध्यमायु और उसके बाद 100 वर्ष तक दीधायु तथा 100 वर्ष से ऊपर उत्तमायु जानना चाहिए। 20 वर्ष तक जातकों के आयुर्दाय का निर्धारण करना कठिन होता हैं। अतः जन्म से 20 वर्ष तक पापग्रहों से रक्षा हेतु जप-होम, चिकित्सादि द्वारा जातक की रक्षा करनी चाहिए। 20 वर्ष तक कोई पिता के दोष से, कोई माता के दोष से, कोई अपने पूर्वार्जित कुकर्म से उत्पन्न अरिष्ट योगों से मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। अतः बाल्यावस्था में मरण के तीन कारण होते हैं। इसलिए 20 वर्ष के बाद ही आयुर्दाय का गणित करके आयु का निर्धारण करना चाहिए।

अथाऽन्यदपि वक्ष्यामि नृणां मारकलक्षणम्।
अल्पायुर्योगजातस्य विपद्भे च मृतिर्भवेत्।।
मध्यायुर्योगजस्यैवं प्रत्यरौ च मृतिर्भवेत्।

दीर्घायुर्योगजातस्य वधभे तु मृतिर्भवेत्।।
द्वाविंशत्र्यंशपश्चैव तथा वैनाशिकाधिपः।
विपत्तारा-प्रत्यरीशा वधभेशस्तथैव च।।
आद्यन्तपौ च विज्ञेयौ चन्द्राक्रान्तगृहाद् द्विज!।
मारकौर पापखेटौ तौ शुभौ चेद्रोगदौ स्मृतौ।।
षष्ठाधिपदशायां च नृणां निधनसम्भवः।
षष्ठाष्टरिष्फनाथानामपहारे मृतिर्भवेत्।।
मारका बहवः खेटा यदि वीर्यसमन्विताः।
तत्तद्दशान्तरे विप्र! रोगकष्टादिसम्भवः।।
उक्त ये मारकास्तेषु प्रबलो मुख्यमारकः।
तदवस्थानुसारेण मृतिं वा कष्टमादिशेत्।

हे द्विज! और भी मारक के लक्षण कहता हूँ। अल्पायु योग में जन्म लेने वाले जातक का विपत्ति नामक तारा में, मध्यमायु वालों को प्रत्यरि नामक तारा में और दीर्घायु योग में जन्म लेने वालों को वध नामक तारा में मारण की सम्भावना करनी चाहिए। लग्न के द्रेष्काण से 22 वाँ जो द्रेष्काण हो, उसका जो स्वामी हो उसमें, वैनाशिक नक्षत्र (अपने जन्मनक्षत्र में 23 वाँ नक्षत्र) का स्वामी एवं विपत्, प्रत्यरी, वध ताराओं के स्वामी चन्द्रमा जिस राशि में हो, उससे द्वितीय तथा द्वादश स्थान के स्वामी, दोनों पापी ग्रह हो तो ये सब मारक-कारक होते हैं। यदि दोनों शुभ ग्रह हों तो रोगकारक होते हैं। षष्ठेश की दशा में भी मरण की सम्भावना होती है। मारकेश की महादशा में षष्ठेश, अष्टमेश तथा द्वादशेश की अन्त्रतदशा में भी मृत्यु की सम्भावना रहती हैं। यदि बहुत मारक-कारक ग्रह हों तो उनमें जो ग्रह सर्वाधिक बलयुक्त हो उसकी दशा या अन्तर्दशा में मरण या रोगादि कष्टकारक समय का प्रादुर्भाव होता हैं। उक्त मारकेश कारक ग्रहों में सबसे बली ग्रह ही मुख्य मारक होता हैं। अतः उस ग्रह की अवस्था के अनुरूप जातक का मरण या कष्टदायक समय का भय जानना चाहिए।

राहु-केतु का मारकत्वविवेचन

राहुश्चेदथवा केतुर्लग्ने कामेऽष्टमे व्यये।
मारकेशान्मदे वाऽपि मारकेशेन संयुतः।।
मारकः स च विज्ञेयः स्वदशान्तर्दशास्वपि।
मकरे वृश्चिके जन्म राहुस्तस्य मृतिप्रदः।।
षष्ठाऽष्टरिष्फगो राहुस्तद्दाये कष्टदो भवेत्।

शुभग्रहयुतो दृष्टो न तदा कष्टकृन्मतः।।

राहु अथवा केतु लग्न में, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में हो अथवा मारकेश से सप्तम में हो या मारकेश से युक्त हो तो वह भी मारक होता हैं। अतः उसकी दशा या अन्तर्दशा में मरण का भय होता हैं। मकर और वृश्चिक लग्न में जन्म लेने वालों के लिए राहु मारक होता हैं। उसकी दशा या अन्तर्दशा में मृत्यु की सम्भावना होती है। षष्ठ, अष्टम, द्वादश में राहु स्थित हो तो उसकी दशा में कष्टदायक होता हैं। यदि उस पर शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट न हो तो कष्टकारक नहीं होता।

तृतीय स्थान से मरण कारण-कथन

लग्नातृतीयभावे तु बलिना रविणा युते।
राजहेतोश्च मरणं तस्य ज्ञेयं द्विजोत्तम!।।
तृतीये चेन्दुना युक्ते दृष्टे वा यक्ष्मणा मृतिः।
कुजेन व्रणशस्त्राग्नि-दाहाद्यैर्मरणं भवेत्।।
तृतीये शनि-राहुभ्यां युक्ते दृष्टेऽपि वा द्विज!।
विषार्तितो मृतिर्वाच्या जलाद्वा वह्निपीडनात्।।
गर्तादुच्चात् प्रपतनाद् बन्धनाद् वा मृतिर्भवेत्।
तृतीये चन्द्रमान्दिभ्यां युक्ते वा वीक्षिते द्विज!।।
कृमिकुष्ठादिना तस्य मरणं भवति ध्रुवम्।
तृतीये बुधसंयुक्ते वीक्षिते वापि तेन च।।
ज्वरेण मरणं तस्य विज्ञेयं द्विजसत्तम!।
तृतीये गुरुणा युक्ते दृष्टे शोफादिना मृतिः।।
तृतीये भृगुयुग्दृष्टे मेहरोगेण तन्मृतिः।
बहुखेटयुते तस्मिन् बहुरोग भवा मृतिः।।

लग्न से तृतीय भाव बलवान रवि से युत हो तो राजा के कारण से उसकी मृत्यु होती है। तृतीय भाव चन्द्रमा से युत या दृष्ट हो तो यक्ष्म (क्षय) रोग से उसकी मृत्यु होती हैं। यदि तृतीय भाव मंगल से युक्त या दृष्ट हो तो व्रण (घाव) या अग्नि से, तृतीय में शनि, राहु से युत या दृष्ट हो तो विष से या जल से अथवा अग्निपीड़ा से या गड्डे में गिरकर या उच्च स्थान से गिरकर या बन्धन से उसकी मृत्यु हो जाती हैं। तृतीय भाव में चन्द्रमा और मान्दि (गुलिक) युक्त हो या दृष्ट हो तो कीड़े से अथवा कुष्ठादि रोग से, तृतीय भाव में बुध से युक्त हो या दृष्ट हो तो ज्वर से, तृतीय भाव में गुरू से युक्त या दृष्ट हो तो शोफ आदि रोग से, तृतीय भाव में शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो प्रमेह रोग से उसकी मृत्यु हो जाती हैं।

यदि तृतीय भाव में बहुत ग्रहों के योग अथवा दृष्टि हो तो उन सभी ग्रहों के कारणों से उस जातक की मृत्यु जाननी चाहिए।

मरण का स्थान-कथन

तृतीये च शुभैर्युक्ते शुभदेशे मृतिर्भवेत्।
पापैश्च कीकटे देशे मिश्रैर्मिश्रस्थले मृतिः।।

यदि तृतीय भाव शुभ ग्रह से युत अथवा दृष्ट हो तो शुभ स्थान (काशी आदि पुण्य तीर्थों) में मरण होता हैं। यदि तृतीय भाव पापी ग्रहों से युक्त हो या दृष्ट हो तो अशुभ स्थान में मरण होता हैं। शुभ तथा अशुभ दोनों ग्रह तृतीय भाव में बैठे हो या देखते हो तो मध्यम स्थान में उस जातक का देहावसान होता हैं।

ज्ञानाज्ञानपूर्वक मरणयोग

तृतीये गुरुशुक्राभ्यां युक्ते ज्ञानेन वै मृतिः।
अज्ञानेनाऽन्यखेटैश्च मृतिर्ज्ञेया द्विजोत्तम!।।

तृतीय भाव गुरू-शुक्र युक्त हो तो वह जातक ज्ञानपूर्वक मरता हैं। हे द्विजोत्तम! अन्य ग्रह तृतीय भाव में स्थित हों तो जातक का अज्ञानपूर्वक मरण होता हैं।।33।।

मरण देशज्ञान

चरराशौ तृतीयस्थे परदेशे मृतिर्भवेत्।
स्थिरराशौ स्वगेहे च द्विस्वभावे पथि द्विज!।।

तृतीय भाव में चर राशि हो तो परदेश में मरण होता हैं। स्थिर राशि हो तो स्वदेश में एवं द्विस्वभाव राशि हो तो मार्ग में मरण करना चाहिए।

अष्टमस्थ ग्रह से मृत्यु का कारण-ज्ञान

लग्नादष्टमभावाच्च निमित्तं कथितं बुधैः।
सूर्येऽष्टमेऽग्नितो मृत्युश्चन्द्रे मृत्युर्जलेन च।
शस्त्राद् भौमे ज्वराज्ज्ञे च गुरौ रोगात् क्षुधा भृगौ।
पिपासया शनौ मृत्युर्विज्ञेयो द्विजसत्तम!।।

लग्न से अष्टम भाव में सूर्य स्थित हो तो अग्नि के माध्यम से उसकी मृत्यु विद्वानों ने कही हैं। अष्टम चन्द्र हो तो जल से, अष्टम मंगल हो तो शस्त्र से, अष्टम बुध हो तो ज्वर से, अष्टमस्थ गुरू हो

तो रोग से, शुक्र हो तो क्षुधा से और अष्टम शनि हो तो प्यास से उस जातक की मृत्यु हो जाती हैं।

तीर्थातीर्थ में करण-कथन

अष्टमे शुभदृग्युक्ते धर्मपे च शुभैर्युते।
तीर्थे मृतिस्तदा ज्ञेया पापाख्यैरन्यथा मृतिः।।

अष्टम भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो और धर्मेश शुभ ग्रह से युत हो तो वह जातक किसी तीर्थ में देह-त्याग करता हैं। अष्टम पापग्रह से युत, दृष्ट हो और धर्मेश पापग्रह से युत हो तो तीर्थ से अन्यत्र मरण कहना चाहिए।

शवपरिणाम

अग्न्यम्बु मिश्रभत्र्यंशैर्ज्ञेयो मृत्युर्गृहाश्रितैः।
परिणामः शवस्याऽत्र भस्मसंक्लेदशोषकैः।।
व्यालवर्गदृकाणैस्तु विडम्बो भवति ध्रुवम्।
शवस्य स्वश्रृगालाद्यैर्गृध्रकाकादिपक्षिभिः।।

लग्न से अष्टम स्थान में अग्नि तत्व वाले ग्रह का द्रेष्काण हो अर्थात् अशुभ ग्रह का द्रेष्काण हो तो जातक का शव अग्नि में जलाया जाता हैं। जलचर वाले ग्रह का द्रेष्काण हो तो जल में फेंका जाता हैं। मिश्र (शुभ तथा अशुभ) का द्रेष्काण रहने से जातक का शव सूख जाता हैं। यदि व्याल (सर्प) द्रेष्काण हो तो कुक्कुर, श्रृगालादि हिंसक जन्तुओं से या कौवा आदि पक्षियों से चंचु द्वारा चोंच से नोचकर शव का भक्षण किया जाता हैं।

व्याल द्रेष्काणकथन

कर्कटे मध्यमोऽन्त्यश्च वृश्चकाद्याद्वितीयकौ।
मीनेऽन्तिमस्त्रिभागैश्च व्यालवर्गाः प्रकीर्तिताः।।

कर्कट राशि के द्वितीय तथा तृतीय दे्रष्काण, वृश्चिम राशि के प्रथम तथा द्वितीय द्रेष्काण एवं मीन राशि के तृतीय द्रेष्काण को व्याल वर्ग (सर्प द्रेष्काण) कहते हैं।

पूर्वजन्म-योनि और स्थान-कथन

रविचन्द्रबलाक्रान्तं त्र्यंशनाथे गुरौ जनः।
देवलोकात् समायातो विज्ञेयो द्विजसत्तम!।।
शुक्रेन्द्वोः पितृलोकात्तु मत्र्याच्च रविभौमयोः।
बुधाऽऽक्र्योर्नरकादेवं जन्मकालाद्वदेत् सुधीः।।

राशि और चन्द्रमा में जो बली हो वह ग्रह यदि गुरू के द्रेष्काण में हो तो जातक देवलोक ये आया है अर्थात् वह इससे पूर्वजन्म में देवलोक में रहता था, ऐसा जानना चाहिए। यदि शुक्र या चन्द्रमा के दे्रष्कण में हो तो वह पितृलोक (चन्द्रलोक) से आया हैं। इसी प्रकार रवि-भौम के द्रेष्काण में मृत्युलोक से एवं बुध या शनि के द्रेष्काण में हो तो वह जातक नरक से आया है, ऐसा जानना चाहिए।

मरण के अनन्तर गन्तव्य स्थान

गुरुश्चन्द्रसितौ सूर्यभौमौ ज्ञार्की यथाक्रमम्।
देवेन्दुभूम्यधोलोकान् नयन्त्यस्तारिरन्ध्रगाः।।

लग्न से 7, 6, 8 भावों में गुरू गया हो तो जातक देवलोक में जाता हैं एवं उक्त स्थानों में चन्द्रमा-शुक्र हो तो जातक चन्द्रलोक (पितृलोक) में जाता हैं तथा सूर्य-मंगल हो तो मत्र्य (भूलोक) में और बुध-शनि उक्त भावों में स्थित हो तो अधोलोक (नरक) में मरण के अनन्तर जातक जाता हैं। उक्त स्थानों मे अधिक ग्रह बैठे हो तो जो ग्रह सर्वाधिक बली हो, वह ग्रह जिस लोक का कारक हो, उसी लोक में मरण के बाद जातक जाता हैं।

अथ तत्र ग्रहाभावे रन्ध्रारित्र्यंशनाथयोः।
यो बली स निजं लोके नयत्यन्ते द्विजोत्तम!।।

हे द्विजोत्तम! यदि 6।7।8 भावों में ग्रह नहीं हो तो षष्ठ और अष्टम भाव के द्रेष्काणाधिप में जो ग्रह बली हो, उस ग्रह के लोक में मरण के पश्चात् जीव चला जाता हैं।।

तस्य स्वोच्चादिसंस्थित्या वरमध्याऽधमाः क्रमात्।
तत्तल्लोकेऽपि संजाता विज्ञेया द्विजसत्तम!।।

हे द्विजोत्तम! पूर्वकथित भावों में पूर्वोक्त ग्रह की उच्चादि स्थितिरश उस लोक में भी जीव को उत्तम, मध्यम एवं अधम पंक्ति में जानना चाहिए। अर्थात् उच्चस्थ ग्रह हो तो देव आदि लोकों में वह जीव श्रेष्ठ, नीच में हो तो नीच श्रेणी का और मध्य में ग्रह हो तो मध्यम श्रेणी का होता हैं।

अन्यान् मारकभेदांश्च राशिग्रहकृतान् द्विज!।
दशाध्यायप्रसडेगषु कथयिष्यामि सुव्रत!।।

श्लोकार्थ है कि हे द्विज! अन्य जो ग्रह तथा राशि के माध्यम से मारक भेद हैं, उन सभी को दशाध्याय-प्रसंग में कहूँगा।

अब यहाँ वृहत्पराशरहोराशास्त्र के पश्चात् अन्य मन्त्रेश्वर द्वारा लिखित ग्रन्थ फलदीपिका से मारक योग का विचार करते हैं।

फलदीपिका के अनुसार मारक अथवा मृत्यु योग विचार –

शशांकसंयुक्तदृगणपूर्वत:।
खरत्रिभागेशगृहं गतेऽपि वा।।
त्रिकोणगे वा मरणं शरीरिणां
शशिन्यथ स्यात्तनुरन्ध्ररि:फगे।।

अर्थात् मृत्यु के समय चन्द्रमा कहाँ होगा? निम्न स्थानों में चन्द्रमा की स्थिति हो सकती है-

1. जन्मकालीन जिस द्रेष्काण में चन्द्रमा हो उसमें जब गोचर वश चन्द्रमा आ जाये।

2. जन्मकाल में चन्द्रमा जिस स्थान पर है वहाँ से गणना करने पर जो बाइसवाँ द्रेष्काण हो उस २२ वें द्रेष्काण के स्वामी की राशि में।

3. ऊपर 4. लग्न में 5. लग्न से अष्टम में 6. लग्न से द्वादश में। इनमें से कहीं भी चन्द्रमा की स्थिति हो सकती है।

निधनेश्वरगतराशौ भानाविन्दौ तु भानुगतराशौ।
निधनाधिपसंयुक्ते नक्षत्रे निर्दिशेन्मरणम्।।

अर्थात् यदि जन्म लग्न से अष्टम का स्वामी जहाँ स्थित हो उस राशि में सूर्य गोचरवश जा रहा हो और चन्द्रमा जिस राशि में जन्मकुण्डली में बैठा हो उस में जा रहा हो अथवा जन्म लग्न से अष्टमेश जन्मकुण्डली में जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र में चन्द्रमा गोचरवश हो तो जातक की मृत्यु हो सकती है।

तिष्ठन्त्यष्टमरि: फषष्ठपतयो रन्ध्रत्रिभागेश्वरो।
मान्दिर्यद्भवनेषु तेष्वपि गृहेष्वार्कीडयसूर्येन्दव:।।
सर्वे चारवशात्प्रयान्ति हि यदा मृत्युस्तदा स्यान्नृणां
तेषामंशवशाद्वदन्तु निधनं तत्तत्त्रिकोणेऽपि वा।।

अर्थात् कुण्डली में निम्न की स्थितयाँ देखनी चाहिए-

1.अष्टमेश

2.व्ययेश

3. षष्ठेश

4. अष्टम भाव मध्य जिस द्रेष्काण में है उसका स्वामी

5. मान्दि।

जब गोचरवश शनि, गुरु, सूर्य और चन्द्र उपर्युक्त ६,८,१२ राशियों में जा रहे हो तो जातक की मृत्यु हो सकती है।

बोध प्रश्न –

1. कुण्डली में मारक स्थान कौन होता है।

   क. २, ७ ख. ५,८ ग. १,५ घ. ६,१२

2. पराशर जी के अनुसार मृत्यु का स्थान है?

   क. २,५ ख. ३,८ ग. १,४ घ. ५,७

3. निम्न में मारकेश होता है।

   क. लग्न का स्वामी ख.मारक स्थान का स्वामी ग. द्वितीय का स्वामी घ. कोई नहीं

4. लग्न से अष्टम स्थान में अग्नि तत्व वाले ग्रह का द्रेष्काण हो अर्थात् अशुभ ग्रह का द्रेष्काण हो तो जातक के शव का क्या होता है।

   क. अग्नि में दाह ख. जल में बहना ग. पक्षी भोजन घ. पशु भोजन

5. लग्न से 7, 6, 8 भावों में गुरू गया हो तो जातक मृत्यु के बाद कहाँ जाता हैं

   क. नरक लोक में ख. देवलोक में ग. पाताल में घ. नाग लोक में

6. तृतीय भाव गुरू-शुक्र युक्त हो तो वह जातक कैसे मरता हैं।

   क. ज्ञानपूर्वक ख. अज्ञानता में ग. नींद में घ. कार्य करते हुए

7. निम्न में मन्त्रेश्वर लिखित ग्रन्थ का नाम क्या है।

   क. जातकपारिजात ख. फलदीपिका ग. वृहत्संहिता घ. ग्रहलाघव

5.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि मृत्यु मानव जीवन का शाश्वत् सत्य है। कोई भी जीव इस मृत्युलोक में जन्म लेने के पश्चात् एक न एक दिन मृत्यु को अवश्य ही प्राप्त होता है, इसमें कथमपि संशय नहीं है। ज्योतिष शास्त्र कुण्डली के ग्रहों के आधार पर मारक योग का निर्धारण करता है। कुण्डली में २ एवं ७ वें स्थान को मारक स्थान कहते है। अष्टम स्थान मृत्यु का होता है। इन्हीं स्थानों एवं उनमें स्थित ग्रहों के आधार पर एवं अन्यान्य आधार पर भी ऋषियों ने मारक योग की कल्पना की है। यद्यपि हम सब जानते है कि जीवन-मृत्यु सब विधि के हाथ से नियन्त्रित होता है। तथापि एकमात्र ज्योतिष शास्त्र मारक योग का निर्धारण करने में सक्षम है।

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

मारक योग – मृत्यु देने वाला योग।

मारक स्थान – २,७,८

चन्द्र लोक – पितृ लोक

अधो लोक – भू लोक अथवा नरक लोक

आपोक्लिम – ३,६,९,१२

केन्द्र – १,४,७,१० स्थान को केन्द्र कहते है।

त्रिक स्थान - ६ ,८,१२

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क

2. ख

3. ख

4. क

5. ख

6. क

7.ख

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहज्जातकम् - चन्द्राध्याय:।

2. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – चन्द्रादियोगाध्याय:।

5.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. फलदीपिका – मूल लेखक – आचार्य मन्त्रेश्वर। टिकाकार – गोपेश ओझा।

2. सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा। टिकाकार- मुरलीधर चतुर्वेदी।

3. वृहज्जातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार- आचार्य सत्येन्द्र मिश्र।

4. लघुजातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार – कमलाकान्त पाण्डेय।

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. मारक योग से क्या तात्पर्य है।

2. महर्षि पराशर द्वारा प्रणीत प्रमुख मारक योगों का वर्णन कीजिये।

3. कुण्डली में मारक स्थान कौन होता है। उससे मारक योग का निर्धारण कैसे करते है।

4. मारक योग पर टिप्पणी लिखिये।

खण्ड - 2

दशा साधन

इकाई - 1 विंशोत्तरी दशा साधन

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 विंशोत्तरी दशा साधन परिचय

1.3.1 गणितीय पक्ष

1.3.2 विंशोत्तरी दशा साधन - वृहत्पराशर के अनुसार

1.4 सारांश

1.5 पारिभाषिक शब्दावली

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई MAJY-202 के द्वितीय खण्ड की पहली इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – विंशोत्तरी दशा साधन। इससे पूर्व आपने विभिन्न योगों से जुड़े विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में दशाओं के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

'दशा का सामान्य अर्थ है – स्थिति। जातक के जीवन में कालानुरोधेन उसकी किस कालखण्ड में क्या स्थिति है। इसका ज्ञान दशाओं के माध्यम से किया जाता है। विंशोत्तरी दशा १२० वर्षों की होती है। इसी को आधार मानकर भारत के अधिकाधिक भूभाग में कुण्डली का फलादेश किया जाता है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'विंशोत्तरी दशा साधन' के बारे में उसकी गणितीय सिद्धान्तों को जानने का प्रयास करते है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- विंशोत्तरी दशा को परिभाषित कर सकेंगे।
- ग्रहों की आयु दशा वर्ष से परिचति हो जायेंगे।
- विंशोत्तरी दशा का साधन कर सकेंगे।
- विंशोत्तरी दशा के महत्व को बता सकेंगे।

1.3 विंशोत्तरी दशा साधन

ऋषियों ने त्रिकाल (भूत, वर्तमान तथा भविष्य) का शुभाशुभ जानने के लिए दशा का निर्माण किया है। दशा अनेक प्रकार की होती है। उनमें विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी तथा योगिनी का प्रचार विशेष है। सामान्यतया दशा का शाब्दिक अर्थ है – काल की स्थिति। कालानुरोधेन किसी जातक के ऊपर क्या-क्या प्रभाव पड़ेगा। इसका ज्ञान दशाओं के माध्यम से ही किया जाता है। वर्तमान समय में देश के पूर्वोत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में प्राय: विंशोत्तरी दशा का उपयोग विशेष रूप से करते हैं। सिन्ध, पंजाबादि में योगिनी दशा तथा दक्षिण मध्य भारत तथा गुजरात में अष्टोत्तरी दशा को व्यवहार में विशेष रूप से ग्रहण करते हैं। परन्तु शास्त्रीय वचन इस विषय में कुछ भिन्न एवं अनेक है-

दशाप्यष्टोत्तरी शुक्ले कृष्णे विंशोत्तरी मता। (मानसागरी ग्रन्थानुसार)

अर्थात् शुक्ल पक्ष में जन्म हो तो अष्टोत्तरी दशा तथा कृष्ण पक्ष में जन्म हो तो विंशोत्तरी दशा लेनी चाहिए।

दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता। (लघुपराशरी के अनुसार)

नक्षत्र पर से साधित दशा विंशोत्तरी ही लेनी चाहिए। अष्टोत्तरी दशा नहीं। इसी श्लोक का पाठान्तर प्राचीन विद्वानों के घर में हस्त लिखित ग्रन्थों में निम्नलिखित मिलता है। दशा विंशोत्तरी ग्राह्या मता चाष्टोत्तरी तथा विंशोत्तरी दोनों दशायें फलाफल के विचार के लिए उपयुक्त हैं।

कृष्णपक्षे दिवाजात: शुक्लपक्षे यदा निशि।
विंशोत्तरी दशा प्रोक्ताऽन्यत्राप्यष्टोत्तरी स्मृता।।

कृष्ण पक्ष में दिन में तथा शुक्ल पक्ष में रात्रि में जन्म हो तो विंशोत्तरी दशा ग्रहण करनी चाहिए। इसके विपरीत हो तो अष्टोत्तरी।

गुर्जरे कच्छसौराष्ट्रे पांचाले सिन्धुपर्वते।
एतेष्वष्टोत्तरी श्रेष्ठाऽन्यत्र विंशोत्तरी मता।।

गुजरात, कच्छ, काठियावाड़ सौराष्ट्र, पांचाल पंजाब, तथा सिन्धु पर्वत में अष्टोत्तरी दशा ग्रहण करनी चाहिए। अन्यत्र विंशोत्तरी दशा को ग्रहण करें।

विंशोत्तरी दशा १२० वर्ष की होती है। इसमें सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र इनकी क्रमश: दशा रहती है। इन्हीं वारों के क्रम से कृत्तिकादि २७ नक्षत्रों की तीन आवृत्ति हो जाने से एक-एक ग्रह में तीन-तीन नक्षत्र रहते हैं।

विंशोत्तरी दशा चक्र –

ग्रह दशा क्रम	**सूर्य**	**चन्द्रमा**	**मंगल**	**राहु**	**गुरु**	**शनि**	**बुध**	**केतु**	**शुक्र**
दशा वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
नक्षत्र	कृ. उ0फा0, उ0षा0	रो, ह, श्र.	मृ. चि. ध.	आ. स्वा. श.	पु. वि. पू.	पु. अ. उ.भा.	आश. ज्ये. रे	म. मू. अ.	भ. पू. फा., पू.षा.

जातक का जन्म नक्षत्र जिस ग्रह के कोष्ठक में पड़े, वह उसकी जन्म दशा होगी। उस दशा का जन्म समय में व्यतीत काल नक्षत्र के भयात पर से निकाला जाता है। अर्थात् भभोग काल में दशा के पूरे वर्ष मिलते हैं तो भयात काल में कितने मिलेंगे? इस अनुपात द्वारा व्यतीत वर्षादि का मान आ जायेगा। उसको दशा वर्ष में घटाने से दशा का भोग्य मान शेष रहेगा। जन्म के पश्चात् दशा का भोग्य मान भोग लेने के अनन्तर दूसरे ग्रह की दशा प्रारम्भ होगी। उसके बाद अन्य ग्रहों की दशा चलती

रहेगी।

विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान बोधक चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ — कृ. उ. फा. उषा.

ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८
चं.	०	६	०
मं.	०	४	६
रा.	०	१०	२४
वृ.	०	९	१८
श.	०	११	१२
बु.	०	१०	६
के.	०	४	६
शु.	१	०	०

चंद्रदशावर्ष १० — रोहि. ह. श्रवण

ग्र.	व.	मा.	दि.
चं.	०	१०	०
मं.	०	७	०
रा.	१	६	०
वृ.	१	४	०
श.	१	७	०
बु.	१	५	०
के.	०	७	०
शु.	१	८	०
र.	०	६	०

भौमदशा वर्ष ७ — मृ. चि. ध.

ग्र.	व.	मा.	दि.
मं.	०	४	२७
रा.	१	०	१८
वृ	०	११	६
श.	१	१	९
बु.	०	११	२७
के.	०	४	२७
शु.	१	२	०
र.	०	४	६
चं.	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८ — आर्द्रा. स्वा. शत.

ग्र.	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२
वृ.	२	४	२४
श.	२	१०	६
बु.	२	६	१८
के.	१	०	१८
शु.	३	०	०
र.	०	१०	२४
चं.	१	६	०
मं.	१	०	१८

गुरुदशा वर्ष १६ — पुन. वि. पू. भा.

ग्र.	व.	मा.	दि.
वृ.	२	१	१८
श.	२	६	१२
बु.	२	३	६
के.	०	११	६
शु.	२	८	०
र.	०	९	१८
चं.	१	४	०
मं.	०	११	६
रा.	२	४	२४

शनिदशा वर्ष १९ — पुष्य अनु. उ. भा.

ग्र.	व.	मा.	दि.
श.	३	०	३
बु.	२	८	९
के.	१	१	९
शु.	३	२	०
र.	०	११	१२
चं.	१	७	०
मं.	१	१	९
रा.	२	१०	६
वृ.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७ — आश्ले. ज्ये. रेवती

ग्र.	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७
के.	०	११	२७
शु.	२	१०	०
र.	०	१०	६
चं.	१	५	०
मं.	०	११	२७
रा.	२	६	१८
वृ.	२	३	६
श.	२	८	९

केतुदशा वर्ष ७ — मघा. मू. अश्वि.

ग्र.	व.	मा.	दि.
के.	०	४	२७
शु.	१	२	०
र.	०	४	६
चं.	०	७	०
मं.	०	४	२७
रा.	१	०	१८
वृ.	०	११	६
श.	१	१	९
बु.	०	११	२७

शुक्रदशा वर्ष २० — पू. फा. पू. षा. भ.

ग्र.	व.	मा.	दि.
शु.	३	४	०
र.	१	०	०
चं.	१	८	०
मं.	१	२	०
रा.	३	०	०
वृ.	२	८	०
श.	३	२	०
बु.	२	१०	०
के.	१	२	०

1.3.1 गणितीय पक्ष

दशा का भुक्त तथा भोग्य काल ज्ञान –

भयात (चन्द्र साधन में जो साधित होता है) के घटी पल के मान को पलात्मक बनाकर उन्हें जन्म नक्षत्र से प्राप्त दशा वर्ष संख्या से गुणा करें और गुणनफल में भभोग के घटी, पलों के पलात्मक मान से भाग देने से प्राप्त लब्धि संख्या वर्ष होगी। शेष को १२ से गुणाकर भभोग पलात्मक का भाग देने से लब्ध मास होंगे। शेष को ३० से गुणाकर पलात्मक भभोग का भाग देने पर लब्ध संख्या दिन होंगे। पुन: शेष को ६० से गुणाकर पलात्मक भभोग पल का भाग देने पर लब्धि संख्या घटी होगी। इस प्रकार पल भी आयेंगे। यह वर्षादि संख्या दशा का भुक्त मान होगा। उसे दशा वर्ष में घटाने से शेष दशा का भोग्य मान होगा।

मान लिया कि किसी जातक का जन्म नक्षत्र मृगशिरा है। भयात २५।४५ तथा भभोग ५६।२० है। कृत्तिकादि नक्षत्र क्रम से गणना करने पर मंगल की महादशा में जन्म हुआ। जिसकी दशा वर्ष संख्या ७ है।

२५ × ६० = १५०० + ४५ = १५४५ पलात्मक भयात

५६ × ६० = ३३६० + २० = ३३८० पलात्मक भभोग

१५४५ × ७ = १०८१५ ÷ ३३८० = ३ वर्ष

३३८०)१०८१५(३ वर्ष

१०१४०

६७५

× १२

३३८०)८१००(२ मास

६७६०

१३४०

× ३०

४०२००

३३८०)४०२००(११ दिन

३३८०

६४००

३३८०
३०२०
× ६०
३३८०)१८१२००(५३ घटी
१६९००
१२२००
१०१४०
२०६०
× ६०
३३८०)१२३६००(३६ पल
१०१४०
२२२००
२०२८०
१९२०

मंगल की दशा - ७।०।०।०।०।०
भुक्त - - ३।२।११।५३।३६ (घटाया)
भोग्य – ३।९।१८।६।२४

जन्म के समय मंगल की दशा वर्षादि ३।२।११।५३।३६ इतनी भुक्त हो चुकी थी और ३।९।१८।६।२४ इतनी वर्षादि दशा शेष थी। इसके बाद १८ वर्ष राहु की दशा रहेगी एवं क्रमश: गुरु,शनि एवं बुध इत्यादि की दशा चलेगी।

1.3.2 विंशोत्तरी दशा साधन – वृहत्पराशर होरा शास्त्र के अनुसार

समस्त चराचर प्राणियों के जीवनकाल में उनका कौन सा समय शुभ है, अथवा कौन सा समय अशुभ हैं, इसका विवेक ज्योतिष शास्त्र के उस अभीष्ट कालावधि में प्रचलित दशा व महादशा के आधार पर होता है। जन्माङ्ग चक्र में ग्रहों की जो शुभाशुभ फल की स्थिति होती है, वही फल उन ग्रहों की दशान्तर्दशाओं में जातक को प्राप्त होता है । विंशोत्तरी दशाओं का प्रचलन विन्ध्य से उत्तर दिशाओं के प्रान्तों में है। दशाओं के सम्बन्ध में **आचार्य पराशर ने वृहत्पराशरहोराशास्त्र** के दशाध्याय में प्रतिपादित किया है –

दशा: बहुविधास्तासु मुख्या विंशोत्तरी मता ।
कैश्चिदष्टोत्तरी कैश्चित् कथिता षोडशोत्तरी ।।

द्वादशाब्दोत्तरी विप्र दशा पञ्चोत्तरी तथा।
दशा शतसमा तद्वत् चतुराशीतिवत्सरा।।
द्विसप्ततिसमा षष्टिसमा षट्त्रिंशवत्सरा।
नक्षत्राधाररिकाश्चैताः कथिताः पूर्वसूरिभिः।।

अर्थात् दशा के अनेक भेद है, परन्तु उनमें भी मुख्य दशा **विंशोत्तरीय** दशा है, जो सर्वसाधारण के लिए हितकारी है। अन्य विद्वानों ने अष्टोत्तरी, षोडशोत्तरी, द्वादशोत्तरी, पञ्चोत्तरी, शताब्दि, चतुरशीतिसमा, द्विसप्ततिसमा, षष्टिसमा, षट्त्रिंशत्समा आदि ये सभी जन्मनक्षत्राधारित दशाओं की चर्चा की हैं।

एवं च –

अथ कालदशा चक्रदशा प्रोक्ता मुनीश्वरैः।
कालचक्रदशा चाऽन्या मान्या सर्वदशासु या।।
दशाऽथ चरपर्याया स्थिराख्या च दशा द्विज।
केन्द्राद्या च दशा ज्ञेया कारकादिग्रहोद्भवा।।
ब्रह्मग्रहाश्रितर्क्षाद्या दशा प्रोक्ता तु केनचित्।
माण्डूकी च दशा नाम तथा शूलदशा स्मृता।।
योगार्धजदशा विप्र दृग्दशा च ततः परम्।
त्रिकोणाख्या दशा नाम तथा राशिदशा स्मृता।।
पञ्चस्वरदशा विप्र विज्ञेया योगिनीदशा।
दशा पिण्डी तथांशी च नैसर्गिकदशा तथ।।

उपर्युक्त प्रसङ्ग के अनुसार दशाओं में कालदशा, चक्रदशा है तथा सभी दशाओं में मान्य कालचक्र दशा कही गयी है। इनके अतिरिक्त चरदशा, स्थिरदशा, केन्द्रदशा, कारकदशा एवं ब्रह्मग्रहदशा भी कही गई है। किसी ने मण्डूकदशा, शूलदशा, योगार्धदशा, दृग्दशा, त्रिकोणदशा, राशिदशा, पञ्चस्वरदशा, योगिनीदशा, पिण्डदशा, नैसर्गिक दशा, अष्टवर्ग दशा, सन्ध्या दशा, पाचक दशा एवं अन्य तारादि विभिन्न दशाभेद कहा है । परन्तु सभी दशायें सर्वसम्मत नहीं हैं अर्थात् व्यवहारोपयोगी नहीं है।

पराशरोक्त सभी दशाओं में नक्षत्र दशा तथा उनमें भी विंशोत्तरी दशा सर्वश्रेष्ठ है। कलौ पाराशरी दशा की प्रसिद्धि के साथ – साथ कलियुग में विंशोत्तरी को ही प्रत्यक्ष फलदायक कहा है -

कलौ प्रत्यक्ष फलदा दशा विंशोत्तरी स्मृता।

अष्टोत्तरी न संग्राह्या मारकार्थं विचक्षणैः।।

साथ ही लघुपराशरी में स्पष्टतया '**दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता**' कहकर विंशोत्तरी दशा को सर्वदशा शिरोमणि कहा है।

दशा, अन्तर्दशा, महादशा का ज्ञान सर्वतोभावेन लोककल्याणकारी है, जिसके ज्ञान से हम किसी भी चराचर प्राणी का व सृष्टि के समस्त पदार्थ का शुभाशुभ फल का ज्ञान करने में समर्थ हो सकते है।

विंशोत्तरी दशा साधन की गणितीय विधि आचार्यों ने नक्षत्रों के आधार पर कहा है, तथा उसके आधार पर किसी जातक के उसके सम्पूर्ण जीवन में होनेवाली शुभाशुभ फल का विधान प्रतिपादित किया है।

विंशोत्तरी दशा साधन -

कृत्तिकातः समारभ्य त्रिरावृत्तय दशाधिपाः।
आ- चं- कु – रा- गु- श- बु -के शुपूर्वा विहगाः क्रमात्।।
वह्निभाज्जन्मभं यावद् या संख्या नवतष्टिता।
शेषाद्दशाधिपो ज्ञेयस्तमारभ्य दशां नयेत्।।
विंशोत्तरशतं पूर्णमायुः पूर्वमुदाहृतम्।
कलौ विंशोत्तरी तस्माद् दशा मुख्या द्विजोत्तम।।

कृत्तिका नक्षत्र से आरम्भ करके क्रम से सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु, गुरू, शनि, बुध, केतु और शुक्र – ये तीन आवृत्ति में दशाधिकारी होते है। कृत्तिका नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनकर जो संख्या हो, उसमें 9 का भाग दें, शेष तुल्य पूर्वोक्त दशा – क्रम से दशाधिप होते हैं। कृत्तिका नक्षत्र से आरम्भ करके पूर्वकथित दशाक्रम से ग्रहों की दशा लगानी चाहिये। कलियुग में 120 वर्ष की पूर्णायु कही गई है। अतः अन्य दशाओं की अपेक्षा विंशोत्तरी दशा ही प्रमुख मानी जाती है।

रव्यादि ग्रहों के दशावर्ष -

दशासमाः क्रमादेषां षड् दशाऽश्वा गजेन्दवः।
नृपालाः नवचन्द्राश्च नगचन्द्रा नगा नखाः।।

सूर्यादि नवग्रहों के दशावर्ष संख्या क्रम से ये हैं – 6, 10, 7, 18, 16, 19,17,7, 20।

अर्थात् सूर्य – 6 वर्ष, चन्द्रमा के – 10 वर्ष, मंगल – 7 वर्ष, राहु – 18 वर्ष, गुरू – 16 वर्ष, शनि – 19 वर्ष, बुध – 17 वर्ष, केतु – 7 वर्ष, शुक्र – 20 वर्ष।

लग्न और सूर्यादि ग्रहों के दशाक्रम –

उदयरविशशांकप्राणिकेन्द्रादिसंस्थाः।

प्रथमवयसि मध्येऽन्त्ये च दद्यु: फलानि।।

नहि न फलविपाक: केन्द्रसंस्थाद्यभावे।

भवति हि फलपक्ति: पूर्वमापोक्लिमेऽपि।।

अर्थात् सूर्य – चन्द्र इन तीनों में जो अधिक बलवान हो पहले उसकी दशा होती है फिर उसके बाद केन्द्र स्थान में स्थित ग्रहों की दशा होती है। यह दशा जीवन के प्रथमवय में होती है। उसके बाद मध्यवय में प्रथमवय में होती है। उसके बाद मध्यवय में प्रथमदशाप्रद से पणफरस्थित ग्रहों की दशा होती है। उसके बाद अन्तवय में प्रथमदशा प्रद से आपोक्लिम स्थित ग्रहों की दशा होती है।

दशा वर्ष –

आयु: कृतं येन हि यत्तदेव

कल्प्या दशा सा प्रबलस्य पूर्वा।

साम्ये बहूनां बहुवर्षदस्य

तेषां च साम्ये प्रथमोदितस्य।।

जिस ग्रह की जितनी आयुर्दाय हो, उसकी उतनी ही दशा होती है। यह दशा भी बलानुसार होती है। इसमें सबसे बली ग्रह की दशा पहले होती है।

यदि दो – तीन आदि ग्रहों में बल साम्य हो तो उनमें जिसके अधिक वर्ष हों उसकी दशा प्रथम होती है। अगर वर्ष में भी समानता हो तो सूर्य के सान्निध्य वश जिसका प्रथम उदय हुआ हो उसी की दशा पहले होती है।

दशा साधन विधि – अभिजित् रहित 27 नक्षत्रों में कृत्तिका से जन्म नक्षत्र गणना करें। तत्संख्या में 9 का भाग देने पर शेष निम्नोक्त क्रम से विंशोत्तरी दशेश होते है। अर्थात् 1 शेष बचे तो सूर्य, 2 शेष बचे तो चन्द्रमा, 5 शेष बचे तो गुरू 8 शेष बचे तो केतु व 0 शेष बचे तो शुक्र की दशा होती है। इसी प्रकार अन्य को भी जानना चाहिए।

बोध प्रश्न -

1. विंशोत्तरी दशा होती है।

   क. १२० वर्ष की ख. १०८ वर्ष की ग. ३६ वर्ष की घ. २० वर्ष की
2. सूर्य की दशा वर्ष होती है।

   क. १० वर्ष ख.६ वर्ष ग.१८ वर्ष घ.२० वर्ष
3. विंशोत्तरी दशा का प्रचलन कहाँ है।

क. उत्तर भारत ख. दक्षिण भारत ग. पूर्वोत्तर भारत में घ. एशिया में

4. दशाओं के क्रम भौम के पश्चात् किसकी दशा होती है।

   क. राहु ख. गुरु ग. सूर्य घ. शनि

5. शनि की दशा वर्ष है।

   क. १८ वर्ष ख.१९ वर्ष ग.२० वर्ष घ.७ वर्ष

6. पराशर मतानुसार दशाओं में श्रेष्ठ है –

   क. अष्टोत्तरी ख. विंशोत्तरी ग. योगिनी घ. कोई नहीं

7. विंशोत्तरी दशाओं की गणना किस नक्षत्र से आरम्भ होती है।

   क. अश्विनी ख. भरणी ग. कृत्तिका घ. रोहिणी

1.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि ऋषियों ने त्रिकाल (भूत, वर्तमान तथा भविष्य) का शुभाशुभ जानने के लिए दशा का निर्माण किया है। दशा अनेक प्रकार की होती है। उनमें विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी तथा योगिनी का प्रचार विशेष है। सामान्यतया दशा का शाब्दिक अर्थ है – काल की स्थिति। कालानुरोधेन किसी जातक के ऊपर क्या-क्या प्रभाव पड़ेगा। इसका ज्ञान दशाओं के माध्यम से ही किया जाता है। वर्तमान समय में देश के पूर्वोत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में प्राय: विंशोत्तरी दशा का उपयोग विशेष रूप से करते हैं। सिन्ध, पंजाबादि में योगिनी दशा तथा दक्षिण मध्य भारत तथा गुजरात में अष्टोत्तरी दशा को व्यवहार में विशेष रूप से ग्रहण करते हैं। परन्तु शास्त्रीय वचन इस विषय में कुछ भिन्न एवं अनेक है-**दशाप्यष्टोत्तरी शुक्ले कृष्णे विंशोत्तरी मता। (मानसागरी ग्रन्थानुसार)** अर्थात् शुक्ल पक्ष में जन्म हो तो अष्टोत्तरी दशा तथा कृष्ण पक्ष में जन्म हो तो विंशोत्तरी दशा लेनी चाहिए।**दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता।** (लघुपराशरी के अनुसार) नक्षत्र पर से साधित दशा विंशोत्तरी ही लेनी चाहिए। अष्टोत्तरी दशा नहीं। इसी श्लोक का पाठान्तर प्राचीन विद्वानों के घर में हस्त लिखित ग्रन्थों में निम्नलिखित मिलता है। दशा विंशोत्तरी ग्राह्या मता चाष्टोत्तरी तथा विंशोत्तरी दोनों दशायें फलाफल के विचार के लिए उपयुक्त हैं।

1.5 पारिभाषिक शब्दावली

विंशोत्तरी दशा – सूर्यादि ग्रहों की १२० की दशा।

दशा – स्थिति

कृत्तिका – तीसरा नक्षत्र का नाम

समारम्भ – आरम्भ अर्थ में।

आर – मंगल

त्रिकोण – ५ एवं ९ स्थान को त्रिकोण कहते है।

नवमांश – राशि का नवॉं अंश नवमांश कहलाता है। ३ अंश २० कला १ नवमांश का मान होता है।

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. ख
3. ग
4. क
5. ख
6. ख
7. ग

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय कुण्डली विज्ञान - मीठालाल ओझा।
2. जातकपारिजात – दशाध्याय:।
3. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – दशाध्याय:।
4. सारावली – दशाध्याय:।
5. सर्वार्थचिन्तामणि – दशाध्याय:।
6. फलदीपिका – दशाध्याय:।

1.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1. फलदीपिका – मूल लेखक – आचार्य मन्त्रेश्वर। टिकाकार – गोपेश ओझा।
2. सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा। टिकाकार- मुरलीधर चतुर्वेदी।
3. वृहज्जातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार- आचार्य सत्येन्द्र मिश्र।
4. लघुजातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार – कमलाकान्त पाण्डेय।

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. विंशोत्तरी दशा साधन का परिचय दीजिये।
2. स्वकल्पित विंशोत्तरी दशा साधन कीजिये।
3. दशा साधन का गणितीय पक्ष का लेखन कीजिये।
4. दशा साधन का महत्व बतलाइये।
5. सभी ग्रहों का दशा मान लिखकर स्पष्ट कीजिये।

इकाई – 2 अष्टोत्तरी दशा साधन

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 अष्टोत्तरी दशा परिचय

2.4 अष्टोत्तरी दशा साधन प्रकार

2.5 सारांश

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.9 सहायक पाठ्यसामग्री

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई MAJY-202 के द्वितीय खण्ड की दूसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – अष्टोत्तरी दशा साधन। इससे पूर्व आपने विंशोत्तरी दशा साधन का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में अष्टोत्तरी दशा साधन के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

अष्टोत्तरी दशा प्राय: विन्ध्य से दक्षिण अर्थात् दक्षिण भारत में प्रचलित है। इसकी कुल दशा वर्ष १०८ वर्ष की होती है। यह विंशोत्तरी से भिन्न होता है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'अष्टोत्तरी दशा साधन' के बारे में उसकी गणितीय सिद्धान्तों को जानने का प्रयास करते है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- अष्टोत्तरी दशा को परिभाषित कर सकेंगे।
- ग्रहों की आयु दशा वर्ष से परिचित हो जायेंगे।
- अष्टोत्तरी दशा का साधन कर सकेंगे।
- अष्टोत्तरी दशा के महत्व को बता सकेंगे।

2.3 अष्टोत्तरी दशा परिचय

विंशोत्तरी के पश्चात् अब अष्टोत्तरी दशा का ज्ञान करते है। सर्वप्रथम आपको यह जानना चाहिए कि अष्टोत्तरी दशा १०८ वर्षों की होती है। इनका क्रम विंशोत्तरी दशा से भिन्न है। इसमें सूर्य, चन्द्र, मंगल,बुध, शनि, गुरु, राहु एवं शुक्र इन आठ ग्रहों की दशा रहती है। यहाँ केतु की दशा नहीं होती। इन ग्रहों के दशा नक्षत्र विंशोत्तरी से भिन्न हैं, जो कि महादशा कोष्ठक में वर्ष संख्या के साथ दिये गये हैं। इस महादशा में ग्रहों के दशावर्ष नक्षत्रों में विभाजित रहते हैं। यथा – सूर्य महादशा वर्ष ६ हैं और इस दशा के नक्षत्र आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य तथा आश्लेषा ये चार हैं। ६ में ४ का भाग देने से एक नक्षत्र का वर्षादिदशामान १।६ यह होगा।

दशा का भुक्त भोग्य लाने के लिए यह क्रम है कि नक्षत्र के भयात भभोग पर से उस नक्षत्र का भुक्त भोग्य वर्षादि में साधन करें। यदि वह नक्षत्र बीच में पड़े, तब गत नक्षत्रों के वर्षादि योग में वर्तमान दशा नक्षत्र के भुक्त वर्षादि जोड़ने से उस ग्रह की भुक्त दशा होगी और उसको ग्रह दशा वर्ष में घटाने से उस ग्रह की भोग्य दशा शेष रहेगी। जैसे माना कि जातक का जन्म मृगशिरा नक्षत्र में है। यह शुक्र महादशा में तृतीय नक्षत्र है और एक नक्षत्र के वर्ष ७ हैं। इस पर से भयात भभोग द्वारा भुक्त

वर्ष विंशोत्तरी के समान साधन करने से लब्धि ३।२।११।५३।३७ हुआ। इसको गत दो नक्षत्रों के वर्षमान १४ में जोड़ा, तब शुक्र की महादशा के भुक्त वर्ष १७।२।११।५३।३७ हुए। अर्थात् लब्धि में इस दशा के गत दो नक्षत्रों के सात-सात वर्ष जोड़ने से शुक्र की भुक्त दशा वर्षादि १७।२।११।५३।५७ हुई। इनको २१ वर्ष में घटाने से शेष ३।९।१८।६।२३ से भोग्य वर्ष हुए। इस प्रकार इस दशा का साधन किया जाता है।

अष्टोत्तरी दशा का साधन –

इसकी अन्तर्दशा का साधन भी विंशोत्तरी के समा नही है। वहाँ पर जिस ग्रह की दशा में जिस ग्रह की अन्तर्दशा का साधन करना रहता है। उन दोनों के दशा वर्षो का गुणा कर दस का भाग देते हैं। यहाँ पर ९ का और शेष विधि सब उसी प्रकार है।

लग्नेशात् केन्द्रकोणस्थे राहौ लग्नं विना स्थिते।

अष्टोत्तरी दशा विप्र! विज्ञेया रौद्रभादित:।।

चतुष्कं त्रितयं तस्मात् चतुष्कं त्रितयं पुन:।

एवं स्वजन्मभं यावद् विगणय्य यथाक्रमम्।।

सूर्यश्चन्द्र: कुज: सौम्य: शनिर्जीवस्तमो भृगु:।

एते दशाधिपा विप्र ज्ञेया: केतुं विना ग्रहा:।।

रसा: पंचेन्दवो नागा: सप्तचन्द्राश्च खेन्दव:।

गोऽब्जा: सूर्या: कुनेत्राश्च रव्यादीनां दशासमा:।।

श्लोकार्थ है कि यदि लग्नाधिप से राहु लग्न को छोड़कर अन्य केन्द्र त्रिकोण स्थान में बैठा हो तो अष्टोत्तरी दशा ग्रहण करनी चाहिए, ऐसा कुछ प्राचीनाचार्यो का मत है। उस अष्टोत्तरी में आर्द्रा से ४ नक्षत्राधिप सूर्य, अनन्तर के नक्षत्र चन्द्र, पश्चात् के ४ नक्षत्र भौम, उसके बाद ३ नक्षत्र बुध, अनन्तर के ४ नक्षत्र शनि, उसके पश्चात् ३ नक्षत्र गुरु , पुन: ४ नक्षत्र राहु उसके बाद ३ नक्षत्र शुक्र- इस प्रकार गणना कर अपना जन्मनक्षत्र जिस ग्रह में पड़े, वहीं प्रारम्भकालिक जन्मदशा होगी। दशावर्ष में रवि का ६, चन्द्र का १५ भौम का ८, बुध का १७, शनि १०, गुरु का १९, राहु का १२ वर्ष और शुक्र का २१ वर्ष है। इस प्रकार केतु को छोड़कर शेष ८ ग्रह ही दशाधिपति होते है।

अष्टोत्तरी दशा बोधक चक्र –

दशाधिप	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
दशावर्ष	६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१
नक्षत्र	आ. पु. पु. आश.	म. पू.फा. उ.फा	ह. चि. स्वा. वि	अनु. ज्ये. मू.	पू.षा. उ.षा अभि. श्र.	घ. श. पू.भा.	उ.भा. रे. अ. भ.	कृ. रो. मृ.

2.4 अष्टोत्तरी दशा साधन प्रकार –

दशाब्दांघ्रि पापानां शुभानां त्र्यंश एव हि।
एकैकभे दशामानं विज्ञेयं द्विजसत्तम्।।
ततस्तद्याभोगाभ्यां भुक्तं भोग्यं च साधयेत्।
विंशोत्तरीवदेवात्र ततस्तत्फलमादिशेत्।।

अर्थात् पूर्व में जो ग्रहों की दशावर्ष संख्या कही गयी है, उसमें से पाप ग्रहों के दशामान के चतुर्थांश एक-एक नक्षत्र में दशावर्ष होते है। शुभ ग्रहों में तृतीयांश एक-एक नक्षत्र में दशामान होते है। इस प्रकार अपने जन्मनक्षत्र में जो दशा हो और उसका जो भी दशामान उत्पन्न हो उस पर से भयात, भभोग के माध्यम से विंशोत्तरी के अनुरूप दशा का भुक्त भोग्य वर्षादि साधन करना चाहिए।

विशेष – यदि उत्तराषाढ़ा में जन्म हो तो उत्तराषाढ़ा के प्रथम, द्वितीय, तथा तृतीय चरणों का योग करके उसको भभोग मानकर दशा का भुक्त भोग्य वर्षादि साधन करना चाहिए एवं उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण में या श्रवण के १५ वें भाग के प्रारम्भ काल में जन्म हो तो उत्तराषाढा के चतुर्थ चरण तथा श्रवण के १५ वें भाग का योग करके जो हो, उसे भभोग मान कर दशा का भुक्त भोग्य वर्षादि साधन करना चाहिए। यदि श्रवण में जन्म हो तो १५ वाँ भाग श्रवण के भभोग में घटाकर शेष को भभोग मानकर दशा का भुक्त भोग्य वर्षादि साधन करना चाहिए। उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण और श्रवण का १५ वाँ भाग मिला कर अभिजित नामक नक्षत्र होता है।

उदाहरण –

जैसे उत्तराषाढ़ा का सम्पूर्ण मान – ६०।१६ है। भयात २०।८ है तो उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण में जन्म हुआ। उत्तराषाढ़ा के कुल भोग मान ६०।१६ में इसके चतुर्थांश १५।४ को (६०।१६ - १५।४) घटाने से ४५।१२ होता है, यही भभोग हुआ तथा २०।८ भयात् हुआ। उत्तराषाढ़ा शनि का द्वितीय नक्षत्र है। उसका मान ३० मास है, क्योंकि शनि के ४ नक्षत्र में १० वर्ष (१२० मास) हैं तो १ नक्षत्र में क्या? इस प्रकार ३० मास आता है। अत: यदि ३० मास से विंशोत्तरी दशानयनवत् भयात् २०।८ पलात्मक १२०८ को ३० मास से गुणा किया तो ३६२४० हुआ। इसमें पलात्मक २७१२ भभोग से भभोग से भाग देने से लब्ध मासादि १३।१०।५३ यह भुक्त हुआ। इसको ३० में घटाने से लब्ध मासादि शनि का १६।१९।७ भोग्य हुआ। इसमें अभिजित् तथा श्रवण नक्षत्र के ३०-३० मास जोड़ने से मासादि ७६।१९।७ हुए। पुन: इसको वर्षादि बनाने से ६।४।१९।७ यह मान हुआ। यही अष्टोत्तरी दशा में शनि का भोग्य वर्षादि मान हुआ।

तदनुसार अष्टोत्तरी दशा चक्र –

दशाधिप	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सू.	चन्द्र	मंगल	बुध	
वर्ष	६	१९	१२	२१	६	१५	८	१७	
मास	४								
दिन	१९								
घटी	७								
संवत्	२०४९	२०५५	२०७४	२०८६	२१०७	२११३	२१२८	२१३६	२१५३
सू.रा.	४	९	९	९	९	९	९	९	९
सू.अं.	१८	७	७	७	७	७	७	७	७
सू.क.	१५	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे तथा निशि।
तदा ह्यष्टोत्तरी चिन्तया फलार्थंच विशेषत:।।

अर्थात् कृष्ण पक्ष में दिन में एवं शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तो विशेष फल ज्ञान हेतु अष्टोत्तरी दशा का विचार करना चाहिए।

विशेष – उत्तराषाढ़ा, अभिजित् और श्रवण में जन्म हो तो तभी पूर्व प्रकार से दशा का भुक्त-भोग्य का वचिार करना है। इन नक्षत्रों से भिन्न नक्षत्रों में पूर्ण भभोग पर से ही दशा साधन करना चाहिए। अष्टोत्तरी तथा षष्टिहायनी दशा में अभिजित नक्षत्र का ग्रहण किया जाता है, अन्य दशाओं में नहीं। इसका ध्यान रखना चाहिए।

उत्तराषाढ़ा से भिन्न नक्षत्र शतभिषा का भुक्त भोग्य का उदाहरण अष्टोत्तरी दशा में इस प्रकार है। माना कि भयात् १९।१५, भभोग ६६।३२ शतभिषा के द्वितीय चरण का जन्म है। शतभिषा गुरु का दूसरा नक्षत्र है। गुरु की दशा १९ वर्ष की है। अत: १९ × १२ ÷ =७६ मास एक नक्षत्र का मान हुआ। अत: १९।१५ भयात्ए पलात्मक ११५५

११५५ ×७६ = ८७७८० हुआ। इसको पलमय ३९९२ भभोग से भाग दिया तो लब्धि २१।२९।४० भुक्त मासादि हुआ। इसको ७६ मास में घटाया तो शतभिषा नक्षत्र का ५४।०।२० भोग्य मासादि हुए। इसमें पूर्व भाद्रपद का ७६ मास जोड़कर वर्षादि बनाने पर १०।१०।०।२० भोग्य वर्षादि मान हुआ।

तदनुसार अष्टोत्तरी दशा चक्र –

दशाधिप	गुरु	राहु	शुक्र	सू.	चन्द्र	मंगल	बुध	शनि	
वर्ष	१०	१२	२१	६	१५	८	१७	१०	
मास	१०								
दिन	०								
घटी	२०								
संवत्	२०४९	२०६०	२०७२	२०९३	२०९९	२११४	२१२२	२१३९	२१४९
सू.रा.	६	६	६	६	६	६	६	६	६
सू.अं.	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
सू.क.	१	१	१	१	१	१	१	१	१

इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों का भी अष्टोत्तरी दशानयन करना चाहिए। प्रत्येक ग्रहों की अष्टोत्तरी महादशी के अन्तर्गत आने वाली दशाओं का वर्ष मान निम्न सूचियों में दी गयी है। आप उसका अवलोकन कर ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही अलग-अलग ग्रहों की अष्टोत्तरी दशाओं का मान ज्ञात कर सकते हैं।

अष्टोत्तरी दशा बोधक चक्र -

		सूर्य दशा वर्ष ६					चंद्र दशा वर्ष १०				
ग्र.	नक्षत्राणि	अं.	व.	मा.	दि.	घ.	अं.	व.	मा.	दि.	घ.
र.	आर्द्रा. पुन. पुष्य आश्लेषा	र.	०	४	०	०	चं.	२	१	०	०
चं.	मघा. पूर्वाफा. उत्तराफा.	चं.	०	१०	०	०	मं.	१	१	१०	०
मं.	हस्त. चित्रा. स्वाति. बिशा.	मं.	०	५	१०	०	बु.	२	४	१०	०
बु.	अनुराधा. ज्येष्ठा, मूल	बु.	०	११	१०	०	श.	१	४	२०	०
श.	पूषा. उषा. अभि. श्रवण	श.	०	६	२०	०	वृ.	२	७	२०	०
वृ.	घनिष्ठा.शतभिषा. पूर्वाभा.	वृ.	१	०	२०	०	रा.	१	८	०	०
रा.	उ.भा. रेवती. अश्वि. भर.	रा.	०	८	०	०	शु.	२	११	०	०
शु.	कृत्तिका. रोहिणी. मृग.	शु.	१	२	०	०	र.	०	१०	०	०

भौम दशा वर्ष					बुध दशा वर्ष ३७					शनि दशा वर्ष १०				
अं.	व.	मा.	दि.	घ.	अं.	व.	मा.	दि.	घ.	अं.	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	०	७	३	२०	बु.	२	८	३	२०	श.	०	११	३	२०
बु.	१	३	३	२०	श.	१	६	२६	४०	वृ.	१	९	३	२०
श.	०	८	२६	४०	वृ.	२	११	२६	४०	रा.	१	१	१०	०
वृ.	१	४	२६	४०	रा.	१	१०	२०	०	शु.	१	११	१०	०
रा.	०	१०	२०	०	शु.	३	३	२०	०	र.	०	६	२०	०
शु.	१	६	२०	०	र.	०	११	१०	०	चं.	१	४	२०	०
र.	०	५	१०	०	चं.	२	४	१०	०	मं.	०	८	२६	४०
चं.	१	१	१०	०	मं.	१	३	३	२०	बु.	१	६	२६	४०

गुरु दशा वर्ष १९					राहु दशा वर्ष १२					शुक्र दशा वर्ष २१				
अं.	व.	मा.	दि.	घ.	अं.	व.	मा.	दि.	घ.	अं.	व.	मा.	दि.	घ.
वृ.	३	४	३	२०	रा.	१	४	०	०	शु.	४	१	०	०
रा.	२	१	१०	०	शु.	२	४	०	०	र.	१	२	०	०
शु.	३	८	१०	०	र.	०	८	०	०	चं.	२	११	०	०
र.	१	०	२०	०	चं.	१	८	०	०	मं.	१	६	२०	०
चं.	२	७	२०	०	मं.	०	१०	२०	०	बु.	३	३	२०	०
मं.	१	४	२६	४०	बु.	१	१०	२०	०	श.	१	११	१०	०
बु.	२	११	२६	४०	श.	१	१	१०	०	वृ.	३	८	१०	०
श.	१	९	३	२०	वृ.	२	१	१०	०	रा.	२	४	०	०

अथाष्टोत्तरी सूर्यमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दि.	६	१६	८	१८	११	२१	१३	२३	०
घ.	४०	४०	५३	५३	६	६	२०	२०	०
प.	०	०	२०	२०	४०	४०	०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	१	०	१	०	१	१	१	०	१०
दि.	११	२२	१७	२७	२२	३	२८	१६	०
घ.	४०	१३	१३	४६	४६	२०	२०	४०	०
प.	०	२०	२०	४०	४०	०	०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	च.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	०	०	०	०	१	०	०	५
दि.	११	२५	१४	२८	१७	१	८	२२	१०
घ.	५१	११	४८	८	४६	६	५३	१३	०
प.	६	६	५३	५३	४०	४०	२०	२०	०
वि.	४०	४०	२०	२०	०	०	०	०	०

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	१	१	१	१	२	०	१	०	११
दि.	२३	१	२९	७	६	१८	१७	२५	१०
घ.	३१	२८	४८	४६	६	५३	१३	११	०
प.	६	५३	५३	४०	४०	२०	२०	६	०
वि.	४०	०	०	०	०	२०	२०	४०	०

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	१	०	१	०	०	०	१	६
दि.	१८	५	२२	८	११	२७	१४	१	२०
घ.	३१	११	१३	५३	६	४६	४८	२८	०
प.	६	६	२०	२०	४०	४०	५३	५३	०
वि.	४०	४०	०	०	०	०	२०	२०	०

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	२	१	२	०	१	०	१	१	०
दि.	६	१२	१३	२१	२२	२८	२९	५	२०
घ.	५१	१३	५३	६	४६	८	४०	११	०
प.	६	२०	२०	४०	४०	५३	५३	६	०
वि.	४०	०	०	०	०	२०	२०	४०	०

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	१	०	१	०	१	०	१	८
दि.	२६	१६	१३	३	१७	७	२२	१२	०
घ.	४०	४०	२०	२०	४६	४६	१३	१३	०
प.	०	०	०	०	४०	४०	२०	२०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	२	०	१	१	२	१	२	१	२
दि.	२१	२३	२८	१	६	८	१३	१६	०
घ.	४०	२०	२०	६	६	५३	५३	४०	०
प.	०	०	०	४०	४०	२०	२०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथाष्टोत्तरी भौममहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	१	०	१	०	१	०	०	७
दि.	१५	३	१९	७	२३	११	११	२९	३
घ.	४८	३४	४५	३१	४२	२८	५१	३७	२०
प.	८	४८	११	५१	१३	५३	६	४६	०
वि.	५३	५३	७	७	२०	२०	४०	४०	०

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	२	१	२	१	२	०	२	१	३
दि.	११	११	१९	२०	२८	२५	२	३	३
घ.	२१	५८	४५	२२	८	११	५७	३४	२०
प.	५८	३१	११	१३	५३	६	४६	४८	०
वि.	५३	७	७	२०	२०	४०	४०	५३	०

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	१	०	१	०	१	०	१	८
दि.	२४	१६	२९	२१	१४	७	१९	१२	२६
घ.	४१	५४	३७	५१	४८	२	४५	५८	४०
प.	२८	४८	४६	६	५३	१३	११	३१	०
वि.	५३	५३	४०	४०	२०	२०	७	७	०

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	वृ.	रा.	शु.	र.	च.	मं.	बु.	श.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	२	१	३	०	२	१	२	१	४
दि.	२९	२६	८	२८	१०	७	१९	१६	२६
घ.	८	१७	३१	८	२२	३१	४५	५४	४०
प.	८	४६	६	५३	१३	५१	११	४८	०
वि.	५३	४०	४०	२०	२०	७	७	५३	०

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	रा.	शु.	र.	चं	मं.	बु.	श.	वृ.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	१	२	०	१	०	१	०	१	८
दि.	५	२	१७	१४	२३	२०	२९	२६	२०
घ.	३३	१३	४६	२६	४२	२२	३७	१७	०
प.	२०	२०	४०	४०	१३	१३	४६	४६	०
वि.	०	०	०	०	२०	२०	४०	४०	०

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	३	१	२	१	२	१	३	२	६
दि.	१८	१	१७	११	२८	२१	८	२	२०
घ.	५३	६	४६	२८	८	५१	३१	१३	०
प.	२०	४०	४०	५३	५३	६	६	२०	०
वि.	०	०	०	२०	२०	४०	४०	०	०

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	०	०	०	०	०	०	१	५
दि.	८	२२	११	२५	१४	२८	१७	१	१०
घ.	५३	१३	५१	११	४८	८	४६	६	०
प.	२०	२०	६	६	५३	५३	४०	४०	०
वि.	०	०	४०	४०	२०	२०	०	०	०

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	१	०	२	१	२	१	०	०	१
दि.	२५	२९	२	७	१०	१४	१७	२२	१०
घ.	३३	३७	५७	२	२२	२६	४६	१३	०
प.	२०	४६	४६	१३	१३	४०	४०	२०	०
वि.	०	४०	४०	२०	२०	०	०	०	०

अथाष्टोत्तरी शनिमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	१	१	१	२	०	१	०	१	११
दि.	०	२८	७	४	१८	१६	२४	२२	३
घ.	५१	३८	२	४८	३१	१७	४१	२८	२०
प.	५१	३१	१३	५३	६	४६	२८	८	०
वि.	७	७	२०	२०	४०	४०	५३	५३	०

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	३	२	४	१	२	१	३	१	९
दि.	२१	१०	३	५	२७	१६	९	२८	३
घ.	२५	२२	८	११	५७	५४	४१	३८	२०
प.	११	१३	५३	३	४६	४८	२८	३१	०
वि.	७	२०	२०	४०	४०	५३	५३	७	०

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	१	२	०	१	०	२	१	२	१
दि.	१४	१७	२२	२५	२९	२	७	१०	१०
घ.	२६	४६	१३	३३	३७	५७	२	२२	०
प.	४०	४०	२०	२०	४६	४६	१३	१३	०
वि.	०	०	०	०	४०	४०	२०	२०	०

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	१	३	१	३	२	४	२	११
दि.	४	८	७	२१	२०	४	३	१७	१०
घ.	१६	५३	१३	५०	११	४८	८	४६	०
प.	६	२०	२०	६	६	५३	५३	४०	०
वि.	४०	०	०	४०	४०	२०	२०	०	०

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	०	०	१	०	१	०	१	६
दि.	११	२७	१४	१	२८	५	२२	८	२०
घ.	६	४६	४८	२८	३१	११	१३	५३	०
प.	४०	४०	५३	५३	६	६	२०	२०	०
वि.	०	०	२०	२०	४०	४०	०	०	०

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	२	१	२	१	२	१	३	०	४
दि.	९	७	१८	१६	२७	२५	७	२७	२०
घ.	२६	२	४२	१७	५७	३३	१३	४६	०
प.	४०	१३	१३	४६	४६	२०	२०	४०	०
वि.	०	२०	२०	४०	४०	०	०	०	०

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	१	०	१	०	१	०	१	८
दि.	१९	११	२४	१६	२९	२१	१४	७	२६
घ.	४५	५८	४१	५४	३७	५१	४८	२	४०
प.	११	३१	२८	४८	४६	६	५३	१३	०
वि.	७	७	५३	५३	४०	४०	२०	२०	०

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	२	१	३	२	३	१	२	१	६
दि.	२९	२२	९	२	२०	१	१८	११	२६
घ.	११	२८	४१	५७	११	२८	४२	५८	४०
प.	५१	८	२८	४६	६	५३	१३	३१	०
वि.	७	५३	५३	४०	४०	२०	२०	७	०

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	३	१	३	२	४	२	४	१	१
दि.	१४	२५	२८	९	११	२३	२५	११	०
घ.	१०	३३	३	२६	५६	२०	५०	४०	०
प.	०	२०	२०	४०	४०	०	०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	०	२	१	२	१	२	०	१	१
दि.	२९	२	७	१०	१४	१७	२२	२५	१०
घ.	३७	५७	२	२२	२६	४६	१३	१३	०
प.	४६	४६	१३	१३	४०	४०	२०	२०	०
वि.	४०	४०	२०	२०	०	०	०	०	०

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	४	२	४	३	५	१	३	२	४
दि.	१३	१८	२९	४	१५	१७	२८	२	१०
घ.	४७	४२	३२	२६	१६	१३	३	५७	०
प.	४६	१३	१३	४०	४०	२०	२०	४६	०
वि.	४०	२०	२०	०	०	०	०	४०	०

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	१	२	१	३	०	२	१	२	४
दि.	१६	२७	२५	७	२७	९	७	१८	२०
घ.	१७	५७	३३	१३	४६	२६	२	४२	०
प.	४६	४६	२०	२०	४०	४०	१३	१३	०
वि.	४०	४०	०	०	०	०	२०	२०	०

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	५	३	६	१	४	२	४	२	७
दि.	१७	१५	४	२२	११	१०	२९	२७	२०
घ.	७	३३	४३	४६	५६	२२	३२	५७	०
प.	४६	२०	२०	४०	४०	१३	१३	४६	०
वि.	४०	०	०	०	०	२०	२०	४०	०

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	२	३	१	२	१	३	१	३	८
दि.	६	२६	३	२३	१४	४	२५	१५	०
घ.	४०	४०	२०	२०	२६	२६	३३	३३	०
प.	०	०	०	०	४०	४०	२०	२०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	६	१	४	२	५	३	६	३	११
दि.	४०	२८	२५	१७	१५	७	४	२६	०
घ.	१०	२०	५०	४६	१६	१३	४३	४०	०
प.	०	०	०	४०	४०	२०	२०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	१	०	१	०	१	१	१	१०
दि.	१६	११	२२	१७	२७	२२	३	२८	०
घ.	४०	४०	१३	१३	४६	४६	२०	२०	०
प.	०	०	२०	२०	४०	४०	०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथाष्टोत्तरी राहुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	१	३	०	२	१	२	१	२	४
दि.	२३	३	२६	६	५	१५	१४	२४	०
घ.	२०	२०	४०	४०	३३	३३	२६	२६	०
प.	०	०	०	०	२०	२०	४०	४०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	५	१	३	२	४	२	४	३	४
दि.	१३	१६	२६	२	१२	१७	२७	३	०
घ.	२०	४०	४०	१३	१३	४६	४६	२०	०
प.	०	०	०	२०	२०	४०	४०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	१	०	१	२	१	०	१	८
दि.	१३	३	१७	७	२२	१२	२६	१६	०
घ.	१०	२०	४६	४६	१३	१३	४०	४०	०
प.	०	०	४०	४०	२०	२०	०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	२	१	३	१	३	२	३	१	८
दि.	२३	१४	४	१५	१५	६	२६	३	०
घ.	२०	२६	२६	३३	३३	४०	४०	२०	०
प.	०	४०	४०	२०	२०	०	०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	१	०	१	१	२	०	१	१०
दि.	२३	२०	२९	२६	५	२	१७	१४	२०
घ.	४२	२२	३७	१७	३३	१३	४६	२६	०
प.	१३	१३	४६	४६	२०	२०	४०	४०	०
वि.	२०	२०	४०	४०	०	०	०	०	०

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	३	२	३	२	४	१	३	१	१०
दि.	१७	२	२९	१५	१२	७	४	२०	२०
घ.	२	५७	३७	३३	१३	४६	२६	२२	०
प.	१३	४६	४६	२०	२०	४०	४०	१३	०
वि.	२०	४०	४०	०	०	०	०	२०	०

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं	बु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	१	२	१	२	०	१	०	२	१
दि.	७	१०	१४	१७	२२	२५	२९	२	१०
घ.	२	२२	२६	४६	१३	३३	३७	५७	०
प.	१३	१३	४०	४०	२०	२०	४६	४६	०
वि.	२०	२०	०	०	०	०	४०	४०	०

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	४	२	४	१	३	१	३	२	१
दि.	१३	२४	२७	१२	१५	२६	२९	१०	१०
घ.	४२	२६	४६	१३	३३	१७	३७	२२	०
प.	१३	४०	४०	२०	२०	४६	४६	१३	०
वि.	२०	०	०	०	०	४०	४०	२०	०

अथाष्टोत्तरी बुधमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	च.	मं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	५	२	५	३	६	१	४	२	८
दि.	१	२१	१९	२७	७	२३	१३	११	३
घ.	३८	११	२८	२	१८	३१	४७	२१	२०
प.	८	५१	३१	१३	५३	६	४६	२८	०
वि.	५३	७	८	२०	२०	४०	४०	५३	०

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	च.	मं.	बु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	१	३	२	३	१	२	१	२	६
दि.	२२	९	२	२०	१	१८	११	२९	२६
घ.	२८	४१	५७	११	२८	४२	५८	११	४०
प.	८	२८	४६	६	५३	१३	३१	५१	०
वि.	५३	५३	४०	४०	२०	२०	७	७	०

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	६	३	६	१	४	२	५	३	११
दि.	९	२९	२९	२९	२९	१९	१९	९	२६
घ.	२४	३७	२१	४८	३२	४५	२८	४१	४०
प.	४८	४६	६	५३	१३	११	३१	२८	०
वि.	५३	४०	४०	२०	२०	७	७	५३	०

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	२	४	१	३	१	३	२	३	१०
दि.	१५	१२	७	४	२०	१७	२	२९	२०
घ.	३३	१३	४६	२६	२२	२	५७	३७	०
प.	२०	२०	४०	४०	१३	१३	४६	४६	०
वि.	०	०	०	०	२०	२०	४०	४०	०

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	३
मा.	७	२	५	२	६	३	६	४	३
दि.	२१	६	१५	२८	७	२०	२९	१२	२०
घ.	२३	६	१६	८	१८	११	२१	१३	०
प.	२०	४०	४३	५३	५३	६	६	२०	०
वि.	०	०	०	२०	२०	४०	४०	०	०

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	१	०	१	१	१	१	२	११
दि.	१८	१७	२५	२३	१	२९	७	६	१०
घ.	५३	१३	११	३१	२८	४८	४६	६	०
प.	२०	२०	६	६	५३	५३	४०	४०	०
वि.	०	०	४०	४०	२०	२०	०	०	०

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	३	२	४	२	४	३	५	१	४
दि.	२८	२	१३	२८	२९	४	१५	१७	२०
घ.	३	५७	१७	४२	३२	२६	१६	१३	०
प.	२०	४६	४६	१३	१३	४०	४०	२०	०
वि.	०	४०	४०	२०	२०	०	०	०	०

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	१	२	१	२	१	२	०	२	३
दि.	३	११	११	१९	२०	२८	२५	२	३
घ.	३४	२१	५८	४५	२२	८	११	५७	२०
प.	४८	२८	३१	११	१३	५३	६	६	०
वि.	५३	५३	७	७	२०	२०	४०	४०	०

अथाष्टोत्तरी गुरुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	यो.
व.	०	०		०	०	०	०	०	३
मा.	७	४	७	२	५	२	६	३	४
दि.	१	१३	२३	६	१७	२९	९	२१	३
घ.	४१	४२	५८	५१	७	८	२४	२५	२०
प.	५१	१३	५३	६	४६	८	४८	११	०
वि.	७	२०	२०	४०	४०	५३	५३	७	२

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	२	४	१	३	१	३	२	४	१
दि.	२४	२७	१२	१५	२६	२९	१०	१३	१०
घ.	२६	४६	१३	३३	१७	३७	२२	४२	०
प.	४०	४०	२०	२०	४६	४६	१३	१३	०
वि.	०	०	०	०	४०	४०	२०	२०	०

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	३
मा.	८	२	६	३	६	४	७	४	८
दि.	१८	१३	४	८	२९	३	२३	२७	१०
घ.	३६	५३	४३	३१	२१	८	५३	४६	०
प.	४०	२०	२०	६	६	५३	५८	४०	०
वि.	०	०	०	४०	४०	२०	२०	०	०

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	०	१	०	१	१	२	१	२	०
दि.	२१	२२	२८	२९	५	६	१२	१३	२०
घ.	६	४६	८	४८	११	५१	१३	५३	०
प.	४०	४०	५३	५३	६	६	२०	२०	०
वि.	०	०	२०	२०	४०	४०	०	०	०

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	४	२	४	२	५	३	६	१	७
दि.	११	१०	२९	२७	१७	१५	४	२२	२०
घ.	५६	२२	३२	५७	७	३३	४३	४६	०
प.	४०	१३	१३	४६	४६	२०	२०	४०	०
वि.	०	२०	२०	४०	४०	०	०	०	०

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	१	२	१	२	१	३	०	२	४
दि.	७	१९	१६	२९	२६	८	२८	१०	२६
घ.	३१	४५	५४	८	१७	३१	८	२२	४०
प.	५३	११	४८	८	४६	६	५३	१३	०
वि.	७	७	५३	५३	४०	४०	२०	२०	०

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	५	३	६	३	६	१	४	२	११
दि.	१९	९	९	२९	२९	२९	२९	१९	२६
घ.	२८	४१	२४	३७	२१	४८	३२	४५	४०
प.	३१	२८	४८	४६	६	५३	१३	११	०
वि.	७	५३	५३	४०	४०	२०	२०	७	०

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	१	३	२	४	१	२	१	३	९
दि.	२८	२१	१०	३	५	२७	१६	९	३
घ.	३८	२५	२२	८	११	५७	५४	४१	२०
प.	३१	११	१३	५३	६	४६	४८	२८	०
वि.	७	७	२०	२०	४०	४०	५३	५३	०

अथाष्टोत्तरी शुक्रमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	४
मा.	९	२	६	३	७	४	८	५	१
दि.	१५	२१	२४	१८	२१	१६	१६	१३	०
घ.	५०	४०	१०	५३	२३	६	३८	२०	०
प.	०	०	०	२०	२०	४०	४०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	०	१	१	२	१	२	१	२	२
दि.	२३	२८	१	६	८	१३	१६	२१	०
घ.	२०	२०	६	६	५३	५३	४०	४०	०
प.	०	०	४०	४०	२०	२०	०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चंद्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	योग
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	४	२	५	३	६	३	६	१	११
दि.	२५	१७	१५	७	४	२६	२४	२८	०
घ.	५०	४६	१६	१३	४३	४०	१०	२०	०
प.	०	४०	४०	२०	२०	०	०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	१	२	१	३	२	३	१	२	६
दि.	११	२८	२१	८	२	१८	१	१७	२०
घ.	२८	८	५१	३१	१३	५३	६	४६	०
प.	५३	५३	६	६	२०	२०	४०	४०	०
वि.	२०	२०	४०	४०	०	०	०	०	०

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	३
मा.	६	३	६	३	७	२	५	२	३
दि.	१७	२०	२९	१२	२१	६	१५	२८	२०
घ.	१८	११	२१	१३	२३	६	१६	८	०
प.	५३	६	६	२०	२०	४०	४०	५३	०
वि.	२०	४०	४०	०	०	०	०	२०	०

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	श.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा.	२	४	२	४	१	३	१	३	११
दि.	४	३	१७	१६	८	७	२१	२०	१०
घ.	४८	८	४६	६	५३	५३	५१	११	०
प.	५३	५३	४०	४०	२०	२०	६	६	०
वि.	२०	२०	०	०	०	०	४०	४०	०

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	वृ.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	३
मा.	७	४	८	२	६	३	६	४	८
दि.	२३	२७	१८	१३	४	८	२९	३	१०
घ.	५८	४६	३६	५३	४३	४१	२१	८	०
प.	५३	४०	४०	२०	२०	६	६	५३	०
वि.	२०	०	०	०	०	४०	४०	२०	०

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्र.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	यो.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मा.	३	५	१	३	२	४	२	४	४
दि.	३	१३	१६	२६	२	१२	१७	२७	०
घ.	२०	२०	४०	४०	१३	१३	४६	४६	०
प.	०	०	०	०	२०	२०	४०	४०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बोध प्रश्न -

1. अष्टोत्तरी दशा होती है।
   क. १२० वर्ष की   ख. १०८ वर्ष की   ग. ३६ वर्ष की   घ. २० वर्ष की
2. अष्टोत्तरी दशाओं में शुक्र की दशा वर्ष होती है।
   क.१० वर्ष   ख.६ वर्ष   ग.१८ वर्ष   घ.२१ वर्ष
3. अष्टोत्तरी दशा का प्रचलन कहाँ है।
   क. उत्तर भारत   ख. दक्षिण भारत   ग. पूर्वोत्तर भारत में   घ. एशिया में
4. अष्टोत्तरी दशाओं के क्रम भौम के पश्चात् किसकी दशा होती है।
   क. बुध   ख. गुरु   ग. सूर्य   घ. शनि
5. अष्टोत्तरी दशाओं में निम्न में किस ग्रह की दशा नहीं होती है।
   क. राहु   ख. शनि   ग. केतु   घ.गुरु
6. सूर्य महादशा में कुल कितने नक्षत्र होते है।
   क.३   ख. ४   ग. ५   घ. ६
7. अष्टोत्तरी दशाओं की गणना किस नक्षत्र से आरम्भ होती है।
   क.आर्द्रा   ख. भरणी   ग. कृत्तिका   घ. रोहिणी

2.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि अष्टोत्तरी दशा १०८ वर्षों की होती है। इनका क्रम विंशोत्तरी दशा से भिन्न है। इसमें सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि, गुरु, राहु एवं शुक्र इन आठ ग्रहों की दशा रहती है। यहाँ केतु की दशा नहीं होती। इन ग्रहों के दशा नक्षत्र विंशोत्तरी से भिन्न हैं, जो कि महादशा कोष्ठक में वर्ष संख्या के साथ दिये गये हैं। इस महादशा में ग्रहों के दशावर्ष नक्षत्रों में विभाजित रहते हैं। यथा – सूर्य महादशा वर्ष ६ हैं और इस दशा के नक्षत्र आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य तथा आश्लेषा ये चार हैं। ६ में ४ का भाग देने से एक नक्षत्र का वर्षादिदशामान १।६ यह होगा। दशा का भुक्त भोग्य लाने के लिए यह क्रम है कि नक्षत्र के भयात भभोग पर से उस नक्षत्र का भुक्त भोग्य वर्षादि में साधन करें। यदि वह नक्षत्र बीच में पड़े, तब गत नक्षत्रों के वर्षादि योग में वर्तमान दशा नक्षत्र के भुक्त वर्षादि जोड़ने से उस ग्रह की भुक्त दशा होगी और उसको ग्रह दशा वर्ष में घटाने से उस ग्रह की भोग्य दशा शेष रहेगी। जैसे माना कि जातक का जन्म मृगशिरा नक्षत्र में है। यह

शुक्र महादशा में तृतीय नक्षत्र है और एक नक्षत्र के वर्ष ७ हैं। इस पर से भयात भभोग द्वारा भुक्त वर्ष विंशोत्तरी के समान साधन करने से लब्धि ३।२।११।५३।३७ हुआ। इसको गत दो नक्षत्रों के वर्षमान १४ में जोड़ा, तब शुक्र की महादशा के भुक्त वर्ष १७।२।११।५३।३७ हुए। अर्थात् लब्धि में इस दशा के गत दो नक्षत्रों के सात-सात वर्ष जोड़ने से शुक्र की भुक्त दशा वर्षादि १७।२।११।५३।५७ हुई। इनको २१ वर्ष में घटाने से शेष ३।९।१८।६।२३ से भोग्य वर्ष हुए। इस प्रकार इस दशा का साधन किया जाता है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

अष्टोत्तरी दशा – सूर्यादि ग्रहों की १०८ वर्षों की दशा केतु को छोड़कर।

दशा – स्थिति

आर्द्रा – छठा नक्षत्र का नाम

भयात – सम्पूर्ण नक्षत्र के मान में से जितना मान बित गया हो उसका नाम भयात है।

भभोग – सम्पूर्ण नक्षत्र के मान में से जितना मान शेष हो व्यतीत होने के लिए उसका नाम भभोग है।

त्रिकोण – ५ एवं ९ स्थान को त्रिकोण कहते है।

अभिजित – उत्तराषाढा एवं श्रवण नक्षत्र के अंश से बना नक्षत्र का नाम अभिजित है।

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. घ
3. ख
4. क
5. ग
6. ख
7. क

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय कुण्डली विज्ञान - मीठालाल ओझा।
2. जातकपारिजात – दशाध्याय:।
3. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – दशाध्याय:।

4. सारावली – दशाध्याय:।

5. सर्वार्थचिन्तामणि – दशाध्याय:।

6. फलदीपिका – दशाध्याय:।

2.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. फलदीपिका – मूल लेखक – आचार्य मन्त्रेश्वर। टिकाकार – गोपेश ओझा।

2. सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा। टिकाकार- मुरलीधर चतुर्वेदी।

3. वृहज्जातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार- आचार्य सत्येन्द्र मिश्र।

4. लघुजातकम् – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिकाकार – कमलाकान्त पाण्डेय।

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. अष्टोत्तरी दशा साधन का परिचय दीजिये।

2. स्वकल्पित अष्टोत्तरी दशा का साधन कीजिये।

3. अष्टोत्तरी दशा साधन का गणितीय पक्ष का लेखन कीजिये।

4. अष्टोत्तरी एवं विंशोत्तरी महादशा साधन में अन्तर बतलाइये।

इकाई - 3 योगिनी दशा साधन

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 योगिनी दशा परिचय
3.4 योगिनी दशा साधन
3.5 सारांश
3.6 पारिभाषिक शब्दावली
3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.9 सहायक पाठ्यसामग्री
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई MAJY-202 के द्वितीय खण्ड की तीसरी इकाई से सम्बन्धित है जिसका शीर्षक है – योगिनी दशा साधन। इससे पूर्व आपने विंशोत्तरी एवं अष्टोत्तरी दशा साधन का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में योगिनी दशा साधन के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। उसके पश्चात् उसका पुन: चक्र का भ्रमण होता है। मंगलादि आठ योगिनी दशा कहे गये है। इसका प्रचलन पर्वतीय क्षेत्रों के साथ-साथ राजस्थान, गुजरात में भी अधिक होता है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'योगिनी दशा साधन' के बारे में उसकी गणितीय सिद्धान्तों को जानने का प्रयास करते है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- योगिनी दशा को परिभाषित कर सकेंगे।
- योगिनी की आयु दशा वर्ष से परिचित हो जायेंगे।
- योगिनी दशा का साधन कर सकेंगे।
- योगिनी दशा के महत्व को बता सकेंगे।

3.3 योगिनी दशा परिचय

योगिनी दशाओं के बारे में ऐसा कहा जाता है कि स्वयं भगवान शिव ने इस दशा को कहा था। **मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा** – ये **आठ योगिनी** दशा होती है। मंगला से चन्द्रमा, पिंगला से सूर्य, धान्या से गुरू, भ्रामरी से मंगल, भद्रिका से बुध, उल्का से शनि, सिद्धा से शुक्र और संकटा से राहु की उत्पत्ति है। जन्मनक्षत्र संख्या में 3 जोड़कर 8 का भाग देने पर एकादि शेष से मंगलादि योगिनी दशायें होती है। मंगलादि योगिनी दशावर्ष एकादि वर्ष जानना चाहिये अर्थात् 1,2,3,4,5,6,7,8 क्रम से वर्ष जानना चाहिये । जन्मकालिक भयात् भभोग के द्वारा दशा के भुक्त, भोग्य वर्षादि का साधन करना चाहिये।

योगिनी दशा बोधक मूल श्लोक: -

मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा।
उल्का सिद्धा संकटा च योगिन्योऽष्टौ प्रकीर्तिता:।।
मंगलातोऽभवच्चन्द्र: पिंगलातो दिवाकर:।

धन्यातो देवपूज्योऽभूद् भ्रामरीतोऽभवत् कुजः।।
भद्रिकातो बुधो जातस्तथोल्कातः शनैश्चरः।
सिद्धातो भार्गवी जातः संकटातस्तमोऽभवत्।।
जन्मर्क्षं च त्रिभिर्युक्तं वसुभिर्भागमाहरेत्।
एकादिशेषे विज्ञेया योगिन्यो मंगलादिका।।
एकाद्येकोत्तरा ज्ञेयाः क्रमादासां दशासमाः।
नक्षत्रयातभोगाभ्यां भुक्तं भोग्यं च साधयेत्।।

<u>अन्य प्रकार से योगिनी दशा विचार</u> –

मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा।
उल्का सिद्धा संकटा च एतासां नामवत्फलम् ।।
एकं द्वौ गुणवेदबाणरससप्ताष्टांकसंख्याः क्रमात्।
स्वीयस्वीयदशा विपाकसमये ज्ञेयं शुभं वाऽशुभम्।।
षट्‌विंशैर्विभजेद्दिनीकृतमथैकद्वित्रिवेदेषुषट्।
सप्ताष्टघ्नदशा भवेयुरिति ता एवं दशान्तर्दशाः।।
चन्द्रः सूर्यो वाक्पतिर्भूमिपुत्रश्चान्द्रिर्मन्दो भार्गवः सैहिकेयः।
एते नाथा मंगलादिप्रदिष्टाः सौम्याः सौम्यानामनिष्टाः खलानाम्।।

<u>अत्रप्रकारान्तरेण योगिनीनां स्वामिनाः</u> -

पिंगलातो भवेत्सूर्यो मंगलातो निशाकरः।
भ्रामरीतो भवेत्क्ष्माजो धान्यतोऽभूद्विधोः सुतः।।
भद्रिकातो गुरूरभूतिसद्धातः कविसम्भवः।
उल्कातो भानुतनयः संकटास्त्वभूत्तमः।।
अस्या एव दशान्ते च केतुरेवं विधीयते।
यः खेटोऽस्तगृहं तथारिभवनं नीचं प्रयातो यथा।।
वर्षेशाद्रिपुगो हि तस्य गदिता सर्वा दशा मध्यमा।
यश्च्चोस्थलमाश्रितः स्वभवने मूलत्रिकोणे खगो।।
मित्रागारमुपागतो निगदिता तस्याऽखिला सौख्यदा।

उपर्युक्त श्लोक में मंगलादि आठ योगिनीयों के नाम है, तथा प्रकारान्तर से उनके स्वामियों का नाम भी उल्लेखित गया है। योगिनी दशा का न्यूनाधिक रूप से सारे भारतवर्ष में विशेषकर पर्वतीय क्षेत्रों में तो बहुत प्रचार है। इन दशाओं का प्रणेता भगवान शिव को माना जाता है। वृहत्पराशरहोराशास्त्र में

आचार्य पराशर के द्वारा प्रतिपादित है कि मंगला से चन्द्रमा, पिंगला से सूर्य, धान्या से गुरू, भ्रामरी से मंगल, भद्रिका से बुध, उल्का से शनि, सिद्धा से शुक्र और संकटा से राहु की उत्पत्ति है, इसका आशय है कि इन योगिनियों के ये ग्रह प्रभावक माने जाते है। जब मंगला की दशा हो तो चन्द्र की दशा समझकर जन्म लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के अनुसार दशा को उत्तम, या अधम कल्याणकारी मानना चाहिये। इसी प्रकार अन्य योगिनियों के विषय में भी समझना चाहिये।

जन्म नक्षत्र में 3 जोड़कर 8 का भाग देने से शेष के अनुसार मंगला से योगिनी दशा होती है। भ्रामरी दशा के नीचे से प्रारम्भ कर अश्विनी आदि नक्षत्रों को क्रमश: लिखने से योगिनी दशा चक्र होता है । इसमें अभिजित् का ग्रहण नहीं है। इनके 1,2,3,4,5,6,7,8 क्रमश: दशा वर्ष होते है।
योगिनी दशा के विषय में माना जाता है कि अल्पायु लोगों के जीवन में इसकी एक आवृत्ति, मध्यायु लोगों को दो आवृत्ति तथा दीर्घायु लोगों को तीन आवृत्ति होती है। इसकी एक आवृत्ति 36 वर्षो की होती है।
दशा का भुक्त भोग्य काल ज्ञान पूर्व में प्रतिपादित किया गया है। एक और उदाहरण के लिये यहॉ समझाया जा रहा है।
जन्म नक्षत्र रेवती से आर्द्रादि क्रमानुसार राहु की दशा वर्तमान है। सजातीय भयात 1250 व भभोग 3905 पल है। भयात 1250 व भभो्र 3905 पल है। भयात 1250 × दशावर्ष 12 = 15000/ पलात्मक भभोग 3905 = 3 वर्ष 10 मास 2 दिन भुक्त है। इसे 12 वर्षों में से घटाया तो 8.01.28 वर्षादि राहु का अष्टोत्तरी दशा भोग्य है।

योगिनी दशा बोध चक्र

	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
स्वामी	चन्द्रमा	सूर्य	गुरू	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	राहु
वर्ष	1	2	3	4	5	6	7	8
नक्षत्र				अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू0फा0	उ0फा0	हस्त
	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू0षा0	उ0षा0
	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू0भा0	उ0भा0	रेवती		

चन्द्रस्पष्ट $11.20^0.55$ तथा रेवती का अंशात्मक भोग्य $9^0.05$ अर्थात् 545 कला भोग्य है। इसे दशा वर्ष 12 से गुणाकर 800 कला का पूर्ववत् भाग देने से 545 × 12 = 6540 ÷ 800 = भोग्य दशा 8.02;03 वर्षादि है। यह दिनों का अन्तर क्यों पड़ा, इस विषय में पूर्व में विशोंतरी महादशा के दौरान लिखा जा चुका है। पाठक गण वहॉं ध्यान दें। इसी पद्धति से योगिनी दशा का भुक्त भोग्य भी जाना जा सकता है।

3.4 योगिनी दशा साधन उदाहरण –

माना कि किसी जातक का जन्म हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं, अत: जन्मनक्षत्र से 13 + 3 = 16। इसमें आठ का भाग दिया तो शेष 0 बचा अर्थात 8 हुआ, अत: आठवीं संकटा की दशा में जन्म हुआ, संकटा के वर्षमान 8 है। हस्त नक्षत्र भयात 16।5 भभोग 65।20 प्रथम चरण में जन्म है । पलात्मक भयात 965 को आठ से गुणनकर पलात्मक भभोग 3920 से भाग दिया, लब्ध भुक्त वर्षादि 1।11।19 को 8 में घटानें पर 6।0।11 भोग्य वर्षादि सिद्ध हुये। इस प्रकार योगिनी दशा का साधन किया जाता है।

योगिनी के महादशा व अन्तर्दशा का कोष्ठक –

मंगला दशा एक वर्ष – अन्तर्दशा

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	0	0	1	1	1	2	2	2
दिन	10	20	0	10	20	0	10	20

पिंगला दशा दो वर्ष – अन्तर्दशा

योगिनी	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	1	2	2	3	4	4	5	0
दिन	10	2	20	10	1	20	10	20

धान्या दशा तीन वर्ष – अन्तर्दशा

योगिनी	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	3	4	5	6	7	8	1	2
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0

भ्रामरी दशा चार वर्ष – अन्तर्दशा

योगिनी	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	5	6	8	9	10	1	2	4
दिन	10	20	0	10	20	10	20	0

भद्रिका दशा पॉच वर्ष – अन्तर्दशा

योगिनी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी
वर्ष	0	0	0	1	0	0	0	0
मास	8	10	11	1	1	3	5	6
दिन	10	0	20	10	10	10	0	20

उल्का दशा छ: वर्ष – अन्तर्दशा

योगिनी	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका
वर्ष	1	1	1	0	0	0	0	0
मास	0	2	4	2	4	6	8	10
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0

सिद्धा दशा सात वर्ष – अन्तर्दशा

योगिनी	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का
वर्ष	1	1	0	0	0	0	0	1
मास	4	6	2	4	7	9	11	2
दिन	10	20	10	20	0	10	20	0

संकटा दशा आठ वर्ष – अन्तर्दशा

योगिनी	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा
वर्ष	1	0	0	0	0	1	1	1
मास	9	2	5	8	10	1	4	6
दिन	10	20	10	0	20	10	0	20

3.5 बोध प्रश्न –

1. योगिनी दशा सर्वप्रथम किसके द्वारा कहा गया था।

क. विष्णु के द्वारा ख. ब्रह्मा के द्वारा ग. प्रजापति के द्वारा घ. शिव के द्वारा

2. योगिनी दशा कुल कितने वर्षों का होता है।

क. 30 वर्ष ख. 34 वर्ष ग. 36 वर्ष घ. 40 वर्ष

3. निम्नलिखित में सिद्धा से उत्पत्ति है –

क. बुध की ख. मंगल की ग. शुक्र की घ. सूर्य की

4. योगिनी दशा क्रम में पिंगला के पश्चात् आता है।

क. भ्रामरी ख. मंगला ग. सिद्धा घ. धान्या

5. मंगला का अर्थ है –

क. मंगल करने वाला ख. विपत्ति लाने वाला ग. नाश करने वाला घ. सुख प्रदान करने वाला

30 वर्ष ख. 34 वर्ष ग. 36 वर्ष घ. 40 वर्ष

दशा फल विचार के मौलिक नियम –

दशाफल विचार कि विषय में लघुपराशरी विद्याधरी में पाराशरीय नियमों का उल्लेख किया गया है। यहाँ केवल मौलिक व प्रारम्भिक सूत्र बताये जा रहे हैं, जो समस्त फल का आधार देते है –

शुभ फलप्रद दशा विचार –

1. पराशरीय मत से केन्द्रेशों व त्रिकोणेशों के सम्बन्ध पर आधारित सभी कारक ग्रहों की दशायें उत्कृष्ट फल देती है।
2. कारकों के सम्बन्धी ग्रहों की दशा में भी कारक ग्रहों का फल मिलता है। जैसे - कर्क लग्न का कारक मंगल यदि शनि से योग करता हो तो शनि की दशा में भी उत्कृष्ट फल मिलेंगे।
3. जो ग्रह जन्म समय में स्वोच्च, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्र, अधिमित्र क्षेत्र, मित्र क्षेत्र, शुभ ग्रह क्षेत्र में शुभ दृष्ट हो या षड्वर्गों के शुभ वर्गों में गया हो तो क्रमिक ह्रास से क्रमश: अच्छा ही फल देता है। उदाहरणार्थ यदि कोई ग्रह उच्च में है तो वह अत्यन्त शुभ फल करेगा लेकिन पापदृष्टि अशुभ भाव स्थिति आदि से उसकी शुभता में क्रमिक ह्रास होगा। इसके विपरीत कोई ग्रह साधारण सम ग्रह की राशि में है, लेकिन शुभ ग्रहों से दृष्ट, शुभ भावस्थिति है तो वह अत्यन्त शुभ फल देगा ही, इसमें क्या सन्देह है। इस प्रकार उहापोह पूर्वक महादशा का

फल स्थिर किया जाता है। निसर्ग शुभ ग्रह प्राय: शुभ फलदायक होते है।

अशुभ दशा निर्णय -

1. उक्त तथ्यों के विपरीत होने पर दशा का फल अशुभ होगा। नीचगत, अस्तंगत, शत्रुक्षेत्री , अशुभ वर्गों में गया हुआ, पापदृष्ट तथा अशुभ भाव स्थित ग्रह की दशा अशुभ फल देती है।
2. पापी ग्रह वक्री भी हो तो उसकी दशा महान कष्टदायक होती है।
3. पाराशर मत से मारक ग्रहों की दशा कष्टप्रद होती है। तथा निसर्ग पापग्रह की दशा भी अशुभ फल ही देती है।

कुछ विशेष नियम –

1. दशा प्रवेश के समय यदि चन्द्रमा बलवान हो तथ अपनी जन्म राशि से शुभ गोचर भावों में हो तो महादशा का फल काफी बुरा होते हुये भी कुछ कम हो जाता है।
2. इसके विपरीत दशा प्रवेश कालीन चन्द्रमा की अशुभता व निर्बलता शुभ दशा के शुभ फल में कमी करेगी।

3. जो दशापति बलवान हों, वे अपनी दशा में अपना पूरा फल देते हैं। तथा बलहीन होकर कुछ भी फल देने में समर्थ नहीं होते है। मध्यम बली ग्रह का मध्य फल समझना चाहिये। उदाहरणार्थ – लग्नेश दशा नियमत: शुभ होनी चाहिये, लेकिन वह नीच अस्तंगत, अशुभवर्गी आदि होकर पाप पीड़ित हो तो कुछ भी विशेष शुभ फल अपनी दशा में नहीं दे सकेगा।
4. सामान्यत: राहुयुक्त ग्रह की दशा कष्टप्रद होती है तथा अन्त में विशेष शोक देती है। इसके विपरीत यदि राहु किसी योगकारक ग्रह के साथ स्थित हो अथवा उसी ग्रह की राशि में राहु हो तो अरिष्ट नहीं होता है।
5. अपने उच्च से आगे की राशियों में स्थित ग्रह सामान्यत: नीच राशि की ओर बढ़ने के कारण शुभ फल में क्रमिक कमी लाता है, लेकिन यदि शुभ नवमांश में हो तो वह अच्छे फल भी देता है।
6. इसी प्रकार उच्च राशि की ओर बढ़ता ग्रह सामान्यत: अच्छा फल देता है। लेकिन नवमांश लग्न में शत्रुक्षेत्री या नीच आदि होने पर उसकी शुभता कम हो जायेगी।
7. शुभ ग्रहों के मध्य में विद्यमान पाप ग्रह अशुभ फल नहीं देता तथा अशुभ ग्रहों के मध्य में स्थित शुभ ग्रह शुभ फल नहीं देता।
8. दशा प्रवेश के समय यदि दशेश या अर्न्तदशेश उच्च, त्रिकोण, स्वराशि में हो तो शुभ होता है। विपरीत स्थिति में अशुभ आदि होता है।
9. सभी पाप ग्रह दशा के शुरू में अपनी उच्चादि राशि के अनुसार उसके बाद में साथी या द्रष्टा गहों की प्रकृति के अनुसार तथा लगभग दशा काल के मध्य में स्थान या भावानुसार फल देते हैं एवं अन्त में प्राय: सभी पाप दशायें उपद्रव करती है।
10. प्राय: ग्रह जिस द्रेष्काण में स्थित हो, अपने दशा काल के भी उसी तृतीयांश में अपना फल विशेषतया देता है।

दशा फल में राहु केतु की विशेषता -

1. त्रिकोणस्थ राहु – केतु यदि 2,7 भावेशों के साथ हों तो मारक होते है।
2. त्रिकोणेशों से युत या दृष्ट यदि 2,7 भावों में हो तो आयु व धन वर्धक होते है।
3. द्विस्वभाव राशिगत राहु – केतु यदि त्रिकोणेशों से युक्त हो या राहु – केतु की अधिष्ठित राशियों के स्वामी त्रिकोणेशों से युक्त हों तो वे सदैव राज्य व धन देते है।
4. चर या स्थिर राशि गत राहु – केतु केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों ओर कारक ग्रहों से युक्त हो तो स्वदशा में विशेष समृद्धि देते है।

5. राहु – केतु अशुभ स्थानों में स्थित होकर भी कारक ग्रहों से युक्त हो तो शुभ फल एवं शुभ भावों में स्थित होकर भी मारक ग्रहों से युक्त हो तो मारक फल ही देंगे।

3.6 सारांश –

ज्योतिष शास्त्र में दशाओं का ज्ञान परमावश्यक है, दशा क्रम में विंशोत्तरी के पश्चात् योगिनी का नाम आता है। योगिनी दशा कुल 36 वर्ष का होता है। ये दशायें स्वनामानुसार अपना – अपना फल देते है। वस्तुत: प्रचलन के दृष्टिकोण से सर्वाधिक विंशोत्तरी एवं अष्टोत्तरी का ही विचार किया जाता है। परन्तु भारतवर्ष के कई प्रान्तों में योगिनी दशा का भी प्रचलन है । सर्वाधिक दशाओं का उल्लेख वृहत्पराशरहोराशास्त्र में आचार्य पराशर जी ने किया है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आशा है कि पाठक गण योगिनी दशा का ज्ञान सुगमता पूर्वक प्राप्त कर सकेंगे।

3.7 पारिभाषिक शब्दावली

विंशोत्तरी – 120 वर्षों की दशा

अष्टोत्तरी – 108 वर्षों की दशा

योगिनी - 36 वर्षों की दशा

परस्पर – एक दूसरे का

3.8 बोधप्रश्न के उत्तर

1. घ
2. ग
3. ग
4. घ
5. क

3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. वृहज्ज्योतिसार – चौखम्भा प्रकाशन

4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. योगिनी दशा का उल्लेख करते हुये उसके फलादेश कर्त्तव्यादि का विस्तारपूर्वक उल्लेख करें।
2. ज्योतिषोक्त योगिनी दशा का क्या महत्व है तथा इसका सर्वाधिक प्रचलन कहॉ है।
3. योगिनी दशा से आप क्या समझते है।
4. योगिनी दशा का स्पष्ट रूप से साधन करें।
5. योगिनी दशा का महत्व प्रतिपादित कीजिये।

इकाई - 4 अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा परिचय
4.4 अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा साधन
4.5 सारांश
4.6 पारिभाषिक शब्दावली
4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.9 सहायक पाठ्यसामग्री
4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई MAJY-202 के द्वितीय खण्ड की चौथी इकाई से सम्बन्धित है जिसका शीर्षक है – अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा। इससे पूर्व आपने विंशोत्तरी एवं अष्टोत्तरी दशा तथा योगिनी दशाओं का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा दशा साधन के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

दशाओं के सूक्ष्म ज्ञानार्थ अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा की आवश्यकता होती है। इसके ज्ञान से हम सूक्ष्म फलादेश करने में समर्थ हो पाते हैं।

अत: आइए इस इकाई में हम लोग 'अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा दशा साधन' के बारे में तथा उसकी गणितीय सिद्धान्तों को जानने का प्रयास करते है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा दशा को परिभाषित कर सकेंगे।
- अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा की आयु दशा वर्ष से परिचित हो जायेंगे।
- अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा का साधन कर सकेंगे।
- अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा के महत्व को बता सकेंगे।

4.3 अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा विचार

दशा ज्ञान के क्रम में विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी एवं योगिनी के पश्चात् अब आपको अन्तर्दशा के बारे में बताया जा रहा है। जिस ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा अवगत करनी हो, उसकी वर्ष संख्या को अलग-अलग ग्रहों की वर्षसंख्या से गुणा करके सभी ग्रहों की वर्षसंख्या के योग से भाग देने से लब्धि पृथक-पृथक् अन्तर्दशा वर्षादिमान होते हैं। इसी प्रकार अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर ज्ञात करना अभीष्ट हो तो अन्तर्दशा मान को प्रत्येक ग्रह के दशा वर्ष से गुणाकर सभी ग्रहों के दशावर्ष योग से भाग देने से लब्धि पृथक-पृथक प्रत्यन्तर्दशा होती है। इसी प्रकार आगे की इकाई में सूक्ष्मदशा एवं प्राणदशा का भी आनयन किया जायेगा।

उदाहरण –

सूर्य की महादशा में सूर्यादि सभी ग्रहों की अन्तर्दशा यदि साधन करनी हो तो –
सूर्य की विंशोत्तरीय दशावर्ष संख्या ६ विंशोत्तरी मत से सभी ग्रहों के वर्षयोग – १२० है। अत: यहाँ नीचे सभी का गणितीय विधि से गणना कर अन्तर्दशाओं का ज्ञान करते हैं-

सूर्य - ६ × ६/ १२० = ०।३।१८

चन्द्र - ६ × १०/ १२० = ०।६।०

मंगल - ६ × ७/ १२० = ०।४।६

राहु - ६ × १८/ १२० = ०।१०।२४

गुरु - ६× १६/ १२० = ०।९।१८

शनि - ६ × १९/ १२० = ०।१।१२

बुध - ६ × १७/ १२० = ०।१०।६

केतु - ६ × ७/ १२० = ०।४।६

शुक्र - ६ × ६/ १२० = १।०।०

<u>सूर्य की महादशा में सूर्यादि का अन्तर बोधक चक्र</u>

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	१	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

इसी प्रकार अन्य ग्रहों की भी अन्तर्दशा गणित करके निकाली जा सकती है।

अन्तर्दशा क्रम –

आदावन्तर्दशा पाकपतेस्तत्क्रमतोऽपरा:।

एवं प्रत्यन्तरादौ च क्रमौ ज्ञेयो विचक्षणै:।।

किसी की भी दशा में प्रथम अन्तर्दशा स्वामी की होती है और उसके आगे क्रम से सभी ग्रहों की अन्तर्दशा होती है। प्रत्यन्तर,सूक्ष्म एवं प्राणदशा में भी यही क्रम जानना चाहिए।

चरादि दशाओं में ग्रहों की अन्तर्दशा –

भुक्तिर्नवानां तुल्या स्याद् विभाज्या नवधा दशा।

आदौ दशापतेर्भुक्तिस्तत्केन्द्रादियुजां तत:।।

विद्यात् क्रमेण भुक्त्यंशानेवं सूक्ष्मदशादिकम्।

बलक्रमात् फलं विज्ञैर्वक्तव्यं पूर्वरीतित:।।

अर्थात् ग्रहों की चरादि दशा या केन्द्रादि दशा में दशामान को ९ समान भाग करके अन्तर्दशा जाननी चाहिए। यहाँ प्रथम तो दशाधिप की ही अन्तर्दशा होगी, तदनन्तर केन्द्र स्थित ग्रहों की पुन: पणफरस्थ

ग्रहों की आपोक्लिमस्थ ग्रहों की अन्तर्दशा बलक्रम से होती है।

राशियों का अन्तर्दशा साधन -

कृत्वाऽर्कधा राशिदशां राशेर्भुक्तिं क्रमाद् वदेत्।
प्रत्यन्तर्दशाद्येवं कृत्वा तत्फलं वदेत्।।

राशियों का जो दशावर्ष हो, उसको १२ से गुणा करने पर जो लब्धि हो, उतना ही प्रत्येक राशि का अन्तर्दशावर्ष होता है। इसी प्रकार अन्तर्दशा वर्ष में अनुपात से प्रत्यन्तर्दशा का भी ज्ञान करना चाहिए।

राशियों की अन्तर्दशा में क्रम –

आद्यसप्तमयोर्मध्ये यो राशिर्बलवाँस्तत:।
ओजे दशाश्रये गण्या: क्रमादुत्क्रमत: समे।।

अन्तर्दशा क्रम में प्रथम और सप्तम में से जो अधिक बली हो, उस राशि से अन्तर्दशा प्रारम्भ हो जाती है। प्रारम्भिक दशा विषम राशि की हो तो क्रम से और सम हो तो उत्क्रम से सभी राशियों की अन्तर्दशा होती है।

अन्य प्रकार से अन्तर्दशा का साधन –

दशा दशाहता कार्या दशभि र्भागमाहरेत्।
यल्लब्धं सो भवेन्मासस्त्रिं शन्निघ्नं दिनं भवेत्।।

जिस ग्रह की महादशा में जिस ग्रह की अन्तर्दशा अपेक्षित हो, उन दोनों के दशा वर्षो को गुणाकर दस का भाग देने से लब्धि मास होंगे। शेष को ३० से गुणा कर १० का भाग देने से लब्धि दिन होंगे। इसी प्रकार घटयादि फल का भी साधन करना चाहिए। प्रत्येक ग्रह में अन्तर्दशा का साधन करके रख दिया गया है, आप उसका आगे अवलोकन कर सकते है। उसी आधार आप गणित करके अन्तर्दशा साधन भी कर सकते है।

प्रत्यन्तर्दशा साधन –

जिसकी अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा निकालनी हो, उस अन्तर्दशा वर्ष को अपने अपने दशावर्ष से गुणा कर उसमें समस्त दशावर्ष योग से भाग देने से लब्ध ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा होती है। जैसा कि आचार्य पराशर जी ने भी कहा है –

मूल श्लोक: -

पृथक् स्व-स्व दशामानैर्हन्यादन्तर्दशामितिम्।

भजेत्सर्वदशायोगै: फलं प्रत्यन्तरं क्रमात्।।

उदाहरण के लिए –

जैसे सूर्य की विंशोत्तरी मान से सूर्य में सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा निकालनी है। सूर्य का अन्तर्दशा वर्षादि ०।३।१८ है। इसको दिनात्मक १०८ दिन करके इस १०८ को सूर्य दशा वर्ष ६ से गुणा किया तो ६४८ हुआ। इसमें समस्त दशायोग १२० का भाग दिया तो ५ दिन मिला, शेष ४८ को ६० से गुणाकर १२० का भाग दिया तो २४ घटी,शेष शून्य हो गया। अत: सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा दिनादि ५।२४।० हुआ। इसी प्रकार सूर्य की अन्तर्दशा १०८ दिन इसको चन्द्रदशा वर्ष १० से गुणा कर १२० का भाग देने पर लब्धि दिनादि ०।९।० यह सूर्य की अन्तर्दशा में चन्द्रमा की प्रत्यन्तर्दशा हुई। इस प्रकार १०८ × भौमवर्ष ७ ÷ १२० = ०।६।१८ सूर्यान्तर मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनादि हुई। एवं १०८ × १८ ÷ १२० = ०।१६।१२ सूर्यान्तर में राहु की प्रत्यन्तर दशा दिनादि हुई। इसी प्रकार अपनी-अपनी दशावर्ष संख्या से गुणा कर १२० का भाग देने पर सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा दिनादि स्पष्ट होती है।

सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्यादि की प्रत्यन्तर्दशा बोधक चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घटी	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा में चन्द्रादि की प्रत्यन्तर्दशा बोधक चक्र

ग्रह	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घटी	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा में मंगलादि की प्रत्यन्तर्दशा बोधक चक्र

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
घटी	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में राह्वादि की प्रत्यन्तर्दशा बोधक चक्र

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घटी	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

सूर्य की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा में गुर्वादि की प्रत्यन्तर्दशा बोधक चक्र

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घटी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा में शनि आदि की प्रत्यन्तर्दशा बोधक चक्र

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घटी	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा में बुधादि की प्रत्यन्तर्दशा बोधक चक्र

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
मास	१	०	०	०	०	०	०	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घटी	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	५७

सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा में केतु आदि की प्रत्यन्तर्दशा बोधक चक्र

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घटी	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा में शुक्र आदि की प्रत्यन्तर्दशा बोधक चक्र

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०

दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बोध प्रश्न –

1.सम्पूर्ण दशा वर्ष का मान कितना होता है।

क. १०८ वर्ष ख.१२० वर्ष ग. ३६ वर्ष घ. कोई नहीं।

2. चन्द्रमा का विंशोत्तरी दशा वर्ष कितना है।

क.६ वर्ष ख. १८ वर्ष ग. २० वर्ष घ. १० वर्ष

3. सूर्य की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा मान साधन का गणित है।

क. १०।१०/१२० ख. ६×६/१२० ग. २० × ६/१२० घ. ६ × १०/१२०

4. सूर्य की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा मान होगा।

क. ०।३।१८ ख. ०।६।१२ ग. ०।१०।६ ०।५।१०

5. सूर्य की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य का प्रत्यन्तर मान होता है।

क. ०।५।२४ ख. ०।३।१८ ग. ०।१।१२ घ. ०।८।६

6. सूर्य में बुध का अन्तर्दशा मान होगा -

क. ०।८।६ ख. ०।१०।६ ग.०।१।१२ घ.०।६।९

4.6 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि जिस ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा अवगत करनी हो, उसकी वर्ष संख्या को अलग-अलग ग्रहों की वर्षसंख्या से गुणा करके सभी ग्रहों की वर्षसंख्या के योग से भाग देने से लब्धि पृथक-पृथक् अन्तर्दशा वर्षादिमान होते हैं। इसी प्रकार अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर ज्ञात करना अभीष्ट हो तो अन्तर्दशा मान को प्रत्येक ग्रह के दशा वर्ष से गुणाकर सभी ग्रहों के दशावर्ष योग से भाग देने से लब्धि पृथक-पृथक प्रत्यन्तर्दशा होती है। इसी प्रकार आगे की इकाई में सूक्ष्मदशा एवं प्राणदशा का भी आनयन किया जायेगा।

4.7 पारिभाषिक शब्दावली

अन्तर्दशा – दशा के मध्य अन्तर्दशा होती है।

प्रत्यन्तर्दशा – अन्तर्दशा के मध्य प्रत्यन्तर्दशा होती है।

पृथक- पृथक - अलग-अलग

परस्पर – एक दूसरे का

4.8 बोधप्रश्न के उत्तर

1. ख
2. घ
3. ख
4. क
5. क
6. ख

4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. वृहज्ज्योतिसार – चौखम्भा प्रकाशन
4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा साधन से आप क्या समझते है।
2. अन्तर्दशा साधन विधि सोदाहरण लिखिये।
3. प्रत्यन्तर्दशा का साधन कीजिये।
4. अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा का महत्व बतलाइये।
5. अन्तर्दशा क्रम, चरादि दशा, राशियों की अन्तर्दशा क्रम का लेखन कीजिये।

इकाई - 5 सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा परिचय
5.4 सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा साधन
5.5 सारांश
5.6 पारिभाषिक शब्दावली
5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
5.9 सहायक पाठ्यसामग्री
5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई MAJY-202 के द्वितीय खण्ड की पाँचवीं इकाई से सम्बन्धित है जिसका शीर्षक है – सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा। इससे पूर्व आपने विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी दशा तथा अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा साधन के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

दशाओं में अति सूक्ष्म काल ज्ञान के लिए सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा का विधान है। ऋषियों ने काल का निरन्तर अन्वेषण कर सूक्ष्मातिसूक्ष्म काल खण्ड का निर्धारण कर जातक के जीवन में होने वाली घटनाओं का ज्ञान दशाओं के माध्यम से कर लेत थे।

अत: आइए इस इकाई में हम लोग 'सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा साधन' के बारे में तथा उसकी गणितीय सिद्धान्तों को जानने का प्रयास करते है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा दशा को परिभाषित कर सकेंगे।
- सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा की आयु दशा वर्ष से परिचित हो जायेंगे।
- सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा का साधन कर सकेंगे।
- सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा के महत्व को बता सकेंगे।

5.3 सूक्ष्म एवं प्राण दशा

दशाओं के क्रम में अन्तर और प्रत्यन्तर दशा के पश्चात् सूक्ष्म एवं प्राण दशा का स्थान आता है। आप सभी को यह ज्ञात होना चाहिए कि सूक्ष्म एवं प्राण दशा सूक्ष्मातिसूक्ष्म फलादेश साधन के आधार स्तम्भ है। ऋषियों ने निरन्तर घोर साधना कर इतना सूक्ष्म समय का आँकलन किया ताकि सूक्ष्म फलादेश करने में सहायता मिल सके।

सूक्ष्म से भी सूक्ष्म प्राण दशा होती है। अत: इसका गणितीय साधन एवं फलोदश आदि कर्तव्य दोनों ही सर्वथा कठिन है। आइए इस इकाई में आपके लिए क्रमश: सूक्ष्म एवं प्राण दशा का साधन जो ऋषियों द्वारा बतलाया गया है, क्रमश: उसका उल्लेख करते है। इनके आधार पर आप सूक्ष्म एवं प्राण दशा साधन करने में समर्थ हो जायेंगे।

5.4 सूक्ष्म एवं प्राण दशा साधन

सूक्ष्मान्तर्दशा साधन प्रकार –

गुण्या स्व स्वदशावर्षै: प्रत्यन्तरदशामिति:।
खार्कैर्भक्ता पृथग्लब्धि: सूक्ष्मान्तरदशा भवेत्।।

अर्थात् प्रत्यन्तर दशामान को अलग-अलग दशावर्ष से गुणा कर १२० का भाग देने पर अलग-अलग सूक्ष्मान्तर्दशा का मान प्राप्त होता है।

उदाहरण –

जैसे सूर्य की महादशा में सूर्य की ही अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा ५।२४ दिनादि है, इसको ५ × ६० + २४ = ३२४ घटयात्मक हुआ, इसमें सूर्य दशा वर्ष ६ से गुणा किया तो १९४४ हुआ, इसमें १२० का भाग दिया तो १६।१२ घटयादि सूर्य दशा में सूर्यान्तर में सूर्य प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हुई। इसी प्रकार पूर्वोक्त सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा ३२४ को चन्द्र दशावर्ष १० से गुणा कर १२० का भाग देने से २७।० घटयादि चन्द्र की सूक्ष्म दशा हुई। एवं प्रकारेण –

३२४ × ७/१२० = १८।५४ घटयादि

३२४ × १८/१२० = ४८।३६ घटयादि

३२४ × १६/१२० = ४३।१२ घटयादि

३२४ × १९/१२० = ५१।१८ घटयादि

३२४ × १७/१२० = ४५।५४ घटयादि

३२४ × ७/१२० = १८।५४ घटयादि

३२४ × २०/१२० = ५४।०० घटयादि

अत: सूर्यमहादशा में, सूर्यान्तर में, सूर्य प्रत्यन्तर में, सूर्य सूक्ष्म दशा चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
घटी	१६	२७	१८	४८	४३	५१	४५	१८	५४
पल	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

प्राण दशा साधन प्रकार –

पृथक् खगदशावर्षैर्हन्यात् सूक्ष्मदशामितिम्।
खसूर्यैर्विभजेल्लब्धिर्ज्ञेया प्राणदशामितिः।।

अर्थात् सूक्ष्म दशामान को प्रत्येक ग्रहों के दशावर्षसंख्या से पृथक् पृथक गुणा कर गुणनफल में दशावर्ष योग १२० से भाग देने पर घटयादि प्राणदशा होती है।

उदाहरण –

जैसे सूर्य की सूक्ष्म दशा पर १६ घड़ी, १२ पल है, इसको १६ × ६० + १२ = ९७२ पल बनाने से ९७२ हुए इसको सूर्यवर्ष संख्या ६ से गुणा कर प्राप्त ५८३२ में १२० का भाग देने पर ० घटी, ४८ पल ३६ विपल हुआ, यही सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हुई। इस प्रकार ९७२ पलात्मक सूर्य की सूक्ष्म दशा को प्रत्येक ग्रहों के दशा वर्ष से गुणाकर १२० का भाग देने से सभी ग्रहों के सूर्य की सूक्ष्म दशा में प्राणदशा हो जाती है।

घटी पल विपल

९७२ × १०/१२० = १।२१।० = सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा

९७२ × ७/१२० = ०।५६।४२ = सूर्य की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा

९७२ × १८/१२० = २।२५।४८ = सूर्य की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा

९७२ × १६/१२० = २।९।३६ = सूर्य की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा

९७२ × १९/१२० = २।३३।५४ = सूर्य की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा

९७२ × १७/१२० = २।१७।४२ = सूर्य की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा

९७२ × ७/१२० = ०।५६।४२ = सूर्य की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा

९७२ × २०/१२० = २।४२।० = सूर्य की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा

उक्त प्रकार सेस प्रत्येक ग्रह की सूक्ष्म दशा के द्वारा प्राणदशा का साधन करना चाहिए।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा सारणी –

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
घटी	०	१	०	२	२	२	२	०	२
पल	४८	२१	५६	२५	९	३३	१७	५६	४२
विपल	३६	०	४२	४८	३६	५४	४२	४२	०

इसी प्रकार आप सूक्ष्म एवं प्राण दशा अन्य ग्रहों का भी साधन कर सकते हैं।

अब सूक्ष्म एवं प्राण दशा के अतिरिक्त कालचक्र दशा का भी साधन बतलाया गया है। यहाँ उसका भी उल्लेख किया जा रहा है।

कालचक्र दशा का आनयन –

कालचक्र दशा मूलतः नक्षत्र–प्रधान दशा है। चन्द्रमा ही नक्षत्र होता है। अतः जन्मकालिक चन्द्रमा का स्पष्ट राश्यादि भोग ही इस महादशा का मूल आधार है। इस दशा के आनयन विधि को हम चार मुख्य चरणों में बाँट सकते हैं–

1. चन्द्रमा के राश्यादि भोग से जन्मकालिक नक्षत्र का ज्ञान।
2. जन्मकालिक नक्षत्र के चरण और वर्तमान चरण के भुक्त कालादि का ज्ञान।
3. वर्तमान नक्षत्र–चरण के भुक्त कलादि से भुक्त दशा का ज्ञान।
4. दशा के भुक्त वर्षादि से भोग्य वर्षादि का ज्ञान।

दशानयन की इस समूची प्रक्रिया को एक उदाहरण द्वारा समझना सरल होगा। मान लीजिए किसी व्यक्ति का जन्म 29 नवम्बर 1985 को हुआ है। जन्मकालिक चन्द्रमा का स्पष्ट राश्यादि भोग 10 |0^0 |9′ |21′′ है।

चं. 10 |0 |9 |21 = 300^0 |9′21′′

(1) 1 नक्षत्र का मान 13^0 |20′ होता है तथा 3^0 |20′ का एक चरण होता है। नक्षत्रमान 13^0 |20′ से चन्द्रमा के अंशादि भोग में भाग दिया।

.... = 22.511688 लब्धि 22 गत नक्षत्र संख्या हैं। अर्थात् 22वाँ नक्षत्र श्रवण गत हो चुकने पर वर्तमान धनिष्ठा नक्षत्र के शेष 6^0, 8225 तुल्य भाग जन्म तक भुक्त हो चुका है।

(2) धनिष्ठा के गत अंशादि 6^0, 8225 में चरणमान 3^0 |20′ से भाग देने पर लब्धि 2 धनिष्ठा के गत चरण और 0^0 |1′ |21′′ तृतीय चरण का भुक्तांश होगा।

(3) इस धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण के भुक्तांश को उसके सम्पूर्ण दशावर्ष 85 से गुणा कर चरणमान 3^0 |20′ से भाग देने पर–

धनिष्ठा के तृतीय चरण का भुक्तांश 0^0 |9′ |21′′

धनिष्ठा के तृतीय चरण की सम्पूर्ण दशा 85 वर्ष है।

अतः 0^0 |9′ |21′′ **X** 85 ÷ 3^0 |20′ वर्ष

= 3.97375 वर्ष।

= 3 वर्ष 11 माह 20.55 दिन।

= मिथुन की दशा के गत वर्षादि।

धनिष्ठा के तीसरे चरण में (यतः धनिष्ठा अपसव्य चक्र में नक्षत्रत्रय का दूसरा नक्षत्र है इसलिए) अपसव्य चक्र के सूत्रों में 7वें सूत्र के अनुसार दशाक्रम मिथुन से प्रारम्भ होगा जिसका दशा वर्ष 9 है।

अतः मिथुन की दशा में 3 वर्ष 11 माह 20 दिन भुक्त होने पर जातक का जन्म हुआ है। इसलिए मिथुन के भोग्य वर्षादि 9 वर्ष–3 |10 |16 वर्षादि

9 |00 |00

– 3 |11 |20

मिथुन का भोग्य काल = 5 |00 |10 वर्षादि

अथवा–

जन्मकालिक चन्द्रमा राश्यादि 10 |0 |9 |21

= 18009.35 कला

18009.35 ÷ 800 = $22\frac{409.35}{800}$

बाईसवाँ नक्षत्र श्रवण गत 23वें नक्षत्र धनिष्ठा के 409.35 कला गत होने पर जन्म हुआ।

409.35 ÷ 200 = $2\frac{9.35}{200}$ अर्थात् धनिष्ठा के दो चरण गत, तीसरे चरण के 9′.35 कला गत होने पर जन्म हुआ।

अतः जन्मकाल में मिथुन की 9 वर्षीय महादशा प्रभावी थी जिसका $\frac{9.35\times85}{200}$= 3 वर्ष 11 माह 20 दिन जन्म से पूर्व गत हो चुका था तथा 5 वर्ष और 20 दिन मिथुन की दशा का शेष था।

बोध प्रश्न –

1. सूर्यमहादशा में, सूर्यान्तर में, सूर्य प्रत्यन्तर में, सूर्य सूक्ष्म दशा का मान है।

   क. १६।१२ ख. २४।२४ ग.३।६ घ. १५।२६

2. सूर्यमहादशा में, सूर्यान्तर में, सूर्य प्रत्यन्तर में, राहु का सूक्ष्म दशा साधन मान है।

   क.३२४ × १८/१२० ख. ३२४ × १६/१२० ३२४ × ६/१२० घ. कोई नहीं

3. सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा साधन का मान होगा।

   क. ९७२ × १०/१२० ख. ९७२ × ८/१२ ग. ९७२ × १६/१२० घ. ९७२ × ६/१२०

4. सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा का मान होगा।

   क. १।२१।० ख. ५।१०।१५ ग. २।५।६ घ.२।५।८

5. काल चक्र दशा निम्न में कौन सा प्रधान दशा है।

क. चन्द्र प्रधान ख. नक्षत्र प्रधान ग. राशि प्रधान घ. कोई नहीं

5.6 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा दशाओं के क्रम में अन्तर और प्रत्यन्तर दशा के पश्चात् सूक्ष्म एवं प्राण दशा का स्थान आता है। आप सभी को यह ज्ञात होना चाहिए कि सूक्ष्म एवं प्राण दशा सूक्ष्मातिसूक्ष्म फलादेश साधन के आधार स्तम्भ है। ऋषियों ने निरन्तर घोर साधना कर इतना सूक्ष्म समय का आँकलन किया ताकि सूक्ष्म फलादेश करने में सहायता मिल सके। सूक्ष्म से भी सूक्ष्म प्राण दशा होती है। अत: इसका गणितीय साधन एवं फलोदश आदि कर्तव्य दोनों ही सर्वथा कठिन है। प्रत्यन्तर दशामान को अलग-अलग दशावर्ष से गुणा कर १२० का भाग देने पर अलग-अलग सूक्ष्मान्तर्दशा का मान प्राप्त होता है। सूक्ष्म दशामान को प्रत्येक ग्रहों के दशावर्षसंख्या से पृथक् पृथक गुणा कर गुणनफल में दशावर्ष योग १२० से भाग देने पर घटयादि प्राणदशा होती है।

5.7 पारिभाषिक शब्दावली

सूक्ष्मदशा – प्रत्यन्तर दशा पश्चात् सूक्ष्म दशा होती है।

प्राणदशा – सूक्ष्म के बाद प्राण दशा जो अत्यन्त सूक्ष्म होती है।

कालचक्र दशा - नक्षत्र प्रधान दशा।

परस्पर – एक दूसरे का

5.8 बोधप्रश्न के उत्तर

1. क
2. क
3. क
4. क
5. ख

5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - आचार्य पराशर

2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ

3. वृहज्ज्योतिसार – चौखम्भा प्रकाशन

4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र

5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सूक्ष्म दशा साधन विधि का लेखन कीजिये।
2. प्राण दशा किसे कहते है।
3. सोदाहरण प्राण दशा का साधन कीजिये।
4. कालचक्र दशा का साधन कीजिये।
5. काल चक्र दशा से क्या तात्पर्य है।

खण्ड - 3
दशा फल विचार

इकाई - 1 महादशा दशा फल विचार

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 महादशा दशाफल परिचय
1.4 विंशोत्तरी महादशा फल विचार – सर्वार्थचिन्तामणि के अनुसार
1.5 महादशा फल विचार - वृहत्पराशरहोराशास्त्र के अनुसार
1.6 सारांश
1.7 पारिभाषिक शब्दावली
1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.10 सहायक पाठ्यसामग्री
1.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -202 के तृतीय खण्ड की पहली इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – महादशा दशाफल विचार। इससे पूर्व आपने विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी एवं योगिनी आदि दशाओं का गणितीय पक्ष जान लिया है। अब आप क्रमश: इकाई वार उनके फलादेश पक्ष का भी अध्ययन करने जा रहे है।

विंशोत्तरी दशाओं का फलित पक्ष इस अध्याय में वर्णित किया जा रहा है। सूर्यादि समस्त ग्रहों की दशाओं में जातक पर क्या शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। इसका ज्ञान इस अध्याय में आपको हो जायेगा।

आइए इस इकाई में हम लोग 'विंशोत्तरी महादशा फल विचार' के बारे में हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से जानने का प्रयास करते है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- महादशा दशा फल को परिभाषित कर सकेंगे।
- सूर्यादि ग्रहों के महादशा फल को समझा सकेंगे।
- महादशा फल विचार कैसे किया जाता है। जान जायेगें।
- विभिन्न जातक ग्रन्थों में महादशाओं के फल क्या है। उसका विश्लेषण कर सकेंगे।

1.3 महादशा दशा फल परिचय

महादशा फल विचार से तात्पर्य यह है कि जातक के उपर जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, उस ग्रह की कुण्डली में स्थितिवशात् उस जातक पर प्रभाव पड़ता है। यह ध्यातव्य होता है कि कुण्डली में ग्रह उच्च का है, नीच का है, स्वगृही है, मित्रगृही है, शत्रुगृही है, उस पर कितने शुभग्रह और पापग्रह की दृष्टि है तथा उस ग्रह की अवस्था क्या है आदि इत्यादि ऐसे अनेक तथ्य महादशा फल विचार के दौरान ज्योतिषी के समक्ष उपस्थित होते हैं। केवल ग्रह की दशा देखकर ही फलादेश करना नहीं चाहिए, अपितु सम्पूर्ण स्थितियों को देखने की आवश्यकता होती है। कदाचित् इसीलिए फलादेश का स्तर अत्यन्त व्यापक है। इसके लिए ग्रहों के प्रत्येक पक्षों का सूक्ष्म ज्ञान की आवश्यकता होती है। इस इकाई में सूर्यादि प्रत्येक ग्रहों की दशा फल उनकी विभिन्न स्थितियों के अनुरूप दी जा रही है।

जातकपारिजात के अनुसार दशा फल विचार

बलानुसारेण यथा हि योगो योगानुसारेण दशामुपैति।
दशाफलः सर्वफलं नराणां वर्णानुसारेण यथाविभागः।।

जिस प्रकार ग्रहबल के अनुसार योग फलदायक होते हैं उसी प्रकार योग के अनुसार ही योगकारक ग्रह अपनी दशा प्राप्त होने पर शुभाशुभ फल देते हैं। दशा के अनुसार ही मनुष्यों को समस्त शुभाशुभ फल प्राप्त होते हैं तथा ये फल उन्हें वर्णों के अनुसार प्राप्त होते हैं।

विंशोत्तरी महादशा

आदित्यचन्द्रकुजराहुसुरेशमन्त्रि-
मन्दज्ञकेतुभृगुजा नव कृत्तिकाद्याः।
तेनो नयः सिनदयातटधन्यसेव्य-
सेनानरा दिनकरादिदशाब्दसंख्याः।।

कृत्तिका नक्षत्र से प्रारम्भ कर नवें नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी पर्यन्त क्रमशः सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, केतु और शुक्र स्वामी अर्थात् दशापति होते हैं। उत्तराफाल्गुनी से प्रारम्भ कर नवें नक्षत्र पूर्वाषाढा पर्यन्त और उत्तरषाढा से प्रारम्भ कर भरणी पर्यन्त सूर्यादि ग्रह उपर्युक्त क्रम से स्वामी या दशापति होते हैं। तेन 6, नय10, सिन7, दया 18, तट 16, धन्य 19, सेव्य 17, सेना 7 और नरा 20 वर्ष उपर्युक्त क्रम से सूर्यादि ग्रहों के दशावर्ष होते हैं।

फलदीपिका के अनुसार दशा विचार

ऋृक्षस्य गम्या घटिका दशाब्द
निघ्ना नताप्ता स्वदशाब्दसंख्या।
रूपैर्नमैः संगुरपयेन्नतेन
हृतास्तु मासा दिवसाः क्रमेण।।

जन्म के समय किसी ग्रह की कितनी दशा भोग्य थी यह निकालने का प्रकार बताते हैं। यह देखिये कि जन्म के समय चन्द्रमा किस नक्षत्र में है और जन्म के बाद कितने घड़ी तक उस नक्षत्र में और रहेगा। जितनी घड़ी तक और रहेगा उन घड़ियों को महादशा के मान से गुणा कीजिये और ६० से भाग देकर यह निकाल लीजिये कि भोग्य वर्ष कितने आये। इसको एक उदाहरण से समझा जा सकता है। मान लिजिये कि जन्म के समय पुनर्वसु नक्षत्र के बीस घड़ी शेष थे। पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म होने से वृहस्पति की महादशा में जन्म होता है इस कारण वृहस्पति की दशा में जन्म हुआ। अब यदि यह जानना है कि वृहस्पति की दशा कितनी शेष है तो –

२० × १६/ ६०= १६/३ = ५ वर्ष ४ मास हुआ। इसी प्रकार आगे भी समझना चाहिए।

1.4 महादशा दशा फल विचार – सर्वार्थचिन्तामणि के अनुसार

अब सर्वप्रथम यहाँ आचार्य वेंकटेश द्वारा विरचित **'सर्वार्थचिन्तामणि'** के अनुसार सूर्यादि ग्रहों का दशाफल विचार निम्न रूप से है-

सूर्यदशाफलविचारः -

परमोच्चांशस्थ सूर्य दशा फल कथन

भानोर्दशायां परमोच्चगस्य भूम्यर्थदारात्मजकीर्तिशौर्य्यम्।
सन्माननं भूमिपतेः सकाशादुपैति संगरविनोदगोष्ठीम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य परमोच्चांश मेषराशि के 10 अंश में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय भूमि, धन, स्त्री, पुत्र, कीर्ति, शौर्य्य आदि की प्राप्ति होती है। राजकीय सम्मान प्राप्ति के अवसर सुलभ होते हैं। भ्रमण-यात्रा का शुभ अवसर मिलता है। मनोरंजन और विचार योग्य सभा में सम्मिलित होने का अवसर भी प्राप्त होता है।।

उच्चस्थ सूर्यदशाफलकथन

उच्चान्वितस्यापि रवेर्दशायां गोवृद्धिधान्यार्थपरिभ्रमं च।
संगरयुग्बन्धुजनैर्विरोधं देशाद्विदेशं चरति प्रकोपात्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य अपनी उच्च (मेष) राशि में स्थित हो तो मनुष्य के गोधन की अभिवृद्धि होती है। अन्न और धन की प्राप्ति भी होती है। व्यर्थ यात्रा भी करने पड़ते हैं। अधिकतर गतिशील रहने अर्थात् दौड़ धूप करते रहने की आवश्यकता रहती है। बन्धु-बान्धवों से विरोध के कारण भी उत्पन्न होते हैं। प्रायः कोप भाजन होकर देश-देशान्तर भ्रमण भी होता है।

प्रचण्डवेश्यागमनं क्षितीशादुपैति वृत्तिं रतिकेलिमानम्।
मृदङ्गभेरी रवयुक्तयानमन्योन्यवैरं लभते मनुष्यः।।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सूर्य उच्च (मेष) राशि में होता है, तो मनुष्य निकृष्ट वेश्या का संग करता है। राजा या शासक से आजीविका की प्राप्ति होती है। कामक्रीड़ा का अवसर भी सुलभ होता है। सम्मान की प्राप्ति भी होती है। ऐसे व्यक्ति के वाहन के आगे-पीछे मृदङ्ग-भेरी (तुरही) आदि जैसे बाजे की ध्वनि गूँजा करती है। जहाँ भी रहता है, वहाँ उसे एक-दूसरे के विरोध का भी सामना करना पड़ता है।

चन्द्रदशाफलविचार:

परमोच्चस्थ चन्द्र दशा फल कथन -

अत्युच्चगस्यापि निशाकरस्य दशाविपाके कुसुमाम्बरं च।
महत्त्वमाप्नोति कलन्नलाभं धनायतिं पुत्रमनोविलासम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि परमोच्च अर्थात् वृष राशि के तत्व अंश में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को सुन्दर पुष्प और वस्त्र की प्राप्ति होती है। अपना महत्व सिद्ध करने में सफल होता है। स्त्री की प्राप्ति होती है। धन भी प्राप्त होता है। पुत्र और मनोरंजन करने के अवसर प्राप्त होते है।

उच्चराशिस्थ चन्द्र दशाफल कथन

उच्चस्थितस्यापि निशाकरस्य प्राप्तौ दशायां सुतदारवित्तम्।
मिष्टान्नपानाम्बरभूषणाप्तिं विदेशयानं स्वजनैर्विरोधम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपनी उच्च वृष राशि में स्थित हो तो उसकी दशा के समय मनुष्य को पुत्र, स्त्री, धन आदि की प्राप्ति होती है। मधु, भोजन और पेय की उपलब्धि रहती है। वस्त्र, आभूषण भी प्राप्त होते है। अपकुटुम्बियों से विरोध भी होता है। विदेश यात्रा भी करनी पड़ती है।।65।।

आरोही चन्द्र दशा फल कथन

आरोहिणी चन्द्रदशा प्रपन्ना स्त्रीपुत्रवित्ताम्बरकीर्तिसौख्यम्।
करोति राज्यं सुखभोजनं च देवार्चनं भूसुरतर्पणं च।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि आरोही अर्थात् उच्च की ओर अग्रसर करता हुआ स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को स्त्री, पुत्र, धन, वस्त्र, कीर्ति, सुख आदि की सहज उपलब्धि रहती है। राज्य भी प्राप्त होता है। सुखपूर्वक भोजन करने और देर्वाचन तथा ब्राहमण भोजन करने-कराने के शुभ अवसर प्राप्त होते हैं।

अवरोहिणी चन्द्रदशा फल कथन

निशाकरस्याप्यवरोहकाले स्त्रीपुत्रमित्राम्बरसौख्यहानिम्।
मनोविकारं स्वजनैर्विरोधं चौराग्निभूपैः पतनं तडागे।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अवरोही अर्थात् उच्च से दूर होकर नीच की ओर अग्रसर करता हुआ स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के स्त्री, पुत्र, मित्र, वस्त्र आदि के सैख्य का नाश होता है। मानसिक विकार भी उत्पन्न होता है। स्वजनों से विरोध भी होता है। चोर, अग्नि

और राजा का भय भी उत्पन्न होता है। तालाब में डूबने की घटना होती है।

नीच नवांशस्थ चन्द्र दशा फल कथन

नीचांशगस्यापि निशाकरस्य प्राप्तौ दशायां विविधार्थहानिम्।
कुभोजनं कुत्सितराजसेवां मनोविकारं समुपैति निद्राम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि नवांश अर्थात् नवांश में अपनी नीच वृश्चिक राशि का होकर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अनेक प्रकार से हानि होती है। अभोज्य भोजन करना पड़ता है। दुष्ट राजा की सेवा करता है। मानसिक विकार उत्पन्न होता है। नींद खूब आती है।

मूल त्रिकोणस्थ चन्द्रदशा फल कथन

मूलत्रिकोणस्थितचन्द्रदाये नृपाद्धनं भूमिसुतार्थदारान्।
प्राप्नोति भूषाम्बरमानलाभं सुखं जनन्या रतिकेलिलोलम्।।69।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपनी मूलत्रिकोण राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को राजा से धन की प्राप्ति होती है। भूमि, पुत्र, धन, स्त्री आभूषण, वस्त्र आदि के लाभ होते हैं। माता का सुख सहज मिलता है। काम-क्रीड़ा के लिए भी अवसर सहज सुलभ होता रहता है।।69।।

परमोच्चस्थ भौम दशाफल कथन

अत्युच्चभूनन्दनदायकाले क्षेत्रार्थलाभं समरे जयं च।
आधिक्यमन्वेति नरेशमानं सहोदरस्त्रीसुतवाग्विलासम्।।1।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि परमोच्च अर्थात् मकर राशि के 28वें अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य कृषि से धन लाभ करने में सफल रहता है। युद्ध या लड़ाई में भी विजयश्री प्राप्त करता है। अनेक लोगों के बीच राजकीय सम्मान प्राप्त कर पाता है। भ्रातृ, स्त्री, पुत्र आदि के साथ हास्य-परिहास वार्त्ता का अवसर भी उसे सुलभ होता है।

उच्चराशिस्थ मंगल दशाफल कथन

उच्चं गतस्य च दशासमये कुजस्य प्राप्नोति राज्यमथवा क्षितिपाच्चवित्तम्।
भूमध्यदारसुतबन्धुसमागमं च यानादिरोहणविशेषविदेशयानम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अपनी उच्च मकर राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राज्य अथवा राजा से धन प्राप्त करता है। भूमि, स्त्री, पुत्र और बन्धु से मिलन होता रहता है।

विविध वाहन की सवारी करने का अवसर मिलता है। इस समय विशेष कर मनुष्य को देशान्तर भ्रमण करने पड़ते हैं।

परमोच्चस्थ बुध दशाफल कथन

अत्युच्चसोमात्मजदायकाले धनान्वितः ख्यातिमुपैति सौख्यम्।
ज्ञानं च कीर्ति जननायकत्वं स्त्रीपुत्रभूम्यर्थमहोत्सवं च।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि परमोच्चांश में अर्थात् कन्या राशि के 15 अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा में मनुष्य धनवान् होता है। उसे ख्याति मिलती है। सुख की भी प्राप्ति होती है। ज्ञान और कीर्त्ति सम्पन्न होते हैं। जनसमूह का नेता होता है। स्त्री, पुत्र, भूमि और धन का लाभ होता है। उसके द्वारा महोत्सव का आयोजन होता है।

उच्चस्थितस्यापि शशङ्कसूनोर्दशा महत्त्वं कुरुतेऽर्थसौख्यम्।
देहस्य पुष्टिं धनधान्यपुत्रगोवाजिमत्तेभमृदङ्गनादम्।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि अपनी उच्च कन्या राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अपना महत्त्व स्थापित करता है। धन का सुख प्राप्त करता है। उसकी शारीरिक बल में वृद्धि होती है। धन, अन्न, पुत्र, गोधन, घोड़ा, उन्मत्त हाथी आदि से सम्पन्न होकर सदा मृदङ्ग की ध्वनि सुनता है।

आरोही बुध दशा फल कथन

आरोहिणी सौम्यदशा प्रपन्ना यज्ञोत्सवं गोवृषवाजिसङ्घम्।
मृद्वन्नभूषाम्बरयानलाभं वाणिज्यभूम्यर्थपरोपकारम्।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि उच्च की ओर अग्रसर करता हुआ हो, तो उसकी दशा में मनुष्य यज्ञ के आयोजन रूप उत्सव मनाता है। गोधन, बैल, घोड़ा आदि के समूह का स्वामी होता हैं मुलायम अन्न, आभूषण, वस्त्र, वाहन भूमि और धन का उसे लाभ होता है। सदा परोपकार में रत रहता है।

अवरोही बुध दशा फल कथन

शशाङ्कसूनोस्त्ववरोहिणी या दशा महत्कष्टतरं च दुःखम्।
विज्ञानहीनं परदारसङंग नृपाग्निचौरैर्भयमत्र कष्टम्।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि अवरोही अर्थात् नीच की ओर अग्रसर हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अत्यधिक कष्ट और दुःख पाता है। ज्ञान-विज्ञान से रहित होता है। परायी स्त्री का गमन करता है। राजा, चोर, अग्नि आदि से भय व कष्ट प्राप्त होते हैं।

नीच राशिस्थ बुध दशाफल कथन

नीचस्थचन्द्रात्मजदायकाले ज्ञानेन हीनं स्वजनैर्वियुक्तम्।
पदच्युतिं बन्धुविरोधतां च विदेशयानं वनवासदुःखम्।

जिस किसी की कुण्डली में यदि अपनी नीच राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य ज्ञान रहित होता है। स्वजनों का वियोग सहन करता है। पद-प्रतिष्ठा में भी कमी होती है। अपने बन्धुजनों से भी विरोध मिलता है। विदेश यात्रा भी करने पड़ते हैं। निर्वासित-सा जीवन कष्ट और दुःख देने वाली होती है।

परमोच्चगत गुरुदशा फल कथन

गुरोर्दशायां परमोच्चगस्य राज्यं महत्सौख्यमुपैति कीर्तिम्।
मनोविलासं गजवासिङ्घनृपाभिषेकं स्वकुलाधिपत्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि परमोच्च में अर्थात् कर्क राशि के 5 अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राज्य की प्राप्ति करता है। बहुत सुखी होता है। उसकी अच्छी कीर्ति होती है। मन उत्साहित होने से आनन्दानुभूति की अपेक्षा भी पूरा होता है। बहुत-से हाथी और घोड़ा भी उसके पास आता है। उसकी राज्याभिषेक भी होता है। अपने कुल में सर्वप्रमुख होता है।

उच्च (कर्क) राशि गत गुरु दशा फल कथन

कुलीरगस्यापि गुरोर्दशायां भाग्योत्तरं भूपतिमाननाद्वा।
विदेशयानं महदाधिपत्यं दुःखैः परिक्लिन्नतनुर्मनुष्यः।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के भाग्य की अभिवृद्धि होती है। राजकीय सम्मान की प्राप्ति होती है। विदेश यात्रा भी करता है। महत्त्वपूर्ण अधिकार हस्तगत करने में सफल होता है। फिर भी वह दुःख के कारण भी खिन्न शरीर से युक्त होता है।

आरोही गुरुदशा फल कथन

आरोहिणी देवगुरोर्महत्त्वं दशा प्रपन्ना कुरुतेऽर्थभूमिम्।
गानक्रिया स्त्रीसुतराजपूज्यं स्ववीर्यतः प्राप्तयशः प्रतापम्।।
जीवदशायामारोहिण्यामीशो मण्डलादिनाथो वा।
द्विजभूपाललब्धधनो मेधावी कान्तिमान् विनीतिज्ञः।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि आरोही अर्थात् उच्चानुमुख होकर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अपना महत्त्व सिद्ध करता है। धन, भूमि आदि की प्राप्ति भी होती है। अपने बल

पर वह संगीत कला में प्रवीणता, स्त्री, पुत्र आदि की प्राप्ति भी करता है। राजा से सम्मान भी प्राप्त करता है। वह यशस्वी व प्रतापी भी होता है।

वह किसी कस्बा या इलाके का राजा अथवा मण्डलाधिपति होता है। ब्राहमण और राजा से धन की प्राप्ति करता है। वह बुद्धिमान लावण्य-तेजयुक्त शरीर वाला और नीतिज्ञ होता है।

अवरोही गुरु दशा फल कथन

देवेन्द्रपूज्यस्य दशावरोही करोति सौख्यं सकृदेव नाशम्।
सकृद्यशः कान्तिविशेषजालं नरेश्वरत्वं सकृदेव याति।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि अवरोही अर्थात् नीचानुमुख होकर स्थित होता है, तो उसकी दशा के समय मनुष्य कभी सुखी, कभी दुःखी होता है। कभी यशस्वी, विशेष कान्ति से युक्त और राजा होता है, तो कभी सामान्य जीवन जीता है। इस तरह मनुष्य चंचर स्थिति और दशा वाला हो जाता है।

परमनीचगत गुरु दशा फल कथन

अतिनीचभागभाजो गुरोर्दशायां प्रभग्नगृहपुंजः।।
अन्योन्यहृदयवैरं कृषिनाशं याति परभृत्यः।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि परमनीच में अर्थात् मकर राशि के अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य का गृह भग्न अर्थात् गिर जाता है अथवा टूट-फूट से युक्त होता है। जहाँ भी वह रहता है, उस वातावरण में उपलब्ध लोगों के प्रति हृदय में विरोध रहता है। उसके कृषि की हानि होती है। दूसरों के पास सेवा करके जीविकार्जन करने को विवश होता है।

मूलत्रिकोण राशिस्थ गुरु दशाफल कथन

मूलत्रिकोणनिलयस्य गुरोर्दशायां राज्यार्थभूमिसुतदारविशेषसौख्यम्।
यानाधिरोहणमपि स्वबलाप्तवित्तं यज्ञादिकर्मजनपूजितपादपीठम्।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि अपनी मूलत्रिकोण राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राज्य, धन, भूमि, पुत्र, पत्नि आदि का विशेष सौख्य पूर्ण करता है। वाहन का सुख भी प्राप्त होता हैं अपने पुरुषार्थ बल से धन की प्राप्ति करता है। यज्ञादि अनुष्ठान सम्पन्न होता है। उसमें बहुत से लोगों द्वारा उसके चरण पूजन किया जाता है।

स्वगृही गुरु दशा फल कथन

गुरोर्दशायां स्वगृहं गतस्य राज्ञोऽर्थ भूधान्यसुखाम्बरं च।

मिष्टान्नदो वाजिमनोविलासं काव्यादिपुण्यागमवेदशास्त्रम्।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि अपनी राशि धनु या मीन में हो, तो............

शुभग्रह से युक्त गुरु दशा फल कथन

शुभान्वितस्यापि गुरोर्दशायां नरेशयानं मृदुलाम्बरं च।
दानेन वित्तं नृपमाननाद्वा यज्ञादिसन्मार्गविशेषलाभम्।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि शुभ ग्रह से युक्त हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राजा के वाहन का उपयोग करता है। राजा से ही कोमल वस्त्र भी मिलते हैं। दान से अथवा राजा से सम्मानित होने से धन प्राप्त करता है। यज्ञ आदि अनुष्ठान सम्पादन के मार्ग से विशेष रूप से धन अर्जित करता है।

पापग्रहदृष्ट गुरु दशाफल कथन

पापेक्षितस्यापि गुरोर्दशायां प्राप्तं सुखं किंचिंदुपैति धैर्यम्।
क्वचिद्यशः कुत्रचिदाप्तसौख्यं क्वचिद्धनं नाशमुपैति चान्ते।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि पापग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को थोड़ा सुख प्राप्त रहता है। उसे धैर्य होता है। कुछ यश और कभी सुख भी मिलता है। थोड़ा धन भी दशा के अन्त में नष्ट होता है।

परमोच्चगत शुक्र दशाफल कथन

अत्युच्चभृगुदशायां मत्तविलासप्रियार्थभोगी स्यात्।
माल्याच्छादनभोजनशयनस्त्रीपुत्रधनयुक्तः।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि परमोच्च में अर्थात् मीन राशि के 27 अंश पर हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य परिपक्व अवस्था के हास्य-परिहास के आनन्द को पसन्द करता है। धन का भोग करता है। माला, वस्त्र, भोजन, शय्या, स्त्री, पुत्र और धन से सम्पन्न भी होता है।

उच्चराशिस्थ शुक्रदशा फल कथन

स्वोच्चस्थितस्यापि भृगोर्दशायां स्त्रीसङगनष्टार्थविरुद्धधर्मम्
पित्रोर्विनाशं समुपैति दुःखं शिरोरुजं भूपतिमाननं च।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि अपनी उच्च मीन राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को स्त्रियों के सङग साथ करने से धन की हानि होती है। वह विरोधी को मानने वाला होता है। माता-पिता का मरण भी होता है। दुःख की प्राप्ति होती है। शिर में रोग होता है तथा राजा से सम्मान मिलता है।

आरोही शुक्र दशा फल कथन

आरोहिणी शुक्रदशा प्रपन्ना धान्याम्बरालङ्कृतिकान्तिपूजाम्।
प्रवृत्तिसिद्धिं स्वजनैर्विरोधं मात्रादिनाशं परदारसङगम्।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि आरोही अर्थात् उच्चराशि की ओर अग्रसर हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अन्न, वस्त्र, अलंकरण आदि की प्राप्ति करता है। उसका शरीर कान्ति युक्त होता है। लोगों द्वारा उसका सम्मान किया जाता है। उसका सभी प्रयास सफल होते हैं। स्वजनों से विरोध प्राप्त होता है। माता-पिता की हानि होती है। परायी स्त्री के गमन का प्रयास होता है।।50।।

अवरोही शुक्र दशा फल कथन

भृगोः सुतस्याप्यवरोहकाले प्रचण्डवेश्यागमनं धनाप्तिम्।
स्त्रीपुत्रबन्ध्वार्तिमनोविकारं हृच्छूलरोगं मदनार्तिमेति।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि अवरोही अर्थात् नीच राशि की ओर अग्रसर हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य दुष्ट वेश्या का गमन करता है। उसे धन की प्राप्ति भी होती है। स्त्री, पुत्र, बन्धु आदि दुःखी रहता है। मानसिक विकार उत्पन्न होता है। हृदय शूलरोग से युक्त होता है। रति करने की इच्छा से पीड़ित होता है।

परमोच्चगत शनि दशा फल कथन

मन्दोऽत्युच्चदशायां ग्रामसभामण्डलाधिपत्यं स्यात्।
लभते विनोदशीलं पितृनाशं बन्धुकलहं च।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि परमोच्च में अर्थात् तुला राशि में 20 अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को ग्राम, कस्बा, ... आदि पर आधिपत्य प्राप्त होता है। वार्तालाप से आनन्दित होता है। पितापक्ष की दृष्टि होती है। बन्धुओं से भी झगड़ा होता है।

उच्चराशिगत शनि दशा फल कथन

स्वोच्चदशायां कुरुते देशभ्रंशं मनोरुजं दुःखम्।
वाणिज्यसत्त्वानिं कृषिहानिं नृपविरोधं च।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अपनी उच्च तुला राशि में स्थित हो तो उसकी दशा के समय मनुष्य के दाँत गिर जाते हैं। मानसिक रोग और दुःख से ग्रस्त रहता है। व्यापार और बल दोनों की हानि होती है। कृषि की हानि भी होती है और राजा के पक्ष से विरोध होता है।

आरोही शनि दशा फल कथन

आरोहिणी वासरनाथसूनोर्दशाविपाके नृपलब्धभाग्यम्।
वाणिज्यलाभं कृषिभूमिलाभं गोवाजियानं सुतदारलाभम्।।

जिस किसी की कुण्डली मेंर शनि यदि आरोही अर्थात् उच्चानुगामी हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राजा से भागयोपलब्धि पाता है। व्यापार-व्यवसाय में भी लाभ प्राप्त होता है। कृषि और भूमि का लाभ होता है। गोधन, घोड़ा, वाहन, पुत्र, स्त्री आदि का लाभ भी प्राप्त होता है।

अवरोही शनि दशा फल कथन

दिनेशसूनोस्त्ववरोहकाले राज्यच्युतिं दारसुतार्थनाशम्।
भाग्यक्षयं भूपतिकोपयुक्तं प्रेष्यत्वमायाति गुदाक्षिरोगम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अवरोही अर्थात् नीचानुगामी हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को राज्यहानि, पत्नि, पुत्र, धन आदि की भी हानि होती है। भाग्य की अवनति भी होती है। राजा के कोप का भाजन भी होना पड़ता है। दूसरों की सेवा करने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उसे गुदारोग व अक्षिरोग का शिकार भी होना पड़ता है।

नीचराशिगत शनि दशा फल कथन

नीचस्थितस्यापि दिनेशसूनोर्दाये कलत्रात्मजसोदराणाम्।
नाशं महत्कष्टतरां कृषिं च नीचानृवृत्त्या समुपैति वृत्तिम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अपनी नीच राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य की स्त्री, पुत्र, भ्राता आदि की हानि होती है। वह बहुत अधिक कष्ट से कृषि कार्य सम्पन्न कर पाता है। इस तरह उसे नीच कर्म सम्पादन कर आजीविका हेतु प्रयत्न करना पड़ता है।

राहु-केतु उच्चादिस्थान कथन

राहोस्तु वृषभं केतोर्वृश्चिकं तुङ्गसंज्ञितम्।
मूलत्रिकोणं कुम्भं च क्रियं मित्रभमुच्यते।।

राहु का वृष और केतु का वृश्चिकद उच्च संज्ञक स्थान होता है। राहु का मूलत्रिकोण कुम्भ और क्रिय अर्थात् मेष मित्र राशि कहा जाता है।

एषां सप्तमराशिस्तु केतोर्मूलत्रिकोणभम्।
षष्ठाष्टरिष्फगो राहुः स्वदाये कष्टदो भवेत्।।

केतु का मूलत्रिकोण और मित्र राशि इन स्थानों अर्थात् कुम्भ राशि और मेष राशि से सप्तम राशि अर्थात् क्रम से सिंह और तुला राशि है।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि षष्ठभाव, अष्टमभाव या द्वादश भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को कष्ट सहन करना पड़ता है।

उच्चस्थानस्थ राहु दशा फल कथन

उच्चस्थः सैंहिकेयस्तु तत्पाके सुखदो भवेत्।
राज्यं करोति मित्राप्तिं धनधान्यविवर्द्धनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि अपने उच्चस्थान में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य सुख का अनुभव करता है। उसे राज्य भी मिलता है। मित्र की प्राप्ति होती है। धन-अन्न की अभिवृद्धि भी होती है।

नीचस्थानस्थ राहु दशा फल कथन

राहुर्नीचस्थितो दाये चौराग्निनृपभीतिदः।
उद्बन्धनं विषाद्भीतिं कुरुते सिंहिकासुतः।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि अपने नीच स्थान में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को चोर, अग्नि, राजा आदि से भय प्राप्त होता है। फाँसी लगा लेने का कारण उत्पन्न होता है। विषपान आदि से भी भय मिलता है।

केतुदशा सामान्य फल कथन

भार्यापुत्रविनाशनं नरपतेर्भ्रांतिर्महत्कष्टतां
विद्याबन्धुधनाप्तिमित्ररहितं रोगाग्निमित्रैर्भयम्।
यानारोहणपातनं विषजलैः शस्त्रादिभिर्वा भयं
देशाद्देशविवासनं कलिरुचिं देहादिभिर्वा भयम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि केतु की दशा चल रही हो, तो उस समय मनुष्य को पत्नि, पुत्र आदि का वियोग सहन करना पड़ता है। राजा द्वारा भ्रान्ति में उलझाया जाता है। अत्यधिक कष्ट भी पाता है। परन्तु उसे विद्या (ज्ञान), बन्धु, धन आदि की प्राप्ति भी होती है। मित्रता का अभाव रहता है। रोग, अग्नि, मित्र आदि से भय ही प्राप्त होता है। वाहन पर चढ़ता और गिरता भी है। विष, जल, शस्त्र आदि से भी भय प्राप्त होता है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता फिरता है। कलह में लगाव उत्पन्न हो जाता है। अथवा उसे रोग आदि होने का भय हो जाता है।

केतोर्दशायां सम्प्राप्तौ दारपुत्रविनाशनम्।
राजकोपं मनस्तापं चौराग्निकृषिनाशनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि केतु की दशा हो, तो उस समय उपरोक्त फल के साथ-साथ

इस प्रकार का फल भी मनुष्य को प्राप्त होता है। उसको स्त्री, पुत्र आदि से विक्षोभ उत्पन्न हो जाता है। राजकीय कोष का भाजन भी होता है। मानसिक सन्ताप भी मिलता है। चोर, अग्नि, कृषि आदि भी उसका नाश हो जाता है।

केन्द्रभावस्थ केतु दशा फल कथन

केन्द्रस्थस्य दशाकेतोः करोति विफलक्रियाम्।
राज्यार्थसुतदाराणां नाशनं विपदं तथा।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि केन्द्र भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के सभी कार्य असफल हो जाते हैं। राज्य, धन, पुत्र, स्त्री आदि की हानि होती है तथा उसे मात्र विपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

1.5 महादशा फल विचार - वृहत्पराशर होराशास्त्र के अनुसार

रवि दशा फल –

मूलत्रिकोणे स्वक्षेत्रे स्वोच्चे वा परमोच्चगे।
केन्द्रत्रिकोणलाभस्थे भाग्यकर्माधिपैर्युते।।
सूर्ये बलसमायुक्ते निजवर्गबलैर्युते।
तस्मिन्दाये महत् सौख्यं धनलाभादिकं शुभम्।।
अत्यन्तं राजसन्मानमश्वसन्दोल्यादिकं सुखम्।
सुताधिपसमायुक्ते पुत्रलाभं च विन्दति।।
धनेशस्य च सम्बन्धे गजान्तैश्वर्यमादिशेत्।
वाहनाधिपसम्बन्धे वाहनत्रयलाभकृत्।।
नृपालतुष्टिर्वित्ताढयः सेनाधीशः सुखो नरः।
बलवाहनलाभश्च दशायां बलिनो रवेः।।

अर्थात् यदि सूर्य जन्मसमय में अपने मूलत्रिकोण में, अपने क्षेत्र में अपने उच्च में अपने परमोच्च में केन्द्र, त्रिकोण, लाभभाव में, भाग्येश कर्मेश के साथ में निज वर्ग में बलवान होकर बैठा हो तो उसकी दशा में धनलाभ, अधिक सुख, राजसम्मानादि की प्राप्ति होती है। सन्तानेश के साथ हो तो पुत्रलाभ, धनेश के साथ सूर्य हो तो हाथी आदि धनों का लाभ और वाहनेश के साथ हो तो वाहन का लाभ कराता है। ऐसा जातक राजा की अनुकम्पा से धनाढय होकर सेनानायक बनकर

सुखी होता है। इस प्रकार बलयुत रवि की महादशा में बल, वाहन, और धन का लाभ होता है।

अन्य स्थिति में फल - यदि जातक के जन्मसमय में सूर्य अपने नीच राशि का हो, 6,8,12 भाव में में निर्बल पापग्रहों से युत हो या राहु – केतु से युत हो या दु:स्थान 6,8,12 के अधिपति से युत हो तो सूर्य की महादशा में महान कष्ट, धन- धान्य का विनाश, राजक्रोध, प्रवास, राजदण्ड, धनक्षय, ज्वरपीड़ा, अपयश, स्वबन्धुओं से वैमनश्यता, पितृकष्ट, भय, गृह में अशुभ, चाचा को कष्ट, मानसिक अशान्ति और अकारण जनों से द्वेष होता है । यदि सूर्य के पूर्वोक्त नीचादि स्थानों में रहने पर भी उस शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो कभी – कभी बीच – बीच में सुख भी होता है । यदि केवल पापग्रहों की ही दृष्टि हो तो सदैव पाप फल ही कहना चाहिये।

चन्द्रफल –

एवं सूर्यफलं विप्र संक्षेपाद्दुदितं मया।
विंशोत्तरीमतेनाऽथ ब्रुवे चन्द्रदशाफलम्।।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चैव केन्द्रे लाभत्रिकोणगे।
शुभग्रहेण संयुक्ते पूर्णे चन्द्रे बलैर्युते।।
कर्मभाग्यधिपैर्युक्ते वाहनेशबलैर्युते।
आद्यन्तैश्वर्य सौभाग्य धन धान्यादिलाभकृत्।
गृहे तु शुभकार्याणि वाहनं राजदर्शनम्।।
यत्नकार्यार्थसिद्धिः स्याद् गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्।
मित्रप्रभुवशाद् भाग्यं राज्यलाभं महत्सुखम्।।
अश्वान्दोल्यादिलाभं च श्वेतवस्त्रादिकं लभेत्।
पुत्रलाभादिसन्तोषं गृहगोधनसङ्कुलम्।।
धनस्थानगते चन्दे तुङ्गे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
अनेकधनलाभं च भाग्यवृद्धिर्महत्सुखम्।।
निक्षेपराजसन्मानं विद्यालाभं च विन्दति।

जन्मकाल में यदि चन्द्रमा अपने उच्च राशि का हो या अपने क्षेत्र में हो, केन्द्र, 11, त्रिकोण में हो और पूर्ण बली चन्द्र शुभ ग्रहों से युत हो, 4,9,10 भावों के स्वामी से युक्त हो तो उसकी महादशा में प्रारम्भ से अन्त तक धन – धान्य, सौभाग्यादि की वृद्धि, गृह में मांगलिक कार्य, वाहनसुख, राजदर्शन, यत्न से कार्य सिद्धि, घर में धनागम, मित्रों के द्वारा भाग्योदय, राज्यलाभ, सुख, वाहनप्राप्ति एवं धन और वस्त्रादि का लाभ होता है। जातक पुत्रलाभ, मानसिक शान्ति एवं घर में गौओं द्वारा

सुशोभित होता है। चन्द्रमा द्वितीय भाव में अपने उच्च या स्वगृहगत हो तो अनेक प्रकार से धनलाभ, भाग्यवृद्धि, राजसम्मान तथा विद्या का लाभ होता है।

अन्य स्थिति में फल - चन्द्रमा अपने नीच का हो या क्षीण हो तो धन की हानि होती है। बलयुत चन्द्र तृतीय भाव में हो तो कभी – कभी सुख और धन की प्राप्ति होती है। निर्बल चन्द्र पापग्रह से युत होकर तृतीय में हो तो जड़ता, मानसिक रोग, नौकरों से पीड़ा, धनहानि और माता या मामा से कष्ट होता है। दुर्बल चन्द्रमा पापग्रह से युत होकर 6,8,12 स्थान में स्थित हो तो राजद्वेष, मानसिक दु:ख, धन- धान्यादि का विनाश, मातृकष्ट, पश्चाताप, शरीर की जड़ता एवं मनोव्यथा होती है। बलयुत चन्द्रमा के दु:स्थान में रहने से बीच – बीच में कभी – कभी लाभ और सुख भी होता है।

अशुभकारक रहने पर शान्ति करने से शुभ का निर्देश करना चाहिये।

भौम दशा फल –

स्वभोच्चादिगतस्यैवं नीचशत्रुभगस्य च।
ब्रवीमि भूमिपुत्रस्य शुभाऽशुभदशाफलम्॥
परमोच्चगते भौमे स्वोच्चे मूलत्रिकोणगे।
स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा॥
सम्पूर्णबलसंयुक्ते शुभदृष्टे शुभांशके।
राज्यलाभं भूमिलाभं धनधान्यादिलाभकृत्॥
आधिक्यं राजसम्मानं वाहनाम्बरभूषणम्।
विदेशे स्थानलाभं च सोदराणां सुखं लभेत्॥
केन्द्रे गते सदा भौमे दुश्चिक्ये बलसंयुते।
पराक्रमाद्वित्तलाभो युद्धे शत्रुञ्जयो भवेत्॥
कलत्रपुत्रविभवं राजसम्मानमेव च।
दशादौ सुखमाप्नोति दशान्ते कष्टमादिशेत्॥

मंगल अपने परमोच्च में हो, अपने उच्च में हो या अपने मूल त्रिकोण में हो, स्वगृह में हो या केनद्रत्रिकोण में हो, लाभ भाव में हो, धनभाव में हो, पूर्णबल युत हो, शुभ ग्रहों से अवलोकित हो, शुभ नवमांश में हो तो राज्यलाभ, भूमिप्राप्ति, धन – धान्यादि का लाभ, राजसम्मान, वाहन, वस्त्र, आभूषणादि का लाभ, प्रवास में भी स्थानलाभ और सहोदर बन्धु सौख्य होता है। यदि मंगल बलयुत होकर केन्द्र या तृतीय भाव में हो तो पराक्रम से धनलाभ, युद्ध में शत्रु की पराजय, स्त्री –

पुत्रादि का सुख और राजसम्मान प्राप्त होता है , परन्तु भौम दशा के अन्त में सामान्य कष्ट भी होता है।

अन्य स्थिति में फल - भौम अपने नीचादि दुष्ट भाव में निर्बल होकर स्थित हो या पापग्रह से युत या दृष्ट हो तो उसकी दशा में धन- धान्य का विनाश, कष्ट आदि अशुभ फल कहना चाहिये।

बुध दशा फल –

अथ सर्वनभोगेषु य: कुमार: प्रकीर्तित:।
तस्य तारेशपुत्रस्य कथयामि दशाफलम्।।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुक्ते केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
मित्रक्षेत्रसमायुक्ते सौम्ये दाये महत्सुखम्।।
धनधान्यादिलाभं च सत्कीर्तिधनसम्पादाम्।
ज्ञानाधिक्यं नृपप्रीतिं सत्कर्मगुणवर्द्धनम्।।
पुत्रदारादि सौख्यं व्यापाराल्लभते धनम्।
क्षीरेण भोजनं सौख्यं व्यापाराल्लभते धनम्।।
शुभदृष्टियुते सौम्ये भाग्ये कर्माधिपे दशा।
आधिपत्ये बलवती सम्पूर्णफलदायिका।।

सभी ग्रहों में जिसको कुमार कहा जाता है, उस बुध की महादशा का फल इस प्रकार है – यदि बुध अपने उच्च में हो या स्वक्षेत्र में हो या केन्द्र - त्रिकोण मित्रगृह में बैठा हो तो उसकी दशा में सुख, धन – धान्य का लाभ, सुकीर्ति, ज्ञानवृद्धि, राजा की सहानुभूति, शुभ कार्य की वृद्धि, पुत्र – स्त्रीजन्य सुख, रोगहीनता, दुग्धयुत भोजन एवं व्यापार से धनलाभ होता है। यदि बुध पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो या शुभ ग्रह से युत हो, कर्मेश होकर भाग्य स्थान में बैठा हो और पूर्ण बली हो तो उक्त फल पूर्ण होगा, अन्यथा सामान्य फल की प्राप्ति होती है।

अन्य फल - यदि बुध पापग्रह से युत दृष्ट हो तो राजद्वेष, मानसिक रोग, अपने बन्धु – बान्धवों से वैर, विदेश – भ्रमण, दूसरे की नौकरी, कलह एवं मूत्रकच्छ्र रोग से परेशानी होती है। यदि बुध 6,8,12 वें स्थान में हो तो लाभ तथा भोग एवं धन का नाश होता है। वात, पाण्डुरोग, राजा, चोर, और अग्नि से भय, कृषि सम्बन्धी भूमि और गाय का विनाश होता है। सामान्यतया दशा के प्रारम्भ में धन – धान्य, विद्या लाभ, सुख पुत्र कलत्रादि लाभ, सन्मार्ग में धन व्यय आदि शुभ होता है। मध्य काल में राजा से आदर प्राप्त होता है, और अन्त में दु:ख प्राप्त होता है।

गुरू दशा फल –

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे जीवे केन्द्र लाभत्रिकोणगे।
मूलत्रिकोणलाभे वा तुङ्गाशे स्वांशगेऽपि वा।।
राज्यलाभं महत्सौख्यं राजसन्मानकीर्तनम्।
गजवाजिसमायुक्तं देवब्राह्मणपूजनम्।।
दारपुत्रादिसौख्यं च वाहनाम्बरलाभजम्।
यज्ञादिकर्मसिद्धिः स्याद्वेदान्तश्रवणादिकम्।।
महाराजप्रसादेनाऽभीष्टसिद्धिः सुखावहा।
आन्दोलिकादिलाभश्च कल्याणं च महत्सुखम्।।
पुत्रदारादिलाभश्च अन्नदानं महत्प्रियम्।

गुरू यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्र, त्रिकोण या लाभ, मूल त्रिकोण, अपने उच्च नवमांश या अपने नवमांश में बैठा हो तो राज्य की प्राप्ति, महासुख, राजा से सम्मान, यश- घोड़े हाथी आदि की प्राप्ति, देव – ब्राह्मण में निष्ठा, स्त्री - पुत्रादि से सुख, वाहन वस्त्रलाभ, यज्ञादि धार्मिक कार्य की सिद्धि, वेद – वेदान्तादि का श्रवण, महाराजा की कृपा से अभीष्ट की प्राप्ति, सुख, पालकी आदि की प्राप्ति, कल्याण, महासुख, पुत्र कलत्रादि का लाभ, अन्नदान आदि शुभ फल प्राप्त होता है।

अन्य फल – यदि गुरू नीच या अस्त, पापग्रहों से युत या 8,12 भावों में स्थित हो तो स्थाननाश, चिन्ता, पुत्रकष्ट, महाभय, पशु – चौपायों की हानि, तीर्थयात्रा आदि होता है। गुरू की दशा आरम्भ में कष्टकारक, मध्य तथा अन्त में चतुष्पदों से लाभदायक, राजसम्मान, ऐश्वर्य, सुख आदि का अभ्युदय कराने वाली होती है।

शुक्रदशाफल –

परमोच्चगते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
नृपाऽभिषेक – सम्प्राप्तिर्वाहनाऽम्बरभूषणम्।।
गजाश्वपशुलाभं च नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
अखण्डमण्डलाधीश राजसन्मानवैभवम्।।
मृदंगवाद्यघोषं च गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्।
त्रिकोणस्थे निजे तस्मिन् राज्यार्थगृहसम्पदः।।
विवाहोत्सवकार्याणि पुत्रकल्याणवैभवम्।
सेनाधिपत्यं कुरूते इष्टबन्धुसमागम्।।

नष्टराज्याद्धनप्राप्तिं गृहे गोधनसङ्ग्रहम्।।

यदि शुक्र अपने परम उच्च, उच्च स्वराशि या केन्द्र में बैठा हो तो उसकी दशा में जीवों को राज्याभिषेक की प्राप्ति, वाहन, वस्त्र, आभूषण, हाथी, घोड़े, पशु आदि का लाभ, सदा सुस्वादु भोजन, सम्पूर्ण पृथ्वी के स्वामी से सम्मान एवं स्वगृह में लक्ष्मी की अनुकम्पा से मृदंग वाद्य – वादनपूर्ण उत्सव होता है। यदि शुक्र त्रिकोण में हो तो उस शुक्र की दशा में राज्य, धन, गृह का लाभ, गृह में विवाहादि मांगलिक कार्य, पुत्र – पौत्रादि का जन्म, सेनानायक, घर में शुभ चिन्तक मित्र का समागम, गौ आदि पशुओं की वृद्धि एवं नष्ट राज्य या धन की पुन: प्राप्ति होती है ।

अन्य फल – यदि शुक्र 6,8,12 वें भाव में या स्वनीच राशिस्थ हो तो उसकी दशा में स्वबन्धु – बान्धवों में वैमनश्यता, पत्नी को पीड़ा, व्यवसाय में हानि, गाय, भैंस आदि पशुओं से हानि, स्त्री – पुत्रादि या अपने बन्धु – बान्धवों का विछोह होता है।

यदि शुक्र भाग्येश या कर्मेश होकर लग्न या चतुर्थ स्थान में स्थित हो तो उसकी दशा में महत् सौख्य, देश या ग्राम का पालक, देवालय – जलाशयादि का निर्माण, पुण्य कर्मों का संग्रह, अन्नदान, सदैव सुमधुर भोजन की प्राप्ति, उत्साह, यश एवं स्त्री – पुत्र आदि से सुखानुभूति होती है।

शनि दशा फल –

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे मन्दे मित्रक्षेत्रेऽथ वा यदि ।
मूलत्रिकोणे भाग्ये वा तुंगाशे स्वांशगेऽपि वा।।
दुश्चिक्ये लाभगे चैव राजसम्मानवैभवम्।
सत्कीर्तिर्धनलाभश्च विद्यावादविनोदकृत्।।
महाराजप्रसादेन गजवाहनभूषणम्।
राजयोगं प्रकुर्वीत सेनाधीशान्महत्सुखम् ।।
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि राज्यलाभं करोति च ।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्दारपुत्रादिलाभकृत् ।।

यदि शनि अपने उच्च, स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र, मूलत्रिकोण, भाग्य, अपने उच्चांश, अपने नवमांश, तृतीय, लाभस्थान में बैठा हो तो राजसम्मान, सुन्दर यश, धनलाभ, विद्याध्ययन से स्वान्त सुख, महाराजा की कृपा से सेनानायक, हाथी, वाहन, आभूषण आदि का लाभ, परम सुख, गृह में लक्ष्मी की कृपा, राज्यलाभ, पुत्र कलत्र धनादि का लाभ, गृह में कल्याण आदि का शुभ फल प्रदान करने वाला होता है।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वाऽस्तंगतेऽपि वा।
विषशस्त्रादिपीडा च स्थानभ्रंशं महद्भयम्।।

पितृमातृवियोगं च दारपुत्रादिपीडनम्।
राजवैषम्यकार्याणि ह्यनिष्टं बन्धनं तथा।।
शुभयुक्तेक्षिते मन्दे योगकारकसंयुते।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा मीनगे कार्मुके शनौ।।
राज्यलाभं महोत्साहं गजाश्वाम्बरसंकुलम्।

यदि शनि 6,8,12 में हो, नीच या अस्तंगत हो तो विष या शस्त्र से पीड़ा, स्थान का विनांश, महाभय, माता – पिता से वियोग, पुत्र कलत्रादि को पीड़ा, राजवैमनश्यता से कार्य में अनिष्ट, बन्धन आदि प्राप्त होता है। यदि शनि शुभग्रह से युत या दृष्ट हो, योगकारक ग्रहों से सम्बन्ध रखता हो या केन्द्र - त्रिकोण लाभ में हो या मीन, धन राशिस्थ हो तो राज्यलाभ, हाथी, घोड़े, वस्त्र, महोत्सवादि का कार्य कराता है।

राहु का दशा फल –

राहोस्तु वृषभं केतुर्वृश्चिकं तुंगसंज्ञकम्।
मूलत्रिकोणकं ज्ञेयं युग्मं चापं क्रमेण च।।
कुम्भाली च गृहौ चोक्तौ कन्या मीनौ च केनचित्।
तद्दाये बहुसौख्यं च धनधान्यादिसम्पदाम्।।
मित्रप्रभुवशादिष्टं वाहनं पुत्रसम्भवः।
नवीनगृहनिर्माणं धर्मचिन्ता महोत्सवः।।
विदेशराजसन्मानं वस्त्रालंकारभूषणम्।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे योगकारकसंयुते।।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा दुश्चिक्ये शुभराशिगे।
महाराजप्रसादेन सर्वसम्पत्सुखावहम्।।
यवनप्रभुसन्मानं गृहे कल्याणसम्भवम्।

राहु का उच्च राशि वृष और केतु का वृश्चिक है। राहु का मूलत्रिकोण मिथुन और केतु का धनराशि है। राहु का कुम्भ और केतु का वृश्चिक स्वगृह राशि है। अन्य मत से कन्या और मीन भी राशिगृह है। राहु या केतु अपने उच्चादि स्थानगत हैं तो उनकी महादशा में धन – धान्यादि सम्पत्ति का अभ्युदय, मित्र एवं मान्य जनों की सहानुभूति से कार्यसिद्धि, वाहन, पुत्रलाभ, नवीन गृहनिर्माण, धार्मिक चिन्ता, महोत्सव, विदेश में भी राजसम्मान, वस्त्र, अलंकार एवं आभूषण की प्राप्ति होती है। राहु केतु योगकारक ग्रहों के साथ हों या शुभग्रह से युत दृष्ट होकर केन्द्र, त्रिकोण, लाभ तृतीय भाव में शुभ

राशिगत हों तो राजा – महाराजा की कृपा से सभी सम्पत्तियों का आगमन और विदेशीय यवनराज से भी धनागम तथा अपने घर में कल्याण होता है।

यदि राहु 8,12 भाव में हो तो उसकी दशा कष्टकारक होती है, यदि पापग्रह से सम्बन्ध रखता हो या मारकेश से युत हो या अपने नीच राशिगत हो तो स्थानभ्रष्ट, मानसिक रोग, पुत्र – स्त्री, का विनाश एवं कुभोजन की प्राप्ति होती है । दशा – प्रारम्भ में शारीरिक कष्ट, धन – धान्य का विनाश, दशा के मध्य में सामान्य सुख और अपने देश में धनलाभ तथा दशा के अन्त में स्थानभ्रष्ट, मानसिक व्यथा एवं कष्ट की प्राप्ति होती है ।

केतु दशाफल –

केन्द्रे लाभे त्रिकोणे वा शुभराशौ शुभेक्षिते।
स्वोच्चे वा शुभवर्गे वा राजप्रीतिं मनोनुगम्।।
देशग्रामाधिपत्यं च वाहनं पुत्रसम्भवम्।
देशान्तरप्रयाणं च निर्दिशेत् तत्सुखावहम्।।
पुत्रदारसुखं चैव चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
दुश्चिक्ये षष्ठलाभे वा केतुर्दाये सुखं दिशेत्।।
राज्यं करोति मित्रांशं गजवाजिसमन्वितम्।
दशादौ राजयोगाश्च दशामध्ये महद्भयम्।।
अन्ते दूराटनं चैव देहविश्रमणं तथा।
धने रन्ध्रे व्यये केतो पापदृष्टियुतेक्षिते।।
निगडं बन्धुनाशं च स्थानभ्रंशं मनोरूजम्।
शूद्रसंगादिलाभं च कुरूते रोगसंकुलम्।।

यदि केतु केन्द्र, लाभ, त्रिकोण या शुभ राशिगत हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो, अपने उच्च, शुभ वर्ग में स्थित हो तो राजा से प्रेम, मनोनुकूल वातावरण, देश या ग्राम का अधिकारी, वाहनसुख, सन्तानोत्पत्ति, विदेशभ्रमण, सुखकारक, स्त्री–पुत्र सुख एवं पशुओं से लाभ होता है। यदि केतु 3,6,11 भाव में स्थित हो तो उसकी दशा में सुख, राज्यलाभ, मित्रों का सहयोग एवं हाथी, घोड़े आदि सवारी का लाभ होता है। केतु की दशा के आरम्भ में राजयोग, मध्य में भय एवं अन्त में दूरगमन और शारीरिक कष्ट होता है। 2,8,12 वें भाव में केतु स्थित हो तो जातक पराश्रित, बन्धुनाश, स्थानविनाश, मानसिक रोग, अधम व्यक्ति का संग और रोगयुत होता है।

बोध प्रश्न –

1. सूर्य की उच्च राशि होती है।
   क. मेष   ख. वृष   ग. कर्क   घ.मकर
2. सूर्य यदि १० अंश का हो तो क्या फल होता है।
   क. मान-सम्मान   ख. तीर्थाटन   ग. मानहानि   घ. मन दु:खी
3. स्थिर राशियाँ है –
   क. १,४,७,१०   ख.२,५,८,११   ग. ३,६,९,१२   घ. कोई नहीं
4. वृहत्पराशर होरा शास्त्र के अनुसार राहु किस राशि में उच्च का होता है।
   क. मेष   ख. वृष   ग. मिथुन   घ. कर्क
5. गुरु यदि अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के भाग्य की होती है।
   क. अभिवृद्धि   ख. कमी   ग. मिश्रित   घ. कोई नहीं
6. केतु की दशा का आरम्भ का क्या फल होता है।
   क. राजयोग   ख. मृत्यु   ग. आयुक्षय   घ. मान

1.6 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि महादशा फल विचार से तात्पर्य यह है कि जातक के उपर जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, उस ग्रह की कुण्डली में स्थितिवशात् उस जातक पर प्रभाव पड़ता है। यह ध्यातव्य होता है कि कुण्डली में ग्रह उच्च का है, नीच का है, स्वगृही है, मित्रगृही है, शत्रुगृही है, उस पर कितने शुभग्रह और पापग्रह की दृष्टि है तथा उस ग्रह की अवस्था क्या है आदि इत्यादि ऐसे अनेक तथ्य महादशा फल विचार के दौरान ज्योतिषी के समक्ष उपस्थित होते हैं। केवल ग्रह की दशा देखकर ही फलादेश करना नहीं चाहिए, अपितु सम्पूर्ण स्थितियों को देखने की आवश्यकता होती है। कदाचित् इसीलिए फलादेश का स्तर अत्यन्त व्यापक है। इसके लिए ग्रहों के प्रत्येक पक्षों का सूक्ष्म ज्ञान की आवश्यकता होती है।

1.7 पारिभाषिक शब्दावली

विंशोत्तरी महादशा – विंशोत्तरी महादशा कुल १२० वर्ष की होती है।

उच्चस्थ – उच्च में स्थित।

पृथक- पृथक - अलग-अलग

केन्द्रस्थ – १,४,७,१० में स्थित

अस्तंगत – अस्त हो गया हो।

1.8 बोधप्रश्न के उत्तर

1. क
2. क
3. ख
4. ख
5. क
6. क

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सर्वार्थचिन्तामणि - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – चौखम्भा प्रकाशन
4. फलदीपिका – मूल लेखक – मन्त्रेश्वर
5. वृहज्जातक – मूल लेखक - आचार्य वराहमिहिर

1.10 सहायक पाठ्यसामग्री

1. सर्वार्थचिन्तामणि - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – चौखम्भा प्रकाशन
4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

1.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. विंशोत्तरी महादशा का फल लिखिये।
2. सूर्य एवं चन्द्रमा का फल लिखिये।
3. गुरु एवं शुक्र ग्रह की दशाओं का फल लिखये।
4. शनि एवं राहु महादशा फल लिखिये।
5. महादशा का महत्व प्रतिपादित कीजिये।

इकाई - 2 अन्तर्दशाफल विचार

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 अन्तर्दशा साधन परिचय
2.4 अन्तर्दशाफल विचार (विभिन्न जातक ग्रन्थ के अनुसार)
2.5 सारांश
2.6 पारिभाषिक शब्दावली
2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.9 सहायक पाठ्यसामग्री
2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -202 के तृतीय खण्ड की दूसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – अन्तर्दशा फल विचार। इससे पूर्व आपने विंशोत्तरी दशा फल को जान लिया है। अब आप अन्तर्दशा फल विचार अध्ययन करने जा रहे है।

विंशोत्तरी के पश्चात अन्तर्दशाओं के फलित पक्ष इस अध्याय में वर्णित किया जा रहा है। अन्तर्दशाओं में सूर्यादि ग्रहों का जातक पर क्या शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। इसका ज्ञान इस अध्याय में आपको हो जायेगा।

आइए इस इकाई में हम लोग 'अन्तर्दशा फल विचार' के बारे में हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से जानने का प्रयास करते है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- राशियों के अन्तर्दशाओं को परिभाषित कर सकेंगे।
- अन्तर्दशा दशा फल को समझा सकेंगे।
- अन्तर्दशा दशा फल का विचार कैसे किया जाता है। जान जायेगें।
- विभिन्न जातक ग्रन्थों में अन्तर्दशा दशा के फल क्या है। उसका विश्लेषण कर सकेंगे।

2.3 अन्तर्दशा साधन परिचय

आप पूर्व की अध्यायों में अन्तर्दशा साधन के गणितीय पक्ष को जान चुके है। यहाँ आप राशियों के अन्तर्दशाओं के साधन से परिचित हो जायेंगे। तत्पश्चात् उसके फलाफल का ज्ञान भी प्राप्त करेंगे। महादशापति और अन्तर्दशा के नियत वर्षसंख्या को परस्पर गुणा कर चक्र की सम्पूर्ण दशा को वर्षसंख्या से भाग देने से वर्षादि लब्धि अन्तर्दशा का भोगकाल होता है। यथा -

दशां दशाब्दसङ्गुण्यां सर्वायुः संख्यया हरेत्।
लब्धमन्तद्र्दशा ज्ञेया वर्षमासदिनादिकाः।।

पूर्वोक्त उदाहरण में मिथुन की महादशा में प्रथम अन्तर्दशा मिथुन की ही होगी, मिथुन के दशावर्ष ९ को उसी से गुणा कर चक्र की सम्पूर्ण दशावर्ष ८५ से भाग देने पर ९×९/८५ = ० वर्ष ११ मास १३ दिन मिथुन में मिथुन की अन्तर्दशा होगी। मिथुन की अन्तर्दशा के बाद सिंह की अन्तर्दशा ९×५/८५ = ० वर्ष ६ मास १० दिन, कर्क की ९×२१/८५ = २ वर्ष २ मास २० दिन, कन्या की

९×९/८५ = ० वर्ष ११ मास १३ दिन इसी क्रम से अन्य राशियों तुला, वृश्चिक, मीन कुम्भ और मकर की अन्तर्दशाएँ निकालनी चाहिए।

चक्रेशाब्दा भुक्तिराशीश्वराब्दैर्हत्वा तत्तद्राशिमानायुराप्ताः।
अब्दा मासा वासरा नाडिकाद्या दुःस्थानेशा दुःखरोगाकराः स्युः।।

पूर्वोक्त विधि को पुनः कहते हैं। चक्रेश (महादशापति) के दशावर्ष को अन्तर्दशापति के दशावर्ष से गुणाकर गुणनफल में चक्रेश से सम्बन्धित नवांश के सम्पूर्ण वर्षमान से भाग देने से वर्ष, मास और दिनात्मक भुक्तिकाल होता है। दुःस्थान के स्वामी की अन्तर्दशा में अनेक दुःख और रोगादि होते हैं।

इत्थं महादायदिनं महाब्दैः सङ्गुण्य तत्रान्तरदास्तु दाये।
पुनश्च तैस्तैः परमायुरब्दैर्हृतं दशान्तर्दशिता दशाख्या।।

दशापति और अन्तर्दशापति के दशावर्षों को परस्पर गुणाकर नक्षत्रचरण की परमायु वर्ष से भाग देने पर वर्षादि लब्धि अन्तर्दशापति के भोग्य वर्ष होते हैं।

विनाडीकृत्य नक्षत्रं स्वैः स्वै संवत्सरैः पृथक्।
दायैः सङ्गुण्य सर्वायुराप्तं सूक्ष्मदशाफलम्।।

पलात्मक नक्षत्रमान को अपने-अपने दशावर्ष से गुणाकर कालचक्र के परमायु वर्ष से भाग देने पर सूक्ष्म दशा होती है।

ग्रहवत्सरवासरा हृताः परमायुष्यसमामितध्रुवैः।
निजवर्षगुणाः स्वपाकदा इति पाकेष्वखिलेषु चिन्तयेत्।।

जिस ग्रह की महादशा में इष्ट ग्रह की अन्तर्दशा का ज्ञान करना हो उसके दशावर्ष में नक्षत्रचरण की परमायु वर्ष से भाग देकर वर्षादि लब्धि को इष्ट ग्रह के दशावर्ष से गुणा करने पर वर्षादि उस ग्रह की अन्तर्दशा होती है। इस विधि का प्रयोग सभी प्रकार की अन्तर्दशा आदि के आनयन में करना चाहिए।

2.4 अन्तर्दशा फल विचार - विभिन्न जातक ग्रन्थों के अनुसार

जातकपारिजात, फलदीपिका एवं जातकाभरण ग्रन्थ के अनुसार अन्तर्दशा फल -

सूर्यमहादशा में अन्तर्दशा फल -

द्विजभूपतिशस्त्राद्यैर्धनप्राप्तिमनोरुजम्।
विदेशवनसंचारं भानोरन्तर्गते रवौ।।

सूर्य की महादशा में सूर्यान्तर्दशा काल में ब्राहमण, राजा और शस्त्रादि से धन की प्राप्ति होती है। मानसिक उत्पीड़न और विदेश-अरण्यादि भ्रमण होता है।

'महीश्वरादुपलभतेऽधिकं यशो वनांचलस्थलवसतिं धनागमम्।
ज्वरोष्णरुक् जनकवियोगजं भयं निजां दशां प्रविशति तीक्ष्णदीधितौ'।।

(फलदीपिका)

अर्थात् सूर्य की दशान्तर्दशा में राजा से सम्मान, यश की वृद्धि, वन-प्रदेश और पर्वतों मेंर विचरणं तथा धनागम होता है। ज्वरताप से कष्ट तथा पिता का निधन भी सम्भव होता है।

चन्द्रान्तर्दशा-फल

बन्धुमित्रजनैरर्थं प्रमादं मित्रसज्जनैः।
पाण्डुरोगादिसन्तापं भानौ चन्द्रदशान्तरे।।

सूर्य की महादशा में चन्द्रान्तर्दशा काल में स्वजनों-बन्धु-बान्धवों तथा मित्रों के सहयोग से धन का लाभ होता है। मित्र और सज्जनों की सङगति से मनोविनोदादि का सुख प्राप्त होता है। पाण्डुरोगार्त होने से कष्ट होता है।

'रिपुक्षयो व्यसनशमो धनागमः कृषिक्रिया गृहकरणं सुहृद्युतिः।
क्षयानलप्रतिहतिरर्कदायकं शशी यदा हरति जलोद्भवा रुजः'।। (फलदीपिका)
'करोति चन्द्रस्तरणेर्दशायां सुवर्णभूषाम्बरविद्रुमाप्तिम्।
समुन्नतिं मानसुखाभिवृद्धिं विरोधिवर्गापचयं जयं च।।
पङ्केरुहेशस्य चरन्विपाके कुर्यान्मृगाङोक यदि लाभमुच्चैः।
प्रमादमद्भ्यो ग्रहणीं च पाण्डुं केषाचिंदेतन्मतमत्र चोक्तम्'।। (जातकाभरण)

भौमान्तर्दशा-फल

रत्नकांचनवित्ताप्तिं राजस्नेहं शुभावहम्।
पैत्यरोगादिसंचारं कुजे भानुदशान्तरे।।

सूर्य-महादशा के भौमान्तरावधि में जातक को स्वर्ण-रत्नादि का लाभ, राजकृपा से अनेक शुभ फल का लाभ होता है तथा पित्तज व्याधियों का संक्रमण होता है।

'सत्प्रवालकलधौतसुचेलं मङगलानि विजयं च विधत्ते।
मंगलं कमलिनीशदशायां भूमिपालकुलतः किल मानम्'।। (जातकाभरण)
'रुजागमः पदविरहोऽरिपीडनं व्रणोद्भवः स्वकुलजनैर्विरोधिता।
महीभृतो भवति भयं धनच्युतिर्यदा कुजो हरति तदार्कवत्सरम्'।। (फलदीपिका)

राह्वन्तर्दशा-फल

अकाले मृत्युसन्तापं बन्धुवर्गारिपीडनम्।
पदच्युतिं मनोदुःखं रवेरन्तर्गतेऽप्यहौ।।

सूर्य-महादशा के रा...न्तरावधि में अकाल मृत्यु का भय होता है, स्वजनों-बन्धु-बान्धवों तथा शत्रुओं से उत्पीड़न, पदच्युति और मानसिक सन्ताप होता है।

'रिपूदयो धनहृतिरापदुदमो विषाद्धयं विषयविमूढता पुनः।
शिरोदृशोरधिकरुगेव देहिनामहौ भवेदहिमकरायुरन्तरे'।। (फलदीपिका)

गुर्वन्तर्दशा-फल

सर्वपूज्यं सुताद्वित्तं देवब्राहमणपूजनम्।
सत्कर्माचारसद्गोष्ठी रवेरन्तर्गते गुरौ।।

सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशावधि में जातक सर्वत्र सम्मानित होता है, पुत्र के द्वारा धन का लाभ और देव-ब्राहमणों के प्रति आस्था एवं आदर भाव का संचार होता है; जातक सत्कर्मरत होता है तथा सज्जनों की सङगति का उसे लाभ मिलता है।

'सद्वस्त्रधान्याषि सङ्ग्रहेच्छा स्वच्छा मतिर्विप्रसुरार्चनेषु।
भूपाप्तसम्मानधनानि नूनं भानोर्दशायां चरतीन्द्रवन्द्ये'।। (जातकाभरण)
'रिपुक्षयो विविधधनाप्तिरन्वहं सुरार्चनं द्विजगुरुबन्धुपूजनम्।
श्रवःश्रमो भवति च यक्ष्मरोगिता सुरार्चिते प्रविशति गोपतेर्दशायाम्'।।

(फलदीपिका)

शन्यन्तर्दशा-फल

सर्वशत्रुत्वमालस्यं हीनवृत्तिं मनोरुजम्।
राजचोरभयप्राप्तिं रवेरन्तर्गते शनौ।।

सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा प्राप्त होने पर शत्रुता, आलस्य, निकृष्ट साधनों का अनुसरण, मानसिक उत्पीड़न तथा राजा और चोर से भय होता है।

'धनाहतिः सुतविरहः स्त्रिया रुजो गुरुव्ययः सपदि परिच्छदच्युतिः।
मलिष्ठता भवति कफप्रपीडनं शनैश्चरे सवितृदशान्तरं गते'।। (फलदीपिका)
'नीचारिभूमीपतिभीतिरुच्चैः कण्डूयनाद्यामयसम्भवः स्यात्।
मित्राण्यमित्राणि भवन्ति नूनं शनैश्चरे भानुदशान्तरस्थे'।। (जातकाभरण)

बुधान्तर्दशा-फल

बन्धुपीडां मनोदुःखं सन्नोत्साहं धनक्षयम्।
किंचित्सुखमवाप्नोति रवेरन्तर्गते बुधे।।

सूर्य की महादशा में यदि बुध की अन्तर्दशा हो तो उस अवधि में स्वजनो एवं परिजनों का कष्ट, मानसिक सन्ताप, हतोत्साह और धन का नाश होता है। जातक को थोड़ा सुख ही प्राप्त होता है।

'विचर्चिका पिटकसकुष्ठकामिला विशर्धनं जठरकटिप्रपीडनम्।
महाक्षयस्त्रिगदभयं भवेत्तदा विधोः सुते चरति रवेरथाब्दकम्'।। (फलदीपिका)

'विचर्चिकाद्दुरविकारपूर्वैः पापामयैर्देहनिपीडनं स्यात्।
धनव्ययश्चापि हतोत्सवश्च विधोः सुते भानुदशां प्रयाते'।। (जातकाभरण)

केत्वन्तर्दशा-फल

कण्ठरोगं मनस्तापं नेत्ररोगमथापि वा।
अकालमृत्युमाप्नोति रवेरन्तर्गते ध्वजे।।

सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा प्राप्त होने पर कण्ठरोग, मानसिक सन्ताप तथा नेत्ररोगादि से जातक पीड़ित होता है। उसकी अकाल मृत्यु भी सम्भव होती है।

'सुहृद्व्ययः स्वजनकुटुम्बविग्रहो रिपोर्भयं धनहरणं पदच्युतिः।
गुरोर्गदश्चरणशिरोरुगुच्चकैः शिखी यदा विशति दशां विवस्वतः'।।

(फलदीपिका)

मित्रहानि, स्वजन एवं परिजनों से विरोध, शत्रुओं से भय, धनक्षय, पदच्युति, कुाल के वुद्धजनों के पैरों और शिर में भयंकर पीड़ा से कष्ट आदि फल सूर्यदशा में केतु की अन्तर्दशावधि में जातक को प्राप्त होते हैं।

शुक्रान्तर्दशा-फल

जलद्रव्याप्तिमायासं कुस्त्रीजननिषेवणम्।
शुष्कसंवादमाप्नोति रवेरन्तर्गते भृगौ।।

सूर्य की महादशा के शुक्रभुक्तिकाल में जातक को जल से उद्भूत पदार्थो-मोती, शंख, मत्स्य आदि-का लाभ अथवा इन पदार्थों के व्यवसाय से लाभ होता है। विश्रान्ति तथा कुत्सित स्त्रियों से समागम होता है तथा अर्थहीन विवाद होता है।

'विदेशयानं कलहाकुलत्वं शूलं च मौलिस्थलकर्णपीडाम्।
गाढज्वरं चापि करोति नित्यं दैत्यार्चितो भानुदशां प्रयातः'।। (जातकाभरण)
'शिरोरुजा जठरगुदार्तिपीडनं कृषिक्रिया गृहधनधान्यविच्युतिः।

सुतस्त्रियोरसुखमतीव देहिनां भृगोः सुते चरति रवेरथाब्दकम्'।। (फलदीपिका)

दशादौ दिननाथस्य पितृरोगं धनक्षयम्।
सर्वबाधाकरं मध्ये दशान्ते सुखमाप्नुयात्।।

सूर्य की महादशा के प्रारम्भिक भाग में पिता को कष्ट और धन की हानि होती है। दशा का मध्य भाग बाधापूर्ण होता है तथा दशा का अन्तिम भाग सुखकर होता है।

स्वोच्चे नीचनवांशगस्य तरणेर्दायेऽपवादं भयं
पुत्रस्त्रीपितृवर्गबन्धुमरणं कृष्णदिवित्तक्षयम्।
नीचे तुङ्गनवांशगस्य च रवेः पाके नृपालश्रियं
सौख्यं याति दशावसानसमये वित्तक्षयं वा मृतिम्।।

उच्चराशिगत सूर्य यदि नीचनवांश में स्थित हो तो उसकी दशा में अपवाद, भय-ग्रस्तता, पुत्र, स्त्री अथवा पितृकुल के श्रेष्ठ व्यक्ति का निधन, कृषि तथा व्यवसाय की क्षति होती है।

उच्चराशि के नवांश में स्थित सूर्य यदि नीच राशिगत हो तो राजश्री, सुख आदि का लाभ दशा के अन्त में जातक को प्राप्त होता है।

चन्द्रमहादशा-फल

हिमकिरणदशायां मन्त्रवेदद्विजाप्ति-
र्युवतिजनविभूतिः स्त्रीधनक्षेत्रसिद्धिः।
कुसुमवसनभूषागन्धनानाधनाढयो
भवति बलविरोधे चार्थहा वातरोगी।।

चन्द्रमा की महादशा में मन्त्र, वेद और ब्राहमणों में आस्था विकसित होती है; स्त्रीजनों के प्रति रुचि तथा स्त्री, धन एवं क्षेत्र (भूमि) का लाभ होता है। जातक पुष्प, वस्त्र, आभूषण, सुगन्ध पदार्थ और विपुल धन से सुखी होता है। यदि चन्द्रमा निर्बल हो तो धन की हानि और वातरोग होता है।

'शिशिरकरदशायां मन्त्रदेवद्विजोर्वीपतिजनितविभूतिस्त्रीधनक्षेत्रसिद्धिः।
कुसुमवसनभूषागन्धनानारसाप्तिर्भवति खलु विरोधस्त्वक्षयो वातरोगः'।।
(फलदीपिका)

चन्द्रमा की महादशा में अन्तर्दशा-फल

विद्यास्त्रीगीतवाद्येष्वभिरतिशमनं पट्टवस्त्रादिसिद्धिं
सत्सङंग देहसौख्यं नृपसचिवचमूनायकैः पूज्यमानम्।

सत्कीर्तिं तीर्थयात्रां वितरति हिमगुः पुत्रमित्रैः प्रियं च

क्षोणीगोवाजिलाभं बहुधनविभवं स्वे दशान्तर्विपाके।।

चन्द्रमा की महादशा के चन्द्रमा की ही अन्तर्दशावधि में विद्या, स्त्री और संगीत-गायन और वादन दोनों में विशेष अभिरुचि, रेशमी वस्त्र का लाभ, सत्सङ्ग, दैहिक सुख, राजा, उसके मन्त्री और सेनापति द्वारा सम्मान, सत्कीर्ति तथा पुत्र और मित्रों के साथ तीर्थाटनादि का सुख जातक को प्राप्त होता है। भूमि, गौ और अश्वादि और प्रियवस्तु और धन-वैभवादि की प्राप्ति होती है।

'स्त्रीप्रजाप्तिरमलांशुकागमो भूसुरोत्तमसमागमो भवेत्।

मातुरिष्टफलमङ्गनासुखं स्वां दशां विशति शीतदीधितौ'।। (फलदीपिका)

चन्द्रमा की दशा में उसके भुक्तिकाल में कन्या का जन्म, स्वच्छ निर्मल वस्त्र का लाभ तथा श्रेष्ठ ब्राहमणों में समागम होता है। माता की सन्तुष्टि और स्त्रीसुख की प्राप्ति होती है।

भौमान्तर्दशा-फल

रोगं विरोधबुद्धिं च स्थाननाशं धनक्षयम्।

मित्रभ्रातृवशात् क्लेशं चन्द्रस्यान्तर्गतेर कुजे।।

चन्द्रमा की महादशा के भौमान्तर्दशा काल में रोगार्तता, विरोधबुद्धि, स्थानच्युति, धन का विनाश और सहोदर तथा मित्रों के द्वारा जातक उत्पीड़ित होता है।।

'कोशभ्रंशं रक्तपित्तादिदोषं रोगोत्पत्तिं स्थानतः प्रच्युतिं च।

कुर्यात्पीडां मातृपित्रादिवर्गैर्भूमीसूनुर्यामिनीनाथपाके'।। (जातकाभरण)

'पित्तवह्निरुधिरोद्भवा रुजः क्लेशदुःखरिपुचोरपीडनम्।

वित्तमानविहतिर्भवेत्कुजे शीतदीधितिदशान्तरं गते'।। (फलदीपिका)

राह्वन्तर्दशा-फल

रिपुरोगभयात् क्लेशं बन्धुनाशं धनक्षयम्।

न किंचित्सुखमाप्नोति राहौ चन्द्रदशान्तरे।।

शत्रु और रोगभय से कष्ट, बन्धु-बान्धवों का विनाश तथा धन की हानि होती है। चन्द्रमा की महादशा में रा...न्तरावधि में जातक को थोड़ा भी सुख नहीं होता।

'तीव्रदोषरिपुवृद्धिबन्धुरुक् मारुताशनिभयार्तिरुग्भवेत्।

अन्नपानजनितज्वरोदयाश्चन्द्रवत्सरविहारके ह्यग्रहौ'।। (फलदीपिका)

गुर्वन्दर्दशाफल

यानादिविविधार्थाप्तिं वस्त्राभरणसम्पदः।

यत्नात् कार्यमवाप्नोति जीवे चन्द्रदशान्तरे।।

चन्द्रमहादशान्तर्गत बृहस्पति की अन्तर्दशा में वाहनादि सम्पत्ति का लाभ, विपुल मात्रा में वस्त्र-आभूषणादि का लाभ होता है और प्रयत्न करने से समस्त कार्य सफल होते हैं।

'विशिष्ट धनधान्यभोगानन्दाभिवृद्धिर्गजवाजिसम्पत्।
पुत्रोत्सवश्चापि भवेन्नराणां गुरौ सुराणां शशिपाकसंस्थे'।। (जातकाभरण)
'दानधर्मनिरतिः सुखोदयो वस्त्रभूषणसुहृत्समागमः।
राजसत्कृतिरतीव जायते कैरवप्रियवयोहरे गुरौ'।। (फलदीपिका)
मातृपीडा मनोदुःखं वातपैत्त्यादिपीडनम्।
स्तब्धवागरिसंवादं शनौ चन्द्रदशान्तरे।।

चन्द्रमहादशा के शनि-अन्तर्दशावधि में जातक की माता को कष्ट, मानसिक सन्ताप, वात-पित्तजन्य व्याधि से कष्ट, शत्रु के साथ उसे स्तब्ध कर देने वाला विवाद आदि फल होते हैं।।78।।

'नरेन्द्रचैराहितवह्निभीतिं कलत्रपुत्रासुखरुक् प्रवृद्धिम्।
करोति नानाव्यसनानि पुंसां शनिर्निशानाथदशां प्रविष्टः'।। (जातकाभरण)
पैत्तरोगनिवहः सुहृत्सुतस्त्रीरुजा व्यसनसम्भवो महान्।
प्राणहानिरथवा भवेच्छनौ मारबन्धुवयसोऽन्तरं गते'।। (फलदीपिका)

बुधान्तर्दशा-फल

मातृवर्गाद्धनप्राप्तिर्विद्वज्जनसमाश्रयम्।
वस्त्रभूषणसम्प्राप्तिर्बुधे चन्द्रदशान्तरे।।

चन्द्रमहादशा में बुधान्तर्दशा हो तो मातुलपक्ष से धनलाभ, वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है तथा जातक सज्जनों का आश्रयदाता होता है।

'सर्वदा धनगजाश्वगोकुलप्राप्तिराभरणसौख्यसम्पदः।
चित्तबोध इति जायते विधोरायुषि प्रविशते यदा बुधः'।। (फलदीपिका)
'उदारनामान्तरलब्धिमुच्चैर्ललामगोभूमिगजाश्ववृद्धिः।
विद्याधनैश्वर्यसम्मुन्नतत्वं कुर्याद्बुधश्चन्द्रदशान्तराले'।। (जातकाभरण)

केत्वन्तर्दशा-फल

स्त्रीरोगं बन्धुनाशं च कुक्षिरोगादिपीडनम्।
द्रव्यनाशमवाप्नोति केतौ चन्द्रदशान्तरे।।

पत्नी को ......, स्वजनो का विनाश, उदरविकारजन्य पीड़ा, धन-धान्य की हानि आदि फल जातक को चन्द्रमहादशान्तर्गत बुध की अन्तर्दशा मेंर प्राप्त होते हैं।

दासभृत्यहतिरस्ति देहिनां केतुके हरति चान्द्रमब्दकम्'।। (फलदीपिका)

शुक्रान्तर्दशा-फल

स्त्रीधनं कृषिपश्वादिजलवस्त्रागमं सुखम्।
मातृरोगमवाप्नोति भृगौ चन्द्रदशान्तरे।।

स्त्रीपक्ष से धनलाभ, कृषि-पशुधन, जलीय पदार्थ और वस्त्रादि का सुख, मातृपक्ष से रोग का संक्रमण-ये फल चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशावधि में जातक को प्राप्त होते हैं।

'तोययानवसुभूषणाङगनाविक्रयक्रयकृषिक्रियादयः।
पुत्रमित्रपशुधान्यसंयुतिश्चन्द्रदायहरणोन्मुखे भृगौ'।।(फलदीपिका)
'नानाङगनाकेलिविलासशीलो जलोद्भवैर्धान्यधनैश्च युक्तः।
मुक्ताफलाद्याभरणैरपि स्यादिन्दोर्दशायां हि सिते मनुष्यः'।।(जातकाभरण)

सूर्यन्तर्दशा-फल

नृपप्रायकमैश्वर्यं व्याधिनाशं रिपुक्षयम्।
सौख्यं शुभमवाप्नोति रवौ चन्द्रदशान्तरे।।

राजतुल्य ऐश्वर्यादि का लाभ, रोगमुक्ति, शत्रुओं का विनाश, सुख औरअनेक शुभ फल की प्राप्ति जातक को चन्द्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा आने पर होती है।

'राजमाननमतीव शूरता रोगशान्तिररिपक्षविच्युतिः।
पित्तवातरुगिने गते तदा स्याच्छशाङकपरिवत्सरान्तरम्'।।(फलदीपिका)
'नरेश्वराद्गौरवमर्थलाभं क्षयामयार्तिं प्रकृतेर्विकारम्।
चैराग्निवैरिप्रभवां च भीतिं शीतांशुपाके कुरुते दिनेशः'।।(जातकाभरण)
आदौ भावफलं मध्ये राशिस्थानफलं विदुः।
पाकावसानसमये चाङगजं दृष्टिजं फलम्।।

चन्द्रमा जिस भाव में स्थित हो उस भाव के शुभाशुभानुसार शुभाशुभ फल दशा के प्रारम्भ में देता है। जिस राशि में वह स्थित होता है उसके अनुसार शुभाशुभ फल दशा के मध्य में तथा लग्न या शरीरजन्य फल और चन्द्रमा पर दृष्टिफल दशा के अन्तिम भाग में देता है।

आरोही सूर्यदशा फल कथन

आरोहिणी वासरनायकस्य दशा महत्वं कुरुतेऽति सौख्यम्।

परोपकारं सुतदारभूमिगोवाजिमातङ्गकृषिक्रियादीन्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि आरोही अर्थात् उच्च राशि में जाने वाले सूर्य की दशा हो, तो मनुष्य को अपना महत्त्व स्थापित करने का अवसर मिलता है। अत्यधिक सुख की प्राप्ति होती है। अन्यान्य व्यक्तियों का उपकार करने में भी प्रवृत्त रहता है। पुत्र, स्त्री, भूमि, गाय, घोड़ा, हाथी आदि की प्राप्ति सहज ही होता है। कृषिकार्य से भी लाभ सम्भव होता है।।

अवरोही दशा फल कथन

दशावरोहाद्दिननायकस्य कृषिक्रिया वित्तगृहेष्टनाशम्।
चोराग्निपीडां कलहं विरोधं नरेशकोपं कुरुते विदेशम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि अवरोही अर्थात् उच्च से निकलकर नीच की ओर अग्रसर सूर्य की दशा के समय मनुष्य को कृषि कर्म के अवसर का अभाव होता है। अन्न, धन, गृह, इष्ट वस्तु या अभिलषित वस्तु आदि की हानि होती है। चोर, अग्नि आदि से भी पीड़ा प्राप्त होती है। कलह, विरोध आदि को भी झेलना पड़ता है। राजकीय कोप भी मिलता है। विदेश यात्रा भी करने पड़ते हैं।।

नीच (तुला) राशिस्थ सूर्य दशा फल कथन

नीचस्थितस्यापि रवेर्विपाके मानार्थनाशं क्षपालकोपात्।
स्वबन्धुनाशं सुतमित्रदारैः पित्रादिकानामपकीर्तिमेति।।

जिस किसी की कुण्डली में नीच तुला राशि में सूर्य के स्थित रहने पर मनुष्य राजकीय कोप के कारण अपमान सहन करता हुआ धन हानि भी उठाता है। उसे अपने बन्धु-बान्धवों की हानि भी सहन करना पड़ता है। अपने पुत्र, मित्र और स्त्री के कारण भी अपने पिता आदि कुल की अपकीर्ति को सहन करता है।।

परमनीचस्थ सूर्य दशा फल कथन

अत्यन्तनीचान्वितसूर्यदाये विपत्तिमाप्नोति गृहच्युतिं च।
विदेशयानं मरणं गुरूणां स्त्रीपुत्रगोभूमिकृषेर्विनाशम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य अपने परमनीचांश तुलाराशि के 10 अंश में स्थित हो, तो उस की दशा के समय विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। प्रायः घर-गृहस्थी से दूर हो जाना पड़ता है। विदेश भी जाना पड़ता है। गुरु वर्ग के जनों की मृत्यु होती है। स्त्री, पुत्र, गोधन, भूमि और कृषि आदि की हानि भी उठानी पड़ती है।

मूलत्रिकोण (सिंह) राशिस्थ सूर्य दशा फल कथन

मूलत्रिकोणस्थरवेर्विपाके क्षेत्रार्थदारात्मजबन्धुसौख्यम्।

राजाश्रयं गोधनमित्रलाभं स्वस्थानयानादिकमेति राज्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य अपनी मूलत्रिकोण राशि में हो उसकी दशा के समय मनुष्य कृषियोग्यभूमि, धन, स्त्री, पुत्र और बन्धुओं का ... सौख्य प्राप्त करता है। राज्य का आश्रय पाता है। गोधन और स्त्रियों का लाभ भी प्राप्त करता है। अपने स्थान, वाहन आदि के साथ राज्य की प्राप्ति भी करने का अवसर प्राप्त होता है।

स्वराशि (सिंहस्थ) सूर्य दशा फल कथन

स्वक्षेत्रगस्यापि रवेर्दशायां स्वबन्धुसौख्यं कृषिवित्तकीर्तिम्।
विद्यायशः प्रार्थितराजपूजां स्वभूमिलाभं समुपैति विद्याम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य स्वराशि (सिंह) में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अपने बन्धुओं का सुख प्राप्त होता है। कृषि, धन और कीर्ति का लाभ होता है। विद्या (ज्ञान), यश आदि भी मिलते हैं। अपने योग्य राजकीय सम्मान भी पाता है। अपनी भूमि और विद्या का लाभ भी प्राप्त करता है।।

अधिशत्रुराशिगत सूर्य दशा फल कथन

दशाविपाके ह्यधिशत्रुगस्य रवेः प्रनष्टार्थकलत्रपुत्रः।
गोमित्रपित्रादिशरीरकष्टं शत्रुत्वमायाति जनैः समन्तात्।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि अधिशत्रु ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अपने धन, स्त्री, पुत्र आदि की हानि उठाता है। गोधन, मित्र, पिता आदि को शारीरिक कष्ट होता है। हर प्रकार से अन्य जनों से शत्रुता होती है।।24।।

शत्रुराशिस्थ सूर्य दशाफल कथन

सपत्नराशिस्थितसूर्यदाये दुःखी परिभ्रष्टसुतार्थदारः।
नृपाग्निचौरैर्विपदं विवादं पित्रोर्विरोधं च दशान्तमेति।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि शत्रु ग्रह की राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य दुःखी रहता है। पुत्र, धन, स्त्री आदि की हानि होती है। राजकीयमाध्यम, अग्नि, चोर आदि से विपत्ति का कारण प्राप्त होता है। विवाद में उलझना पड़ता है। अपने माता-पिता से भी विरोध दशा के अन्त में होता है।

बोध प्रश्न : -

1. सूर्य की महादशा में सूर्यान्तर्दशा काल में किसकी प्राप्ति होती है?
   क. मान-सम्मान प्राप्ति ख. धन प्राप्ति ग. ऐश्वर्य प्राप्ति घ. सभी

2. फलदीपिका के अनुसार सूर्यान्तर्दशा का फल क्या है?
   क. राजा द्वारा सम्मान   ख. धन प्राप्ति   ग. लाभ   घ. उपुर्यक्त सभी
3. स्वराशि का सूर्य अन्तर्दशा काल में क्या फल देता है।
   क. बन्धु सुख   ख. धन सुख   ग. राज्य सुख   घ. कोई नहीं
4. चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का क्या फल है?
   क. रोग   ख. मातृ पक्ष से रोग   ग. व्रण   घ. सुख
5. चन्द्रमा में वृहस्पति दशा का क्या फल है?
   क. वाहन सुख   ख. धन सुख   ग.पत्नी सुख   घ. राज्य सुख

2.5 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि महादशापति और अन्तर्दशा के नियत वर्षसंख्या को परस्पर गुणा कर चक्र की सम्पूर्ण दशा को वर्षसंख्या से भाग देने से वर्षादि लब्धि अन्तर्दशा का भोगकाल होता है। यथा -

दशां दशाब्दसङ्गुण्यां सर्वायुः संख्यया हरेत्।
लब्धमन्तद्र्दशा ज्ञेया वर्षमासदिनादिकाः।।

पूर्वोक्त उदाहरण में मिथुन की महादशा में प्रथम अन्तर्दशा मिथुन की ही होगी, मिथुन के दशावर्ष ९ को उसी से गुणा कर चक्र की सम्पूर्ण दशावर्ष ८५ से भाग देने पर ९×९/८५ = ० वर्ष ११ मास १३ दिन मिथुन में मिथुन की अन्तर्दशा होगी। मिथुन की अन्तर्दशा के बाद सिंह की अन्तर्दशा ९×५/८५ = 0 वर्ष ६ मास १० दिन, कर्क की ९×२१/८५ = २ वर्ष २ मास २० दिन, कन्या की ९×९/८५ = ० वर्ष ११ मास १३ दिन इसी क्रम से अन्य राशियों तुला, वृश्चिक, मीन कुम्भ और मकर की अन्तर्दशाएँ निकालनी चाहिए। सूर्य की महादशा में सूर्यान्तर्दशा काल में ब्राहमण, राजा और शस्त्रादि से धन की प्राप्ति होती है। मानसिक उत्पीड़न और विदेश-अरण्यादि भ्रमण होता है। चन्द्रमा की महादशा के चन्द्रमा की ही अन्तर्दशावधि में विद्या, स्त्री और संगीत-गायन और वादन दोनों में विशेष अभिरुचि, रेशमी वस्त्र का लाभ, सत्सङग, दैहिक सुख, राजा, उसके मन्त्री और सेनापति द्वारा सम्मान, सत्कीर्ति तथा पुत्र और मित्रों के साथ तीर्थाटनादि का सुख जातक को प्राप्त होता है। भूमि, गौ और अश्वादि और प्रियवस्तु और धन-वैभवादि की प्राप्ति होती है। चन्द्रमा की महादशा के भौमान्तर्दशा काल में रोगार्तता, विरोधबुद्धि, स्थानच्युति, धन का विनाश और सहोदर तथा मित्रों के द्वारा जातक उत्पीड़ित होता है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की अन्तर्दशाओं का भी फल

होता है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

अन्तर्दशा – दशा के मध्य अन्तर्दशा होती है।

सूर्यान्तर्दशा – सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा

स्थान च्युति- स्थान से अधोमुखी परिवर्तन

परस्पर – एक दूसरे का

भूमि – पृथ्वी

गौ – गाय

सुत – पुत्र

दारा – पत्नी

नृप – राजा

चौर – चोर

2.7 बोधप्रश्न के उत्तर

1. घ
2. घ
3. क
4. ख
5. क

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जातकपारिजात - आचार्य वैद्यनाथ
2. फलदीपिका – आचार्य मन्त्रेश्वर
3. जातकभरणम् – चौखम्भा प्रकाशन
4. सर्वार्थचिन्तामणि – श्री वेंकटेश
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

2.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. लघुजातक – आचार्य वराहमिहिर
2. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – आचार्य पराशर

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सूर्य की अन्तर्दशा फल लिखिये।
2. अन्तर्दशा साधन विधि सोदाहरण लिखिये।
3. जातकभरण एवं फलदीपिका के अनुसार चन्द्रमा में सूर्यादि ग्रहों की अन्तर्दशा का फल लिखिये।
4. गुरु की अन्तर्दशा फल का लेखन कीजिये।
5. जातकपारिजात के अनुसार विविध ग्रहों की अन्तर्दशा फल का उल्लेख कीजिये।

इकाई - 3 प्रत्यन्तर्दशा फल विचार

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 प्रत्यन्तर्दशा फल परिचय

3.3.1 सूर्यादि ग्रहों के दशा फल

3.4 प्रत्यन्तर्दशा फल विचार

3.5 सारांश

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.9 सहायक पाठ्यसामग्री

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -202 के तृतीय खण्ड की तीसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – प्रत्यन्तर्दशा फल विचार। इससे पूर्व आपने महादशा एवं अन्तर्दशा दशा फल को जान लिया है। अब आप प्रत्यन्तर्दशा फल विचार अध्ययन करने जा रहे है।

विंशोत्तरी एवं अन्तर्दशा फल के पश्चात अब आप और सूक्ष्म दशाओं की ओर बढ़ते हुए प्रत्यन्तर्दशा का फलित पक्ष इस अध्याय में अध्ययन करने जा रहा है। प्रत्यन्तर्दशाओं का जातक पर क्या शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। इसका ज्ञान इस अध्याय में आपको हो जायेगा।

आइए इस इकाई में हम लोग 'प्रत्यन्तर्दशा फल विचार' के बारे में हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से जानने का प्रयास करते है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- प्रत्यन्तर्दशा दशा फल को परिभाषित कर सकेंगे।
- प्रत्यन्तर्दशा फल को समझा सकेंगे।
- प्रत्यन्तर्दशा फल का विचार कैसे किया जाता है। जान जायेगें।
- विभिन्न जातक ग्रन्थों में प्रत्यन्तर्दशाओं दशा के फल क्या है। उसका विश्लेषण कर सकेंगे।

3.3 प्रत्यन्तर्दशा दशाफल

फलादेश विचार के क्रम में अन्तर्दशा के पश्चात् और सूक्ष्म फल ज्ञान के लिए ऋषियों द्वारा प्रत्यन्तर्दशा फल का भी विचार किया गया है। इससे फलादेश कथन में और सूक्ष्म दृष्टि समाहित है। अत: इसका ज्ञान ज्योतिष के अध्येताओं को अवश्य ही करना चाहिए।

यद्यपि फलित ज्योतिष के समस्त ग्रन्थों में दशा विचार किया गया है। किन्तु सर्वाधिक दशा साधन अथवा उसके फलित पक्ष का विचार के दृष्टिकोण से 'वृहत्पराशरहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ प्रचलित है। इसके अतिरिक्त फलदीपिका, जातकपारिजात, सर्वार्थचिन्तामणि, लघुजातक, वृहज्जातक, जातकालंकार, ज्योतिष सर्वस्व, ज्योतिष रहस्य आदि विविध ग्रन्थों में फलादेश आदि कथन का सम्यकतया अध्ययन कर सकते हैं। यहाँ इस इकाई में आप फलित के इन्हीं उक्त ग्रन्थों द्वारा दशा फल का बोध करने जा रहे है।

3.4 सूर्यादि ग्रहों के दशा फल

सूर्य ग्रह का दशा फल -

आदि-मध्य-अन्त के सूर्य दशा फल कथन

आदौ सूर्यदशायां दुःखं पितृरोगकृत्क्षयश्चाधिः।
मध्ये पशुधनहानिश्चान्ते विद्यां महत्व...0।

जिस जातक की कुण्डली में सूर्य दशा प्रारम्भिक अवस्था में हो तो उसे दुःख होता है। पैतृक रोग, क्षय रोग, मानसिक विकार आदि भी होता है। दशा के मध्य समय में पशुओं आदि की हानि होती है। दशा के अन्त समय में मनुष्य विद्या, यश महत्त्व प्राप्त करने में सफल होता है।

द्वितीय भावस्थ सूर्यदशा फल कथन

पुत्रोत्पत्तिविपत्तिमत्र कुरुते भानोर्धनस्थस्य वा
क्लेशं बन्धुवियोगदुःख कलहं वाग्दूषणं क्रोधनम्।
स्त्रीनाशं धननाशनं नृपभयं भूपुत्रयानाम्बरं
सर्वं नाशमुपैति तत्र शुभयुग्वाच्यं न चैतत्फलम्।।

जिस जातक की कुण्डली में सूर्य यदि द्वितीय भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को पुत्र उत्पन्न होता है और उसकी हानि भी होती है, क्लेश के अन्य कारण भी होता है। बन्धुजनों का वियोग भी होता है, दुःख उठाना पड़ता है और कलह भी होता है। वाणी में दोष उत्पन्न होता रहता है, क्रोध होता है, स्त्री व धन का नाश भी होता है, राजा का भय भी उत्पन्न होता है तथा भूमि, पुत्र, वाहन वस्त्र आदि का अभाव जैसा अनुभव होता है।

सूर्य यदि द्वितीय भाव में शुभ युक्त हो, तो उपरोक्त अशुभ फलों के विपरीत शुभ फल ही होता है।

तृतीय भावस्थ सूर्य दशा फल कथन

भानोर्विक्रमयुक्तस्य दशा धैर्य महत्सुखम्।
नृपमाननमर्थाप्तिं भ्रातृवैरविपत्तथा।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि तृतीय भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धैर्य रहता है। बहुत सुख प्राप्त होता है। राजकीय सम्मान भी मिलता है। धन लाभ के अवसर प्राप्त होता है। साथ ही भाईयों में शत्रुता उत्पन्न होती है और विपत्तियों को भी झेलने पड़ते हैं।

चतुर्थ भावस्थ सूर्य दशा फल कथन

सुखस्थितस्यापि रवेर्दशायां भोगार्थभूभृत्यकलत्रहानिम्।
क्षेत्रादिनाशं स्वपदच्च्युतिं वा यानुच्च्युतिं चोरविषाग्निभीतिम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को सुखोपभोग के अवसरों का अभाव रहता है। धन, भूमि, सेवक, स्त्री आदि की हानि होती है। कृषि का भी नाश होता है। अथवा अपने पद की हानि होती है। वाहन-दुर्घटना आदि का शिकार होना पड़ता है। चोर, अग्नि, विष आदि का भय भी उत्पन्न होता है।

षष्ठभावस्थ सूर्य दशा फल कथन

दशाविपाके धनहानिमेति षष्ठस्थभानोरतिदुःखजालम्।
गुल्मक्षयोद्भूतपवित्ररोगं मूत्रादिकृछ्ं त्वथ वा प्रमेहम्।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य षष्ठभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धन की हानि होती है। अनेक प्रकार से अत्यन्त दुःखों का सामना करना पड़ता है। गुल्म रोग व क्षय रोग से उत्पन्न अतिसार, मूत्रकृच्छ्र अथवा प्रमेह रोग का शिकार भी होना पड़ता है।

सप्तमभावस्थ सूर्यदशा फल कथन

दारान्वितस्यापि रवेर्दशायां कलत्ररोगं त्वथ वा मृतिं च।
कुभोजनं कुत्सितपाकजातं क्षीरादिदध्याज्यविहीनमत्रम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि सप्तम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अपनी पत्नि के रोग या मृत्यु से कष्ट होता है। अभोज्य भोजन, क्षुद्रता पूर्वक पकाये हुए और दूध, दही घृत आदि से रहित अन्न की प्राप्ति होती है।

अष्टम भावस्थ सूर्यदशा फल कथन

रन्ध्रस्थभानोरपि वा दशायां देहस्य कष्टं त्वथ वाग्निभीतिम्।
चातुर्थिके नेत्रविकारकासं ज्वरातिसारं स्वपद्च्युतिं च।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि अष्टम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को शारीरिक कष्ट अथवा अग्नि से भय का शिकार होना पड़ता है। चौथिया ज्वर (चार दिन में उतरने वाला बुखार) और नेत्रविकार भी होता है। कास ज्वर के साथ अतिसार रोग को भी झेलना पड़ता है। पद की हानि भी होती है।

दशम भावस्थ सूर्य दशा फल कथन

कर्मस्थितस्यापि रवेर्दशायां राज्यार्थलाभं समुपैति धैर्यम्।

उद्योगसिद्धिं यशसा समेतं जयं विवादे नृपमाननं च।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि दशम (कर्म) भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को राज्य लाभ के साथ धन का लाभ भी होता है। धैर्य भी रहता है। उद्योग अर्थात् पुरुषार्थ सफल होता है। यश की प्राप्ति होती है। विवाद या लड़ाई में विजय मिलती है तथा राजकीय सम्मान की प्राप्ति भी होती है।

एकादशभावस्थ सूर्यदशा फल कथन

आयस्थितस्यापि दशाविपाके भानोर्धनाप्तिं शुभकर्मलाभम्।
उद्योगसिद्धिं सुतदारसौख्यं यानादिभूषाम्बरदेहसौख्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि एकादश भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धनलाभ के मार्ग प्रशस्त होते हैं। शुभकर्म का भी लाभ होता है। किया गया प्रयास या पुरुषार्थ सफल होता है। स्त्री, पुत्र, सुख, वाहन आदि और आभूषण वस्त्र आदि की भी प्राप्ति होती है।

द्वादश भावस्थ सूर्यदशा फलकथन

भानोर्द्वादशगस्य चेद्यदि दशा क्लेशार्थहानिं कृशं
स्त्रीबन्ध्वात्मजभूमिनाशमथ वा पित्रोर्विनाशं कलिम्।
स्थानात्स्थानपरिभ्रमं विषकृतं राज्ञो भयं पादरु-
ग्विद्यावादविनोदगोष्ठिकलहं गोवाजिसंपीडनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि द्वादशभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को क्लेश, धन हानि आदि सहन करना पड़ता है। शारीरिक दुर्बलता भी आ जाती है। स्त्री, बन्धु, पुत्र, भूमि आदि सम्बन्धी हानि अथवा माता-पिता की हानि होती है। कलह करने को बाध्य होता है। एक स्थान से दूसरे स्थान में भ्रमण करना पड़ता है। विष का भय, राजा का भय आदि भी होता है। पैरों में रोग भी हो जाता है। विद्या (ज्ञान) सम्बन्धी आयोजित सभा में वाद-विवाद में कलह का शिकार होना पड़ता है। गोधन, घोड़ा, हाथी आदि के कारण भी पीड़ा मिलती है।

चन्द्रमा का दशा फल कथन -

समराशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

दशाविपाके समराशिगस्य कलानिधेः कांचनभूमिलाभम्।
किंचित्सुखं बान्धवरोगपीडां विदेशयानं लभते मनुष्यः।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपने समग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को स्वर्ण और भूमि का लाभ होता है। कुछ सुख भी मिलता है। बन्धु-बान्धवों को

रोगपीड़ा होती है। विदेश यात्रा से लाभ होता है।

नीचराशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

नीचस्थितस्य दशया विपदं महार्ति क्लेशार्थदुःखवनवासमुपैतिकाले।
कारागृहं निगडपादकृशान्नहीनो चौराग्निभूपतिभयं सुतदारशेषम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपनी नीच वृश्चिक राशिगत हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को विपत्ति का सामना करना पड़ता है। पीड़ा दायक स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। क्लेश होता है। धन सम्बन्धी दुःख भी होता है। निर्वासित जीवन भी किसी कारण व्यतीत करना पड़ता है। कारागार भी जाना पड़ता है। शरीर दुर्बल होता है। अन्नहीनता का शिकार भी होता है। चोर, अग्नि, राजा आदि से भय और स्त्री, पुत्र आदि की हानि होती है।

क्षीण चन्द्र दशा फल कथन

क्षीणन्दुपाके सुकलाविहीनो राजार्थभूपुत्रकलत्रमित्रम्।
उन्मादचित्तं स्वजनैर्विरोधमृणत्वमायाति कुशीलवृत्त्या।।

दशा के समय मनुष्य के महत्वपूर्ण सौख्य की पूर्ति होती है। अनेक प्रकार से धन का लाभ होता है। राजा से सम्मानित होता है। उसके शरीर की दुर्बलता दूर होकर पुष्ट होता है।

चन्द्र दशा के आदि-मध्य-अन्त का फल कथन

चन्द्रदशायामादौ नरपतिसन्मानकीर्तिसौख्यं च।
मध्ये स्त्रीसुतनाशं गृहधनसौख्याम्बरं चान्ते।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र की दशा चल रही हो, तो उसकी दशा के आदि में राजा से सन्मान की प्राप्ति होती है। कीर्ति में वृद्धि होती है। सुख मिलता है। मध्य दशाकाल में स्त्री, पुत्र की हानि भी होती है। अन्त दशा के समय गृहसुख और धन का सुख प्राप्त होता है।

आरोही भौम दशा फल कथन

आरोहिणी भूमिसुतस्य सौख्यं दशा तनोत्यत्र नरेन्द्रपूज्यम्।
प्रधानतां धैर्यमनोभिलाषं भाग्योत्तरं गोगजवाजिसङ्धम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि आरोही क्रम में अर्थात् अपनी उच्चराशि की ओर अग्रसर रहता हुआ स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य सुख प्राप्त करता है। राजा से सम्मान प्राप्त करता है। समाज में श्रेष्ठता सिद्ध कर पाता है। धैर्यवान् होता है। मनवांछित सफलता भी उसे मिलती है। ऐश्वर्य की प्राप्ति भी होती है। गाय, हाथी, घोड़ा आदि पशुओं के समूह से युक्त होता है।

अवरोही भौम दशा फल कथन

धरासुतस्याप्यवरोहकाले स्थानार्थनाशं कलिकोपदुःखम्।
विदेशवासं स्वजनैर्विरोधं चौराग्निभूपैर्भयमेति कष्टम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अवरोही क्रम में अर्थात् .... नचराशि की ओर अग्रसर रहता हुआ स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को भूमि और धन का हरण होता है। कलह में उलझना होता है। क्रोध भी आने लगता है। दुःखी रहना पड़ता है। परदेश वास करने की बाध्यता भी होती है। स्वजनो से विरोध मिलता है। चोर, अग्नि, राजा आदि से भी भय और कष्ट उसे मिलता है।

राहु दशा फल -

लग्नभावस्थ राहु दशा फल कथन

लग्नगतराहुदाये बुद्धिविहीनं विषाग्निशस्त्राद्यैः।
बन्धुविनाशं लभते दुःखार्ति च पराजयं समरे।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि लग्नभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य बुद्धिहीनता का शिकार होता है। विष, अग्नि, शस्त्र आदि से उसे भय रहता है। बन्धुओं की हानि होती है। दुःख से वह आर्त्त होता है। युद्ध में पराजित होता है।।

द्वितीय भावस्थ राहुदशा फल कथन

राहोर्दशायां धनराशिगस्य राज्यं च वित्तं हरते विशेषात्।
कुभोजनं कुत्सितराजसेवा मनोविकारं त्वनृतं प्रकोपम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि द्वितीयभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य विशेष रूप से राज्य और धन सम्बन्धी हानि सहन करने को बाध्य रहता है। अखाद्य भोजन करने को मिलता है। दुष्ट राजा के पास सेवा करना पड़ता है। मानसिक विकार उत्पन्न होता है। झूठ भी बोलना पड़ता है। वह क्रोध भी करता है।

तृतीय भावस्थ राहु दशा फल कथन

तृतीयराशिस्थितराहुदाये पुत्रार्थदारात्मसहोदराणाम्।
सुखं कृषेर्बन्धनमाधिपत्यं विदेशयानं नरपालपूज्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि तृतीय भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य पुत्र, स्त्री, धन, अपने भाई आदि के सुख से युक्त होता है। उसकी कृषि में अभिवृद्धि होती है। उसे अधिकार की प्राप्ति होती है। विदेश गमन करने का अवसर प्राप्त होता है। राजा द्वारा सम्मानित भी

होता है।

चतुर्थ भावस्थ राहु दशा फल कथन

चतुर्थराशिस्थितराहुदाये मातुर्विनाशं त्वथवा तदीयम्।
क्षेत्रार्थनाशं नृपतेः प्रकोपं भार्यादिपातित्यमनेकदुःखम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य की माता की मृत्यु अथवा वह स्वयं ही मृत्यु का शिकार हो जाता है। कृषि क्षेत्र, धन आदि की भी हानि होती है। राजा के कोप का भाजन भी होता है। उसकी पत्नि आदि की पवित्रता नष्ट होने से वह अनेक दुःख से दुखी होता है।

चौराग्निबन्धार्तिमनोविकारं दारात्मजानामपि रोगपीडा।
चतुर्थराशिस्थितराहुदाये प्रभग्नसंसारकलत्रपुपम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो मानसिक विकार, स्त्री, पुत्र आदि को रोग पीड़ा आदि सम्भव होता है। इस तरह उसका अपनी पत्नि, पुत्र तथा उस संसार, सभी से विरक्ति हो जाता है।।

पंचमभावस्थ राहु दशाफल कथन

बुद्धिभ्रमं भोजनसौख्यनाशं विद्याविवादं कलहं च दुःखम्।
कोपं नरेन्द्रस्य सुतस्य नाशं राहोः सुतस्थस्य दशाविपाके।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि पंचम भावस्थ हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य बुद्धि भ्रम का शिकार होता है। भोजन सम्बन्धी सुख से रहित हो जाता है। विद्या (ज्ञान) सम्बन्धी विषयों के कारण विवाद, कलह और दुःख प्राप्त करता है। सत्य से भी कोप की प्राप्ति होती है। पुत्रनाश के कारण भी उत्पन्न होता है।

षष्ठभावस्थ राहु दशा फल कथन

दशाविपाके त्वरिराशिगस्य चौराग्निभूपैर्भयमाप्तनाशम्।
प्रमेहगुल्मक्षयपित्तरोगं त्वग्दोषरोगं त्वथवा मृतिं च।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि राहु षष्ठभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को चोर, अग्नि, राजा आदि से भय प्राप्त होता है। उसके शुभेच्छुओं की भी हानि होती है। उसे प्रमेह रोग, गुल्म रोग, क्षय रोग, पित्त रोग, त्वचा रोग होता है अथवा उसकी मृत्यु होती है।

सप्तमभावस्थ राहु दशाफल कथन

कलत्रराशिस्थितराहुदाये कलत्रनाशं समुपैति शीघ्रम्।

विदेशयानं कृषिभाग्यहानिं सर्पाद्भयं मृत्युसुतार्थनाशम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि सप्तम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय, मनुष्य की पत्नि की मृत्यु शीघ्र होती है। विदेश यात्रा करनी पड़ती है। कृषि सम्बन्धी हानि के साथ ही भाग्यावनति भी उसकी होती है। सर्प से भय उत्पन्न होता है। सन्तान (पुत्र) की मृत्यु और धन की हानि भी होती है।

अष्टम भावस्थ राहु दशाफलमाह

राहोर्दशायां निधनस्थितस्य यमालयं याति सुतार्थनाशम्।
चौराग्निभूपैः स्वकुलोद्भवैश्च भयं भृगोर्वा वनवासदुःखम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि अष्टमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य यमलोक की यात्रा करता है अर्थात् उसकी मृत्यु होती है। उसके पुत्रवर्धन शक्ति की हानि भी होती है। चोर, अग्नि, राजा और अपने कुलजनों से भी उसे भय की प्राप्ति होती है। उसे मृग (सिंह) से भी वन में निवास करते भय का सामना करना पड़ता है।।

नवमभावस्थ राहु दशा फल कथन

राहोर्दशायां नवमस्थितस्य पित्रोर्विनाशं लभते मनुष्यः।
विदेशयानं गुरुबन्धुनाशं स्नानं समुद्रस्य सुतार्थनाशम्।।

शुभग्रहदृष्ट गुरु दशा फल कथन

लग्न भावस्थ गुरु दशाफल कथन

लग्नं गतस्य हि दशा पुरुषे करोति जीवस्य सौख्यममलाम्बरभूषणाप्तिम्।
यानाधिरोहणमृदङ्गपणारवैश्च मत्तेभवाजिभटसङ्घयुतं करोति।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि लग्नभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य सौख्य, निर्मल वस्त्र और आभूषण की प्राप्ति करता है। मृदड़ नगाड़ा आदि की ध्वनि से युक्त वाहन की सवारी भी करता है। उन्मत्त हाथी, घोड़ा, और योद्धाओं के समूह से युक्त भी उसको करता है।

चतुर्थ भावस्थ गुरु दशाफल कथन

चतुर्थकेन्द्रस्थितजीवदाये यानत्रयं भूपतिमित्रभावम्।
भूपालयोगे यदि भूपतित्वं नोचेत्तथा तत्सदृशं करोति।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के पास तीन प्रकार के वाहन चतुष्पद, सजीव और निर्जीव सुलभ होते हैं। राजा से मित्रता का भाव रखता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य की कुण्डली में राजयोग रहने पर उसे राजा कहना चाहिए।

राजयोग के अभाव में मनुष्य राजा के समान तो होता ही है।

पंचम भावस्थ गुरुदशा फल कथन

पंचमस्थगुरोर्दाये मन्त्रोपास्त महत्सुखम्।
सुताप्तिं राजपूजां च वेदान्तश्रवणादिकम्।। सप्तमभावस्थ गुरुदशा फल कथन

कलत्रराशिस्थितजीवदाये दारार्थपुत्रार्थसुखं प्रयाति।
विदेशयानं समरे जयं च ध्यानं परब्रहमाणि पुण्यकर्म।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि सप्तमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य पत्नि, पुत्र, धन आदि का सुख प्राप्त करता है। विदेश की यात्रा पर भी जाता है। युद्ध में विजयी होता है। परब्रह्म का ध्यान भी करता है। वह पुण्य लाभ के उपाय भी करता है।

दशमभावस्थ गुरु दशा फल कथन

कर्मस्थितस्यापि गुरोर्विपाके राज्याप्तिमाहुर्मुनयस्तदानीम्।
भूपालयोगे त्वथ वार्थपुत्रकलत्रसत्कर्मसुराजयोगम्।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि दशम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राज्य की प्राप्ति करता है। ऐसा मुनिजनों ने कहा है। लेकिन उसकी कुण्डली में राजयोग होना चाहिए। अन्यथा ऐसे में धन, पुत्र, स्त्री आदि की प्राप्ति, शुभकार्य सम्पादन, राजा की प्रसन्नता आदि बिना राजयोग के भी होते ही हैं।

मूलत्रिकोण राशि गत शनि दशाफल कथन

लग्नभावस्थ शनि दशा फल कथन

लग्नस्थितशनेर्दाये देहकृच्छ्रमुपैति च।
स्थानच्युतिं प्रवासं च राजकोपं शिरोरुजम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि लग्नभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य शारीरिक कष्ट से परेशान रहता है। उसे स्थान-पद से च्युत होना पड़ता हैं। परदेश में प्रवास करना पड़ता है। राजकीय कोप का भाजन भी होना पड़ता है। शिर में रोग होता है।

चतुर्थभावस्थ शनि दशा फल कथन

चतुर्थस्थशनेर्दाये मातृतद्वर्गनाशनम्।
गृहदाहं पदभ्रंशं चौरार्ति नृपपीडनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य की माता या मातृवर्ग में आने वाली स्त्रियों जैसे मौसी, दीदी, चाची आदि से सम्बन्धित हानि

होती है। घर में आग लग जाती है। पद से हटना पड़ जाता है। चोर, राजा आदि से पीड़ा व भय की प्राप्ति होती है।

सप्तम भावस्थ शनि दशा फल कथन

दारराशिगतस्यापि शनेर्दायेऽरिपीडनम्।
मूत्रकृच्छ्रं महाद्वेषं स्त्रीहेतोर्मरणं च वा।।

जिस किसी की कुण्डली मेंर शदि यदि सप्तमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य शत्रु से उत्पीड़ित होता है। मूत्ररोग के साथ अतिद्वेष उत्पन्न होता है। अथवा स्त्री के कारण मृत्यु वरण करना पड़ता है।

दशम भावस्थ शनि दशाफल कथन

दशमस्थशनेर्दाये कर्मनाशमुपैति च।
देशान्तरं पदभ्रंशं निगडं राजपीडनम्।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि दशम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के कर्म की हानि होती है। देशान्तर में भटकता है। पद से हटना पड़ता है। जेल भी जाना पड़ता है। राजकीय पीड़ा के कारण उत्पन्न होता है।

द्वितीयभावस्थ शनि दशा फल कथन

द्वितीयस्थशनेर्दाये वित्तनाशमथाक्षिरुक्।
राजकोपं मनस्तापमन्नद्वेषं मनोरुजम्।।

वैशेषिकाश युक्त शनि दशा फल कथन

वैशेषिकांशरांयुक्तः शनिः सौख्यं करोति च।
विशेषाद्राजसन्मानं विचित्राम्बरपृषणम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि वैशेषिकांश में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य सौख्य युक्त होता है। विशेष रूप से सजकीय सन्मान उसे प्राप्त होता है। अनेक रंग से युक्त वस्त्र और आभूषण आदि का सुख भी मिलता है।

क्रूरद्रेष्काणगत शनि दशा फल कथन

क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तशनिदाये महद्भयम्।
उद्बन्धनं विषाद्भीतिं नृपचौराग्निजं भयम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि पाप द्रेष्काण में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य महाभय से ग्रसित रहता है। उसे फाँसी का भय, विष से भय तथा राजा, चोर, अग्नि आदि से

भी भय रहता है।।134।।

नीचराशि-उच्चनवांशस्थ शनि दशा फल कथन

नीचराशिगतो मन्दः स्वोच्चांशकसमन्वितः।
दशादौ दुःखमापाद्य दशान्ते सुखदो भवेत्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अपनी नीच राशि (मेष) में होकर अपने उच्च (तुला राशि) नवांश में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य उस दशा के आदि काल में दुःखग्रस्त होता है, लेकिन उसी दशा के अन्तकाल में सुख सम्पन्न हो जाता है।

उच्चराशि-नीच नवांशस्थ शनि दशा फल कथन

उच्चराशिगतो मन्दो नीचांशकसमन्वितः।
दशादौ सुखमापाद्य दशान्ते कष्टदो भवेत्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अपनी उच्चराशि (तुला) में होकर नीच (मेष) नवांश में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य उस दशा के आदि में सुख पाता है और उसी दशा के अन्तसमय में कष्ट की प्राप्ति भी करता है।

बुध दशा फल कथन

लग्नस्थ बुध दशा फल कथन

लग्नं गतस्य च दशा शशिनन्दनस्य भूपालमानकृषिवाहनलब्धभाग्यम्।
भेरीरवादिपरिघोषितयानमार्गं तीर्थाभिषेकमथ वा जगति प्रसिद्धिम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि बुध लग्न भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राजा से सम्मान प्राप्त करता है। कृषि, वाहन के साथ भाग्योपलब्धि के अवसर सुलभ होते हैं। तुरही, मृदङग आदि की ध्वनि से गु...यमान वाहन से मार्ग पर चलने का अवसर प्राप्त होता है। तीर्थ में स्नान करने का अवसर भी सुलभ होता है। वह प्रायः संसार में प्रसिद्धि की प्राप्ति भी करने में सफल होता है।

द्वितीय भावस्थ बुध दशा फल कथन

वित्तगसौम्यदशायां विद्याप्राप्तिं महत्त्वकीर्तिं च।
भूपतिभाग्यसमानां राजस्थाने प्रधानतां याति।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि द्वितीय भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को विद्या-ज्ञान की प्राप्ति होती है। बहुत कीर्ति भी मिलती है। राजा के समान भाग्य प्राप्त करता है। राजा के दरबार में भी उसको श्रेष्ठता सिद्ध करने में सफलता मिलती है।

तृतीय भावस्थ बुध दशा फल कथन

तृतीयराशिस्थितचन्द्रसूनोर्दशाविपाके जडतां समेति।
उद्गानमाजीवनगुल्मरोगमन्नार्तियोगे नृपमाननं च।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि तृतीयर भावस्थ हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य जड़ता या मूर्खता का प्रदर्शन करता है। गीत-गायन से आजीविका चलाता हैं। गुल्म रोगी होता है। अन्न से भी पीड़ा मिलती है; परन्तु राजा से सम्मान की प्राप्ति होती है।

चतुर्थ भावस्थ बुधदशा फल कथन

शशाङ्कसूनोर्हिबुकस्थितस्य दशा प्रपन्ना गृहधान्यनाशम्।
सौख्यादिहानिं हिबुके समृत्युमुद्योगभङंग च पदच्युतिं वा।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य गृह या घर और अन्न सम्बन्धी जटिलतायें उत्पन्न होती हैं। सुख-सौविध्य आदि का अभाव-सा रहता है। उसके माता को भी कष्ट सहना पड़ता है। अथवा मृत्यु होती है। उद्योग या प्रयास असफल होता है। अथवा पद-प्रतिष्ठा की हानि भी उठानी पड़ती है।

पंचमभावस्थ बुध दशा फल कथन

पंचमस्थशशिनन्दनस्य वा क्रूरबुद्धिरतिकष्टता भवेत्।
हीनवृत्तिरपि राजसेवया कृच्छ्रलब्धधनमेति सम्पदम्।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि पंचम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य में क्रूर या कठोर बुद्धि का प्रादुर्भाव होता है। अत्यधिक कष्ट सहन करना पड़ता है। निन्दित कार्यों से आजीविका चलती है। उसे राजा की सेवा से भी बहुत परेशानी के साथ कुछ धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

षष्ठाष्टम-द्वादश भावस्थ बुध दशा फल कथन

षष्ठाष्टमान्त्यस्थितसौम्यदाये त्वग्दोषजातं बहुरोगमेति।
विचर्चिका पैत्तिक पाण्डुरोगं नृपाग्निचौरैर्मरणं कृशत्वम्।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि षष्ठभाव या अष्टमभाव या द्वादश भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को चर्मरोग के प्रकोप का शिकार होना पड़ता है। वमन-उल्टि भी होती है। पित्त विकृति जन्य पाण्डुरोग हो जाता है। राजा, अग्नि, चोर आदि से भय की प्राप्ति होती है। शारीरिक दुर्बलता अथवा मृत्यु भी होती है।

द्वादशभावस्थ बुध दशा का विशेष फल कथन

देहाङगवैकल्यकलत्रबन्धुविद्वेषणं भूपतिदत्तकोपम्।
आकस्मिकं मृत्युभयं प्रसादं रिष्फस्थितस्यापि शशाङ्कसूनोः।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि द्वादश भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय उपरोक्त के साथ मनुष्य को शारीरिक अंगों में विकलता के कारण प्राप्त हो जाते हैं। स्त्री और बन्धुओं से विरोध का सामना भी करना पड़ता है। राजा के कोप का भाजन भी होना पड़ता है। आकस्मिक मृत्यु का भय उत्पन्न होने से मानसिक उन्मत्तता भी आ जाती है।

लग्न भावस्थ केतुदशा फल कथन

लग्नकेन्द्रगतस्यापि केतोर्दाये महद्भयम्।
ज्वरातिसारमेहं च स्फोटकादिविषूचिकाः।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि लग्न भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य महाभय का शिकार हो जाता है। उसे ज्वर, अतिसार, प्रमेह, फोड़ा-फुन्सी स्फोट का रोग, विषूचिका (हैजा जैसी संक्रामक) रोग भी होता है।

धनभावस्थ केतु दशा फल कथन

धनराशिगतस्यापि केतोर्दाये धनक्षयम्।
वाक्पारुष्यं मनोदुःखं कुत्सितान्नं मनोरुजम्।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि द्वितीय (धन) भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धनहानि सहन करना पड़ता है। वाणी भी कठोर बोलता है। मानसिक दुःख भी मिलता है। अखाद्य अन्न ग्रहण करता है। मनोरोग का शिकार होता है।

तृतीय भावस्थ केतु दशा फल कथन

तृतीयराशिगस्यापि केतोर्दाये महत्सुखम्।
मनोवैकल्यमायाति भ्रातृभिर्द्वेषणं परम्।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि तृतीय भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अत्यधिक सुख प्राप्त होता है। मन की विकलता आती है। भाईयों से निश्चय ही बहुत अधिक द्वेष (शत्रुता) उत्पन्न हो जाता है।

चतुर्थ भावस्थ केतु दशा फल कथन

चतुर्थराशिगस्यापि केतोर्दाये सुखक्षयम्।
प्रभग्नदारपुत्रादिगृहे धान्यप्रहर्षितः।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय

मनुष्य को सुख के अवसरों की कमी होती है। स्त्री, पुत्र आदि से अलग रहना पड़ता है। उसके घर में अन्न पर्याप्त उपलब्ध होता है।

पंचमभावस्थ केतुदशा फल कथन

पंचमस्थस्य केतोस्तु दशाकाले सुतक्षयम्।
बुद्धिभ्रमं विशेषेण राजकोपं धनक्षयम्।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि पंचमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को पुत्र की हानि होती है। उसे बुद्धि भ्रम भी उत्पन्न हो जाता है। विशेष रूप से उसे राजा के कोप का भाजन भी होना पड़ता है। धनक्षय की पीड़ा भी होती है।

शुक्र ग्रह दशा फल -

त्रिकोणस्थ शुक्र दशा फल कथन

त्रित्रिकोणगतः शुक्रः करोति नृपपूज्यताम्।
यज्ञकर्मादिलाभं च गुरुपित्रोः सुखं यशः।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि त्रि-त्रिकोण अर्थात् नवम भाव में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राजा से सम्मानित होता है। यज्ञकर्म-अनुष्ठान आदि के लाभ का मार्ग प्रशस्त होता है। उसे गुरु, माता-पिता आदि का सुख प्राप्त होता है। वश भी मिलता है।

उच्चराशि नीचनवांशस्थ शुक्र दशा फल कथन

उच्चक्षेत्रेऽपि नीचांशयुक्तः शुक्रोऽतिकष्टदः।
करोति राज्यनाशं च स्थाननाशमथापि वा।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि उच्चराशि में होकर नीच नवांश हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अत्यधिक कष्ट प्राप्त करता है। राज्य भी उसका छिन्न-भिन्न हो जाता है अथवा उसके स्थान या पद-प्रतिष्ठा की हानि होती है।

नीचराशि-उच्चनवांशस्थ शुक्र दशा फल कथन

उच्चांशयुक्तशुक्रोऽपि नीचराशिसमन्वितः।
कृषिगोभूमिवाणिज्यं धनधान्यविवर्द्धनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि नीचराशि में होकर उच्चनवांश में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के कृषि, गोधन, भूमि, व्यापार व अन्न आदि पक्ष में अभिवृद्धि होती है।

वृहत्पराशरहोराशास्त्र के अनुसार प्रत्यन्तर्दशा फल -

सूर्यान्तर्दशा में सूर्यादि प्रत्यन्तर्दशा फल

विवादो वित्तहानिश्च दारार्तिः शिरसि व्यथा।
रव्यन्तरे बधैर्ज्ञेयं तस्य प्रत्यन्तरे फलम्।।

सूर्य की अन्तरर्दशा में सूर्य की ही प्रत्यन्तर्दशा हो तो उस समय जातक को लोगों से वाद-विवाद, धनहानि, स्त्री को कष्ट एवं मस्तक में पीडा होती है।

यदि सूर्य स्वोच्च में, स्वगृह में, केन्द्र, त्रिकोण, शुभग्रह से युत या दृष्ट, शुभवर्ग में स्थित लग्नेश, भाग्येश, कर्मेश से युत और अन्यत्रा भी शुभ स्थान में बैठा हो तो पूर्वोक्त अशुभफल नहीं देता।

सूर्य की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा में चन्द्रादि की प्रत्यन्तर्दशा का फल -

सूर्यान्तर्दशा उद्वेगः कलहश्चैव वित्ताहानिर्मनोव्यथा।
रव्यन्तरे विजानीयात् चन्द्रप्रत्यन्तरे फलम्।।

सूर्यान्तर में चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा हो तो उद्वेग, कलह, धननाश एवं मानसिक व्यथा होती है।

सूर्यान्तर्दशा में भौमादि प्रत्यन्तर्दशा फल -

राजभीतिः शस्त्रभतिर्बन्धनं बहुसंकटम्।
शत्रुवह्निकृता पीडा कुजप्रत्यन्तरे फलम्।।

सूर्यान्तर में मंगल की प्रत्यन्तर दशा हो तो राजभय, शस्त्रभय, बन्धन, विभिन्न प्रकार के शंकट और शत्रु और अग्नि से पीड़ा होती है।

सूर्यान्तर में राहु की प्रत्यन्तर दशा फल -

श्लेष्मव्याधिः शस्त्रभीतिर्धनहानिर्महद्भयम्।
राजभंगस्तथा त्रासो राहुप्रत्यन्तरे फलम्।।

सूर्यान्तर में राहु की प्रत्यन्तर दशा हो तो कफसम्बन्धी रोगभय, शस्त्रभय, धननाश, राज्यनाश, और मानसिक त्रास हो जाता है।

सूर्यान्तर में गुरु की प्रत्यन्तर दशा फल -

शत्रुनाषो जयो वृद्धिर्वस्त्रहेमादिभूषणम्।
अश्वलायनादिलाभष्च गुरुप्रत्यन्तरे फलम्।।

सूर्यान्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो शत्रुनाश, विजय, वस्त्र, सुवर्ण, आभूषणादि की वृद्धि एवं अश्व-यानादि का लाभ होता है।

सूर्यान्तर में शनि की प्रत्यन्तर दशा फल

धनहानिः पशोः पीडा महाद्वेगो महारुजः।

अशुभं सर्वमाप्नोति शनिप्रत्यन्तरे जनः।।

सर्यान्तर में शनि का प्रत्यन्तर हो तो धनहानि, पशुओं में पीडा, उद्वेग, महारोग एवं सभी प्रकार से अशुभफल होता है।

सूर्यान्तर में बुध की प्रत्यन्तर दशा फल

विद्यालाभो बन्धुसंगो भोज्यप्राप्तिर्धनागमः।

धर्मलाभो नृपात्पूजा बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

सूर्य के अन्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो विद्यालाभ, बन्धुओं का संग, सुस्वादु भोजन की प्राप्ति, धनागम, धर्मलाभ एवं राजा से पूजित होता है।

सूर्यान्तर में केतु की प्रत्यन्तर दषा फल

प्राणभीतिर्महाहानि राजभीतिश्च विग्रहः।

शत्रूणांश्च महावादो केतोः प्रत्यन्तरे भेवत्।।

सूर्यान्तर में केतु का प्रत्यन्तर हो तो प्राणभय, अधिक हानि, राजभय, विग्रह एवं शत्रुओं के साथ वाद-विवाद होता है।

सूर्यान्तर में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा फल

दिनानि समरूपाणि लाभोऽप्यल्पो भवेदिह।

स्वल्पा च सुखसम्पत्तिः शुक्रप्रत्यन्तरे भवेत्।।

सूर्यान्तर में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा हो तो सुख और दुःख समान रूप से व्यतीत होता है। साथ ही स्वल्प लाभ, अल्प सुख एवं सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

चन्द्रमा के अन्तर में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर दशा फल

भूभोज्यधनसम्प्राप्ती राजपूजा महत्सुखम्।

लाभश्चन्द्रान्तरे ज्ञेयं चन्द्रप्रत्यन्तरे फलम्

चन्द्रान्तर में चन्द्रमा की ही अन्तर दशा हो तो भूमि, भोज्य-वस्तु और धन की प्राप्ति होती है। साथ ही जातक राजा से पूजित होता है एवं उसे परम सुख की प्राप्ति होती है।

चन्द्रान्तर में भौम प्रत्यन्तर दशा फल

मतिवृद्धिर्महापूज्यः सुखं बन्धुजनैः सह।

धनागमः शत्रुभयं कुजप्रत्यन्तरे भवेत्।।

चन्द्रान्तर में मंगल का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धि में वृद्धि, लोक में मान, स्वबन्धुओं सहित सुख, धनागम

और शत्रुभय रहता है।

चन्द्रान्तर में राहु प्रत्यन्तर दशा फल

भवेत्कल्याणसम्पत्ती राजवित्तसमागमः।
अशुभैरल्पमृत्युष्च राहु प्रत्यन्तरे द्विज!।।

चन्द्रान्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो कल्याण, राजकीय धनागम एवं यदि ग्रहों से युत हो तो अपमृत्यु का भय रहता है।

चन्द्रान्तर में गुरु प्रत्यन्तर दशा फल

वस्त्रलाभो महातेजो ब्रह्मज्ञानं च सद्गुरोः।
राज्यालंकरणावाप्तिर्गुरुप्रत्यन्तरे भवेत्।।

चन्द्रान्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो वस्त्रलाभ, प्रभावशाली गुरु सदुरु से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति एवं राज्य तथा अलंकार की प्राप्ति होती है।

चन्द्रान्तर में शनि प्रत्यन्तर दशा फल

दुर्दिने लभते पीडां वातपित्ताद्विषेषतः।
धनधान्ययशोहानिः शनिप्रत्यन्तरे भवेत्।।

चन्द्रान्तर में शनि का प्रत्यन्तर हो तो वात और पित्त सम्बन्धी रोग से दुर्दिन का अनुभव एवं धनधान्य और यश की हानि होती है।

चन्द्रान्तर में बुध प्रत्यन्तर दशा फल

पुत्रजन्महयप्राप्तिर्विद्यालाभो मनोन्नतिः।
शुक्लवस्त्रान्नलाभष्च बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

चन्द्रान्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो पुत्र जन्म, अश्व की प्राप्ति, विद्या का लाभ उन्नति, श्वेत वस्त्रा और अन्न की प्राप्ति होती है।

चन्द्रान्तर में केतु प्रत्यन्तर दषा फल

ब्राह्मणेन समं युद्धमपमृत्युः सुखक्षयः।
सर्वत्र जायते क्लेषः केतोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

चन्द्रान्तर में केतु का प्रत्यन्तर हो तो ब्राह्मणों के साथ कलह, अपमृत्यु का भय, सुख की हानि एवं सभी जगहों पर कष्ट होता है।

चन्द्रान्तर में शुक्र प्रत्यन्तर्दशा फल -

धनलाभो महत्सौख्यं कन्याजन्म सुभोजनम्।

प्रीतिश्च सर्वलोकेभ्यो भृगुप्रत्यन्तरे विधोः।।

चन्द्रान्तर में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा हो तो धनलाभ, पूर्ण सौख्य, कन्या का जन्म, सुभोजन और लोगों में प्रेम रहता है।

चन्द्रान्तर में सूर्य प्रत्यन्तर फल

अन्नागमो वस्त्रालाभः शत्रुहानि सुखगमः।
सर्वत्र विनयप्राप्तिः सूर्यप्रत्यन्तरे विधोः।।

चन्द्रान्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो अन्न का लाभ, वस्त्र का लाभ, शत्रु की हानि, सुख एवं सभी जगह पर विजय प्राप्त होती है।

भौमान्तर में भौम प्रत्यन्तर दशा फल

शत्रुभीतिं कलिं घोरं रक्तस्रावं मृतेर्भयम्।
कुजस्यान्तर्दषायां च कुजप्रत्यन्तरे वदेत्।।

भौमान्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो शत्रुभय, भयंकर कलह एवं रक्तविकार के कारण अपमृत्यु की सम्भावना रहती है।

भौम में राहु प्रत्यन्तर्दशा फल

बन्धनं राजभंगश्च धनहानिः कुभोजनम्।
कलहः शत्रुभिर्नित्यं राहु प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो बन्धन, राज्य एवं धन का नाश, कुभोजन कलह और शत्रु का भय रहता है।

भौमान्तर में गुरु प्रत्यन्तर दशा फल

मतिनाशस्तथा दुःखं सन्तापः कलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्वं गुरोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धिविभ्रम, दुःख का सन्ताप, कलह एवं समस्त वांछित कार्य असफल होते हैं।

भौमान्तर में शनि का प्रत्यन्तर का फल

स्वामिनाषस्तथा पीडा धनहानिर्महाभयम्।
वैकल्यं कलहस्त्रासो शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में शनि की प्रत्यन्तर दशा हो तो स्वामी का नाश, पीडा, धननाश, महाभय, विफलता और कलह का त्रास होता है।

भौमान्तर में बुध का प्रत्यन्तर दशा फल

सर्वथा बुद्धिनाषष्च धनहानिर्ज्वरस्तनौ।
वस्त्रान्नसुहृदां नाषो बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धि का भ्रम, धन की हानि, शरीर में ज्वर, वस्त्र, अन्न और **मित्रों का नाश होता है।**

भौमान्तर में केतु प्रत्यन्तर दशा का फल

आलस्यं च शिरः पीडा पापरोगोऽपमृत्युकृत्।
राजभीतिः शस्त्राघातो केतोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौम के अन्तर केतु का प्रत्यन्तर हो तो आलस्य, मस्तक में पीडा, पाप, रोग से कष्ट, अपमृत्यु, राजभय एवं शस्त्रघात आदि होता है।

भौमान्तर में शुक्र प्रत्यन्तर दशा फल

चाण्डालात्संकटास्त्रासो राजशस्त्रभयं भवेत्।
अतिसारोऽथ वमनं भृगो प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो चाण्डाल जाति से संकट, त्रास, राजभय तथा शस्त्रभय एवं अतिसार तथा वमन रोग होता है

भौमान्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर दशा फल

भूमिलाभोऽर्थसम्पतिः सन्तोषो मित्रासंगतिः।
सर्वत्र सुखमाप्नोति रवेः प्रत्यन्तरे जनः।।

भौमान्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो भूमि, धन, सम्पत्ति की वृद्धि, सन्तोष, मित्रों का समागम और सभी का प्रकार से सुख की प्राप्ति होती है।

भौमान्तर में चन्द्रप्रत्यन्तर दशा फल

याम्यां दिषि भवेल्लाभः सितवस्त्रविभूषणम्।
संसिद्धि सर्वकार्याणां विधोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर हो तो दक्षिण दिशा से स का
फेद वस्त्र तथा आभूषण का लाभ एवं समस्त कार्यों की होती है।

राहु के अन्तर में राहु के प्रत्यन्तर फल

बन्धनं बहुधा रोगो बहुघातः सुहृद्भयम्।
राह्वान्तरदषायां च ज्ञेयं राह्वान्तरे फलम्।।

राहु के अन्तर में राहु का ही प्रत्यन्तर हो तो बन्धन, विभिन्न रोगों से आघात एवं मित्रों का भय रहता है।

राहु के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर फल

सर्वत्र लभते मानं गजाष्वं च धनागमम्।
राहोरन्तर्दषायां च गुरोः प्रत्यन्तरे जनः।।

राहु के अन्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो सर्वत्र मान प्रतिष्ठा, अश्व हाथी आदि वाहन तथा धन का लाभ होता है।

राहु के अन्तर में शनि के प्रत्यन्तर फल

बन्धनं जायते घोरं सुखहानिर्महद्भयम्।
प्रत्यहं वातपीडा च षनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

राहु के अन्तर में शनि का प्रत्यन्तर हो तो भयंकर बन्धन, सुख की हानि, महान् भय, विपक्षियों से त्रास और वातरोग होता है।

राहु के अन्तर में बुध के प्रत्यन्तर फल

सर्वत्र बहुधा लाभः स्त्रीसंगाच्च विषेषतः।
परदेषभवा सिद्धिर्बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

राहु के अन्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो सभी कार्यों में सफलता, विशेषकरके स्त्री से लाभ औश्र वैदेशिक कार्य की सिद्धि होती है।

राहु के अन्तर में केतु के प्रत्यन्तर फल

बुद्धिनाषो भयं विघ्नो धनहानिर्महद्भयम्।
सर्वत्रा कलहाद्वेगौ केतोः प्रत्यन्तरे फलम्।।

राहु में केतु का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धिनाश, भय, कार्यों में विघ्न, धनहानि, सर्वत्रा कलह और उद्वेग होता है।

राहु की अन्तर्दशा मैं शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा फल

योबिनीभ्यो भयं भूयादष्वहानिः कुभोजनम्।
स्त्रीनाषः कुलजं शोकं शुक्र प्रत्यन्तरे भवेत्।।

राहु के अन्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो योगिनिय से भय, अश्व की हानि, कुभोजन, स्त्री नाश और अपने वंश में शोक होता है।

राहु के अन्तर में सूर्यादि प्रत्यन्तर फल

ज्वररोगो महाभीतिः पुत्रपौत्रादिपीडनम्।

अल्पमृत्युः प्रमादष्च रवेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर हो तो ज्वर, परम भय, पुत्र-पौत्रों को पीडा, अपमृत्यु और प्रमाद होता है।

राहु के अन्तर में चन्द्रादि प्रत्यन्तर फल

उद्वेगकलहौ चिन्ता मानहानिर्महद्भयम्।

पितुर्विकलता देहे विधोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

राहु के अन्तर में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो उद्वेग और कलह, चिन्ता, माननाश, भय और पिता के शरीर में कष्ट होता है।

राहु के अन्तर में भौम प्रत्यन्तर का फल

भगन्दरकृता पीडा रक्तपित्तपीड़नम्।

अर्थहानिर्महोद्वेगः कुजप्रत्यन्तरे फलम्।।

राहु के अन्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो भगन्द रोग से पीडा, रक्त-पित्त सम्बन्धी व्याधि, धननाश और उद्वेग होता है।

गुरु के अन्तर में गुरु आदि का प्रत्यन्तर का दशा फल

हेमलाभो धान्यवृद्धिः कल्याणं सुफलोदयः।

गुरोरन्तर्दषायां च भवेद् गुर्वन्तरे फलम्।।

गुरु के अन्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो सुवर्णलाभ, धान्यवृद्धि, कल्याण, भाग्योदय और सुखादि की प्राप्ति होती है।

गुरु के अन्तर में शन्यादि का प्रत्यन्तर फल

गोभूमिहयलाभः स्यात्सर्वत्र सुखसाधनम्।

संग्रहो ह्यन्नपानादेः शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

गुरु के अन्तर में शनि की प्रत्यन्तर दशा हो तो गौ, भूमि, अश्व लाभ एवं अन्न-पानादि के संचय से सुखानुभव होता है।

गुरु के अन्तर में बुधादि प्रत्यन्तर का फल

विद्यालाभो वस्त्रलाभे ज्ञानलाभः समौक्तिकः।

सुहृदां संगमः स्नेहो बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

गुरु के अन्तर म बुध का प्रत्यन्तर हो तो विद्या, वस्त्र, ज्ञान, रत्न लाभ, मित्रों का समागम और स्नेह होता है।

गुरु के अन्तर में केतु का प्रत्यन्तर फल

जलभीतिस्तथा चौर्यं बन्धनं कलहो भवेत्।
अपमृत्युर्भयं घोरं केतोः प्रत्यन्तरे द्विजः।।

गुरु के अन्तर मं केतु का प्रत्यन्तर हो तो जल से भय, चोर, बन्धन, कलह और भयंकर अपमृत्यु का भय रहता है।

गुरु के अन्तर में शुक्र प्रत्यन्तर का फल

नानाविद्यार्थसम्प्राप्तिर्हेमवस्त्रविभूषणम्।
लभते क्षेमसन्तोषं भृगोः प्रत्यन्तरे जनः।।

गुरु के अन्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो अनेक विद्या और ध्न की प्राप्ति, सुवर्ण, वस्त्र, आभूषण, क्षेम कल्याण और सन्तोष प्राप्त होता है।

गुरु के अन्तर में सूर्यादि प्रत्यन्तर का फल

नृपाल्लाभस्तथा मित्रात् पितृतो मातृतोऽपि वा।
सर्वत्र लभते पूजां रवेः प्रत्यन्तरे जनः।।

गुरु के अन्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो राजा, मित्र, माता-पिता और अन्य सभी जगहों से लाभ एवं सभी जगहों से आदर प्राप्त होता है।

गुरु के अन्तर में चन्द्रादि प्रत्यन्तर दशा का फल

सर्वदुःखविमोक्षष्च मुक्तलाभो हयस्य च।
सिद्धयन्ति सर्वकार्याणि विधोः प्रत्यन्तरे द्विजः।।

गुरु के अन्तर में चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा हो तो सभी आपत्तियों का निवारण, रत्न और अश्वसम्बन्धी वाहनों का लाभ तथा सभी कार्य में सफलता मिलति है।

गुरु के अन्तर में भौम का प्रत्यन्तर फल

शस्त्रभतिर्गुदे पीडा वह्निमाद्यमूजीर्णता।
पीडा शत्रुकृता भूमिभौंमप्रत्यन्तरे भवेत्।।

गुरु के अन्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो शस्त्रभय, गुदा मार्ग में पीडा, मन्दाग्नि, अजीर्णता और शत्रु से पीडा होती है।

गुरु के अन्तर में राहु प्रत्यन्तर दशा का फल

चाण्डालेन विरोधः स्याद् भयं तेभ्यो धनक्षतिः।

कष्टं जीवान्तरे ज्ञेयं राहोः प्रत्यन्तरे ध्रुवम्।।

गुरु के अन्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो चाण्डाल जाति से विरोध, उनके द्वारा ही भय, धननाश आर कष्ट होता है।

शन्यन्तर में शन्यादि प्रत्यन्तर का फल

देहपीडा कलेर्भीतिर्भयमन्त्सजलोकतः।

दुःख शन्यन्तरे नाना शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में शनि का ही प्रत्यन्तर हो तो शारीरिक पीडा, कलह, अन्त्यज (नीच) लोगें से भय एवं विभिन्न प्रकार के दुःख होते हैं।

शन्यन्तर में बुध प्रत्यन्तर का फल

बुद्धिनाषः कलेर्भीतिरन्नपानादिहानिकृत।

धनहानिर्भयं शत्रोः शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धिनाश, कलह, भय, भोजनादि की चिन्ता, धननाश और अपने विपक्षियों से भय रहता है।

शन्यन्तर में केतु प्रत्यन्तर दशा का फल

बन्धः शत्रोर्गृहे जातो वर्णहानिर्बहुक्षुधा।

चित्ते चिन्ता भयं त्रासः केतोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में केतु की प्रत्यन्तर दशा हो तो शत्रु के गृह में बन्धन, छवि-हानि, अधिक क्षुधा, हृदय में चिन्ता, भय और त्रास होता है।

शन्यन्तर में शुक्र प्रत्यन्तर दशा कां फल

चिन्तितं फलितं वस्तुकल्याणं स्वजने सदा।

मनुष्यकृतितो लाभः भृगोः प्रत्यन्तरे द्विज!।।

हे द्विज! शन्यन्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो अभीष्ट कार्य में सफलता, अपने जनों का कल्याण एवं मानविक कार्य से लाभ होता है।

शन्यन्तर में सूर्य प्रत्यन्तर दशा का फल

राजतेजोऽधिकारित्वं स्वगृहे जायते कलिः।

ज्वरादिव्याधिपीडा च रवेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो राजा से अधिकार की प्रप्ति, परन्तु अपने गृह में कलह और

ज्वरादि रोग से पीडा होती है

शन्यन्तर में चन्द्र प्रत्यन्तर का फल

स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मन्दतेजा बहुव्ययः।
बहुस्त्रीभिः समं भोगो विधोः प्रत्यन्तरे शनौ।।

शन्यन्तर में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो प्रखर बुद्धि, बडे कार्य का आरम्भ, तेज में मन्दता, अधिक व्यय और अधिक स्त्रियों के साथ समागम होता है।

शन्यन्तर में भौम प्रत्यन्तर का फल

तेजोहानिः पुत्रघातो वह्निभीती रिपोर्भयम्।
वातपित्तकृता पीडा कुजप्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो प्रभाव में न्यूनता, पुत्र को आघात, अग्नि और शत्रु का भय, वायु तथा पित्त से पीडा होती है।

शन्यन्तर में राहु प्रत्यन्तर का फल

धननाषो वस्त्रहानिर्भूमिनाषो भयं भवेत्।
विदेशगमनं मृत्युः राहोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो धन, वस्त्र तथा भूमि का नाश, भय देशान्तर में भ्रमण तथा मृत्यु का भय रहता है।

शन्यन्तर में गुरु प्रत्यन्तर दशा का फल

गृहेषु स्वीकृतं छिद्रं ह्यसमर्थो निरीक्षणे।
अथ वा कलिमुद्वेगं गुरोः प्रत्यन्तरे वदेत्।।

शनि के अन्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो स्त्री द्वारा की गई अकर्मण्यता को रोकने में असमर्थता तथा कलह और उद्वेग होता है।

बुधान्तर में बुधादि प्रत्यन्तर का फल

बुद्धिर्विद्यालाभो वा वस्त्रलाभो महत्सुखम्।
बुधस्यान्तर्दषायां च बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

बुधान्तर में बुध की प्रत्यन्तर दशा हो तो बुद्धि, विद्या और धन का लाभ, वस्त्र की प्राप्ति एवं परम सुख होता है।

बुधान्तर में केतु प्रत्यन्तर का फल

कठिनान्नस्य सम्प्राप्तिरूदरे रोगसम्भवः।

कामलं रक्तपित्तं च केतो प्रत्यन्तरे भवेत्।।

बुधान्तर में केतु का प्रत्यन्तर हो तो कुभोजन, उदर सम्बन्धी रोग की सम्भावना, नेत्र-सम्बन्धी व्याधि एवं रक्त और पित्तविकार होता है।

बुधान्तर में शुक्र प्रत्यन्तर का फल

उत्तरस्यां भवेल्लाभो हानिः स्यात्तु चतुष्पादात्।
अधिकारो नृपागारो भृगोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

बुधान्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो उत्तरदिशा से लाभ, पशुओं से हानि एवं राजगृह में अधिकार की प्राप्ति होती है।

बुधान्तर में सूर्यादि प्रत्यन्तर का फल

तेजोहानिर्भवेद्रोगस्तनुपीडा यदा कदा।
जायते चित्तवैकल्यं रवेः प्रत्यन्तरे बुधे।।

बुधान्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो प्रभाव की हानि, रोग का आक्रमण एव मानकि अशान्ति होती है।

बुधान्तर में चन्द्र प्रत्यन्तर का फल

स्त्रीलाभष्चार्थसम्पत्तिः कन्यालाभो महद्धनम्।
लभते सर्वतः सौख्यं विधोः प्रत्यन्तरे जनः।।

बुधान्तर में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो स्त्री, धन, सम्पत्ति का लाभ, कन्या की प्राप्ति एवं सभी तरह से सुख होता है।

बुधान्तर में भौम प्रत्यन्तर का फल

धर्मधीधनसम्प्राप्तिष्चौराग्न्यादिप्रपीडनम्।
रक्तवस्त्रं शस्त्रघातः भौमप्रत्यन्तरे भवत्।।

बुधान्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो धर्म, बुद्धि तथा धन की प्राप्ति, चोर अग्नि द्वारा पीडा, रक्तवस्त्र का लाभ एवं शस्त्र से आघात का भय रहता है।

बुधान्तर में राहु प्रत्यन्तर का फल

कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद् भयसम्भवः।
राजशस्त्रकृता भीतिः राहोः प्रत्यन्तरे द्विजः।।

हे द्विज! बुधान्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो कलह और स्त्री से अकारण भय तथा राजा और शस्त्र से भय रहता है।

बुधान्तर में गुरु प्रत्यन्तर का फल

राज्यं राजाधिकारो वा पूजा राजसमुद्भवा।
विद्याबुद्धिसमृद्धिष्च गुरोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

बुधान्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो राज्यलाभ, राजाधिकारी तथा राजा से सम्मान एवं विद्या, बुद्धि की समृद्धि होती है

बुधान्तर में शनि प्रत्यन्तर का फल

वातपित्तमहापीडा देहघातसमुद्भवा।
धननाषमवाप्नोति शनेः प्रत्यन्तरे जनः।।

बुधान्तर में शनि का प्रत्यन्तर हो तो वायु तथा पित्त सम्बन्धी रोग, शरीर में आघात और धन का क्षय होता है।

केत्वन्तर में केतु प्रत्यन्तर का फल

आपत्समुद्भवोऽकस्माद् देषान्तरसमागमः।
केत्वन्तरेऽर्थहानिष्च केतो प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में केतु का प्रत्यन्तर हो तो अकस्मात आपत्ति, देशान्तर में भ्रमण और धननाश होता है।

केत्वन्तर में शुक्र प्रत्यन्तर का फल

म्लेच्छभीरर्थनाषो वा नेत्ररोगः षिरोव्यथा।
हानिश्चतुष्पदानां च भृगोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो यवनों से भय, धननाश, नेत्ररोग, शिर में पीडा और चौपायों की हानि होती है।

केत्वन्तर में सूर्य प्रत्यन्तर का फल

मित्रैः सह विरोधष्च स्वल्पमृत्युः पराजयः।
मतिभ्रंषो विवादष्च रवेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो अपने मित्रों के साथ विरोध, अकाल मृत्यु, पराजय, बुद्धिभ्रंश और विवाद हाता है।

केत्वन्तर में चन्द्र प्रत्यन्तर का फल

अन्ननाषो यषोहानिर्देहपीडा मतिभ्रमः।
आमवातादि वृद्धिष्च विधोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो अन्ननाश, कीर्ति में आघात, शारीरिक पीडा, मतिभ्रम एवं आँव तथा वायु सम्बन्धी रोग की वृद्धि होती है।

केत्वन्तर में भौम प्रत्यन्तर का फल

शस्त्रघातेन पातेन पीडितो वह्निपीडया।
नीचाद् भीती रिपोः शंका कुजप्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो शस्त्रघात, पतन का भय, अग्नि से भय एवं नीच जनों और शत्रुओं से भय रहता है।

केत्वन्तर में राहु प्रत्यन्तर का फल

कामिनीभ्यो भयं भूयात्तथा वैरिसमुद्भवः।
क्षुद्रादपि भवेद् भीती राहोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो स्त्री और विपक्षियों से भय एवं क्षुद्र जनों से भी भय का आभास रहता है।

केत्वन्तर में गुरु प्रत्यन्तर का फल

धनहानिर्महोत्पातो शस्त्रमित्रविनाषनम्।
सर्वत्र लभते क्लेषं गुरोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो धन एवं मित्र का विनाश, शस्त्र से महा उत्पात, और सभी जगहों से कष्ट होता है।

केत्वन्तर में शनि प्रत्यन्तर का फल

गोमहिष्यादिमरणं देहपीडा सुहृद्वधः।
स्वल्पाल्पलाभकरणं शनेः प्रत्यन्तरे फलम्।।

केत्वन्तर में शनि का प्रत्यन्तर हो तो गौ-महिष्यादि पशु और मित्रों का मरण, शरीरिक पीडा और अत्यन्त अल्प लाभ होता है।

केत्वन्तर में बुध प्रत्यन्तर का फल

बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महाभयम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत ज्ञस्य प्रत्यन्तरे फलम्।।

केत्वन्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धिनाश, उद्वेग, विद्या की हानि भय और कार्य विफल होते हैं।

शुक्रान्तर में शुक्र प्रत्यन्तर का फल

श्वेताष्च-वस्त्र-मुक्ताद्यं दिव्यस्त्रीसंगजं सुखम्।
लभते शुक्रान्तरे प्राप्ते शुक्रप्रत्यन्तरे जनः।।

शुक्रान्तर म शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो सफेद वस्त्र, अश्व, मोती आदि रत्न और सुन्दर स्त्री से संगम होता है।

शुक्रान्तर में सूर्य प्रत्यन्तर का फल

वातज्वरः षिरः पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि रवेः प्रत्यन्तरे फलम्।।

शुक्रान्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो वातज्वर, मस्तक में पीडा, राजा और शत्रु से भी पीडा तथा व्यवसाय में अल्प लाभ होता है।

शुक्रान्तर में चन्द्र प्रत्यन्तर का फल

कन्याजन्म नृपाल्लाभो वस्त्राभरणसंयुतः।
राज्याधिकारसम्प्राप्तिः चन्द्रप्रत्यन्तरे भवेत्।।

शुक्रान्तर में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो कन्या की प्राप्ति, राजा से वस्त्रा-आभूषणादि कर प्राप्ति और राज्याधिकार प्राप्त होता है।

शुक्रान्तर में भौम प्रत्यन्तर का फल

रक्तपित्तादिरोगष्च कलहस्ताडनं भवेत्।
महान् क्लेषो भवेदत्रा कुजप्रत्यन्तरे द्विज!।।

शुक्रान्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो रक्त और पित्त सम्बन्धी रोग, कलह ताडन और महान कष्ट होता है।

शुक्रान्तर में राहु प्रत्यन्तर का फल

क्लहो जायते स्त्रीभिरकस्माद् भयसम्भवः।
राजतः शत्रुतः परडा राहोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शुक्रान्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो स्त्री से कलह, अकस्मात् भय एवं राजा और शत्रु से पीडा होती है।

शुक्रान्तर में गुरु प्रत्यन्तर का फल

महद् द्रव्यं महद्राज्यं वस्त्रमुक्तादिभूषणम्।
गजाष्वादिपदप्राप्तिः गुरोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शुक्रान्तर में गुरु प्रत्यन्तर हो तो द्रव्य, राज्य, वस्त्र, मोती, आभूषण, हाथी, अश्व, वाहन आदि का लाभ होता है।

शुक्रान्तर में शनि प्रत्यन्तर का फल

खरोष्ट्रछागसम्प्राप्तिर्लोहमाषतिलादिकम्।
लभते स्वल्पपीडादि शनेः प्रत्यन्तरे जनः।।

शुक्रान्तर में शनि प्रत्यन्तर हो तो गदहा, उष्ट्र, छाग की प्राप्ति, लोहा, माष, तिल आदि से लाभ और कुछ पीडा भी होती है।

शुक्रान्तर में बुध प्रत्यन्तर का फल

धनज्ञानमहल्लाभो राजराज्याधिकारिता।
निक्षेपाद्धनलाभोऽपि ज्ञस्य प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शुक्रान्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो धन, ज्ञान, महान लाभ, राजा से अधिकार की प्राप्ति और दूसरे के निक्षेप धन का लाभ होता है।

अपमृत्युभयं ज्ञेयं देषाद्देषान्तरागमः।
लाभोऽपि जायते मध्ये केतोः प्रत्यन्तरे द्विजः!।।

शुक्रान्तर में केतु का प्रत्यन्तर हो तो अपमृत्यु का भय एवं देश-विदेश में भ्रमण होता है, साथ ही बीच-बीच म आर्थिक लाभ भी होता है।

बोध प्रश्न –

1. सूर्य की प्रारम्भिक अवस्था का दशा फल क्या है।
   क. सुख प्राप्ति ख. दु:ख प्राप्ति ग. हानि घ. लाभ
2. षष्ठ भाव का सूर्य का दशा फल क्या है।
   क. धन प्राप्ति ख. धन हानि ग. स्थिर लक्ष्मी घ. देशाटन
3. सूर्य में सूर्य का प्रत्यन्तर चल रहा हो तो क्या फल होगा।
   क. वाद-विवाद ख. धन हानि ग. शत्रु भय घ. उपर्युक्त सभी
4. चन्द्र में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो फल –
   क. भूमि प्राप्ति ख. धन की प्राप्ति ग. भूमि एवं धन की हानि घ. कोई नहीं
5. भौम में राहु का प्रत्यन्तर का क्या फल है।
   क. बन्धन ख. भूमि ग. पत्नी प्राप्ति घ. पुत्र प्राप्ति
6. शनि में राहु का प्रत्यन्तर का फल क्या है।
   क. मृत्यु भय ख. पर्यटन ग. लक्ष्मी प्राप्ति घ. विवाह

3.5 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि फलादेश विचार के क्रम में अन्तर्दशा के पश्चात् और सूक्ष्म फल ज्ञान के लिए ऋषियों द्वारा प्रत्यन्तर्दशा फल का भी विचार किया गया है। इससे फलादेश कथन में और सूक्ष्म दृष्टि समाहित है। अत: इसका ज्ञान ज्योतिष के अध्येताओं को अवश्य ही करना चाहिए।

यद्यपि फलित ज्योतिष के समस्त ग्रन्थों में दशा विचार किया गया है। किन्तु सर्वाधिक दशा साधन अथवा उसके फलित पक्ष का विचार के दृष्टिकोण से 'वृहत्पराशरहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ प्रचलित है। इसके अतिरिक्त फलदीपिका, जातकपारिजात, सर्वार्थचिन्तामणि, लघुजातक, वृहज्जातक, जातकालंकार, ज्योतिष सर्वस्व, ज्योतिष रहस्य आदि विविध ग्रन्थों में फलादेश आदि कथन का सम्यकतया अध्ययन कर सकते हैं। सूर्य की अन्तरर्दशा में सूर्य की ही प्रत्यन्तर्दशा हो तो उस समय जातक को लोगों से वाद-विवाद, धनहानि, स्त्री को कष्ट एवं मस्तक में पीडा होती है। यदि सूर्य स्वोच्च में, स्वगृह में, केन्द्र, त्रिकोण, शुभग्रह से युत या दृष्ट, शुभवर्ग में स्थित लग्नेश, भाग्येश, कर्मेश से युत और अन्यत्रा भी शुभ स्थान में बैठा हो तो पूर्वोक्त अशुभफल नहीं देता। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल होता है।

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

सर्वाधिक – सबसे अधिक।

प्रत्यन्तर्दशा – अन्तर्दशा के मध्य प्रत्यन्तर्दशा होती है।

विविध – नाना प्रकार के

सम्यक् – अच्छी तरह से

लग्नेश – लग्न का स्वामी

शुभ ग्रह – बुध, शुक्र, पूर्णचन्द्र, गुरु

पाप ग्रह – सूर्य, मंगल, शनि, राहु एवं केतु

त्रिकोण – ५,९ भाव।

केन्द्र स्थान – १,४,७,१० भाव।

3.7 बोधप्रश्न के उत्तर

1. ख
2. ख

3. घ

4. ग

5. क

6. क

3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची/ सहायक पाठ्यसामग्री

1. सर्वार्थचिन्तामणि - आचार्य वेंकटेश

2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ

3. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – आचार्य पराशर

4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र

5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

6. फलदीपिका – आचार्य मन्त्रेश्वर

7. लघुजातक – वराहमिहिर

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सूर्य में समस्त चन्द्रादि ग्रहों का प्रत्यन्तर फल लिखिये।

2. चन्द्रमा में सभी ग्रहों का प्रत्यन्तर दशा का फल लिखिये।

3. प्रत्यन्तर्दशा से आप क्या समझते है।

4. राहु में समस्त ग्रहों प्रत्यन्तर्दशा का महत्व बतलाइये।

5. केतु का द्वादश भावों में दशा फल लिखिये।

इकाई - 4 सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 सूक्ष्मान्तर्दशा फल परिचय

4.4 सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार

4.4 सारांश

4.5 पारिभाषिक शब्दावली

4.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.8 सहायक पाठ्यसामग्री

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -202 के तृतीय खण्ड की चौथी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार। इससे पूर्व आपने विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, प्रत्यन्तर्दशाओं का दशा फल को जान लिया है। अब आप सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार अध्ययन करने जा रहे है।

दशाओं के फलादेश की सूक्ष्मता में सूक्ष्मान्तर्दशा का ज्ञान ऋषियों द्वारा बतलाया गया है। जिसे प्रत्येक ज्योतिष के अध्येताओं को जानना चाहिए।

अत: आइए इस इकाई में हम लोग 'सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार' के बारे में हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से जानने का प्रयास करते है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- सूक्ष्मान्तर्दशा दशा फल को परिभाषित कर सकेंगे।
- सूक्ष्मान्तर्दशा फल को समझा सकेंगे।
- सूक्ष्मान्तर्दशा फल का विचार कैसे किया जाता है। जान जायेगें।
- विभिन्न जातक ग्रन्थों में सूक्ष्मान्तर्दशा दशा के फल क्या है। उसका विश्लेषण कर सकेंगे।

4.3 सूक्ष्मान्तर्दशा दशाफल परिचय

सूक्ष्म यथा नाम से ही स्पष्ट है कि जातक के उपर सूक्ष्म प्रकार की चलने वाली दशा। सूक्ष्मान्तर्दशा में जातक के उपर पड़ने वाले शुभाशुभ फलों का विवेचन विविध जातक ग्रन्थों के आधार पर यहाँ किया जा रहा है।

सर्वप्रथम सर्पपाश द्रेष्काणस्थ सूर्य दशा फल कथन

धुजङ्मत्र्यंशयुतस्य भानोर्दशाविपाके हि भयं विषाद्वा।
नृपाग्निपातित्यमनेकदु:खं पाशादिभृत्यंशयुतस्य चैवम्।।

जिस जातक की कुण्डली में सूर्य यदि सर्प द्रेष्काण में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को विष से भय और राजा, अग्नि और पतित होने से अनेक प्रकार के दु:ख मिलते हैं। इसी तरह की फल पाश द्रेष्काणस्थ सूर्य की दशा में भी प्राप्त होता है।

उच्चराशि-नीच नवांशस्थ सूर्य दशाफल कथन

स्वोच्चस्थोऽपि दिनेशो नीचांशे चेत्कलत्रधनहानि:।
स्वकुलजबन्धुविरोध: पित्रादीनां तथैव मुनिवाक्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि उच्चराशि में होकर नीचनवांश तुला राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को स्त्री व धन की हानि होती है। अपने ही कुल के बन्धुजनों से विरोध भी होता है। पिता, चाचा आदि से भी विरोध के कारण उत्पन्न होते हैं। ऐसा मुनियों का वचन है।

नीचराशि उच्चनवांशस्थ सूर्य दशाफल कथन

उच्चांशकयुतो भानुर्नीचस्थोऽपि महत्सुखम्।
करोति राज्यभारं च दशान्ते विपदं कृशाम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि नीच राशि में होकर उच्चनवांश मेष राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अत्यधिक सुख की प्राप्ति होती है। राज्य का अधिकार भी प्राप्त होता है, लेकिन दशा के अन्त में थोड़ी कठिनाईयों का भी सामना करना पड़ता है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

सूर्य के प्रत्यन्तर में सूर्य सूक्ष्म दशा फल

निजभूमिपरित्यागो प्राणनाषभयं भवेत्।
स्थाननाषो महाहानिः निजसूक्ष्मगते रवौ।।

सूर्य के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो अपनी भूमि का त्याग मृत्यु का भय, स्थाननाश और सभी जगहों से हानि होती है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा फल

देवब्राह्मणभक्तिष्च नित्यकर्मरतस्तथा।
सुप्रीतिः सवैमित्रैष्च रवेः सूक्ष्मगते विधौ।।

सूर्य के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा सूक्ष्म दशा हो तो देव-ब्राह्मण में श्रद्धा, अपने कर्म में सदैव तत्पर और मित्रों में प्रेम रहता है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा फल

क्रूरकर्मरतिस्तिग्मषत्रुभिः परिपीडनम्।
रक्तस्रावादिरोगश्च रवेः सूक्ष्मगते कुजे।।

सूर्य की प्रत्यन्तरदशा में भौम की सूक्ष्म दशा में रहने पर कुकर्म में प्रवृति, निष्ठुर, शत्रुओं से पीडा और रक्तपात आदि रोग से जातक आक्रान्त रहता है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा फल

चौराग्निविषभीतिष्च रणे भंग पराजयः।
दानधर्मादिहीनष्च रवेः सूक्ष्मगते राहौ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्मदशा हो तो चोर, अग्नि और विष का भय, युद्ध में पराजय एवं दान-धर्मादि धार्मिक कृत्य में अवरोध होता है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा फल

नृपसत्काररराजार्हः सेवकैः परिपूजितः।
राजचक्षुर्गतः शान्तः सूर्यसूक्ष्मगते गुरौ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो राजा से आदर, राज सेवकों द्वारा पूजित एवं राजा का कृपापात्र होता है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा फल

चौर्यसाहसकर्मार्थं देवब्राह्मणपीडनम्।
स्थानच्युतिं मनोदुःखं रवेः सूक्ष्मगते शनौ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो चोरी और साहसिक कार्य से देवता और ब्राह्मणों को पीडा, उनके द्वारा स्थानत्याग और मानसिक व्यथा होती है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा फल

दिव्याम्बरादिलब्धिष्च दिव्यस्त्रीपरिभोगिता।
अचिन्तितार्थसिद्धिष्च रवेः सूक्ष्मगते बुधे।।

सूर्य प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो सुन्दर वस्त्रादि का लाभ, सुन्दर स्त्री के साथ भोग-विलास और अचिन्तित कार्य की भी सिद्धि होती है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा फल

गुरुतार्थविनाषश्च भृत्यदारभवस्तथा।
क्वचित्सेवकसम्बन्धो रवेः सूक्ष्मगते ध्वजे।।

सूर्य प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो सेवक और स्त्री से गौरव, धन का विनाश एवं यदा-कदा सेवक से सुसम्बन्ध भी होता है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा फल

पुत्रामित्राकलत्रादिसौख्यसम्पन्न एव च।
नानाविधा च सम्पत्ती रवेः सूक्ष्मगते भृगौ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो पुत्र, मित्र और कलत्रादि सुख एवं विभिन्न प्रकार की

सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

स्वराशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

स्वक्षेत्रगस्यापि निशाकरस्य नृपाद्धनप्राप्तिमुपैति सौख्यम्।
प्रचण्डवेश्यागमनं क्षितीशात्सन्माननं स्त्रीसुतबन्धुसौख्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपनी स्वराशि कर्क में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को राजकीय धन लाभ होता है। सुख प्राप्ति होती है। दुष्ट वेश्या के संग भी होता है। राजकीय सम्मान की प्राप्ति होती है। मनुष्य को स्त्री पुत्र, बन्धु आदि का सौख्य भी प्राप्त होता है।

अधिशत्रुराशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

निशाकरस्याप्यतिशत्रुराशिं गतस्य दाये कलहार्थनाशम्।
कुवस्त्रतां कुत्सितभोजनं च क्षेत्रार्थदारात्मजतापमेति।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपने अधिशत्रु ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को कलह में उलझन पड़ता है। धन की हानि उठानी पड़ती है। मलिन वस्त्र पहनना पड़ता है। अभोज्य भोजन करना पड़ता है। कृषि, धन, स्त्री, पुत्र आदि पक्ष से सन्ताप की प्राप्ति होती है।

शत्रुराशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

यानाम्बरालङकरणादिहानिं विदेशयानं परिचारकत्वम्।
देशान्तरे गच्छति बन्धुहीनो दुःखी परिक्लिश्यति शत्रुदाये।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि शत्रु ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को वाहन, वस्त्र, आभूषण-अलङकरण आदि की हानि होती है। विदेश यात्रा भी करने पड़ते हैं। दूसरे की सेवा करना पड़ता है। देशान्तर में भी भटकना पड़ता है। बन्धु से हीन रहता है। दुःखी और क्लेश युक्त होना पड़ता है।

मित्र राशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

मित्रर्क्षगस्यापि निशाकरस्य पाकेऽर्थलाभं क्षितिपालमैत्रीम्।
उद्योगसिद्धिं जलवस्तुलाभं चित्राम्बराभूषणवाग्विलासम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपने मित्र ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धनलाभ होता है। शासको से मित्रता होती है। प्रयास या पुरुषार्थ सफल होता है। जल सम्बन्धी वस्तुओं का भी लाभ होता है। चित्र-विचित्र रङग के वस्त्र, आभूषण का लाभ होता है। हास्य-विलास या मनोरंजन करने का अवसर सुलभ होता है।

अधिमित्र राशिस्थ चन्द्र दशा फल कथन

सुधाकरस्याप्यतिमित्रराशिं गतस्य दाये त्वतिसौख्यमेति।
विद्याविनोदाङ्कितराजपूजां क्षेत्रार्थदारात्मजकामलाभम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपने अधिमित्र की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को बहुत अधिक सौख्य की प्राप्ति होती है। विद्या (ज्ञान) प्राप्ति होती है, जिससे राजा को प्रभावित कर सम्मानित भी होता है। कृषि योग्य भूमि का लाभ होता है। अर्थ, स्त्री, पुत्र के साथ-साथ मनुष्य की अभिलाषा पूर्ण होती है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

चन्द्र प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

भूषणं भूमिलाभश्च सन्मानं नृपपूजनम्।
तामसत्त्वं गुरुत्वं च निज सूक्ष्मगते कुजे।।

चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो आभूषण और भूमि का लाभ, सम्मान, राजा से पूजित, तामस प्रकृति और गौरव होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा-फल

दुःखं शत्रुविरोधश्च कुक्षिरोगः पितुर्मृतिः।
वातपित्तापित्तकफोद्रेकः विधोः सूक्ष्मगते कुजे।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा हो तो दुःख, शत्रु से विरोध, पेट सम्बन्धी रोग, पिता का मरण एवं वात, पित्त और कफ सम्बन्धी रोग होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

क्रोधनं मित्रबन्धुनां देषत्यागो धनक्षयः।
विदेशान्निगडप्राप्तिर्विधोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो मित्र तथा बन्धुओं का क्रोध, देशत्याग, धन-क्षय और विदेश में बन्धन होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
सर्वत्रसुखमाप्नोति विधोः सूक्ष्मगते गुरौ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो राजचिह्न (छत्रा$चामर) से युत ऐश्वर्य एवं पुत्र रूपी सम्पत्ति की प्राप्ति तथा सर्वत्र सुख होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

राजोपद्रवभीतिः स्याद्व्यवहारे धनक्षयः।
चौरत्वं विप्रभीतिष्च विधोः सूक्ष्मगते शनौ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्मदशा हो तो राजा का कोप और भय, अपने ही व्यवहार से धन क्षय एवं चोर और ब्राह्मणों का भय रहता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

राजमानं वस्तुलाभो विदेषाद्वहनादिकम्।
पुत्रपौत्रसमृद्धिष्च विधोः सूक्ष्मगते बुधे।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो राजा से सम्मान, वस्तुओं से लाभ, देशान्तर से वाहन लाभ, एवं पुत्र-पौत्रादि सन्तान की वृद्धि होती है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

आत्मनो वृत्ति हननं सस्यश्रृंगवृषादिभिः।
अग्निसूर्यादिभीतिः स्याद्विधो सूक्ष्मगते ध्वजे।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो सस्य (अन्न) औषधि पशु आदि के द्वारा अपनी वृत्ति का हनन एवं अग्नि और सूर्य किरण से भय रहता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

विवाहो भूमिलाभष्च वस्त्राभरणवैभवम्।
राज्यलाभश्च कीर्तिश्च विधोः सूक्ष्मगते रवौ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो विवाह, भूमि लाभ, वस्त्र, आभरणादि वैभव, राज्य और यश का लाभ होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

क्लेशात क्लेषः कार्यनाशः पशुधान्यधनक्षयः।
गात्रवैषम्यभूमिष्च विधो सूक्ष्मगते रवौ।।

चन्द्र के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो भयंकर कष्ट, कार्यनाश, पशु-धन-धान्य का क्षय, शरीर में विषमता होती है।

भौम दशा फल -

नीच राशिस्थ भौम दशा फल कथन

नीचस्थितस्यापि धरासुतस्य दाये कुवृत्त्या स्वजनादिरक्षा।
कुभोजनं गोगजवाजिनाशं स्वबन्धुनाशं नृपवह्निचौरैः।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अपनी नीच कर्क राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य कुवृत्ति अर्थात् अशोभनीय कार्य व्यवसाय से स्वजनों-कुटुम्बियों की रक्षा करता है। अभोज्य भोजन उसे प्राप्त होता है। गाय, हाथी, घोड़ों की हानि भी हो जाती है। उसके बन्धुओं की हानि भी होती है। चोर, ... और राजा से हानि उठानी पड़ती है।

मूलत्रिकोणस्थ भौमदशां फल कथन

मूलत्रिकोणस्थितभौमदाये मिष्टान्नपानाम्बरभूषणाप्तिम्।
पुराणधर्मश्रवणं मनोज्ञं भ्रात्रादिसौख्यं कृषिलाभमेति।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि मूल त्रिकोण राशि मेष में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य मधुन अन्न-पान के साथ वस्त्र, आभूषण आदि प्राप्त करता है। उसे पुराण आदि शास्त्रों से धर्म कथा श्रवण करने का अवसर प्राप्त होता है। वह विचारशील होता है। भ्राता, बन्धु, मित्र आदि का सौख्य पूर्ण होता है। कृषि कार्य से भी उसे लाभ कमाने का अवसर सुलभ होता है।

स्वराशिस्थ भौम दशा फल कथन

स्वक्षेत्रगस्यापि धरासुतस्य दशाविपाके लभतेऽर्थभूमिम्।
स्थानाधिपत्यं सुखवाहनं च नामद्वयं भ्रातृसुखं सुखाप्तिम्।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि स्वराशि मेष या वृश्चिक में स्थित हो तो उसकी दशा के समय मनुष्य भूमि और धन लाभ के अवसर प्राप्त करता है। स्थान विशेष का अधिकारी भी वह होता है। आरामदेह वाहन का सुख प्राप्त होता है। उसका दो नाम होता है। भ्रातृसुख के साथ अन्य अनेक प्रकार के सुख की प्राप्ति भी होती है।

अधिशत्रु राशिस्थ भौम दशा फल कथन

घरासुतस्याप्यतिशत्रुराशिं मतस्य दाये कलहादिदुःखम्।
नरेशकोपं स्वजनैर्विरोधं भूम्वर्थदारात्मजमित्ररोगम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अधिशत्रु ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य कलह से दुःखी रहता है। राजा के कोप का भाजन होता है। स्वजनों से विरोध होता है। भूमि, धन, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि से सम्बन्धित समस्यायें कष्ट व क्लेश देने वाले होते है।

शत्रु राशिस्थ भौम दशा फल कथन

भूनन्दनस्याप्रिराशिगस्य दशाविपाके समरे च पीडाम्।
शोकाग्निभूपालविषैः प्रमादं पीडातिकृछ्राादिगुदाक्षिरोगम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि शत्रु राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा में मनुष्य को युद्ध से पीड़ा की प्राप्ति होती है। शोक, अग्नि, राजा, विष आदि के कारण भी पीड़ा होती है। अतिकृच्छ्रादि गुदारोग और नेत्र रोग भी होते हैं।

मित्र राशिस्थ भौमदशाफल कथन

मित्रर्क्षजस्यापि कुजस्य दाये मित्रत्वमायाति सपत्नसङैघः।
चौराग्निमान्द्याक्षिविपादभूमिं कृषेर्विनाशं कलिकोफ्दुःखम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अपने मित्र ग्रह की राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य शत्रुओं से मित्रता भी करने का प्रयत्न करता है। चोर, अग्नि आदि से भय उत्पन्न होता है। मन्द दृष्टि दोष के साथ पैरों में विवाई फटने से परेशानी होती है। भूमि और कृषि की हानि भी सम्भव होता है। झगड़ा-लड़ाई, क्रोध आदि से भी दुःख झेलना पड़ता है।

अधिमित्रराशिस्थ भौम दशा फल कथन

कुजस्य दाये त्वतिमित्रराशिगतस्य भूपालकृतार्थभूमिम्।
वस्त्रादियज्ञादिविवाहदीक्षामुपैतिर देशान्तरलब्धभाग्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अधिमित्र ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुश्य राजकीय धन और भूमि की प्राप्ति करता है। वस्त्र आदि भी उसे मिलता है। यज्ञ आदि अनुष्ठान कार्य भी सम्पन्न कराता है। विवाह होता है। दीक्षा लेता है तथा उसकी भाग्योदय देशान्तर में होता है।

समराशिस्थ भौमदशाफल कथन

धरासुतस्यापि समर्क्षगस्य गृहोपकार्यं त्वधनप्रमाणात्।
स्त्रीपुत्रभृत्यात्मसहोदराणां शत्रुत्वमाप्नोति नृपाग्निपीडाम्।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि समराशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य निर्धनता के कारण गृहस्थी के छोटे-छोटे जरूरतों की पूर्ति में पीड़ा होती है।

शुभ ग्रह से दृष्ट भौम दशा फल कथन

शुभेक्षितधरासूनोर्दाये भूम्यर्थनाशनम्।
तस्मिन् गोचरसंयुक्ते त्वत्यन्तं शोभनं भवेत्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के भूमि और धन का हरण होता है। अपनी दशा के समय में मंगल यदि गोचर से भी उस राशि में आ जाय, तो मनुष्य को अत्यन्त शुभफल प्राप्त होता है।

अशुभग्रह से दृष्ट भौमदशा फल कथन

आरस्य पापग्रहवीक्षितस्य प्राप्तौ दशायां बहुदुःखकष्टे।
जनः परित्यक्तकलत्रमित्रो देशान्तरस्थः क्षितिपालकोपात्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अशुभ (पाप) ग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य बहुत अधिक दुःख और कष्ट सहन करने का बाध्य होता है। राजा के कोप से बचने के लिए स्त्री, पुत्र आदि परिजन को छोड़कर वह देशान्तर में रहता है।

केन्द्रभावस्थ भौमदशा फल कथन

केन्द्रगतभौमदाये चोरविषाभ्यामुपैति दुःखानि।
कलहो वा स विरोधं लभते देशान्तरं याति।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि केन्द्रभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य चोर, विष आदि के भय से दुःखी रहता है। कलह-झगड़ा अथवा विरोध के कारण वह देशान्तर में चला जाता है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

भौम की दशा में भौम के अन्तर में भौम प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा-फल

भूमिहानिर्मनःखेटो ह्यपस्मारी च बन्धुयुक्।
पुरक्षोभमनस्तापो निजसूक्ष्मगते कुचे।।

भौम के प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा हो तो भूमि की हानि, मन में खेद, मृगी रोग, बन्धन, नगर में क्षोभ और मानसिक ताप होता है।

भौम प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

अंगदोषो जनाद् भीतिः प्रमदावंषनाशनम्।
वह्निसर्पभयं घोरं भौमे सूक्ष्मगतेऽप्यहौ।।

भौम के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो देह में दोष, लोगों से भय, स्त्री-सन्तान का नाश एवं अग्नि, सर्प का भयंकर भय होता है।

भौम प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

देवपूजा-रतिष्चात्र मन्त्राभ्युत्थानतत्परः।

लोके पूजा प्रमोदष्च भौमे सूक्ष्मगते गुरौ।।

भौम प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो देव पूजा में प्रेम, मन्त्रसिद्धि, लोक में सम्मान और आनन्द होता है।

भौम प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

बन्धनान्मुच्यते बद्धो धनधान्यपरिच्छदः।

भृत्यार्थबहुलः श्रीमान् भौमे सूक्ष्मगते शनौ।।

भौम के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो बन्धन से मुक्ति, धन-धान्यादि का लाभ तथा सेवक और धन की प्राप्ति होती है।

भौम प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

वाहनं छत्रसंयुक्तं राज्यभोगपरं सुखम्।

कासष्वासादिका पीडा भौमे सूक्ष्मगते बुधे।।

भौम के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो वाहन, छत्र तथा चामर आदि राज्यभोग्य वस्तुओं से सुख, परन्तु शरीर में कास और श्वाससम्बन्धि रोग से पीडा होती है।

भौम प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

परप्रेरितबुद्धिष्च सर्वत्राऽपि च गर्हिता।

अषुचिः सर्वकालेषु भौमे सूक्ष्मगते ध्वजे।

भौम के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो दूसरे के कथन पर विश्वास कर जातक निन्दित कार्य करता है एवं सदैव अपवित्र रहता है।

भौम प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

इष्टस्त्री-भोग-सम्पत्तिरिष्ट भोजनसंग्रहः।

इष्टार्थस्यापि लाभष्च भौमे सूक्ष्मगते भृगौ।।

भौम के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो इच्छित स्त्री के साथ सम्पर्क, धन तथा अभीष्ट भोजन का संग्रह और अभीष्ट वस्तुओं का लाभ होता है।

भौम प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

राजद्वेषो द्विजात् क्लेशः कार्याभिप्रायवंचकः।

लोकेऽपि निन्द्यतामेति भौमे सूक्ष्मगते रवौ।।

भौम के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो राजा का कोप, विप्रों से कष्ट, कार्यों में असफलता और लोक में निन्दा होती है।

भौम प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

शुद्धत्वं धनसम्प्राप्तिर्देवब्राह्मणवत्सलः।
व्याधिना परिभूयेत् भौमे सूक्ष्मगते विधौ।।

भौम के प्रत्यन्तर में चन्द्र की सूक्ष्म दशा हो तो शुद्धता, धन प्राप्ति, देव-ब्राह्मण में निष्ठा, परन्तु शरीर में रोग का भय बना रहता है।

राहु दशाकालिक सामान्य फल कथन

राहोर्दशायां सम्प्राप्तौ नृपचौराग्निपीडनम्।
विदेशयानं दुःखार्ति वनवासाद्भयं ध्रुवम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि राहु की दशा हो, तो उस समय मनुष्य राजा, अग्नि, चोर आदि के कारण पीड़ा प्राप्त करता है। विदेश यात्रा होती है। दुःख से दयनीय अवस्था को पाता है। वनवास या निर्वासित होने का भय भी निश्चय ही उसे होता है।

लग्नभावस्थ राहु दशा फल कथन

लग्नगतराहुदाये बुद्धिविहीनं विषाग्निशस्त्राद्यैः।
बन्धुविनाशं लभते दुःखार्ति च पराजयं समरे।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि लग्नभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य बुद्धिहीनता का शिकार होता है। विष, अग्नि, शस्त्र आदि से उसे भय रहता है। बन्धुओं की हानि होती है। दुःख से वह आर्त्त होता है। युद्ध में पराजित होता है।।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

राहु की दशा में राहु के अन्तर में राहु प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

लोकोपद्रवबुद्धिष्च स्वकार्ये मतिभ्रमः।
शून्यता चित्तदोषः स्यात् स्वीये सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

राहु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो लोक में उपद्रव करने में उद्यत, अपने कार्य में मतिविभ्रम, शून्यता और चित्त दूषित होता है।

राहु प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

दीर्घरोगी दरिद्र्रष्च सर्वेषां प्रियदर्शनः।

दानधर्मरतः शस्तो राहोः सूक्ष्मगते गुरौ।।

राहु के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो दीर्घ रोग, धनाभाव, परन्तु लोक में सबका प्रिय एवं दान धर्मादि धार्मिक कृत्यों में उसकी अभिरुचि रहती है।

राहु प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

कुमार्गात कुत्सितोऽर्थश्च दुष्टश्च परसेवकः।
असत्संगमतिर्मूढो राहोः सूक्ष्मगते शनौ।।

राहु के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो कुमार्ग से धन संग्रह, दुष्ट स्वभाव, दूर के कार्य में रत एवं धूर्तों की संगति रहती है।

राहु प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

स्त्रीसम्भोगमतिर्वाग्मी लोकसम्भावनावृतः।
अन्नूच्छंस्तनुग्लानि राहोः सूक्ष्मगते बुधे।।

राहु प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो स्त्री भोग की इच्छा में वृद्धि, वाचाल, लोक-व्यवहार का ज्ञाता एवं अन्न की इच्छा से ग्लानि होती है।

राहु प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

माधुर्यं मानहानिष्च बन्धनं चाप्रमाकरम्।
पारुष्यं जीवहानिश्च राहोः सूक्ष्मगते ध्वजे।।

राहु के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो मधुरता, मानहानि, बन्धन, कठोरता, और धन तथा जीवहानि होती है।

राहु प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दषा-फल

बन्धनान्मुच्यते बद्धः स्थानमानार्थसंचयः।
कारणाद् द्रव्यलाभष्च राहोः सूक्ष्मगते भृगौ।।

राहु के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो कारागार से मुक्ति, स्थान-मान-अर्थ का संग्रहः और विभिन्न कारणों से द्रव्य का लाभ होता है।

राहु प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

व्यक्तार्शो गुल्मरोगष्च क्रोधहानिस्तथैव च।
वहनादि सुखं सर्वं राहोः सूक्ष्मगते रवौ।।

श्राहु के प्रत्यन्तर में रवि की सूक्ष्म दशा हो तो देशान्तर में निवास, गुल्मरोग, क्रोध का नाश एवं वाहनादि का सुख होता है।

राहु प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

मणिरत्नधनावाप्तिर्विद्योपानशीलवान।
देवार्चनपरो भक्त्याः राहोः सूक्ष्मगते विधौ।।

राहु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो मणि, रत्न आदि धन की प्राप्ति, विद्या की उपासना में तत्पर, एवं देवपूजा में श्रद्धावान होता है।

राहु प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा-फल

निर्जितो जनविद्रावो जने क्रोधश्च बन्धनम्।
चौर्यषीलरतिर्नित्यं राहो सूक्ष्मगते कुजे।।

राहु के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो पराजित होकर पलायन, क्रोध, बन्धन और चोरी के कार्य में प्रवृति होती है।

केन्द्रभावस्थ गुरु दशा फल कथन

शुभेक्षितस्यापि गुरोर्दशायां देशान्तरे वित्तमुपैति भूपात्।
देवार्चनं भूसुरतर्पणं च तीर्थाभिषेकं गुरुपूज्यतां च।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अन्य देश में राजा से धन प्राप्त करता है। देवताओं का पूजन भी करता है। ब्राहमण भोजन भी करवाता है। तीर्थों में पवित्र जल स्नान भी करता है तथा गुरु का पूजन भी करता है।

केन्द्रगतजीवदाये राज्यं भूदारराजसन्मानम्।
विविधसुखानन्दकरं बहुजनरक्षां प्रधानतां याति।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि केन्द्रभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को राज्य मिलता है। भूमि, स्त्री के साथ राजा से सम्मान भी प्राप्त होता है। अनेक तरह से सुख का आनन्द लेता है। उसके द्वारा अनेक लोगों की रक्षा भी सम्भव होता है। जनसमूहों का नेता व प्रधान होता है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

गुरु की दशा में गुरु के अन्तर में गुरु प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

शोकनाशो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम्।

वाहनं छत्रसंयुक्तं स्वीये सूक्ष्मगते गुरौ।।

गुरु के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो शोक की निवृति, धनाधिक्य, अग्निहोत्र, शिवपूजक, छत्रादि सहित वाहन का लाभ होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

व्रतभंगो मनस्तापो विदेशे वसु नाशनम्।
विरोधो बन्धुवर्गैश्च गुरोः सूक्ष्मगते शनौ।।

गुरु के प्रगत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो स्वीकृत व्रत भंग, मानकि सन्ताप, विदेशगमन, धननाश और बन्धु बान्धवों से विरोध होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

विद्याबुद्धिविवृद्धिश्च स-सम्मानं धनागमः।
गृहे सर्वविधं सौख्यं गुरोः सूक्ष्मगते बुधे।।

गुरु के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो विद्य-बुद्धि की वृद्धि, लोक में सम्मान, धनागम एवं घर में हर प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं।

गुरु प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

ज्ञानं विभवपाण्डित्ये शास्त्रश्रोता शिवार्चनम्।
अग्निहोत्रं गुरोर्भक्तिर्गुरोः सूक्ष्मगते ध्वजे।।

गुरु के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो ज्ञानी, ऐश्वर्य सम्पन्न, पाण्डित्यपूर्ण, शास्त्रश्रोता, शिवपूजक, अग्निहोत्री और गुरु में भक्ति रखने वाला होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

रोगान्मुक्तिः सुखं भोगो धनधान्यसमागमः।
पुत्रदारादिसौख्यं च गुरोः सूक्ष्मगते भृगौ।।

गुरु के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो रोग से छुटकारा, सुखभोग, धन-धान्य का समागम और स्त्री-पुत्रादि को सुख होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

वातपित्तप्रकोपश्च श्लेष्माद्रेकस्तु दारुणः।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरोः सूक्ष्मगते रवौ।।

गुरु के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो वात-पित्त का प्रकोप एवं कफ और रस-विकार से शूल

रोग होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
नेत्राकुक्षिगता पीडा गुरोः सूक्ष्मगते विधौ।।

गुरु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो छत्र, चामरयुक्त ऐश्वर्य, पुत्रोत्पत्ति एवं नेत्रा तथा कुक्षि में पीडा होती है।

गुरु प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा-फल

स्त्रीजनाच्च विषोत्पत्तिर्बन्धनं च रुजोभयम्।
देषान्तरगमो भ्रन्तिर्गुरोः सूक्ष्मगते कुजे।।

गुरु के प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा हो तो स्त्री द्वारा विष का प्रयोग, बन्धन, रोगभय, दशान्तर में भ्रमण और बुद्धि भ्रम हो जाता है।

गुरु प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

व्याधिभिः परिभूतिः स्याच्चौरैरपहृतं धनम्।
सर्पवृष्चिकभीतिष्च गुरोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

गुरु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो रोगोत्पति, चोर से धन का अपहरण, एवं सर्प, बिच्छु आदि जन्तुओं से भय होता है।

शनि दशा फल -

मूलत्रिकोणनिलयस्य शनेर्दशायां देशान्तरादिवनवासमुपैति काले।
नामद्वयं यदि सभानगराधिपत्यं विद्वेषणं सुतकलत्रधनादिभिर्वा।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अपनी मूल त्रिकोण राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य समय पर देश-देशान्तर आदि की यात्रा भी करता है, वन में प्रवास भी करता है। उपाधि नाम के साथ वह दो नाम प्राप्त करता है। सभा में सभापतित्व और नगराधिपतित्व का लाभ भी पाता है। पुत्र, पत्नि, धन आदि से विद्वेष उत्पन्न हो जाता है अर्थात् स्वतंत्र जीवन को महत्त्व देता है।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि किसी पापग्रह से युक्त हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य समय पर गोपनीय रूप से पाप कर्म करता है। विशेष रूप से किसी नीचकर्म करने वाली स्त्री का गमन भी करता है। चोर आदि नीच कर्म करने वालों से विशेष रूप में कलह या विवाद करता है। वह

पत्नि रहित होता है।

शुभग्रह युक्त शनि दशा फल कथन

शुभान्वितस्यापि शनेर्दशायां विशेषतो ज्ञानमुपैति काले।
परोपकारं नृपलब्धभाग्यं कृष्णानि धान्यान्ययशश्च लाभम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि किसी शुभग्रह से युक्त हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य समयानुसार विशेष रूप से ज्ञान प्राप्त करने में सफल होता है। परोपकार करने की उसकी प्रवृत्ति होती है। राजा से भाग्योपलब्धि होती है। काले वर्ण के अन्न और लोहा जैसी धातुओं और यश का लाभ होता है।

पापग्रहदृष्ट शनि दशा फल कथन

पापेक्षितस्यापि शनेर्दशायां भृत्यार्थदारात्मजसोदराणाम्।
नाशं समायाति परापवादं कुभोजनं कुत्सितगंधमाल्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि किसी पापग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य सेवक, धन, पत्नि, पुत्र, भ्राता आदि से सम्बन्धित हानि होती है। दूसरे लोगों द्वारा मिथ्या-अपवाद या कलंक प्राप्त होता है। दूषित भोजन और त्याज्य सुगन्धिद्रव्य-पुष्पमाला आदि की प्राप्ति होती है।

शुभग्रह दृष्ट शनि दशा फल कथन

शुभेक्षितस्यापि शनेर्दशायां स्त्रीपुत्रभृत्यार्थमुपैति काले।
पश्चादुपैत्यत्र महत्वकष्टं गोभूमिवाणिज्यकृषेर्विनाशम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि किसी शुभग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य समय पर स्त्री, पुत्र, सेवक, धन आदि में अभिवृद्धि प्राप्त करता है। अपना महत्त्व प्रदर्शित करने पर कष्ट भी पाता है। उसके गोधन, कृषि, भूमि और व्यापार की हानि होती है।

केन्द्रभावस्थ शनि दशा फल कथन

केन्द्रान्वितशनेर्दाये कलहायासपीडनम्।
पुत्रमित्रार्थदारादिबन्धूनां मरणं ध्रुवम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि केन्द्रभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य कलह, श्रम आदि से पीड़ा अनुभव करता है। पुत्र, मित्र, धन आदि की हानि भी उसे सहन करना पड़ता है। भ्राता की मृत्यु भी अवश्य होती है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

शनि की दशा में शनि के अन्तर में शनि प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

धनहानिर्महाव्याधिः वातपीडाकुलक्षयः।
भिन्नाहारी महादुःखी निजसूक्ष्मगते शनौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो धनहानि, महाव्याधि, वात से पीडा, कुलनाश, पृथक भोजन और दुःख होता है।

शनि प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

वाणिज्यवृत्तेर्लाभश्च विद्याविभवमेव च।
स्त्रीलाभष्च महीप्राप्तिः शनेः सूक्ष्मगते बुधे।।

शनि के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो व्यापार से लाभ, विद्या और ऐश्वर्य की प्राप्ति एवं स्त्री तथा भूमि का लाभ होता है।

शनि प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

चौरोपद्रवकुष्ठादिवृत्तिक्षय-विगुम्फनम्।
सर्वांगपीडनं व्याधिः शनेः सूक्ष्मगते ध्वजे।।

शनि के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो चोरों का उपद्रव, कुष्ठादि रोग काभय, जीविका का नाश, गुम्फन और समस्त अंगों में पीडा होती है।

शनि प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

ऐश्वर्यमायुधाभ्यासः पुत्रलाभोऽभिषेचनम्।
आरोग्यं धनकामौ च शनेः सूक्ष्मगते भृगौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो ऐश्वर्य का लाभ, शास्त्राभ्यास, पुत्रोत्पत्ति, अभिषेक, आरोग्य एवं धन और मनोकामना की सिद्धि होती है।

शनि प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

राजतेजोऽधिकारत्वं स्वगृहे जायते कलिः।
किंचित्पीडा स्वदेहोत्था शनेः सूक्ष्मगते रवौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो राजा से वैरभाव, अपने घर में झगडा और अपने शरीर में कुछ पीडा होती है।

शनि प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मन्दतेजा बहुव्ययः।

स्त्रीपुत्रैष्च समं सौख्यं शने सूक्ष्मगते विधौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो बुद्धि में अधिक निर्मलता, बडे कार्य का प्रारम्भ, छवि मे न्यूनता, अधिक खर्च एवं स्त्री-पुरुष से सुख होता है।

शनि प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा-फल

तेजोहानिर्महाद्वेगो वह्निमान्द्यं भ्रमः कलिः।
वातपित्तकृता पीडा शनेः सूक्ष्मगते कुजे।।

शनि के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो कान्ति की हानि, उद्वेग, अग्नि-मन्दता, भ्रम, कलह और वात-पित्त जन्य रोगों से पीडा होती है।

शनि प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

पितृमातृविनाषश्च मनोदुःखं गुरु-व्ययम्।
सर्वत्र विफलत्वं च शनेः सूक्ष्मगते गुरौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो पितृ-मातु वियोग, मानसिक दुःख, अधिक-व्यय एवं सभी जगहों से विफलता की प्राप्ति होती है।

शनि प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

सन्मुद्राभोगसन्मानं धनधान्यविवर्धनम्।
छत्रचामरसम्प्राप्तिः शनेः सूक्ष्मगते गुरौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो सुन्दर मुद्रा का भोग, सम्मान, धन धान्यों की वृद्धि एवं छत्र-चामरादि राजचिह्न की प्राप्ति होती है।

मूलत्रिकोणान्वितसौम्यदाये राज्यं महत्सौख्यकरं च कीर्तिम्।
विद्याविलासं निगमार्तिशीलं पुराणधर्मश्रवणादिपूतः।।

केन्द्रभावगत बुध दशा फल कथन

केन्द्रोपगस्य हि दशा शशिनन्दनस्य भूपालमित्रधनधान्यकलत्रपुत्रान्।
यज्ञादिकर्मनृपमानयशः प्रलब्धिं मृद्वन्नपानशयनाम्बरभूषणानि।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि केन्द्र भाव में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य की राजा से मित्रता होती है। धन, अन्न, स्त्री, पुत्र आदि की प्राप्ति होती है। यज्ञ-अनुष्ठान आदि कर्म का सम्पादन होता है। राजकीय सम्मान प्राप्त होता है। मुलायम अन्न-पेय वस्तु, शय्या-शयन, वस्त्र-आभूषण आदि का सुख सुलभ होता है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

बुध प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

सौभाग्यं राजसम्मानं धनधान्यादि सम्पदः।
सर्वेषां प्रियदर्शी च निजसूक्ष्मगते बुधे।।

बुध के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो सौभाग्य, राजा से सम्मान, धन धान्य सम्पत्ति का लाभ और सबसे प्रीति होती है।

बुध प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

बालग्रहोऽग्निभीस्तामः स्त्रीगदोद्भवदोषभाक्।
कुमार्गी कुत्सिताशी च बौधे सूक्ष्मगते ध्वजे।।

बुध के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो बालग्रह का दोष, अग्निभय, सन्ताप, स्त्री का रोग, कुमार्ग में प्रवेश और कुभोजन प्राप्त होता है।

बुध प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

वाहनं धनसम्पतिर्जलजान्नार्थसम्भवः।
शुभकीर्तिर्महाभोगो बौधे सूक्ष्मगते भृगौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो वाहन, धन, सम्पति, जल से उत्पन्न अन्न और धन की प्राप्ति, सुन्दर यश और महाभोग की प्राप्ति होती है।

बुध प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

ताडनं नृपवैषम्यं बुद्धिस्खलनरोगभाक्।
हानिर्जनापवादं च बौधे सूक्ष्मगते रवौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो ताडन, राजा से विषमता, चंचल बुद्धि, रोग, धन हानि और लोक में अपसश होता है।

बुध प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

सुभगः स्थिरबुद्धिश्च राजसम्मानसम्पदः।
सुहृदां गुरुसंचारो बौधे सूक्ष्मगते विधौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो सौभाग्य, स्थिरबुद्धि, राजसम्मान, सम्पति, मित्र तथा गुरुजनों से समागम होता है।

बुध प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा-फल

अग्निदाहो विषोत्पत्तिर्जडत्वं च दरिद्रता।

विभ्रमष्च महाद्वेगो बौधे सूक्ष्मगते कुजे।।

बुध के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो अग्नि से दाह और विषभय, मूर्खता, दरिद्रता, मतिभ्रम एवं उद्वेग होता है।

बुध प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

अग्निसर्पनृपाद् भतिः कृच्छ्रादरिपराभवः।

भूतावेश्भ्रमाद् भ्रान्तिर्बौधे सूक्ष्मगतेऽप्यहौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो अग्नि, सर्प और राजा से भय, अधिक परिश्रम से शत्रु पराजित एवं भूतों से उपद्रव द्वारा मतिभ्र्रम होता है।

बुध प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

गृहोपकरणं भव्यं दानं भोगादिवैभवम्।

राजप्रसादसम्पत्तिर्बौधे सूक्ष्मगते गुरौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो सुन्दर गुह का निर्माण, दान में तत्परता, भोग-ऐश्वर्य की वृद्धि एवं राजदरबार से धनलाभ होता है।

बुध प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

वाणिज्यवृत्तिलाभष्च विद्याविभवमेव च।

स्त्रीलाभष्च महाव्याप्तिर्बौधे सूक्ष्मगते शनौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो व्यापार से लाभ, विद्या, ऐश्वर्य की वृद्धि, स्त्रीलाभ और व्यापकता होती है।

षष्ठभावस्थ केतु दशा फल कथन

केतोस्त्वरिगतस्यापि दशाकाले महद्भयम्।

चौराग्निविषभीतिश्च दशाप्तिं समुपैति च।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि षष्ठ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य महाभय का शिकार होता है। चोर, अग्नि विष आदि से भय प्राप्त होता है। वह दयनीय दशा (अवस्था) को प्राप्त होता है।

सप्तमभावस्थ केतु दशा फल कथन

कलत्रराशिसंयुक्तकेतोर्दाये महद्भयम्।

दारपुत्रार्थनाशं च मूत्रकृच्छं मनोरुजम्।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि सप्तमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को बहुत अधिक भय की प्राप्ति होती है। स्त्री, पुत्र, धन आदि की भारी हानि भी होती है। मूत्ररोग से कष्ट होता है। मनोरोग भी उसे झेलने को बाध्य होता है।

अष्टमभावस्थ केतु दशा फल कथन

केतोरष्टमयुक्तस्य दशाकाले महद्भयम्।
पितृमृत्युश्वासकासग्रहण्यादिक्षयान्वितः।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि अष्टमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अत्यधिक फल प्राप्त होता है। माता-पिता की मृत्यु भी होती है। श्वास सम्बन्धी रोग, कास या खाँसी, संग्रहणी रोग आदि के साथ क्षय रोग से भी वह युक्त होता है।

नवमभावस्थ केतु दशा फल कथन

नवमस्थस्य केतोस्तु दशापाके पितुर्विपत्।
गुरोर्वा विपदं दुःखं शुभकर्मविनाशनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि नवम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के पिता विपत्तिग्रस्त होता है अथवा गुरु को विपत्ति और दुःख मिलता है। उसके शुभकर्मों की हानि भी होती है।।

दशमभावस्थ केतु दशा फल कथन

कर्मस्थकेतोः सम्प्राप्तौ दशायां सुखमेति च।
मानहानिं मनोजाडयमपकीर्तिं मनोरुजम्।।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

केतु प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

पुत्रदारादिजं दुःखं गात्रावैषम्यमेव च।
दारिद्रयाद् भिक्षुवृत्तिष्च नैजे सूक्ष्मगते ध्वजे।।

केतु के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो पुत्र-स्त्री से दुःख, शरीर में विषमता एवं दरिद्रता के कारण भिक्षावृत्ति होती है।

केतु प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

रोगनाषोऽर्थलाभश्च गुरुविप्रानुवत्सलः।
संगमः स्वजनैः सार्द्धं केतोः सूक्ष्मगते भृगौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो रोग से निवृत्ति, धनलाभ, गुरु और ब्राह्मण में श्रद्धा एवं स्वजनों का संगम होता है।

केतु प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

युद्धं भूमिविनाषश्च विप्रवासः स्वदेषतः।
सुहृद्विपत्तिरार्तिष्च केतोः सूक्ष्मगते रवौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो कलह, भूमि की हानि, देशान्तर में निवास, मित्रों को भी विपत्ति और शत्रु भय होता है।

केतु प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

दासीदाससमृद्धिश्च युद्धे लब्धिर्जयस्तथा।
ललिता कीर्तिरुत्पन्ना केतोः सूक्ष्मगते विधौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो दास-दासियों की वृद्धि, युद्ध में विजय और लोक में सुन्दर यश प्राप्त होता है।

केतु प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा-फल

आसने भयमष्वादेष्चौरदुष्टादिपीडनम्।
गुल्मपीडा शिरोरोगः केतोः सूक्ष्मगते कुजे।।

केतु के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो अश्व आदि सवारियों से गिरने का भय, चोरों और दुष्टों से पीडा एवं गुल्म तथा मस्तक रोग होता है।

केतु प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

विनाशः स्त्रीगुरुणां च दुष्टस्त्रीसंगमाल्लघुः।
वमनं रुधिरं पित्तं केतोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो स्त्री तथा गुरु आदि मान्य जनों का विनाश, दुष्टा स्त्री के संग के कारण लघुता, वमन, रक्तविकार और पित्ताम्बन्धी रोग होता है।

केतु प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

रिपोर्विरोधः सम्पत्ति सहसा राजवैभवम्।
पशुक्षेत्रविनाशार्तिः केतोः सूक्ष्मगते गुरौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो शत्रु से विरोध, अकस्मात् राजवैभव की प्राप्ति एवं पशु और क्षेत्र की हानि के कारण दुःख होता है।

केतु प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

मृषा पीडा भवेत् क्षुद्रसुखोत्पत्तिष्च लंघनम्।
स्त्रीविरोधः सत्यहानिः केतोः सूक्ष्मगते शनौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो मिथ्या पीडा, स्वल्प सुख, उपवास, स्त्री से विरोध और सत्यता की हानि होती है।

केतु प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

नानाविधजनाप्तिष्च विप्रयोगोऽरिपीडनम्।
अर्थसम्पत्समृद्धिश्च केतोः सूक्ष्मगते बुधे।।

केतु के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो विभिन्न प्रकार के लोगों से संयोग एवं वियोग, शत्रुओं से पीडा तथा धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

परमनीचगत शुक्र दशा फल कथन

उद्वेगरोगतप्तः कर्मसु विफलेषु सर्वदाभिरतः।
अतिनीचगस्य दाये शुक्रस्यात्मार्थदारपुत्रार्तिम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि परमनीच अर्थात् कन्याराशि के 26 अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य उद्वेग रोग से ग्रस्त होता है। वह अपने कार्यों में विफल रहने के बावजूद सदा ही सफलता के लिए कार्यों को करते रहने में लगा रहता है। उसको अपने स्वास्थ्य, स्त्री, पुत्र सम्बन्धी पीड़ा भी होती है।

मूलत्रिकोणस्थ शुक्र दशा फल कथन

मूलत्रिकोणभाजो भृगोर्दशायां महाधिपत्यं स्यात्।
क्रयविक्रयेषु कुशलो धनकीर्तिसमन्वितो विधिज्ञश्च।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि अपनी मूल त्रिकोण कुम्भराशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को महत्त्वपूर्ण अधिकार की प्राप्ति होती है। लेने-देने या क्रय-विक्रय के कार्य में निपुण भी होता है। धन व कीर्ति भी मिलती है। नियम-कानून को जानने में प्रवृत्त रहता है।

स्वराशिस्थ शुक्रदशा फल कथन

शुक्रक्षेत्रदशायां लभते स्त्रीपुत्रमित्रधनशौर्यम्।
नित्योत्साहं द्वेषं परोपकारं महत्त्वं च।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि अपनी राशि वृष या तुला राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य स्त्री, पुत्र, मित्र, पराक्रम आदि से सम्पन्न होता है। नित्य नये उत्साह से युक्त रहता है। द्वेष भी उत्पन्न होता है। परोपकार करने में प्रवृत्त होता है। अपना महत्त्व वह स्थापित करता है।।54।।

अधिशत्रु राशिस्थ शुक्र दशा फल कथन

भृगोर्दशायामतिशत्रुराशिं गतस्य पुत्रार्थकलत्रहानिम्।
प्रभग्नसंसारविशीर्णदेहं गुल्माक्षिरोगं ग्रहणी प्रकोपम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि अधिशत्रु ग्रह की राशि में हो, तो पुत्र एवं पत्नी की हानि होती है। तथा जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि पापग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के सम्मान में बाधा आती है। धन भी अपव्यय करने पड़ते है। उसे दुःख की प्राप्ति होती है। पत्नि से विरोध मिलता है। अपने पद से अवनति और विदेश में प्रवास से वह अपने कर्म-दायित्व से रहित जीवन जीता है।

शुभग्रह दृष्ट शुक्र दशा फल कथन

शुभेक्षितस्यापि भृगोर्विपाके धनाम्बरं भूपतिपूजनं च।
जनाधिपत्यं स्वशरीरकान्तिं कलत्रमित्रात्मजसौख्यमेति।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धन, वस्त्र और राजकीय सम्मान की प्राप्ति होती है। जन समूह का नेता भी होता है। उसके शरीर में कान्ति होती है। पत्नि, मित्र, पुत्र आदि का सुख भी प्राप्त करता है।

केन्द्रभावस्थ शुक्र दशा फल कथन

केन्द्रे गतस्य हि दशा भृगुनन्दनस्य यानाम्बरदिमणिभूषितदेहकान्तिम्।
राज्यार्थभूमिकृषिवाहनवस्त्रशस्त्रदुर्गाधियानवनवासजलाभिषेकम्।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि केन्द्रभाव में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य वाहन, वस्त्र आदि तथा मणि से युक्त आभूषण का लाभ करता है। कान्ति युक्त शरीर वाला होता है। राज्य, धन, भूमि, कृषि कार्य, वाहन, वस्त्र, शस्त्र आदि की प्राप्ति होती है। किला में वास करता हुआ वन्य जल से स्नान करने को मिलता है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

शुक्र प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

शत्रुहानिर्महत्सौख्यं शंकरालयनिर्मितिः।

तडागकूपनिर्माणं निजसूक्ष्मगते भृगौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो विपक्षियों का नाश, महान सुख एवं शिवालय या देवमन्दिर तथा तडाग-कूपादि जलाशय का निर्माण होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

उरस्तापो भ्रमष्चैव गतागतविचेष्टितम्।
क्वचिल्लाभः क्वचिद्धानिर्भृगोः सूक्ष्मगते रवौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो हृदय में सन्ताप, मतिभ्रम, इधर-उधर घूमना, कभी लाभ एवं कभी हानि होती है।

शुक्र प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

आरोग्यं धनसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः।
बुद्धिविद्याविवृद्धिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते विधौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो निरोगता, धन-सम्पत्ति की वृद्धि, गमनागमन से कार्यसिद्धि एवं बुद्धि और विद्या की वृद्धि होती है।

शुक्र प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा-फल

जडत्वं रिपुवैषम्यं देषभ्रंषो महद्भयम्।
व्याधिदुःखसमुत्पत्तिर्भृगोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो मूर्खता, शत्रु से विषमता, देशत्याग, भय, रोग और दुःख होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

राज्याग्निसर्पजा भतिर्बन्धुनाशो गुरुव्यथा।
स्थानच्युतिर्महाभीतिर्भृगोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो अग्नि और सर्प से भय बन्धु नाश, महारोग, स्थान त्याग और महाभय होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

सर्वत्र कार्यलाभष्च क्षेत्रार्थविभवोन्नतिः।
वणिग्वृत्तेर्महालब्धिर्भृगोः सूक्ष्मगते गुरौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो सभी जगह से लाभ, खेती और धन-ऐश्वर्य की उन्नति

एवं व्यापार से अधिक लाभ होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

शत्रुपीडा महद्दुःखं चतुष्पादविनाशनम्।
स्वगोत्रगुरुहानिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते शनौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो शत्रु से पीडा, महादुःख, पशुओं की हानि एवं अपने वंश और गुरुजनों की हानि सम्भव होती है।

शुक्र प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

बान्धवादिषु सम्पत्तिर्व्यवहारो धनोन्नतिः।
पुत्रदारादितः सौख्यं भृगोः सूक्ष्मगते बुधे।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो अपने बन्धु-बान्धवों में धन की वृद्धि, व्यवहार कुशलता के कारण धनलाभ एवं पुत्र और स्त्री से सुख होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

अग्निरोगो महापीडा मुखनेत्रषिरोव्यथा।
संचितार्थात्मनः पीडा भृगोः सूक्ष्मगते ध्वजे।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो अग्निभय, महारोग से पीडा, मुख नेत्र और मस्तक में पीडा, संचित धन का नाश और मानसिक सन्ताप होता है।

बोध प्रश्न –

1. शुक्र के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो क्या होता है।
   क. भय ख. रोग ग. दुःख घ. उपर्युक्त सभी
2. बुध के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो दशा फल होगा-
   क. सुन्दर गृह का निर्माण ख. चोर भय ग. धन वृद्धि घ. मान हानि
3. जिस जातक की कुण्डली में शुक्र यदि पापग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय क्या फल होगा।
   क. मान वृद्धि ख. मान नाश ग. धन प्राप्ति घ. शत्रु पराजय
4. बुध के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो क्या फल होता है।
   क. भाग्योन्नति ख. भाग्य में कमी ग. शरीर सुख घ. ऐश्वर्य वृद्धि
5. गुरु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो फल क्या होगा।

क.पुत्र प्राप्ति ख. पत्नी प्राप्ति ग. आयु वृद्धि घ. मान हानि

4.5 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि सूक्ष्म यथा नाम से ही स्पष्ट है कि जातक के उपर सूक्ष्म प्रकार की चलने वाली दशा।

धुजङमत्र्यंशयुतस्य भानोर्दशाविपाके हि भयं विषाद्वा।
नृपाग्निपातित्यमनेकदुःखं पाशादिभृत्यंशयुतस्य चैवम्।।

जिस जातक की कुण्डली में सूर्य यदि सर्प द्रेष्काण में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को विष से भय और राजा, अग्नि और पतित होने से अनेक प्रकार के दुःख मिलते हैं। इसी तरह की फल पाश द्रेष्काणस्थ सूर्य की दशा में भी प्राप्त होता है।

उच्चराशि-नीच नवांशस्थ सूर्य दशाफल कथन

स्वोच्चस्थोऽपि दिनेशो नीचांशे चेत्कलत्रधनहानिः।
स्वकुलजबन्धुविरोधः पित्रादीनां तथैव मुनिवाक्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि उच्चराशि में होकर नीचनवांश तुला राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को स्त्री व धन की हानि होती है। अपने ही कुल के बन्धुजनों से विरोध भी होता है। पिता, चाचा आदि से भी विरोध के कारण उत्पन्न होते हैं। ऐसा मुनियों का वचन है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के सूक्ष्मान्तर्दशा का फल समझना चाहिए।

4.7 पारिभाषिक शब्दावली

सूक्ष्म दशा – प्रत्यन्तर्दशा के पश्चात् सूक्ष्म दशा होती है।

उच्च स्थान – सभी ग्रहों के उच्च स्थान होते है। जैसे सूर्य का मेष, चन्द्र का वृष आदि।

भार्या – पत्नी

नवमांश – राशि का नवां भाग।

दशा – स्थिति

पतित – नीच

अग्नि – आग

4.8 बोधप्रश्न के उत्तर

1. घ
2. क
3. ख
4. क
5. क

4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. सर्वार्थचिन्तामणि – आचार्य वेंकटेश
4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सूक्ष्मान्तर्दशा फल से आप क्या समझते है।
2. सूर्य ग्रह का सूक्ष्मान्तर्दशा का फल लिखिये।
3. चन्द्र एवं गुरु सूक्ष्म दशा का फल लिखें।
4. शनि एवं राहु ग्रह का सूक्ष्म फल लिखें।
5. केतु ग्रह का सूक्ष्म दशा फल लिखें।

इकाई – 5 प्राणदशा फल विचार

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 प्राण दशा परिचय

5.4 प्राण दशा फल विचार

5.5 सारांश

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.9 सहायक पाठ्यसामग्री

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -202 के तृतीय खण्ड की पाँचवी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – प्राणदशा दशाफल। इससे पूर्व आपने महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा, तथा सूक्ष्म दशा आदि के शुभाशुभ फलाफल का अध्ययन कर लिया है अब आप दशा क्रम में ही प्राण दशा के फलों का अध्ययन करने जा रहे है।

जातक की दशाओं के अन्तर्गत प्राण दशा सबसे सूक्ष्म दशा मानी गयी। अत: इसका ज्ञान भी ज्योतिष के अध्येताओं को अवश्य जानना चाहिए।

आइए इस इकाई में हम लोग 'प्राण दशा फल' के बारे में तथा उसके शुभाशुभ प्रभाव के बारे में जानने का प्रयास करते है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- प्राण दशा को परिभाषित कर सकेंगे।
- प्राण दशा के अवयवों को समझा सकेंगे।
- प्राण दशा के शुभ फलों को समझ लेंगे।
- प्राण दशा के अशुभ प्रभावों को जान लेंगे।
- प्राण दशा के महत्व का निरूपण कर सकेंगे।

5.3 प्राणदशा परिचय

दशाओं के फलाफल ज्ञान क्रम में प्राण दशा के बारे में अब आप अध्ययन करने जा रहे है। आपको यह जानना चाहिए कि दशाओं में सबसे सूक्ष्म दशा प्राण दशा होती है। इसके आधार पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म फलादेश करने करना सरल हो जाता है। यह सूक्ष्म दशा के पश्चात् आता है। प्राण दशा के आधार पर व्यक्ति का एक दिवस का पूरा-पूरा फलादेश किया जा सकता है। यद्यपि इसका ज्ञान कठिन है। इसके आधार पर फलादेश करना भी आजा की स्थिति में दुष्कर है, किन्तु आचार्यो ने जो यह ज्ञान हमें ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से घोर अनुसन्धान के द्वारा दिया है उसका अवलोकन करते है।

सूर्य से लेकर शुक्र पर्यन्त सभी ग्रहों के प्राण दशाओं का शुभाशुभ फल का विवेचन क्रमश: यहाँ आपके ज्ञानार्थ दिया जा रहा है।

दशा ज्ञान हेतु वृहत्पराशरहोराशास्त्र ज्योतिष शास्त्र का अपूर्व ग्रन्थ है। सर्वाधिक दशाओं का विवरण इसी ग्रन्थ में प्राप्त होता है। अत: इसी ग्रन्थ के आधार पर यहाँ प्राण दशा फल का वर्णन किया जा रहा है।

5.4 प्राणदशा फल विचार –

सर्वप्रथम सूर्य ग्रह से आरम्भ करते है। यदि सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राण दशा चल रही हो तो उसका क्या फल होगा। इसका विचार करते है। तत्पश्चात् क्रम से चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु एवं शुक्र ग्रहों का भी प्राणदशा फल का विवरण किया जायेगा।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राण दशा फल –

पौश्चल्यं विषजा बाधा चौराग्निनृपजं भयम्।
कष्टा सूक्ष्मदशाकाले रवौ प्राणदशां गते।।

अर्थात् सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो गुदा मैथुन में प्रवृत्ति, विष में बाधा, चौर, अग्नि और राजभय एवं एवं शारीरिक कष्ट होता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशाफल -

सुखं भोजनसम्पत्ति: संस्कारो नृपवैभवम्।
उदारादिकृपाभिश्च रवे: प्राणगते विधौ।।

अर्थात् सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो सुख, भोजन-सम्पत्ति की प्राप्ति, बुद्धि में परिवर्तन, राजा से ऐश्वर्य की प्राप्ति एवं सन्त सज्जन उदारादि पुरुषों की कृपा रहती है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशाफल –

भूपोपद्रवमन्यार्थे द्रव्यनाशो महद्भयम्।
महत्यपचयप्राप्ती रवे: प्राणगते कुजे।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो अन्यों के कारण राजा से उपद्रव, द्रव्यनाश, भय और महान हानि होती है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशाफल –

अन्नोद्भवा महापीडा विषोत्सपत्तिर्विशेषत:।
अर्थाग्निराजभि: क्लेशो रवे: प्राणगतेऽप्यहौ।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो अन्न से कष्ट, विशेषकर विषभय, अग्नि तथा राजा के द्वारा धननाश और क्लेश होता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

नानाविद्यार्थसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः।

नृपाविप्राश्रमे सूक्ष्मे रवेः प्राणगते गुरौ।।

अर्थात् सूर्य की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो विभिन्न विद्या, धन, सम्पत्ति का लाभ, गमनागमन से कार्य सिद्धि और राजा तथा ब्राह्मण से सम्बन्ध रहता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

बन्धनं प्राणनाशश्च चित्तोद्वेगस्तथैव च।

बहुबाधा महाहानी रवेः प्राणगते शनौ।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो बन्धन, प्राणनाश, मन में उद्वेग, कार्य में विघ्न और महान हानि होती है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राण दशा फल –

राजान्नभोगः सततं राजलांछनतत्पदम्। केतु

आत्मा सन्तर्पयेदेवं रवेः प्राणगते बुधे।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में बुध कीप्राणदशा हो तो निरन्तर राजान्न, भोजन, राजचिह्न की प्राप्ति या राजपद की प्राप्ति से आत्मसंतोष प्राप्त होता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

अन्योऽन्यं कलहश्चैव वसुहानिः पराजयः।

गुरुस्त्रीबन्धुवर्गैश्च सूर्यप्राणगते ध्वजे।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा रहने पर पूज्य जनों और स्त्री, स्वबन्धु जनों के साथ परस्पर कलह से धन की हानि होती है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

राजपूजा धानाधिक्यं स्त्रीपुत्रादिभवं सुखम्।

अन्नपानादिभोगादि सूर्यप्राणगते भृगौ।।

सूर्य की सूक्ष्म दश में शुक्र की प्राणदशा हो तो राजा से पूजित, धन की वृद्धि स्त्री पूत्रादि से सुख और अन्न पानादि का भोग होता है।

चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशा फल –

स्त्रीपुत्रादिसुखं द्रव्यं लभते नूतनाम्बरम्।

योगसिद्धिं समाधिश्च निजप्राणगते विधौ।।

चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा होत तो स्त्री पुत्रादि से सुख, धन और नूतन वस्र का

लाभ एवं योग और समाधि की सिद्धि होती है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल -

क्षयं कुष्ठं बन्धुनाशं रक्तस्रावान्महद्भयम्।
भूतावेशादि जायेत विधोः प्राणगते कुजे।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो क्षय, कुष्ठरोग, बन्धुओं का विनाश, रक्तस्राव से भय एवं भूत और पिशाचादि का भय रहता है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

सर्पभीतिर्विशेषेण भूतोप्रदववान सदा।
दृष्टिक्षोभो मतिभ्रंशो विधोः प्राणगतेऽप्यगौ।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो विशेषकार सर्प का भय, सदा भूतों का उपद्रव, ऑख में रोग और मतिभ्रंश होता है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

धर्मवृद्धिः क्षमाप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजनम्।
सौभाग्यं प्रियदृष्टिश्च चन्द्रप्राणगते गुरौ।।

अर्थात् चन्द्र की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो धार्मिक कृत्यों में वृद्धि, क्षमाप्राप्ति, देव-ब्राह्मणों का पूजन, भाग्योदय और अपने प्रियजनों से भेंट होती है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

सहास देहपतनं शत्रूपद्रववेदना।
अन्धत्वं च धनप्राप्तिश्चन्द्रप्राणगते शनौ।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो शरीर में अकस्मात् कष्ट, शत्रुओं के उपद्रव से वेदना, दृष्टि में कमी और धन की प्राप्ति होती है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

चामरच्छत्रसम्प्राप्ती राज्यलाभो नृपात्तत:।
समत्वं सर्वभूतेषु चन्द्रप्राणगते बुधे।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो राजचिह्न की प्राप्ति या राजा से राज्य लाभ और समस्त जीवों में समता की बुद्धि होती है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

शस्त्राग्निपुजा पीडा विषाग्निः कुक्षिरोगिता।

पुत्रदारवियोगश्च चन्द्रप्राणगते ध्वजे।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो शस्त्र, अग्नि और शत्रु से पीड़ा, विषभय, पेट में रोग एवं स्त्री पुत्रादि का वियोग होता है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

पुत्रमित्रकलत्राप्तिर्विदेशाच्च धनागमः।

सुखसम्पत्तिरर्थश्च चन्द्रप्राणगते भृगौ।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो पुत्र, मित्र, स्त्री आदि की प्राप्ति, विदेश से धनागम एवं सभी प्रकार के सुख-सम्पत्ति का लाभ होता है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

क्रूरता कोपवृद्धिश्च प्राणहानिर्मनोव्यथा।

देशत्यागो महाभीतिश्चन्द्रप्राणगते रवौ।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो क्रूरता, कोप की बढ़ोत्तरी, प्राणनाश, मानसिक व्यथा, देशत्याग और महाभय होता है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

कलहो रिपुभिर्बन्धः रक्तपित्तादिरोगभीः।

निजसूक्ष्मदशामध्ये कुजे प्राणगते फलम्।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो शत्रु से विवाद, बन्धन एवं रक्त पित्त सम्बन्धी रोगभय होता है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

विच्युतः सुतदारैश्च बन्धूपद्रवपीडितः।

प्राणत्यागी विषेणैव भौमप्राणगतेऽप्यहौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो स्त्री पुत्रों से विछोह, अपने बन्धुओं के उपद्रव से पीड़ा एवं विष से प्राणत्याग का भय होता है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

देवार्चनपरः श्रीमान्मन्त्रानुष्ठानतत्परः।

पुत्रपौत्रसुखावाप्तिर्भौमप्राणगते गुरौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो देवपूजन में तत्पर, पूज्य मन्त्रों के अनुष्ठान में

तत्परता एवं पुत्र पौत्रों से सुख की प्रप्ति होती है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

अग्निबाधा भवेन्मृत्युरर्थनाश: पदच्युति:।
बन्धुभिर्बन्धुतावाप्तिर्भौमप्राणगते शनौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो अग्निभय, मरण, धननाश, स्थान त्याग, परन्तु बन्धुओं में भ्रातृत्व की वृद्धि होती है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

दिव्याम्बरसमुत्पत्तिर्दिव्याभरणभूषित:।
दिव्यांगनाया: सम्प्राप्तिर्भौमप्राणगते बुधे।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो दिव्य वस्त्रों की प्राप्ति, सुन्दर आभूषण से भूषित और सुन्दर स्त्री का लाभ होता है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

पतनोत्पातपीडा च नेत्रक्षोभो महद्भयम्।
भुजंगाद् द्रव्याहानिश्च भौमप्राणगते ध्वजे।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो गिरने का भय, उत्पात, नेत्ररोग, सर्प से भय एवं धन का नाश होता है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

धनधान्यादिसम्पत्तिर्लोकपूजा सुखागमा।
नानाभोगैर्भवेद् भोगी भौमप्राणगते भृगौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो धन-धान्य सम्पत्ति की वृद्धि, लोक में सम्मान, सुख एवं अनेक प्रकार के भोग प्राप्त होते हैं।

मंगल की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

ज्वरोन्माद: क्षयोऽर्थस्य राजविस्नेहसम्भव:।
दीर्घरोगी दरिद्र: स्याद् भौमप्राणगते रवौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो ज्वर, उन्माद, धननाश, राजा से सम्बन्ध विच्छेद, दीर्घ रोग एवं दरिद्रता होती है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

भोजनादिसुखप्राप्तिर्वस्त्राभरणजं सुखम्।

शीतोष्णव्याधिपीडा च भौमाप्राणगते विधौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो भोजन, वस्त्र, आभरणादिजन्य सुख एवं शीत तथा उष्ण सम्बन्धी व्याधि से पीड़ा होती है।

राहु की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशाकाल –

अन्नाशने विरक्तश्च विषभीतिस्तथैव च।
साहसाद्धननाशश्च राहौ प्राणगते भवेत्।।

राहु की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो अन्न से निर्मित भोजन में अरूचि, विषभय एवं अकस्मात् धननाश होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशाकाल –

अंगसौख्यं विनिर्भीतिर्वाहनोदश्च संगता।
नीचैः कलहसम्प्राप्ती राहोः प्राणगते गुरौ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो शारीरिक सुख, निर्भरता, वाहनों का लाभ और नीच जनों से कलह होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशाकाल –

गृहदाहः शरीरे रूग नीचैरपहृतं धनम्।
तथा बन्धनसम्प्राप्ती राहोः प्राणगते शनौ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो गृहदाह, शरीर में रोग, नीचों के द्वारा धन का अपहरण और बन्धन होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशाकाल –

गुरुपदेशविभवो गरुसत्कारवर्द्धनम्।
गुणवांछीलवांश्चापि राहोः प्राणगते बुधे।।

राहु की सूक्ष्म दशा मे बुध की प्राणदशा हो तो गुरु के ज्ञान से युक्त, उनकी कृपा से धन की वृद्धि एवं गुणी और शीलवान होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशाकाल –

स्त्रीपुत्रादिविरोधश्च गृहान्निष्क्रमणादपि।
साहसात्कार्यहानिश्च राहोः प्राणगते ध्वजे।।

राहु की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो स्त्री-पुत्रादि से विरोध, गृह से निष्क्रमण एवं साहस से कार्यनाश होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशाकाल –

छत्रवाहनसम्पत्तिः सर्वार्थफलसंचयः।
शिवार्चनगृहारम्भो राहोः प्राणगते भृगौ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो छत्र, वाहन, सम्पत्ति की प्राप्ति, सभी कार्यों का फलसंग्रह, शिवपूजन और गृहारम्भ होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशाकाल –

अर्शादिरोगभीतिश्च राज्योपद्रवसम्भवः।
चतुष्पादादिहानिश्च राहोः प्राणगते रवौ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो बवासीर आदि रोग का भय, राजा के उपद्रव की सम्भावना एवं पशुओं की हानि होती है।

राहु की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशाकाल –

सौमनस्यं च सद्बुद्धिः सत्कारो गुरुदर्शनम्।
पापाद् भीतिर्गनः सौख्यं राहोः प्राणगते विधौ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो मन और बुद्धि का विकास, लोक में आदर, पूज्य जनों का अगमन, पाप से भय और मानसिक सुख की अनुभूति होती है।

राहु की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशाकाल –

चाण्डालग्निवशाद् भीतिः स्वपदच्युतिरापदः।
मलिनः श्वादिवृत्तिश्च राहोः प्राणगते कुजे।।

राहु की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो चाण्डाल और अग्नि से भय, पदत्याग, विपत्ति, मलिनता और नीच कार्य होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

हर्षागमो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम्।
वाहनं छत्रसंयुक्तं निजप्राणगते गुरौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा रहने पर हर्ष, धन की वृद्धि, अग्निहोत्र, शिवपूजन एवं वाहन और छत्र आदि का लाभ होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

व्रतहानिर्विषादश्च विदेशे धननाशनम्।
विरोधे बन्धुवर्गैश्च गुरोः प्राणगते शनौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो व्रत में बाधा, विषाद, विदेशगमन, धननाश एवं अपने बन्धुवर्गों से विरोध होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

विद्याबुद्धिविवृद्धिश्च लोके पूजा धनागमः।
स्त्रीपुत्रादिसुखप्राप्तिर्गुरोः प्राणगते बुधे।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो विद्या तथा बुद्धि की वृद्धि, लोक में आदर, धनागम एवं स्त्री पुत्रादि से सुख प्राप्त होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

ज्ञानं विभवपाण्डित्यं शास्त्रज्ञानं शिवार्चनम्।
अग्निहोत्रं गुरोर्भक्तिर्गुरोः प्राणगते ध्वजे।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो ज्ञान, ऐश्वर्य, पाण्डित्य, शास्त्रज्ञान, शिवपूजन, अग्निहोत्र और गुरु में निष्ठा रहती है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

रोगान्मुक्तिः सुखं भोगो धनधान्यसमागमः।
पुत्रदारादिजं सौख्यं गुरोः प्राणगते भृगौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो रोग से छुटकारा, सुखभोग, धन धान्य का आगमन एवं स्त्री पुत्र से सुख होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

वातपित्तप्रकोपं च श्लेषमोद्रेकं तु दारूणम्।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरोः प्राणगते रवौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो वात, पित्त और कफसम्बन्धी ा रोग का भय एवं रस-व्याधि के कारण शूल रोग होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में चन्द्र का प्राणदशा फल –

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
नेत्रकुक्षिगता पीडा गुरोः प्राणगते विधौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो छत्र चामरयुत ऐश्वर्य की प्राप्ति, पुत्रलाभ एवं नेत्र तथा पेट में पीड़ा होती है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

स्त्रीजनाच्च विषोत्सपत्तिर्बन्धनं चातिनिग्रह:।

देशान्तरगमो भ्रान्तिर्गुरो: प्राणगते कुजे।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो स्त्री से विषभय, कारागार में प्रवेश, देशान्तर में गमन और मतिभ्रंश होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

व्याधिभि: परिभूत: स्याचौरैपह्वरतं धनम्।

सर्पवृश्चिकभीतिश्च गुरो: प्राणगतेऽप्यहौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो रोग से आच्छादित, चोर द्वारा धन का अपहरण एवं सर्प, बिच्छु आदि का भय होता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

ज्वरेण ज्वलिता कान्ति: कुष्ठरोगोदरादिरूक्।

जलाग्निकृतमृत्यु: स्यान्निजप्राणगते शनौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो ज्वर से कान्ति का नाश, कुष्ठ तथा उदर रोग एवं जल और अग्नि से मरण सम्भव रहता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

धनं धान्यं च मांगल्यं व्यवहारभिपूजनम्।

देवब्राह्मणभक्तिश्च शने: प्राणगते बुधे।।

शनि की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो धन-धान्य एवं मंगल की प्राप्ति, व्यवहार में कुशलता, लाभ तथा देवता और ब्राह्मणों में भक्ति होती है।

शनि की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

मृत्युवेदनदु:खं च भूतोपद्रवसम्भव:।

परदाराभिभतत्वं शने: प्राणगते ध्वजे।।

शनि की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो मरणसदृश कष्ट, दु:ख, भूतों का उपद्रव एवं परस्त्री से अपमान होता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

पुत्रार्थविभवै: सौख्यं क्षितिपालादित: सुखम्।

अग्निहोत्रं विवाहश्च शने: प्राणगते भृगौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो पुत्र एवं अर्थ का लाभ, राजा से ऐश्वर्यलाभ, अग्निहोत्र, विवाहादि मांगलिक कार्य होता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

अक्षिपीडा शिरोव्याधि: सर्पशत्रुभयं भवेत्।
अर्थहानिर्महाक्लेश: शने: प्राणगते रवौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो आँख और मस्तक में रोग, सर्प एवं शत्रु का भय तथा धननाश और क्लेश होता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशा फल –

आरोग्यं पुत्रलाभश्च शान्तिपौष्टिकवर्धनम्।
देवब्राह्मणभक्तिश्च शने: प्राणगते विधौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशा हो तो आरोग्य एवं पुत्र की प्राप्ति, शान्ति तथा पौष्टिक कार्य सम्पन्न एवं देवता और ब्राह्मणों में भक्ति होती है।

शनि की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

गुल्मरोग: शत्रुभीतिर्मृगया प्राणनाशनम्।
सर्पाग्निविषतो भीति: शने: प्राणगते कुजे।।

शनि की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो गुल्म रोग, शत्रु से भय, मृग के कारा मरण भय एवं सर्प, अग्नि और विष का भय रहता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

देशत्यागो नृपाद् भीतिर्मोहनं विषभक्षणम्।
वातपित्तकृता पीडा शने: प्राणगतेऽप्यहौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो देशत्याग, राजा से भय, मोहन, विषपान एवं वात पित्तसम्बन्धी रोग से पीड़ा होती है।

शनि की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

सेनापत्यं भूमिलाभ: संगम: स्वजनै: सह।
गौरवं नृपसम्मानं शने: प्राणगते गुरौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो सेनानायक, भूमिलाभ, अपने बन्धुओं का संगम, गौरव और राजा से सम्मान प्राप्त होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

आरोग्यं सुखम्पत्तिर्धर्मकर्मादिसाधनम्।

समत्वं सर्वभूतेशु निजप्राणगते बुधे।।

बुध की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो नीरोग, सख-सम्पत्ति -धर्म और कर्म साधन एवं सभी जीवों में समभाव रहता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

वह्नितस्करतो भीति: परमाधिर्विषोद्भव:।

देहान्तकरणं दु:खं बुधप्राणगते ध्वजे।

बुध की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो अग्नि, चोर और परम विष का भय एवं मरणसदृश दु:ख होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

प्रभुत्वं धनसम्पत्ति: कीर्तिर्धर्म: शिवार्चनम्।

पुत्रदारादिकं सौख्यं बुधप्राणगते भृगौ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो स्वामित्व, धन-सम्पत्ति और यश, धर्म की प्राप्ति, शिवपूजक, पुत्र और स्त्री से सुख होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

अन्तर्दाहो ज्वरोन्मादौ बान्धवानां रति: स्त्रिया:।

प्राप्यते स्तेयसम्पत्तिर्बुधप्राणगते रवौ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में रवि की प्राणदशा हो तो आन्तरिक सन्ताप, ज्वर, उन्माद, बन्धु और स्त्री में प्रेम और अपहरण किया गया धन प्राप्त होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में चन्द्र का प्राणदशा फल –

स्त्रीलाभश्चार्थसम्पत्ति: कन्यालाभो धनागम:।

लभते सर्वत: सौख्यं बुधप्राणगते विधौ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो स्त्री और धनलाभ, कन्याप्राप्ति, धनागम एवं सभी जगहों से सुख की प्राप्ति होती है।

बुध की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

पतित: कुक्षिरोगी च दन्तनेत्रादिजा व्यथा।

अर्शांसि प्राणसन्देहो बुधप्राणगते कुजे।।

बुध की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो पतित कार्य में प्रवृत्ति, उदर, दन्त और नेत्रसम्बन्धी

रोग एवं बवासीर और मरण का भय होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

वस्त्राभरणसम्पत्तिर्वियोगो विप्रवैरिता।
सन्निपातोद्भवं दु:खं बुधप्राणगतेऽप्यहौ।।

बुध की सक्ष्म दशा में राहु की प्राणदश हो तो वस्त्र, आभरण और सम्पत्ति से वियोग, ब्राह्मणों से वैरभाव और सन्निपात रोग होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

गुरुत्वं धनसम्पत्तिर्विद्या सद्गुणसंग्रह:।
व्यवसायेन सल्लाभो बुधप्राणगतौ गुरौ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो गौरव, धन-सम्पत्ति और विद्या का लाभ, सद्गुणों की वृद्धि एवं स्व-व्यवसाय में उचित लाभ होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

चौर्येण निधनप्राप्तिर्विधनत्वं दरिद्रता।
याचकत्वं विशेषेण बुधप्राणगते शनौ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदश हो तो चोर के द्वारा मरण की संभावनायें, निर्धनता, दरिद्रता और भिक्षावृत्ति होती है।

केतु की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

अश्वपातेन घातश्च शत्रुत: कलहागम:।
निर्विचारवधोत्पत्तिर्निजप्राणगते ध्वजे।।

केतु की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो घोड़े से गिरने से घात, शत्रु से कलह एवं विवेकशून्यता से वधजन्य पाप होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

क्षेत्रलाभो वैरिनाशो हयलाभो मन:सुखम्।
पशुक्षेत्रधनाप्तिश्च केतो: प्राणगते भृगौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो क्षेत्र एवं अश्व का लाभ, शत्रुनाश, मानसिक सुख, धन की प्राप्ति एवं खेती और पशुओं की वृद्धि होती है।

केतु की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

स्तेयाग्निरिपुभीतिश्च धनहानिर्मनोव्यथा।
प्राणान्तकरणं कष्टं केतोः प्राणगते रवौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो चौर, अग्नि और शत्रुभय, धननाश, मानसिक रोग एवं मरणतुल्य कष्ट होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशा फल –

देवद्विजगुरोः पूजा दीर्घयात्रा धनं सुखम्।
कर्णे वा लोचने रोगः केतोः प्राणगते विधौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो देव और ब्राह्मणें में भक्ति, लम्बी यात्रा, धन का सुख एवं कान और नेत्र में रोग होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

पित्तरोगो नसावृद्धिर्विभ्रमः सन्निपातजः।
स्वबन्धुजनविद्वेषः केतोः प्राणगते कुजे।।

केतु की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो पित्तरोग, नसावृद्धि, बुद्धि में भ्रम, सन्निपात रोग और अपने बन्धुओं से द्वेष होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

विरोधः स्त्रीसुताद्यैश्च गृहान्निष्क्रमणं भवेत्।
स्वसाहसात्कार्यहानिः केतोः प्राणगतेऽप्यहौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो स्त्री पुत्रों से विरोध, गृहत्याग एवं अपने साहस से कार्य की हानि होती है।

केतु की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

शस्त्रव्रणैर्महारोगो हृत्पीडादिसमुद्भवः।
सुतदारवियोगश्च केतोः प्राणगते गुरौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो शस्त्र से आघात, व्रण, हृदयरोग और स्त्री-पुत्रों से वियोग होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

मतिविभ्रमतीक्ष्णत्वं क्रूरकर्मरतिः सदा।
व्यसनाद् बन्धनं दुःखं केतोः प्राणगते शनौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो मतिभ्रम, क्रूर कर्म में प्रवृत्ति, कठिन व्यसन से बन्धन और दु:ख होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशाफल –

कुसुमं शयनं भूषा लेपनं भोजनादिकम्।
सौख्यं सर्वांगभोग्यं च केतो: प्राणगते बुधे।।

केतु की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो पुष्प, शय्या, आभूषण, लेपन, सुन्दर भोजन और सुख प्राप्त होता है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

ज्ञानमीश्वरभक्तिश्च सन्तोषश्च धनागम:।
पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च निजप्राणगते भृगौ।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो ज्ञान, ईश्वर में भक्ति, सन्तोष, धन का लाभ एवं पुत्र-पौत्रों की वृद्धि होती है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

लोकप्रकाशकीर्तिश्च सुतसौख्यविवर्जित:।
उष्णादिरोगजं दु:खं शुक्रप्राणगते रवौ।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो लोक में प्रसिद्धि और सुयश, पुत्रसुख से विहीन एवं उष्ण रोगादि से दु:ख होता है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशा फल –

देवार्चने कर्मरतिर्मन्त्रतोषणतत्पर:।
धनसौभाग्यसम्पत्ति: शुक्रप्राणगते विधौ।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो देवपूजक, कार्यकुशलता, मन्त्र से सन्तोष एवं धन तथा भाग्योदय होता है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

ज्वरो मसूरिका स्फोट कण्डू चिपिटकादिका:।
देव ब्राह्मणपूजा च शुक्रप्राणगते कुजे।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो ज्वर, घाव, दाद, खुजली, रोग और देव तथा ब्राह्मण का पूजक होता है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

नित्यं शत्रुकृता पीडा नेत्रकुक्षिरुजादय:।

विरोध: सुहृदां पीडा शुक्रप्राणगतेऽप्यहौ।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो सदैव शत्रु से पीड़ा, नेत्र, पेट में रोग एवं मित्रों से विरोध के कारण मानसिक पीड़ा होती है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रस्त्रीधनवैभवम्।

छत्रवाहनसम्प्राप्ति: शुक्रप्राणगते गुरौ।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, पुत्र, स्त्री, धन की वृद्धि एवं छत्र, वाहन आदि की प्राप्ति होती है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

राजोपद्रवजा भीति: सुखहानिर्महारूज:।

नीचै: सह विवादश्च भृगो: प्राणगते शनौ।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो राजा का उपद्रव, सुखरनाश, रोगभय एवं नीचों के साथ विवाद होता है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

सन्तोषो राजसम्मानं नानादिग्भूमिसम्पद:।

नित्यमुत्साहवृद्धि: स्याच्छुक्रप्राणगते बुधे।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो सन्तोष, राजा से आदर, विभिनन दिशा से भूमि का लाभ एवं सदैव उत्साह की वृद्धि होती है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

जीवितात्म यशोहानिर्धन धान्य परिक्षय:।

त्यागभोगधनानि स्यु: शुक्रप्राणगते ध्वजे।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो जीवन एवं यश की हानि, निर्धनता एवं धान्य रहित होकर केवल दान तथा भोगधन अवशेष रहता है।

बोध प्रश्न : -

1. सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो क्या फल होता है –

   क. भाग्य वृद्धि ख. सुख प्राप्ति ग. बुद्धि परिवर्तन घ. सभी

2. सर्वाधिक दशाओं का विवरण किस ग्रन्थ में मिलता है।
   क. जातकपारिजात ख. वृहत्पराशरहोराशास्त्र ग. फलदीपिका घ. कोई नहीं
3. शुक्र की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो क्या फल मिलता है।
   क. आयु वृद्धि ख. धन लाभ ग. पत्नी प्राप्ति घ. अश्व प्राप्ति
4. केतु की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो कौन सा रोग होता है।
   क. कफ प्रकृति वाला रोग ख. असाध्य रोग ग. पित्त प्रकृति संबंधित रोग घ. ज्वर
5. शनि की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो शरीर के किस अंग में रोग होता है।
   क. आँख और मस्तक में ख. उदर में ग. पैर में घ. छाती में

5.5 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि दशाओं के फलाफल ज्ञान क्रम में प्राण दशा के बारे में अब आप अध्ययन करने जा रहे है। आपको यह जानना चाहिए कि दशाओं में सबसे सूक्ष्म दशा प्राण दशा होती है। इसके आधार पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म फलादेश करने करना सरल हो जाता है। यह सूक्ष्म दशा के पश्चात् आता है। प्राण दशा के आधार पर व्यक्ति का एक दिवस का पूरा-पूरा फलादेश किया जा सकता है। यद्यपि इसका ज्ञान कठिन है। इसके आधार पर फलादेश करना भी आजा की स्थिति में दुष्कर है, किन्तु आचार्यों ने जो यह ज्ञान हमें ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से घोर अनुसन्धान के द्वारा दिया है उसका अवलोकन करते है। सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो गुदा मैथुन में प्रवृत्ति, विष में बाधा, चौर, अग्नि और राजभय एवं एवं शारीरिक कष्ट होता है।सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो सुख, भोजन-सम्पत्ति की प्राप्ति, बुद्धि में परिवर्तन, राजा से ऐश्वर्य की प्राप्ति एवं सन्त सज्जन उदारादि पुरुषों की कृपा रहती है। सूर्य की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो अन्यों के कारण राजा से उपद्रव, द्रव्यनाश, भय और महान हानि होती है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की भी प्राण दशा फल होती है।

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

प्राण दशा – दशाओं में सबसे सूक्ष्म दशा होती है।

अनुसन्धान – नवीन खोज।

उदर – पेट

कटि – कमर

दशा – स्थिति

पतित – नीच

अग्नि – आग

द्रव्य – धन

5.7 बोधप्रश्न के उत्तर

1. घ
2. ख
3. क
4. ग
5. क

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. सर्वार्थचिन्तामणि – आचार्य वेंकटेश
4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

5.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. सर्वार्थचिन्तामणि – आचार्य वेंकटेश
4. फलदीपिका – मन्त्रेश्वर
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. प्राण दशा फल से आप क्या समझते है।
2. चन्द्र एवं मंगल ग्रह का सभी ग्रहों में प्राण दशा का फल लिखिये।
3. शनि ग्रह का सभी ग्रहों में प्राण दशा का फल लिखिये।
4. पराशर मतानुसार गुरु एवं शुक्र ग्रहों में सभी ग्रहों की प्राण दशा का फल लिखिये।
5. राहु ग्रह का सभी ग्रहों में प्राण दशा का फल लिखिये।

खण्ड - 4

प्रकीर्ण फल विवेचन

इकाई – 1 पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरूष फल विचार

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 पंचमहाभूत परिचय

1.3.1 पंचमहाभूत फल विचार

1.4 पंचमहापुरुष परिचय एवं फल विचार

1.5 सारांश

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -202 के चतुर्थ खण्ड की पहली इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरूष फल विचार। इससे पूर्व आपने दशा अन्तर्दशाओं कासाधन तथा उसके शुभाशुभ फलाफल से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरुष फल विचार' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

पंचमहाभूत से तात्पर्य हैं – भूमि, जल, वह्नि, आकाश एवं वायु। पंचमहापुरुष के अन्तर्गत रूचक, भद्र, हंस, मालव्य एवं शश योग आते हैं।

आइए इस इकाई में हम लोग 'पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरुष फल विचार' के बारे में तथा उसके फलित स्कन्ध में वर्णित महत्व को जानने का प्रयास करते है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- पंचमहाभूत को परिभाषित कर सकेंगे।
- पंचमहाभूत के अवयवों को समझा सकेंगे।
- पंचमहापुरुष योग क्या है ? इसे समझ लेंगे।
- पंचमहाभूत के फल विचार जान लेंगे।
- पंचमहापुरुष के फल विचार का प्रतिपादन करने में समर्थ हो सकेंगे।

1.3 पंचमहाभूत परिचय

ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों की वर्तमान दशा के ज्ञानार्थ ऋषियों द्वारा पंचमहाभूत सम्बन्धी छाया ज्ञान का वर्णन किया गया है। हम सभी जानते है कि मानव शरीर तथा ब्रह्माण्ड का निर्माण भी इन्हीं पंचमहाभूतों (अग्नि, भूमि, वायु, आकाश एवं जल) से मिलकर हुआ है। अत: इन सभी का ज्ञान परमावश्यक है। समस्त वेद एवं वेदांगो या शास्त्रों में इनका उल्लेख हमें प्राप्त होता है। आइए हम सभी महर्षि पराशर द्वारा प्रणीत ज्योतिष शास्त्र में कथित पंचमहाभूत सम्बन्धी छाया का अध्ययन इस इकाई में यहाँ करते है।

आपको जानकर यह हर्ष होगा कि 'वृहत्पराशहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ में आचार्य पराशर जी ने 'पंचमहाभूतफलाध्याय' नामक एक स्वतन्त्र अध्याय का ही लेखन किया है। अत: हम सभी उसका यहाँ अवलोकन कर ज्ञान प्राप्त करते हैं। सर्वप्रथम महर्षि पराशर जी ने पंचमहाभूतों के अधिपतियों

का वर्णन करते हुए कहा है कि –

शिखिभूखाम्बुवातानामधिपा मंगलादय:।

तत्तद्बलवशाज् ज्ञेयं तत्तद्भूतभवं फलम्।।

अर्थात् अग्नि, भूमि, आकाश, जल और वायु के अधिपति क्रम से मंगलादि (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) ग्रह होते हैं। जो ग्रह बली हो, उस ग्रह से सम्बन्धित महाभूत का फल जानना चाहिए।

1.3.1 पंचमहाभूत फल विचार

सबले मंगले वह्निस्वभावो जायते नर:।

बुधे महीस्भाव: स्यादाकाशप्रकृतिर्गुरौ।।

शुक्रे जलस्वभावश्च मारुतप्रकृति: शनौ।

मिश्रैर्मिश्रस्वभावश्च विज्ञेयो द्विजसत्तम।।

श्लोक का अर्थ है कि जन्मकाल में या गोचरकाल में यदि मंगल बली हो तो अग्निप्रकृति, गुरु के बली होने पर आकाशप्रकृति, शुक्र बली होने पर जलप्रकृति एवं शनि के बली होने पर वातप्रकृति होता है। अधिक ग्रहों के बली रहने पर मिश्र स्वभाव होता है।

सूर्ये वह्निस्वभावश्च जलप्रकृतिको विधौ।

स्वदशायां ग्रहाश्छायां व्यंजयन्ति स्वभूतजाम्।।

अर्थात् सूर्य के बली होने पर अग्निस्वभाव और चन्द्र के बली होने पर जलस्वभाव होता है। सभी ग्रह अपनी-अपनी दशा में अपने महाभूत से सम्बन्धित छाया का दर्शन कराते हैं।

वह्निस्वभाव युक्त पुरुष का लक्षण

क्षुधार्तश्चपल: शूर: कृश: प्राज्ञोऽतिभक्षण:।

तीक्ष्णो गौरतनुर्मानी वह्निप्रकृतिको नर:।।

वह्नि स्वभाव वाला पुरुष क्षुधा से दु:खी, चंचल, शूर, कृश, बुद्धिमान्, अधिक भोग करने वाला, तीक्ष्ण, गौर वर्ण और अभिमानी होता है।

भूमिस्वभाव युक्त पुरुष का लक्षण

कर्पूरोत्पलगन्धाढयो भोगी स्थिरसुखी बली।

क्षमावान् सिंहनादाश्च महीप्रकृतिको नर:।।

भूतत्त्व वाला पुरुष कपूर तथा कमल के समान गन्ध वाला, भोगी, स्थिर सुख से युक्त, बली, क्षमता करने में सक्षम एवं सिंह के समान शब्द वाला होता है।

आकाश प्रकृतिक पुरुष का लक्षण

शब्दार्थवित् सुनीतिज्ञो प्रगल्भो ज्ञानसंयुत:।
विवृतास्योऽतिदीर्घश्च व्योमप्रकृतिसम्भव:।।

व्योम प्रकृति वाला पुरुष शब्द तथा अर्थ को जानने वाला, नीति का ज्ञाता, चतुर, ज्ञान से युत, अनावृत मुख वाला एवं लम्बे कद वाला होता है।

जलस्वभावयुक्त पुरुष का लक्षण

कान्तिमान भारवाही च प्रियवाक् पृथ्वीपति:।
बहुमित्रो मृदुर्विद्वान् जलप्रकृतिसम्भव:।।

जलप्रकृति वाला व्यक्ति कान्तियुक्त, भार वहन करने वाला, मधुरभाषी, राजा अधिक मित्रों से युक्त, कोमल और विद्वान् होता है।

वायुप्रकृतिक पुरुष का लक्षण

वायुतत्वाधिको दाता क्रोधी गौरोऽटनप्रिय:।
भूपतिश्च दुराधर्ष: कृशांगो जायते जन:।।

वायु तत्व वाला पुरुष दाता, क्रोधी, गौर वर्ण से युक्त, भ्रमणकारक, शत्रु को जीतने वाला एवं दुबले-पतले शरीर वाला होता है।

अग्नि तत्व की छाया

स्वर्णदीप्ति: शुभा दृष्टि: सर्वकार्यार्थसिद्धिता।
विजयो धनलाभश्च वह्निभार्यां प्रजायते।।

जब अग्नि तत्व का उदय होता है तो शरीर में सोने के सदृश कान्ति, सुन्दर दृष्टि, समस्त कार्यों की सिद्धि, विजय और धनलाभ का आधिक्य रहता है।

भूतत्त्व की छाया

इष्टगन्ध: शरीरे स्यात् सुस्निग्धनखदन्तता।
धर्मार्थसुखलाभाश्च भूमिच्छाया यदा भवेत्।।

अर्थात् भूतत्त्व का उदय होने पर शरीर में अनेक प्रकार की सुगन्धि, नाखून, दाँत और केश स्वच्छ तथा धर्म, धन और सुख का अभ्युदय हो जाता है।

व्योमच्छाया-लक्षण

स्वच्छा गगनजा छाया वाक्पटुत्वप्रदा भवेत्।
सुशब्दश्रवणोद्भूतं सुखं तत्र प्रजायते।।

अर्थात् आकाशतत्त्व का उदय होने पर पुरुष में स्वच्छता, सुन्दरता बोलने में पटुता होती है तथा सुन्दर शब्द (गीतादि या भजनादि) श्रवण करने में उसे आनन्दानुभति होती है।

जलच्छाया का लक्षण

मृदुता स्वस्थता देहे जलच्छाया यदा भवेत्।
तदाऽभीष्टरसास्वादसुखं भवति देहिन:।।

जब जलतत्त्व का अभ्युदय हो तो शरीर में मृदुता, स्वस्थता तथा विभिन्न प्रकार के सुन्दर स्वाद वाले भोजन मिलने से सुखानुभति होती है।

वायुतत्त्वच्छाया का लक्षण

मालिन्यं मूढता दैन्यं रोगाश्च पवनोद्भवा:।
तदा च शोकसन्तापौ वायुच्छाया यदा भवेत्।।

जब वायु तत्त्व का उदय हो तो उस समय में शरीर में मलिनता, मूढ़ता, दीनता, वायुसम्बन्धी रोग का उदय एवं शोक और सन्ताप का प्राबल्य रहता है।

एवं फलं बुधैर्ज्ञेयं सबलेषु कुजादिषु।
निर्बलेषु तथा तेषु वक्तव्यं व्यत्ययाद् द्विज।।

इस प्रकार महाभूत (पंच तत्वों) का जो फल ऊपर कहा गया है, वह फल भौमादि ग्रहों के बलवान होने पर पूर्ण रूप से प्राप्त होता है, अन्यथा बलानुसार फलों में भी अल्पता तारतम्य से समझनी चाहिए।

नीचशत्रुभगैश्चापि विपरीतं फलं वदेत्।
फलाप्तिरबलै: खेटै: स्वप्न्चिन्तासु जायते।।

यदि ग्रह स्वनीच, शत्रुराशि आदि अनिष्ट स्थानगत हो तो विपरीत फल समझना चाहिए। जो ग्रह बलहीन हो, उसका फल स्वप्नावस्था में या मानसिक कल्पना में ही प्राप्त होता है।

तदुष्टफलशान्त्यर्थमपि चाज्ञातजन्मनाम्।
फलपक्त्या दशा ज्ञेया वर्तमाना नभ:सदाम्।।

अर्थात् जिस जातक का जन्मसमय ज्ञात न हो, उसके उक्त दशाफल के अनुसार वर्तमान ग्रहदशा समझ कर दुष्ट फल हो तो उसके शान्त्यर्थ उक्त ग्रह की आराधना करनी चाहिए।

1.4 पंचमहापुरुष परिचय एवं लक्षण

पंचमहाभूत के ज्ञान हो जाने के पश्चात् पंचमहापुरुष का यहाँ वर्णन किया जा रहा है। वस्तुत: पंचमहापुरुष का सम्बन्ध ज्योतिष शास्त्र में राजयोग से ही है। यह एक प्रकार का अत्यन्त

शुभ योग कहा गया है। पंचमहापुरुष योग के अन्तर्गत रूचक, भद्र, हंस, मालव्य एवं शश योग का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। इसके लक्षणों के बारे में हम यहाँ अध्ययन करते हैं -

वृहत्पराशरहोराशास्त्र में कथित पंचमहापुरुष योग लक्षण –

अथ वक्ष्याम्यहं पंच-महापुरुषलक्षणम्।
स्वभोच्चगतकेन्द्रस्थैर्बलिभिश्र कुजादिभिः।
क्रमशो रुचको भद्रो हंसो मालव्य एव च।।
शशश्चैते बुधैः सर्वामहान्तः पुरुषाः स्मृदाः।।

अर्थात् पराशर जी बोले-हे मैत्रेय! अब मैं आपसे पंच महापुरुष के लक्षण कहता हूँ। यदि भौमादि ग्रह बलवान होकर अपने उच्च, स्वगृह या केन्द्र में होते हैं तो जातक क्रमशः रुचक, भद्र, हंस, मालव्य और शश नामक प्रसिद्ध महापुरुष होते हैं।

रुचकलक्षण -

दीर्घाननो महोत्साहो स्वच्छकान्तिर्महाबलः।
चारुभूर्नीलकेशश्रच सुरुचिश्रच रणप्रयः।।
रक्तश्यामौऽरिहन्ता च मन्त्रविच्चोरनायकः।
क्रूरो भर्ता मनुष्याणां क्षमाऽड्घ्रिर्द्विजपूजकः।।
वीणावज्रधनुःपाशवृषचक्राडतः करे।
मन्त्राभिचारकुशली दैर्घ्ये चैव शतांगुलः ।
मुखदैर्घ्यसमं मध्यं तस्य विज्ञैः प्रकीर्तितम्।
तुल्यस्तुलासहस्त्रेण रुचको द्विजपुंगव! ।
भुनक्ति विन्ध्यसह्यद्रिप्रदेशः सप्ततिं समाः।
शस्त्रेण वह्निपस वाऽपि स प्रयाति सुरालयम् ।

रुचक नामक पुरुष लम्बे मुख वाला, महान् उत्साही, निर्मल कान्ति वाला, महाबली, सुन्दर भौंह वाला, काले केश वाला, सब वस्तुओं में रुचि रखने वाला, युद्धप्रिय, रक्त कृष्ण वर्ण, शत्रु का हनन करने वाला, मन्त्र को जानने वाला, चोर का नायक, क्रूर स्वभाव वाला, मनुष्यों का स्वामी, दुर्बल पैर वाला, विप्रों का पूजक, हाथ में वीणा, वज्र, धनुष, पाश, वृष चक्रांकित और चक्ररेखा से युक्त तथा गुह्य विचार एवं मन्त्राभिचार (मारण, उच्चाटनादि) में दक्ष होता है। वह लम्बाई में सौ अड़्गुल, मुख की लम्बाई के समान ही मध्य भाग वाला तथा तौल में एक हजार के समान होता है। वह विन्ध्याचल तथा सह्यचल पर्वत का राजा होकर ७० वर्ष तक राज्य कर ७० वर्ष की आयु में

शस्त्र या अग्नि के द्वारा देवलोक में जाता है।

भद्रलक्षण

शार्दूलप्रतिभः पीनवक्षा गजगतिः पुमान्।
पीनाजानुभुजः प्राज्ञश्चतुरस्रश्च योगवित्॥
सात्त्विकः शोभनांघ्रिश्च शोभनश्मश्रुसंयुतः।
कामी शंख गदाचक्र-शर-कुंजरचिह्नकैः ॥
ध्वजलांगल चिह्नश्च चिह्नितांघ्रिकराम्बुजः।
सुनासश्शास्त्रविद् धीरः कृष्णाकुंजितकेशभृत्॥
स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनप्रीणनक्षमः।
ऐश्वर्यं भुज्यते चास्य नित्यं मित्रजनैः परैः॥
तुलया तुलितो भारप्रमितः स्त्रीसुतान्वितः।
सक्षेमो भूपतिः पाति मध्यदेशं शतं समाः॥

अर्थात् सिंह के तुल्य प्रतापी, ऊँचे वक्षः स्थल वाला, हाथी के समान गति वाला, जानुपर्यन्त लम्बी भुजा वाला, पण्डित, चौकोर, योग को जानने वाला, सत्त्व गुणी, सुन्दर चरण और सुन्दर दाढ़ी-मूछ वाला, कामी, शंख-गदा-चक्र-शेर-हाथी-ध्वजा-हल-इन चिन्हों से अंकित हैं चरण और भुज जिनके, सुन्दर नासिका वाला, शास्त्र को जानने वाला, गम्भीर, काले और घुँघराले बालों से सुशोभित, समस्त कार्यों में स्वतन्त्र एवं अपने जनों का भरण-पोषण करने में सक्षम भद्र पुरुष होता है। अपने मित्र जन तथा अन्य जन भी इसके धन का उपभोग करते हैं।

इनका तौल एक भार के तुल्य होता है। यह स्त्री-पुत्र से युक्त, सामर्थ्यवान एवं मध्य देश का पालक होकर एक सौर साल तक जीवित रहता है।

हंस लक्षण –

हंसो हंसस्वरो गौरः सुमुखोन्नतनासिकः।
श्लेष्मलो मधुपिंगाक्षो रक्तवर्णनखः सुधीः॥
पीनगण्डस्थलो वृत्तशिराः सुचरणो नृपः।
मत्स्यांकुश धनुः शंख कंज खट्वांग चिह्नकैः॥
चिहिन्तांघ्रिकरः स्त्रीषु कामार्तो नैति तुष्टताम्।
षण्णवत्यंगुलो दैर्घ्ये जलक्रीडारतः सुखी॥
गंगायमुनयोर्मध्यदेशं पाति शतं समाः।

वनान्ते निधनं याति भुक्त्वा सर्वसुखं भुवि।।

हंस के तुल्य स्वर वाला, सुन्दर मुख और उच्च नाक वाला, कफ प्रकृतिक, मधु के समान पीला नेत्र, लाल नाखून, सुन्दर बुद्धि वाला, मजबूत गण्डस्थल वाला, वृत्ताकार (गोल) शिर वाला एवं सुन्दर चरण वाला राजा होता है। उसके चरण और बाहू मछली, अंकुश, धनुष, शंख, कमल, खटिया के समान रेखाओं से अंकित होते हैं। वह कामी होता है और सम्भोग से तृप्त नहीं होता। वह लम्बाई में ९६ अंगुल का होता है। जलविहार में रत होकर सुखपूर्वक गड्डा तथा यमुना के मध्चय देश का रक्षक होकर समस्त भूमि का सुख भोगकर सौ वर्ष के अनन्तर वन में हंसपुरुष का निधन होता है।

मालव्य पुरुष का लक्षण –

समौष्ठः कृशमध्यश्च चन्द्रकान्तिरूचिः पुमान्।
सुगन्धो नातिरक्तांगो न ह्रस्वो नातिदीर्घकः।।
समस्वच्छरदो हस्तिनाद आजानुबाहुधृक्।
मुखं विश्वांगुलं दैर्घ्ये विस्तारे च दशांगुलम्।।
मालव्यो मालवाख्यं च देशं पाति स सिन्धुकम्।
सुखं सप्ततिवर्षान्तं भुक्त्वा याति सुरालयम्।।

इस श्लोक का अर्थ है कि - सुन्दर ओष्ठ, मध्य भाग पतला, चन्द्रमासदृश सुन्दर कान्ति वाला, शरीर में सुगन्ध वाला, सामान्य रक्त वर्ण वाला, न छोटा और न अधिक लम्बा, बल्कि मध्यम कद वाला, सुन्दर और स्वच्छ दाँत वाला, हाथी के समान शब्द वाला, घुटनों तक लम्बी भुजा वाला एवं १३ अंगुल लम्बाई और चौड़ाई में १० अंगुल मुख वाला मालव्य पुरुष होता है। वह सिन्धु तथा मालव्य देश का सुखपूर्वक पालन करके ७० वर्ष की अवस्था में देवलोक चला जाता है।

शश पुरुष का लक्षण –

तनुद्विजमुखः शूरो नतिह्रस्वः कृशोदरः।
मध्ये क्षामः सुजंघश्च मतिमान पररन्ध्रवित्।।
शक्तो वनाद्रिदुर्गेषु सेनानीर्दन्तुरः शशः।
चंचलो धातुवादी च स्त्रीशक्तोऽधनान्वितः।।
मालावीणामृदंगाऽस्त्र- रेखांकितकरांघ्रिकः।
भूपोऽयं वसुधा पाति जीवन् खाद्रिसमाः सुखी।।

अर्थात् शरीर, दाँत और मुख से सामान्य आकार वाला, शूर, कमर पतला, बीच में रेशमी, सुन्दर

जंघा, बुद्धिमान्, शत्रुओं का छिद्र जानने वाला, वन तथा पर्वत और दुर्ग में रहने वाला, सेना का स्वामी, सामान्यतया ऊँचे दाँत वाला, चंचल, धातुवादी, स्त्री में अनुरक्त एवं दूसरे के धन से युक्त लक्षण वाला शश पुरुष होता है। इसके हाथ और पैर में माला, वीणा, मृदड़ तथा शस्त्र के समान रेखा के चिन्ह होते हैं। यह पृथ्वी के अधिकतर भागों पर ७० वर्ष तक शासन करने के उपरान्त देवलोक में चला जाता है।

बोध प्रश्न –

1. पंचमहाभूत कौन-कौन से है?

क. पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु ख. क्षिति, धूम्र, पावक, आकाश, वायु

ग. पृथ्वी, ग्रह, पावक, आकाश, वायु घ. क्षिति, जल, मेघ, आकाश, वायु

2. मानव शरीर का निर्माण कितने तत्वों से मिलकर हुआ है।

क. ६ ख. ७ ग.८ घ.५

3. जन्मकाल के दौरान जातक का मंगल प्रबल हो तो किस तत्व की अधिकता होगी।

क. वायु ख. आकाश ग. अग्नि घ. जल

4. निम्न में रुचक योग किस ग्रह से बनता है।

क. बुध ख. मंगल ग. शुक्र घ. शनि से

5. मालव्य पुरुष के ओष्ठ कैसा होगा।

क. सुन्दर ख. काला ग. कुरुप घ. कोई नहीं

6. भद्र पुरुष का लक्षण कैसा होगा।

क. चोर ख. राजा ग. सिंह के समान प्रतापी घ. शूरवीर

7. शश नामक योग किस ग्रह से बनता है।

क. बुध ख. मंगल ग. शुक्र घ. शनि से

1.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों की वर्तमान दशा के ज्ञानार्थ ऋषियों द्वारा पंचमहाभूत सम्बन्धी छाया ज्ञान का वर्णन किया गया है। हम सभी जानते है कि मानव शरीर तथा ब्रह्माण्ड का निर्माण भी इन्हीं पंचमहाभूतों (अग्नि, भूमि, वायु, आकाश एवं जल) से मिलकर हुआ है। अत: इन सभी का ज्ञान परमावश्यक है। समस्त वेद एवं वेदांगो या शास्त्रों

में इनका उल्लेख हमें प्राप्त होता है। आइए हम सभी महर्षि पराशर द्वारा प्रणीत ज्योतिष शास्त्र में कथित पंचमहाभूत सम्बन्धी छाया का अध्ययन इस इकाई में यहाँ करते है। 'वृहत्पराशहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ में आचार्य पराशर जी ने 'पंचमहाभूतफलाध्याय' नामक एक स्वतन्त्र अध्याय का ही लेखन किया है। अग्नि, भूमि, आकाश, जल और वायु के अधिपति क्रम से मंगलादि (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) ग्रह होते हैं। जो ग्रह बली हो, उस ग्रह से सम्बन्धित महाभूत का फल जानना चाहिए।

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

शकुन – शकुन का शाब्दिक अर्थ है –पक्षी। दूसरा अर्थ निमित्त भी होता है।

पल्ली – छिपकली

अश्व – घोड़ा

गज – हाथी

गौ – गाय

पंचांग – तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण के समूह को पंचांग कहते है।

ज्योतिर्विद – ज्योतिष शास्त्र को जानने वाला

निमित्त – कारण

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. घ
3. ग
4. ख
5. क
6. ग
7. घ

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहत्पराशर होरा शास्त्र –

जातक पारिजात –

1.9 सहायक पाठ्यसामग्री

वृहत्पराशर होरा शास्त्र

जातक पारिजात

वृहत्संहिता

ज्योतिष रहस्य

सूर्य सिद्धान्त

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पंचमहाभूत से आप क्या समझते है। स्पष्ट कीजिये।
2. पंचमहापुरुष के लक्षण लिखिये।
3. पंचमहाभूत का फल लिखिये।
4. रुचक आदि योगों का वर्णन कीजिये।

इकाई - 2 सत्वादि गुणफल

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 सत्वादि गुणफल परिचय
2.4 सत्वादि गुणों का फल
2.5 सारांश
2.6 पारिभाषिक शब्दावली
2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.9 सहायक पाठ्यसामग्री
2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -202 के चतुर्थ खण्ड की दूसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – सत्वादि गुणफल। इससे पूर्व आपने फलित ज्योतिष से जुड़े पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरुष लक्षण से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'सत्वादिगुण फल' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

'सत्वादि गुण' से तात्पर्य है – सत्व, रज एवं तम गुण। सर्वविदित है कि प्रत्येक मनुष्य में तीन तरह के गुण (सत्व, रज, और तम) पाये जाते हैं। इन्हीं गुणों के अनुसार व्यक्तियों के व्यवहार एवं चरित्र भी होते हैं। अत: इनका ज्ञान भी परमावश्यक है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'सत्वादि गुण फल' के बारे में तथा उसके शुभाशुभ लक्षणों के बारे में जानने का प्रयास करते है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- सत्वादि गुण को परिभाषित कर सकेंगे।
- सत्वादि गुणों के अवयवों को समझा सकेंगे।
- सत्वादि गुणों के कारणों को समझ लेंगे।
- सत्वादि गुणों के लक्षणों को जान जायेंगे।
- सत्वादि गुणों के महत्व को प्रतिपादित कर सकेंगे।

2.3 सत्वादि गुण फल परिचय

भारतीय वैदिक वांग्मय में प्रत्येक मानव के अन्दर गुणत्रय होने की बात कही गयी है। ये तीन गुण हैं – सत्व, रज एवं तम। इन्हीं गुणों के व्यक्ति के भीतर अधिक- कम मात्रा में होनें से तदनुसार उसकी प्रवृत्ति हो जाती है। अर्थात् यदि किसी में सत्व की अधिकता होगी, तो वह व्यक्ति भी सत्य बोलने वाला होगा और सदाचारी होगा। यदि किसी में रजोगुण की अधिकता होगी तो राजसी प्रवृत्ति का होगा। इसी प्रकार यदि किसी में तम गुण की आधिक्ता होगी तो वह आलसी, प्रमादी एवं अहंकारी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति होगा।

गुण के अनुसार व्यक्ति की प्रकृति बदल जाती है, ऐसा आचार्यों के द्वारा कहा गया है। अब

वृहत्पराशर होरा शास्त्र में आचार्य पराशर द्वारा प्रणीत सत्वादि गुण फल का विचार यहाँ आप सभी के लिए किया जा रहा है।

2.4 सत्वादि गुण फल विचार

सर्वप्रथम आचार्य गुणत्रय की फलों की बात करते हुए कहते है कि -

मूल श्लोक: -

अथो गुणवशेनाहं कथयामि फलं द्विज।
सत्वग्रहोदये जातो भवेत् सत्वाधिक: सुधी:।।
रज: खेटोदये विज्ञो रजोगुणसमन्वित:।
तम: खेटोदये मूर्खो भवेज्जातस्तमोऽधिक:।।
गुणसाम्ययुतो जातो गुणसाम्यखगोदये।
एवं चतुर्विधा विप्र जायन्ते जन्तवो भुवि।।
उत्तमो मध्यमो नीच उदासीन इति क्रमात्।
तेषां गुणानहं वक्ष्ये नारदादि प्रभाषितान्।।

अर्थात् जब अधिक सत्व गुण ग्रहों की प्रबलता रहती है तो उस समय उत्पन्न जातक सत्वगुणी और सुन्दर बुद्धिवाला होता है। रजोगुणाधिक समय में उत्पन्न जातक रजोगुण से युक्त एवं विद्वान होता है। तमोगुणाधिक समय में उत्पन्न जातक तमोगुणी एवं विवेकशून्य होता है। गुण-साम्य समय में उत्पन्न जातक मिश्रित गुण वाला और मध्यम बुद्धि का होता है। इस प्रकार उत्तम, मध्यम, अधम, उदासीन से चार प्रकार के जन्तु संसार में उत्पन्न होते हैं। अब यहाँ उनके गुणों को कहा गया है, जिसको नारदादि महर्षियों ने कहा है।

उत्तम पुरुषों के लक्षण-

शमो दमस्तप: शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
अलोभ: सत्यवादित्वं जने सत्वधिके गुणा:।।

इन्द्रिय तथा मन को नियन्त्रण करना, तपस्या, पवित्रता, क्षमा, सरलता, लोभरहित, सत्यवादी और सात्विक गुणों से युक्त उत्तम पुरुष होता है, यह सरस तथा कोमल भी होता है।

मध्यम पुरुषों के गुण-

शौर्यं तेज धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाऽप्यपलायनम्।

साधूनां रक्षणं चेति गुणा ज्ञेयां रजोऽधिके।।

शूरता, तेजस्वी, धैर्य, चतुरता, युद्ध में पीछे न हटना, साधुओं की रक्षा करना रजोगुणाधिक पुरुषों के गुण हैं।

अधम पुरुषों के लक्षण-

लोभश्चासत्यवादित्वं जाडयमालस्यमेव च।
सेवाकर्मपटुत्वंच गुणा एते तमोऽधिके।।

लोभी, असत्य बोलने वाला, मूर्ख, आलसी तथा सेवाकार्य में चतुरता – ये तमोगुणी पुरुषों के गुण हैं।

उदासीन पुरुषों के गुण-

कृषिकर्मणि वाणिज्ये पटुत्वं पशुपालने।
सत्यासत्यप्रभाषित्वं गुणसाम्ये गुणा इमे।।

कृषि कर्म, व्यापार और पशुपालन में पटुता, असत्य तथा सत्य बोलना- ये गुण साम्य सत्व, रज, तममिश्रित उदासीन पुरूषों के लक्षण हैं।

एतैश्च लक्षणैर्लक्ष्य उत्तमो मध्यमोऽधम:।
उदासीनश्च विप्रेन्द्र तं तत्कर्मणि योजयेत्।।

हे विप्र पूर्वोक्त लक्षणों का अवलोकन करके ही पुरुषों के उत्तम, मध्यम, नीच और उदासीन भेद को जानना चाहिए। तदुनसार जो जिस कार्य का सम्पादन करने में सक्षम हो, उसे उसी कार्य में लगाना चाहिए।

द्वाभ्यामेकोऽधिको यश्च तस्याधिक्यं निगद्यते।
अन्यथा गुणसाम्यं च विज्ञेयं द्विजसत्तम्।।

पूर्वोक्त सत्व, रज, तम- इन तीनों गुणों में जो एक गुण, शेष दो गुणों से प्रबल हो उसकी अधिकता मानी जाती है। इसके विपरीत अर्थात् किसी भी एक का बल शेष दो से अधिक न होने पर पर गुणसाम्य माना जाता है।

गुणज्ञान का महत्व –

सेव्य सेवकयोरेवं कन्यका वरयोरपि।
गुणै: सदृशयोरेव प्रीतिर्भवति निश्चला।।

स्वामी तथा सेवक में तथा वर एवं कन्या में यदि तुल्य गुण हो तो दोनों में सुदीर्घकालिक प्रेम होता है।

उदासीनोऽधमस्यैवमुदासीनस्य मध्यम:।

मध्यमस्योत्तमो विप्र प्रभवत्याश्रयो मुदे।।

पूवोक्त ४ प्रकार के मनुष्यों में अधम का स्वामी उदासीन, उदासीन का स्वामी मध्यम एवं मध्यम का स्वामी उत्तम जन हो तभी परस्पर प्रेम और आनन्दजनक सुख होता है।

अतोऽवरा वरात् कन्या सेव्यत: सेवकोऽवर:।
गुणैस्तत: सुखोत्पत्तिरन्यथा हानिरेव हि।।

वर से कन्या एवं स्वामी से सेवक गुण में कम हो तो आपस में प्रेम और सुख होता है। इससे अन्यथा कन्या से वर एवं सेवक से स्वामी यदि हीन वर्ण का हो तो वहाँ सदैव हानि ही होती है।

वीर्यं क्षेत्रं प्रसूतेश्च समय: संगतिस्तथा।
उत्तमादिगुणे हेतुर्बलवानुत्तरोत्तरम्।।

माता, पिता, जन्मसमय, संसर्गजन्य गुण- ये सभी उत्तमादि गुणों के कारण होत है। इनमें उत्तरोत्तर हेतु बलवान होता है।

अत: प्रसूतिकालस्य सदृशे जातके गुण:।
जायते तं परीक्ष्यैव फलं वाच्यं विचक्षणै:।।

इसलिए जन्मकाल में जिस गुण का प्राबल्य रहता है वही गुण जातक में भी प्राप्त होता है। अत: जन्मकाल की सम्यक् प्रकार से परीक्षा करके ही फलादेश करना चाहिए।

काल: सृजति भूतानि पात्यथो संहरत्यपि।
ईश्वर: सर्वलोकानामव्ययो भगवान विभु:।।

समस्त लोकों के स्वामी अविनाशी एवं व्यापक भगवान काल ही समस्त चराचर जगत् के उत्पादक, पालक और संहारक भी हैं।

तच्छक्ति: प्रकृति: प्रोक्ता मुनिभिस्त्रिगुणात्मिका।
तथा विभक्तो ऽव्यक्तोऽपि व्यक्तो भवति देहिनाम्।।

उस काल भगवान की त्रिगुणात्मिका शक्ति ही प्रकृति कही जाती है, जिससे विभाजित भगवान अव्यक्त काल भी व्यक्त होते हैं।

चतुर्धाऽवयवास्तस्य स्वगुणैश्च चतुर्विध:।
जायन्ते ह्युत्तमो मध्य उदासीनोऽधम: क्रमात्।।

उस व्यक्त स्वरूप वाले भगवान काल के अपने प्रकृति गुण के अनुसार क्रम से उत्तम, मध्यम, उदासीन तथा अधम- ये ४ प्रकार के अवयव होते हैं।

उत्तमे तूत्तमो जन्तुर्मध्यमेंग च मध्यम:।

उदासीने ह्युदासीनो जायते चाऽधमेऽधम:।।

उस व्यापक भगवान काल के उत्तम अंग में उत्तम जीव (चर या अचर), मध्यम अंग में मध्यम जन्तु, उदासीन अंग में उदासीन जन्तु और अधम अंग में अधम प्राणी की उत्पत्ति होती है।

उत्तमांग शिरस्तस्य मध्यमांगमुर:स्थलम्।
जंघाद्वयमुदासीनमधमं पदमुच्यते।।

व्यापक काल भगवान का उत्तम अंग मस्तक, मध्यम अंग दोनों हाथ तथा छाती, उदासीन अंग दोनों जंघा तथा अधम अंग दोनों पैर कहा गया है।

एवं गुणवशादेव कालभेद: प्रजायते।
जातिभेदस्तु तद्भेदाज्जायतेऽत्र चराऽचरे।।

इस प्रकार गुण के भेद से ही कालभेद हो जाता है और कालभेद के अनुरूप ही चर तथा अचर में जातिभेद हो जाता है।

एवं भगवता सृष्टं विभुना स्वगुणै: समम्।
चतुर्विधेन कालेन जगदेतच्चतुर्विधम्।।

इस प्रकार चतुर्विध परमेश्वर काल ने अपने गुणों के अनुरूप ही संसार को चार भेदों से समन्वित बताया है।

बोध प्रश्न -

1. गुणत्रय से तात्पर्य है।
   क. सत्व, रज एवं तम ख. रज, नभ, तम ग. सत्व, वायु, अग्नि घ. कोई नहीं।
2. तमोगुणी होन से व्यक्ति होता है।
   क. अभिमानी ख. सात्विक ग. परोपकारी घ. राजा
3. काल के कितने अवयव होते हैं।
   क. २ ख.४ ग.६ घ. ३
4. लोभी निम्न में किसका गुण है।
   क. रज ख. तम ग. सत्व घ. कोई नहीं
5. मन को नियन्त्रण में रखना किस पुरुष का गुण है।
   क. उत्तम ख. मध्यम ग. अधम घ. राजा

2.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि भारतीय वैदिक वांग्मय में प्रत्येक मानव के अन्दर गुणत्रय होने की बात कही गयी है। ये तीन गुण हैं – सत्व, रज एवं तम। इन्हीं गुणों के व्यक्ति के भीतर अधिक- कम मात्रा में होनें से तदनुसार उसकी प्रवृत्ति हो जाती है। अर्थात् यदि किसी में सत्व की अधिकता होगी, तो वह व्यक्ति भी सत्य बोलने वाला होगा और सदाचारी होगा। यदि किसी में रजोगुण की अधिकता होगी तो राजसी प्रवृत्ति का होगा। इसी प्रकार यदि किसी में तम गुण की आधिक्ता होगी तो वह आलसी, प्रमादी एवं अहंकारी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति होगा।

गुण के अनुसार व्यक्ति की प्रकृति बदल जाती है, ऐसा आचार्यों के द्वारा कहा गया है। अब वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ में प्रणीत सत्वादि गुणों का फल इस इकाई में वर्णित है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

सत्वादि गुण – सत्व, रज, तम गुणों को सत्वादि गुण कहा जाता है।

गुण त्रय – सत्वादि तीन गुणों को गुणत्रय कहा जाता है।

सात्विक – सत्य बोलने वाला, सदाचारी, धर्मात्मा, साधु।

राजसी – विलासी जीवन जीने वाला।

तामसी – अभिमानी, राक्षस।

पंचमहाभूत – अग्नि, वायु, आकाश, जल, पृथ्वी

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. क
3. ख
4. ख
5. क

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहत्पराशर होरा शास्त्र –

जातक पारिजात –

2.9 सहायक पाठ्यसामग्री

वृहत्पराशर होरा शास्त्र

जातक पारिजात

वृहत्संहिता

ज्योतिष रहस्य

सूर्य सिद्धान्त

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सात्विक गुण से आप क्या समझते है। स्पष्ट कीजिये।
2. सात्विक गुणों के फल लिखिये
3. उत्तम, मध्यम एवं अधम पुरुषों का वर्णन करते हुए उनका फल लिखिये।
4. फलित ज्योतिष में सात्विक गुण फल का महत्व प्रतिपादित कीजिये।

इकाई - 3 मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 मानव शरीर के अंगों का लक्षण परिचय
3.4 नारियों के विभिन्न अंगों का लक्षण
3.5 सारांश
3.6 पारिभाषिक शब्दावली
3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.9 सहायक पाठ्यसामग्री
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -202 के चतुर्थ खण्ड की तीसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – मानव शरीर के विभिन्न अंगों का लक्षण। इससे पूर्व आपने फलित या होरा ज्योतिष से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'शरीर के अंगों का लक्षण' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

ज्योतिष शास्त्र में कथित मानव शरीर के विभिन्न अंगों का लक्षण का ज्ञान विविध फलित ग्रन्थों के आधार पर हम इस इकाई में करने जा रहे हैं।

आइए इस इकाई में हम लोग 'मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण' के बारे में जानने का प्रयास करते है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- शरीर के अंगों के लक्षण को परिभाषित कर सकेंगे।
- स्त्रियों के विभिन्न अंगों के लक्षण को जान जायेंगे।
- पुरुषों के अंगों का लक्षण समझ लेंगे।
- शरीर के अंगों के लक्षण को प्रतिपादित करने में समर्थ हो सकेंगे।
- शरीर अंगों के लक्षण के महत्व को बता सकेंगे।

3.3 मानव शरीर के विभिन्न अंगों का लक्षण परिचय

ज्योतिष शास्त्र में ऋषियों ने निरन्तर अनुसन्धान कर मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण को बतलाया है। शीर्ष से पाद (पैर) तक मानव शरीर के विभिन्न अंगों की आकृतियों एवं उनके रूपों तथा लक्षणों के आधार पर अलग-अलग फल कहे गये हैं। वृहत्पराशरहोराशास्त्र ग्रन्थ में आचार्य पराशर ने स्त्री के शरीर के विभिन्न अंगों को अंगलक्षणाध्याय (८३ वाँ अध्याय) में विस्तृत रूप में प्रतिपादित किया है। उनका कथन है कि स्त्रियों के समान ही पुरुषों के अंगों का भी लक्षण जानना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य के शरीरांगों की बात करें तो सबमें कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य होती है, जैसे कोई मोटा होता है कोई पतला, कोई गोरा कोई काला, किसी की ऑखें बड़ी होती है किसी की छोटी, किसी के बाल लम्बे होते हैं, किसी के छोटे, किसी के घुंघराले तो किसी के सीधे।

किसी का ओष्ठ काला तो किसी का लाल होता है। किसी की कमर मोटी होती है, तो किसी की पतली, किसी के नख खुदरे होते है, तो किसी के चिकने आदि इत्यादि। इन्हीं सभी लक्षणों एवं गुणों के आधार पर शरीर के विभिन्न अंगों का लक्षण का विचार किया जाता है।

हम जानते हैं कि सृष्टि की क्षमता नारी के पास होती है। अत: सृष्टि, समाज व परिवार में स्त्रियों का विशेष योगदान है। अत: स्त्रियों की प्रधानता को देखते हुए ऋषियों ने उनके शरीर के विभिन्न अंगों का जो लक्षण कहा है, उसे यहाँ आप लोगों के ज्ञानार्थ वर्णन किया जा रहा है।

मानव शरीर के विभिन्न अंगों से अभिप्राय - शीर्ष (मस्तक), मुख, आँख, कान, दन्त, केश, हस्त, हृदय, ग्रीवा, उदर, छाती, स्तन, नख, पीठ, पैर, नितम्ब, गुह्यमार्ग, पादतल, अँगुली, जानु, उरु, जंघा आदि से हैं। कुछ विशेष एक-दो अंग को छोड़ दिया जाय तो पुरुष एवं स्त्रियों दोनों में ये सभी अंग होते हैं।

3.4 नारियों के विभिन्न अंगों का लक्षण विचार

सर्वप्रथम मैत्रेय मुनि के कहने पर आचार्य पराशर जी ने स्त्रियों के अंग लक्षणों को बताते हुए कहा कि- **मूल श्लोक:-**

बहुधा भवता प्रोक्तं जन्मकालात् शुभाऽशुभम्।
श्रोतुमिच्छामि नारीणामंगचिह्नैः फलं मुने।।

अर्थात् मैत्रेय ने कहा-हे मुने! अपने जन्मकालिक लग्न के अनुसार बहुत से शुभाशुभ फलों को कहा, अब मैं नारियों के अंग लक्षण के माध्यम से शुभाशुभ फल सुनना चाहता हूँ।

पराशर उवाच –

श्रृणु विप्र प्रवक्ष्यामि नारीणामंगलक्षणम्।
फलं यथाऽऽह पार्वत्यै भगवान् शंकरस्तथा।।

श्लोक का अर्थ है कि पराशर ने कहा-हे विप्र! पूर्व समय में जिस प्रकार भगवान् शंकर ने पार्वती को नारियों के अंग लक्षण द्वारा शुभाशुभ फल बतलाया था, उसी प्रकार मैं भी आपको नारियों के अंगलक्षण द्वारा शुभाशुभ फल बतलाता हूँ।

पादतल लक्षण-

स्निग्धं पादतलं स्त्रीणां मृदुलं मांसलं समम्।
रक्तमस्वेदमुष्णं च बहुभोग- प्रदायकम्।।
विवर्णं परुषं रूक्षं खण्डितं विषमं तथा।

सूर्याकारंच शुष्कं च दुःखदौर्भाग्यदायकम्।।

जन्मकाल में जिस स्त्री के पैर के तलुए (निचला भाग) चिकने, कोमल, पुष्ट, सम (न अधिक बड़ा, न छोटा), रक्त, पसीने से हीन और गरम हों वह स्त्री अधिक भोग करने वाली होती है। जिसके तलुए खराब वर्ण के, कठोर, रूखे, कटे-फटे, विषम, टेढ़े-मेढ़े, सूर्प के सदृश और शुष्क हों तो वह स्त्री दुःख तथा दुर्भाग्य का भोग करने वाली होती है।

पादतलरेखा –

शंख-स्वस्तिक-चक्राऽब्ज ध्वज-मीनाऽऽतपत्रवत्।
यस्या: पादतले चिह्नं सा ज्ञेया क्षितिपांगना।।
भवेत् समस्तभोगाय तथा दीर्घोर्ध्वरेखिका।
रेखा: सर्पाऽऽखु- काकाभा दुःखदारिद्रयसूचिका:।।

जिस स्त्री के पादतल में शंख, स्वस्तिक, चक्राकार, कमल, ध्वज, मछली एवं छाता के चिन्ह अंकित हों एवं ऊर्ध्व रेखा लम्बी हो तो वह स्त्री बहुत सुख भोगने वाली रानी होती है। जिस स्त्री के पादतल में सर्प, मूषक या कौवे के समान चिन्ह हो वह स्त्री दुःख भोगने वाली दरिद्रा होती है।

पादनखलक्षण-

रक्ता: समुन्नता: स्निग्धा वृत्ता: पादनखा: शुभा:।
स्फुटिता: कृष्णवर्णाश्च ज्ञेया अशुभसूचका:।।

जिस स्त्री के पैर के नाखून लाल वर्ण के, ऊँचे, गोलाकार एवं चिकने हों तो वे शुभदायक होते हैं। जिसके पैर के नाखून फटे हुए और काले हों, वे अशुभता को सूचित करते हैं।।७।।

अंगुष्ठलक्षण –

उन्नतो मांसलोऽङ्गुष्ठो वर्तुलोऽतुलभोगद:।
वक्रो ह्रस्वश्च चिपिटो दुःखदारिद्रयसूचक।।

जिस स्त्री के पैर का अँगूठा ऊँचा, पुष्ट और गोलाकार हो, वह अतुल भोग को भोगने वाली होती है, साथ ही यदि अंगूठा टेढ़ा, छोटा एवं चिपटा हुआ हो तो वह दुःख एवं दरिद्रता का सूचक होता है।

पाद के अंगुलियों का लक्षण –

मृदवोऽङ्गुलय: शस्ता घना वृत्ताश्च मांसला:।
दीर्घाङ्गुलीभि: कुलटा कृशाभिर्धनवर्जिता।।

पैर की अंगुलियाँ कोमल, घनी, वृत्ताकार और पुष्ट हों, तो शुभकारक; लम्बी हों तो कुलटा एवं पतली अंगुली होने पर स्त्री धन से हीन होती है।

भवेद्ध्रस्वाभिरल्पायुर्विषमाभिश्च कुट्टनी
चिपटाभिर्भवेद्दासी विरलाभिश्च निर्धना।
यस्या मिथ: समारुढा: पादांगुल्यो भवन्ति हि।
बहूनपि पतीन् हत्वा परप्रेष्या च सा भवेत्।।

जिस स्त्री के चरण की अंगुलियाँ छोटी हों वह अल्पायु होती है। विषम (छोटी-बड़ी, टेढ़ी-मेढ़ी) हो तो कु...नी, चिपटी हो तो दासी, छिद्र वाली हो तो निर्धनी एवं जिसकी अंगुलियाँ ऊपर उठी हों वह बहुत पतियों का हनन कर अन्त में दूसरे की सेविका होकर जीवन-यापन करने वाली होती है।

यस्या: पथि चलन्त्याश्च रजो भूमे: समुच्छलेत्।
सा पांसुला भवेन्नारी कुलत्रयविघातिनी।।
यस्या: कनिष्ठिका भूमिं गच्छन्त्या न परिस्पृशेत्।
सा हि पूर्वपतिं हत्वा द्वितीयं कुरुते पतिम्।।

जिस स्त्री के मार्ग में चलने पर धूल उड़े वह स्त्री तीनों कुल में लांछन लगाने वाली कुलटा होती है। जिस स्त्री के चलने पर कनिष्ठिका अंगुली से भूमि का स्पर्श न हो, वह स्त्री पूर्व पति का हनन कर दूसरा पति बना लेती है।

मध्यमाऽनासिका चापि यस्या भूमिं न संस्पृशेत्।
पतिहीना च सा नारी विज्ञेया द्विजसत्तम।।
प्रदेशिनी भवेद्यस्या अंगुष्ठाद् व्यतिरेकिणी।
कन्यैव दूषिता सा स्यात् कुलटा च तदग्रत:।।

जिस स्त्री के चलने पर मध्यमा तथा अनामिका अंगुलियों से भूमि का स्पर्श न हो, वह नारी पतिहीन (विधवा) होती है। जिस स्त्री के अंगूठे के अतिरिक्त उसके ऊपर भी अंगुली हो, वह कन्यावस्था में ही पुरुष के स... से दूषित कुलटा भी होती है।

पादपृष्ठ लक्षणम् –

उन्नतं पादपृष्ठं चेत् तदा राज्ञी भवेद् ध्रुवम्।

अस्वेदमशिराढयंच मांसलं मसृणं मृदु।

अन्यथा धनहीना च शिरालं चेत्तदाऽध्वगा।

रोमाढयं चेद् भवेद्दासी निर्मासं यदि दुर्भगा।।

जिस स्त्री का पादपृष्ठभाग उन्नत हो एवं पसीने से रहित, शिरारहित, पुष्ट, चिकना और कोमल हो वह रानी होती है। इसके विपरीत होने पर धन से हीन दरिद्रा होती है। पाद का पृष्ठभाग शिरादृष्ट हो तो मार्ग में भ्रमण करने वाली, रोमसहित हो तो दासी और माँसरहित हो तो दुर्भगा होती है।

पैर के पिछले भाग का लक्षण –

सुभगा समपार्ष्णि: स्त्री पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा।

कुलटोन्नत पार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिश्च दु:खिता।।

जिस स्त्री के पैर का पिछला भाग (एड़ी) बराबर हो वह सुभगा, स्थूल हो तो दुर्भगा, ऊँचा रहने पर कुलटा एवं लम्बा हो तो दुःखभोगिनी होती है।

जंघा लक्षण –

अरोमे च समे स्निग्धे यस्य जंघे सुवर्तुले।

विसिरे च सुरम्ये सा राजपत्नी भवेद् ध्रुवम्।।

जिस स्त्री का जंघा (पैर के ऊपर एवं घुटने के नीचे का भाग) रोमरहित, समान, चिकना, गोलाकार, शिराहीन एवं देखने में सुन्दर हो, वह स्त्री राजपत्नी होती है।

जानु लक्षण –

वर्तुलं मांसलं स्निग्धं जानुयुग्मं शुभप्रदम्।

निर्मासं स्वैरचारिण्या निर्धनायाश्च विश्लथम्।।

जिस स्त्री का जानु (घुटना) गोलाकार, पुष्ट तथा चिकना हो तो वह उसके लिए शुभप्रद होता है। मांसहीन हो तो वह स्त्री स्वच्छन्द घूमने वाली एवं शिथिल हो तो धनहीन दरिद्रा होती है।।२०।।

ऊरु लक्षण –

घनौ करिकराकारौ वर्तुलो मृदुलौ शुभौ।

यस्या ऊरु शिराहीनौ सा राज्ञी भवति ध्रुवम्।।

चिपिटौ रोमशौ यस्या विधवा दुर्भगा च सा।।

जिस स्त्री का उरु (जाँघ) हाथी के सूँड के समान गोलाकार हो, घने (मिले हुए), कोमल एवं शिरा से

रहित हो, वह स्त्री रानी होती है। जिस स्त्री का जाँघ चिपटा और रोमयुक्त हो वह स्त्री विधवा और दुर्भगा होती है।

कटि लक्षण –

चतुर्भिर्विंशतियुतैरंगुलैश्च समा कटिः।
समुन्नत नितम्बाढया प्रशस्ता स्यात् मृगीदशाम्।।

जिस स्त्री की कटि (कमर) २४ अंगुल हो, नितम्ब उन्नत हो तो ऐसी मृगनयनी स्त्री सौभाग्यवती होती है।

विनता चिपिटा दीर्घा निर्मांसा संकटा कटिः।
ह्रस्वाः रोमैः समायुक्ता दुःखवैधव्यसूचिका।।

जिस कन्या की कटि टेढ़ी, चिपटी, लम्बी, मांसरहित, संकुचित, छोटी एवं रोमयुक्त हो, वह स्त्री दुःख तथा वैधव्य को प्राप्त करने वाली होती है।

नितम्बलक्षण –

नितम्बः शुभदः स्त्रीणामुन्नतो मांसलः पृथुः।
सुखसौभाग्यदः प्रोक्तो ज्ञेयो दुःखप्रदोऽन्यथा।।

स्त्री का उन्नत, पुष्ट एवं स्थूल नितम्ब सुख-सौभाग्यदायक होता है, इससे विपरीत होने पर दुःखप्रद होता है।

भग लक्षण –

स्त्रीणां गूढमणिस्तुंगो रक्ताभो मुदुरोमकः।
भगः कमठपृष्ठाभः शुभोऽश्वत्थदलाकृतिः।।

स्त्री का भग यदि छिपा हुआ, मणितुल्य, उच्च लाल वर्ण का, मुलायम रोम से युक्त, कछुए के पीठ के सदृश उन्नत एवं पीपल के पत्ते के तुल्य हो तो उसे शुभप्रद माना गया है।

कुरंगखुररूपो यश्चुल्लिकोदरसन्निभः।
रोमशो दृश्याशश्च विवृतास्योऽशुभप्रदः।।

मृग के खुर के समान, चूहे के उदर (पेट) के तुल्य, कठोर रोमयुक्त, ऊँची मणि वाला एवं खुला मुख वाला भग अशुभप्रद कहा गया है।

वामोन्नतस्तु कन्याजः पुत्रजो दक्षिणोन्नतः।
शंखावर्तो भगो यस्याः सा विगर्भाऽङ्गना मता।।

जिस स्त्री का भग बाँयीं ओर ऊँचा हो तो वह भग कन्या सन्तानकारक एवं दक्षिण तरफ उन्नत हो तो वह पुत्र सन्तानकारक होता है। शंख के तुल्य वलय वाला भग हो तो उस भग द्वारा गर्भ धारण नहीं होता।

वस्ति लक्षण –

मृद्वी वस्तिः प्रशस्ता स्याद् विपुलाल्पसमुन्नता।
रोमाढया च शिराला च रेखांका न शुभप्रदा।।

जिसकी वस्ति (नाभि से नीचे एवं योनि से ऊपर का भाग) मुलायम, बड़ा एवं थोड़ा ऊँचा हो तो उसे शुभकारक जानना चाहिए। रोग से युक्त, शिरासहित एवं रेखायुक्त वस्ति को अशुभप्रद जानना चाहिए।

नाभिलक्षण –

गम्भीरा दक्षिणावर्ता नाभिः सर्वसुखप्रदा।
व्यक्तग्रन्थिः समुत्ताना वामावर्ता न शोभना।।

जिस स्त्री की नाभि दबी हुई एवं दक्षिण तरफ घुमी हुई हो तो वह समस्त सुख प्रदान करने वाली होती है तथा कुछ ऊपर की ओर उठी हुई, वाम तरफ घुमी हुई और उठी हुई ग्रन्थि वाली हो तो वह अशुभकारक होती है।

कुक्षि लक्षण-

पृथुकुक्षिः शुभा नारी सूते सा च बहून सुतान्।
भूपतिं जनयेत् पुत्रं मण्डूकाभेन कुक्षिणा।।

जिस स्त्री की कुक्षि (पेट) विस्तारयुक्त हो तो वह शुभ होती है और अधिक पुत्रों को उत्पन्न करने में सक्षम होती है तथा जिसका पेट मेढ़क के समान हो, उसका पुत्र राजा होता है।

उन्नतेन वलीभाजा सावर्तेन च कुक्षिणा।
वन्ध्या संन्यासिनी दासी जायते क्रमशोऽबला।।

उन्नत कुक्षि वाली स्त्री वन्ध्या होती है, वलीयुत उदर वाली संन्यासिनी होती है एवं भँवरयुक्त कुक्षि वाली स्त्री दासी होती है।

पार्श्वलक्षण-

समे समांशे मृदुले पार्श्वे स्त्रीणां शुभप्रदे।
उन्नते रोमसंयुक्ते शिराले चाऽशुभप्रदे।।

स्त्री का पार्श्व भाग समान, पुष्ट एवं कोमल हो तो शुभप्रद होता है। यदि पार्श्व भाग उन्नत रोमयुक्त एवं शिरा से व्याप्त हो तो अशुभ होता है।

हृदय लक्षण –

निर्लोमं हृदयं स्त्रीणां समं सर्वसुखप्रदम्।
विस्तीर्णा च सलोमं च विज्ञेयमशुभप्रदम्।।

जिस स्त्री का हृदय रोमरहित और समान हो तो वह समस्त सुखों को देने वाला होता है, साथ ही हृदय यदि रोमयुत और विस्तृत हो तो उसे अशुभप्रद समझना चाहिए।

कुच लक्षण –

समौ पीनौ घनौ वृत्तौ दृढौ शस्तौ पयोधरौ।
स्थूलाग्रौ विरलौ शुष्कौ स्त्रीणां नैव शुभप्रदौ।।

जिस स्त्री के दोनों स्तन बराबर, पुष्ट, घने, वृत्ताकार और दृढ़ हों तो वे शुभप्रद होते हैं। स्तन के अग्रभाग स्थूल, दोनों भिन्न-भिन्न और माँसरहित शुष्क हों तो उन्हें अशुभकारक जानना चाहिए।

दक्षिणोन्नतवक्षोजा नारी पुत्रवती मता।
वामोन्नतस्तनी कन्याप्रजा प्रोक्ता पुरातनैः।।

जिस स्त्री का दहिना कुच उन्नत हो वह पुत्रवती होती है और वाम स्तन के उन्नत होने पर कन्यावती होती है-ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है।

स्कन्धलक्षण –

स्त्रीणां स्कन्धौ समौ पुष्टौ गूढसन्धी शुभप्रदौ।
रोमाढयावुन्नतौ वक्रौ निर्मासांवशुभौ स्मृतौ।।

जिस स्त्री के कन्धे सम (न ऊँच, न नीच) एवं पुष्ट हों, सन्धि दबे हुए हों तो शुभप्रद होती है। रोम के सहित, उन्नत, वक्र (टेढ़े-मेढ़े) एवं मांसरहित हों तो उन्हें अशुभप्रद कहा गया है।

कक्ष काँख लक्षण –

सुसूक्ष्मरोमे नारीणां पुष्टे स्निग्धे शुभप्रदे।

कक्षे शिराले गम्भीरे न शुभे स्वेदमेदुरे।।

स्त्री की कक्षा (काँख) सुन्दर, सूक्ष्म रोमों से युक्त, पुष्ट एवं मुलायम रहने पर शुभप्रद होती है। शिरायुक्त, गहरी, मांसरहित एवं पसीने से युक्त काँख अशुभप्रद कही गई है।

भुज लक्षण-

गूढास्थी कोमलग्रन्थी विशिरौ च विरोमकौ।
सरलौ वर्तुलौ चैव भुजौ शस्तौ मृगीदृशाम्।।
निर्मांसौ स्थूलरोमाणौ ह्रस्वौ चैव शिराततौ।
वक्रौ भुजौ च नारीणां क्लेशाय परिकीर्तितौ।।

जिस स्त्री की भुजा दबी हुई हड्डियों वाली हो, गाँठ कोमल हो, शिरा तथा रोम से हीन हो एवं सरलाकार गोल हो तो वह भुजा शुभप्रद और मांसहीन स्थूल रोमों से युक्त, छोटी, शिरायुत, टेढ़ी भुजा स्त्री के लिए क्लेश प्रदान करने वाली होती है।

हस्त अंगुष्ठ लक्षण –

सरोजमुकुलाकारौ करांगुष्ठौ मृगीदृशाम्।
सर्वसौख्यप्रदौ प्रोक्तौ कृशौ वक्रौ च दुःखदौ।।

जिस स्त्री के हाथ के अंगूठे कमल के कली के समान हों तो उसे समस्त सुखों को देने वाला कहा गया है। यदि कृश, दुबला-पतला, टेढ़ा अंगुष्ठ हो तो दुःखदायक होता है।

करतल लक्षण –

स्त्रीणां करतलं रक्तं मध्योन्नतमरन्ध्रकम्।
मृदुलं चाल्परेखाढयं ज्ञेयं सर्वसुखप्रदम्।।
विधवा बहुरेखेण रेखाहीनेन निर्धना।
भिक्षुका च शिराढयेन नारी करतलेन हि।।

जिस स्त्री की हथेली रक्त वर्ण, मध्य भाग सामान्य ऊँची, अंगुली मिलाने पर छिद्रहीन, कोमल एवं अल्प रेखा से युत हो तो सब प्रकार से सुखप्रद जानना चाहिए। बहुत रेखा वाली हो तो विधवा, रेखा से हीन हो तो दरिद्रा एवं हथेली में शिरा हो तो वह स्त्री भिक्षुणी (भीख माँगने वाली) होती है।

करपृष्ठ लक्षण –

पाणिपृष्ठं शुभं स्त्रीणां पुष्टं मृदु विरोमकम्।

शिरालं रोमां निम्नं दुःख दारद्रिय सूचकम्।।

स्त्री के हाथ का पृष्ठभाग पुष्ट, मुलायम और रोम से हीन रहने पर शुभ होता है। वही यदि शिरा से युक्त, रोमसहित एवं दबा हुआ हो तो दुःख तथा दरिद्रता की सूचना देता है।

करतल रेखा लक्षण –

यस्या: करतले रेखा व्यक्ता रक्ता च वर्तुला।
स्निग्धा पूर्णा च गम्भीरा सा सर्वसुखभागिनी।।
मत्स्येन सुभगा ज्ञेया स्वस्तिकेन धनान्विता।
राजपत्नी सरोजेन जननी पृथिवीपते:।
सार्वभौमप्रिया पाणौ नद्यावर्ते प्रदक्षिणे।।
शंखातपत्रकमठैर्भूपस्य जननी भवेत्।।

जिस स्त्री के हथेली की रेखा स्पष्ट, लाल वर्ण, गोल, कोमल, पूर्ण एवं दबी हुई हो वह सभी सुखों का भोग करने वाली होती है। यदि हथेली में मत्स्य रेखा हो तो सौभाग्ययुक्त, स्वस्तिक चिन्ह हो तो धनवती एवं कमल के तुल्य रेखा हो तो राजपत्नी तथा राजमाता होती है। नदी के समान रेखा होने पर वह स्त्री चक्रवर्ती राजा की प्राणप्रिया होती है। स्त्री का हाथ यदि शंख, छत्र और कछुए के सदृश चिन्हों से युक्त हो तो वह स्त्री राजमाता होती है।

रेखा तुलाकृतिः पाणौ यस्या: सा हि वणिग्वधू:।
गज वाजि वृषाभा वा करे वामे मृगीदश:।।

जिस स्त्री के वाम हथेली में तराजू अथवा हाथी, घोड़ा या बैल के तुल्य रेखा हो तो वह स्त्री व्यापारी की पत्नी होती है।

रेखा प्रसादवज्राभा सूते तीर्थकरं सुतम्।
कृषीबलस्य पत्नी स्याच्छकटेन युगेन वा।।
चामरांकुश चापैश्च राजपत्नी पतिव्रता।
त्रिशूलाऽसि गदा शक्ति दुन्दुभ्याकृति रेखया।।

जिस स्त्री की हथेली में दरबार (महल) या वज्र के समान रेखा हो, वह स्त्री शास्त्र-निर्माता या संप्रदायसंस्थापक पुत्र को उत्पन्न करने वाली होती है। जिसकी हथेली में बैलगाड़ी, हल या जूआ सदृश चिन्ह हो वह स्त्री कृषक की पत्नी होती है। जिसके हाथ में चँवर, अंकुश, त्रिशूल, तलवार, गदा, शक्ति एवं दुन्दुभि के तुल्य रेखा हो, तो ऐसी स्त्री पतिव्रता राजपत्नी होती है।

जिस स्त्री के अंगुष्ठमूल से निकल कर कनिष्ठा तक रेखा गई हो वह नारी पति का हनन करने वाली होती है। ऐसी स्त्री को दूर से ही त्याग देना चाहिए। जिसके हाथ में कौआ, मेढ़क, श्रृंगार, भेड़, बिच्छू, सर्प, गदहा, उष्ट्र या बिल्ली के सदृश रेखा हो वह स्त्री दुःख भोगने वाली होती है।

अंगुलि लक्षण –

मृदुलाश्च सुपर्वाणो दीर्घा वृत्ताः क्रमात् कृशाः।
अरोमकाः शुभाः स्त्रीणामंगुल्यः परिकीर्तिताः।।
अतिह्रस्वाः कृशा वक्रा विमला रोमसंयुताः।
बहुपर्वयुता वाऽपि पर्वहीनश्च दुःखदा।।

जिस स्त्री के हाथ की अंगुलियाँ कोमल हों, सुन्दर पर्वों से युत हों, दीर्घ, वृत्ताकार, कृश एवं रोमरहित हों तो उन्हें शुभकारक कहा गया है। जिसकी अंगुलियाँ अत्यन्त छोटी हों, कृश, टेढ़ी, छिद्र तथा रोमयुक्त हों, अधिक पर्व अथवा पर्वरहित हों तो उन्हें दुःखदायक जानना चाहिए।

नखलक्षण –

रक्तवर्णा नखास्तुंगा सशिखाश्च शुभप्रदाः।
निम्ना विवर्णा पीता वा पुष्पिता दुःखदायकाः।।

जिस स्त्री का नाखून रक्त वर्ण, उन्नत एवं शिखयुक्त हो तो वह शुभप्रद होता है। गहरा, मलिन, पीला, सफेद बिन्दुओं से युक्त हों तो ऐसे नख दुःखदायक होते हैं।

पृष्ठभागलक्षण –

अन्तर्निमग्नवंशास्थि पृष्ठं स्यान्मांसलं शुभम्।
स शिरं रोमयुक्तं वा वक्रं चाऽशुभदायकम्।।

स्त्री का पृष्ठ भाग दबा हुआ, हड्डी एवं मांसयुक्त तथा पुष्ट हो तो शुभ एवं शिरा तथा रोमयुक्त और टेढ़ा हो तो अशुभदायक होता है।

कण्ठलक्षणम् –

स्त्रीणां कण्ठस्त्रिरेखांकस्त्वव्यक्तास्थिश्च वर्तुलः।
मांसलो मृदुलश्चैव प्रशस्तफलदायकः।।
स्थूलग्रीवा च विधवा वक्रग्रीवा च किंकरी।

वन्ध्या च चिपिटग्रीवा लघुग्रीवा च नि:सृता॥

जिस स्त्री का कण्ठ तीन रेखा से युक्त, हड्डी न दिखने वाली, गोलाकार, मांसयुक्त एवं कोमल हो तो वह शुभ फलदायक; स्थूल कण्ठ विधवाकारक एवं टेढ़ कण्ठ दासी बनाने वाली होती है। चिपटी ग्रीवा वाली स्त्री वन्ध्या एवं छोटी कण्ठ हो तो सन्तान से हीन होती है।

कृकाटिका लक्षण –

श्रेष्ठा कृकाटिका ऋज्वी समांसा च समुन्नता।
शुष्का शिराला रोमाढया विशाला कुटिलाऽशुभा॥

जिस स्त्री की कृकाटिका (काठी अर्थात् कण्ठ का उठा हुआ मध्य भाग) सीधी, मांस से पुष्ट एवं सामान्य उन्नत हो तो वह शुभप्रद होती है एवं यदि शुष्क (मांसरहित), शिरा तथा रोम से युक्त, बड़ी और टेढ़ी हो तो उसे अशुभदायक समझना चाहिए॥५९॥

चिबुकलक्षण –

अरुणं मृदुलं पुष्टं प्रशस्तं चिबुकं स्त्रिया:।
आयातं रोमशं स्थूलं द्विधा भक्तमशोभनम्॥

जिस स्त्री का चिबुक लाल वर्ण, मुलायम और पुष्ट हो तो वह शुभ होता है। फैला हुआ, रोमयुक्त, स्थूल और दो भाग में विभक्त रहने वाले चिबुक को अशुभप्रद जानना चाहिए।

कपोल लक्षण –

कपोलावुन्नतौ स्त्रीणां पीनौ वृत्तौ शुभप्रदौ।
रोमशौ परुषौ निम्नौ निर्मांसो चाऽशुभप्रदौ॥

जिस स्त्री का गाल उन्नत, पुष्ट और गोल हो तो वह शुभ होता है। यदि रोमसहित, कठोर, दबा हुआ एवं मांसहीन हो तो अशुभप्रद होता है।

मुख लक्षण –

स्त्रीणां मुखं समं पृष्ठं वर्तुलं च सुगन्धिमत्।
सुस्निग्धं च मनोहारि सुख सौभाग्यसूचकम्॥

स्त्री का मुख, सम (न बड़ा, न छोटा), पुष्ट, गोलाकार, सुगन्धित, चिकना, मुलायक, देखने में सुन्दर एवं मन को हरण करने वाला हो तो उसे शुभप्रद कहा गया है, इससे विपरीत मुख को अशुभ जानना चाहिए।

अधरलक्षण –

वर्तुल: पाटल: स्निग्धा रेखाभूषितमध्यभू:।
मनोहरोऽधरो यस्या: सा भवेद् राजवल्लभा।।
निर्मास: स्फुटितो लम्बो रुक्षो वा श्यामवर्णक:।
स्थूलोऽधरश्च नारीणां वैधव्यक्लेशसूचक:।।

जिस स्त्री का अधर (नीचे का ओठ) श्वेत-रक्त मिले हुए रंग वाला, गोलाकार, मुलायक, मध्य भाग में रेखा से युक्त, सुन्दर एवं मनोहर हो तो वह स्त्री राजप्रिया होती है। मांसहीन, फटा हुआ, लम्बा, रूखा, श्याम वर्ण एवं स्थूल अधर रहने पर वैधव्य तथा क्लेश का सूचक होता है।

उत्तरोष्ठ लक्षण –

रक्तोत्पलनिभ: स्निग्ध उत्तरोष्ठो मृगीदृशाम्।
किंचिन्मध्योन्नतोऽरोमा सुखसौभाग्यदो भवेत्।।

जिस स्त्री का ऊपर का ओठ रक्तकमलसदृश लाल, चिकना, सामान्य रूप से मध्य भाग उठा हुआ हो एवं रोमरहित हो तो वह सुख-सौभाग्यदायक होता है। इससे भिन्न को अशुभप्रद जानना चाहिए।

दन्त लक्षण –

स्निग्धा दुग्धनिभा: स्त्रीणां द्वात्रिंशद्दशना: शुभा:।
अधस्तादुपरिष्टाच्च समा: स्तोकसमुन्नता:।।
अधस्तादधिका: पीता श्यामा दीर्घा द्विपंक्तय:।
विकटा विरलाश्चापि दशना न शुभा: स्मृता:।।

स्त्री के दाँत चिकने, दूध के समान सफेद, संख्या में ३२, ऊपर तथा नीचे के समान एवं थोड़े उन्नत हों तो शुभकारक होते हैं। यदि ऊपर की अपेक्षा नीचे अधिक, पीले या काले, लम्बे, दो पंक्ति में, विकट एवं अलग-अलग हों तो उन्हें अशुभप्रद माना गया है।

जिह्वालक्षण –

शोणा मृद्वी शुभा जिह्वा स्त्रीणामतुलभोगदा।
दु:खदा मध्यसंकीर्णा पुरोभागेऽतिविस्तरा।।
सितया मरणं तोये श्यामया कलहप्रिया।
मांसलया धनैर्हीना लम्बयाऽभक्ष्यभक्षिणी।।

प्रमादसहिता नारी जिह्वया च विशालया।

जिस स्त्री का जीभ लाल वर्ण तथा कोमल हो, वह असंख्य भोगों का भोग करने वाली होती है। जिसका मध्य भाग संकुचित एवं अग्र भाग अति विस्तृत हो वह दुःख का भोग करने वाली होती है। सफेद जीभ वाली स्त्री का जल से मरण होता है एवं जिसकी जीभ श्याम वर्ण की हो तो ऐसी स्त्री कलहकारिणी होती है। इसी प्रकार मोटी जीभ वाली दरिद्रा, लम्बी जीभ वाली अखाद्य वस्तु का भक्षण करने वाली एवं विशाल जीभ वाली स्त्री प्रमादयुक्ता होती है।

तालु लक्षण –

सुस्निग्धं पाटलं स्त्रीणां कोमलं तालु शोभनम्।
श्वेते तालुनि वैधव्यं पीते प्रव्रजिता भवेत्।
कृष्णे सन्ततिहीना स्याद् रूक्षे भूरिकुटुम्बिनी।।

जिस स्त्री का तालु चिकना श्वेत-रक्त मिश्रित (पाटल) वर्ण एवं कोमल हो तो वह शुभ; केवल श्वेत तालु वाली स्त्री विधवा, पीली तालु वाली संन्यासिनी, कृष्ण तालु वाली सन्तानहीना, रूखी तालु होने पर स्त्री अधिक परिवार वाली होती है।

हास्य लक्षण –

अलक्षितरदं स्त्रीणां किंचित्फुल्लकपोलकम्।
स्मितं शुभप्रदं ज्ञेयमन्यथा त्वशुभप्रदम्।।

जिस स्त्री के हँसते समय दाँत न दिखाई दें, कुछ उठे हुए गाल हों और मन्द हास्य हो तो ऐसी स्त्री शुभप्रद होती है। इससे भिन्न हो तो उसे अशुभप्रद जानना चाहिए।

नासिका लक्षण –

समवृत्तपुटा नासा लघुच्छिद्रा शुभप्रदा।
स्थूलाग्रा मध्यनिम्ना वा न प्रशस्ता मृगीदृशाम्।।

जिस स्त्री का नासिका समान, गोलाकार एवं जिसके दोनों छिद्र लघु हों तो वे शुभप्रद एवं नाक का अग्रभाग स्थूल तथा मध्य भाग गहरा हो तो अशुभप्रद होता है।

रक्ताग्राऽऽकुंचिताग्रा वा नासा वैधव्यकारिणी।
दासी सा चिपिटा यस्या ह्रस्वा दीर्घा कलिप्रिया।।

जिस स्त्री की नासिका का अग्रभाग रक्त वर्ण और संकुचित हो तो वह विधवा होती है। चिपटी

नासिका वाली स्त्री दासी एवं अधिक छोटी या अधिक लम्बी नासिका वाली स्त्री कलहकारिणी होती है।

नेत्र लक्षण –

शुभे विलोचने स्त्रीणां रक्तान्ते कृष्णतारके।
गोक्षीरवर्णे विशदे सुस्निग्धे कृष्णपक्ष्मणी।।

स्त्री की आँखें अन्त में लाल वर्ण वाली, पुतलियाँ काली, गाय के दुग्धसदृश श्वेत एवं बड़ी-बड़ी चिकनी काली पलकों वाली हों तो उन्हें शुभ कहा गया है।

उन्नताक्षी च दीर्घायुर्वृत्ताक्षी कुलटा भवेत्।
रमणी मधुपिंगाक्षी सुखसौभाग्यदायिनी।।
पुंश्चली वामकाणाक्षी वन्ध्या दक्षिणकाणिका।
पारावताक्षी दु:शीला गजाक्षी नैव शोभना।।

जिस स्त्री की आँखें ऊँची हों वह अल्पायु होती है; गोलाकार आँख वाली स्त्री कुलटा होती है; सुन्दर, मधुसदृश पि...ल नेत्र वाली स्त्री सुख और सौभाग्य को भोगने वाली होती है; जिसकी बाँयीं आँख कानी हो वह व्यभिचारिणी होती है; दाहिनी आँख से कानी स्त्री बाँझ होती है; कबूतर के समान नेत्र वाली स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली होती है एवं हाथी के समान आँख वाली स्त्री शुभाकारक नहीं होती।

पक्ष्म लक्षण –

मृदुभि: पक्ष्मभि: कृष्णैर्घनै: सूक्ष्मै: सुभाग्ययुक्।
विरलै: कपिलै: स्थूलैर्भामिनी दु:खभागिनी।।

स्त्री के पलक कोमल, काले, घने और सूक्ष्म हों तो वह सौभाग्यवती होती है। विरल, कपिल वर्ण, स्थूल पलक रहने वाली स्त्री दुःखभागिनी होती है।

भ्रूलक्षण –

वर्तुलौ कार्मुकाकारौ स्निग्धे कृष्णे असंहते।
सुभ्रुवौ मृदुरोमाणौ सुभ्रुवां सुखकीर्तिदौ।।

स्त्री की भौंहें गोलाकार, धनुष के सदृश, चिकनी काली, परस्पर न मिली हुई एवं कोमल रोमों से युक्त होने पर सुख तथा कीर्ति प्रदान करने वाली होती हैं।

कर्णलक्षण –

कर्णौ दीर्घौ शुभावर्तौ सुतसौभाग्यदायकौ।
शष्कुलीरहितौ निन्द्यौ शिरालौ कुटिलौ कृशौ।।

जिस स्त्री के दोनों कान लम्बे, गोलाकार एवं साथ घूमे हुए हों तो वह पुत्र तथा सौभाग्य को प्राप्त करती है। विस्तारहीन, शिरायुत, टेढ़े एवं मांसरहित कर्ण अशुभता को प्रकट करते हैं।

भाललक्षण –

शिराविरहितो भाल: निर्लोमाऽर्धशशिप्रभ:।
अनिम्नस्त्र्यंगुलस्त्रीणां सुतसौभाग्यसौख्यद:।।
स्पष्टस्वस्तिकचिह्नश्च भालौ राज्यप्रद: स्त्रिया:।
प्रलम्बो रोमशश्चैव प्रांशुश्च दु:खद: स्मृत:।।

जिस स्त्री का भाल (ललाट) शिरा तथा रोमरहित, अर्ध चन्द्राकार के समान एवं लम्बाई में तीन अंगुल हो, वह पुत्र के साथ-साथ सौभाग्यसुख को भी प्राप्त करती है। यदि भाल में स्पष्ट स्वस्तिक चिन्ह हो तो वह स्त्री राजप्रिया होती है। अधिक लम्बा, रोमयुक्त एवं बहुत ऊँचा भाल हो तो उस स्त्री के लिए दु:खदायी होता है।

मूर्धा लक्षण –

उन्नतो गजकुम्भाभो वृत्तो मूर्धा शुभ: स्त्रिय:।
स्थूलो दीर्घोऽथवा वक्रो दु:खदौर्भाग्यसूचक:।।

स्त्री का हाथी के मस्तक सदृश ऊँचा और गोलाकार मस्तक शुभ तथा स्थूल, लम्बा अथवा टेढ़ा मस्तक दु:ख-दुर्भाग्य का सूचक होता है।

केशलक्षण –

कुन्तला: कोमला: कृष्णा: सूक्ष्मा दीर्घाश्च शोभना:।
पिंगला: परुषा रूक्षा विरला लघवोऽशुभा:।।
पिंगला गौरवर्णाया श्यामाया: श्यामला: शुभा:।
नारीलक्षणतश्चैवं नराणामपि चिन्तयेत्।।

स्त्री के केश कोमल, काले, पतले, लम्बे हों तो वे शुभप्रद होते हैं। पिंगल वर्ण के, कठोर, रूखे, बिखरे हुए छोटे केश अशुभसूचक होते हैं। परन्तु गौर वर्ण की स्त्री के पिंगल एवं श्याम वर्ण की स्त्री के काले

केश को शुभ ही जानना चाहिए।

इसी प्रकार स्त्री के अंग लक्षण के द्वारा पुरुषों का भी अंग-लक्षण अवगत करना चाहिए।

बोध प्रश्न –

1. शीर्ष का अर्थ क्या होता है।
   क. मस्तक ख. केश ग. मुख घ. नेत्र
2. वृहत्पराशरहोराशास्त्र किसकी रचना है।
   क. मैत्रेय ख. पराशर ग. नारद घ. गर्ग
3. नारियों के शरीर का विभिन्न अंगों का लक्षण वृहत्पराशरहोराशास्त्र के किस अध्याय में वर्णित है।
   क. ८२ ख.८३ ग.८४ घ. ८५
4. नख का क्या अर्थ है।
   क. नाक ख. कान ग. नाखून घ. मुख
5. स्त्री की आँखें अन्त में लाल वर्ण वाली, पुतलियाँ काली हो तो कैसी होती है।
   क. शुभ ख. अशुभ ग. मिश्रित घ. कोई नहीं
6. स्त्री का मस्तक लम्बा हो तो क्या फल होता है।
   क. उत्तम ख. दुर्भाग्य सूचक ग. अशुभ घ. कोई नहीं
7. जिस स्त्री का नासिका समान, गोलाकार एवं जिसके दोनों छिद्र लघु हों तो वे होते हैं –
   क. अशुभप्रद ख. शुभप्रद ग. दुर्भाग्य प्रद घ. मिश्रितप्रद

3.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि ज्योतिष शास्त्र में ऋषियों ने निरन्तर अनुसन्धान कर मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण को बतलाया है। शीर्ष से पाद (पैर) तक मानव शरीर के विभिन्न अंगों की आकृतियों एवं उनके रूपों तथा लक्षणों के आधार पर अलग-अलग फल कहे गये हैं। वृहत्पराशरहोराशास्त्र ग्रन्थ में आचार्य पराशर ने स्त्री के शरीर के विभिन्न अंगों को अंगलक्षणाध्याय में विस्तृत रूप में प्रतिपादित किया है। उनका कथन है कि स्त्रियों के समान ही पुरुषों के अंगों का भी लक्षण जानना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य के शरीरांगों की बात करें तो सबमें कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य होती है, जैसे कोई मोटा होता है कोई पतला, कोई गोरा कोई काला,

किसी की ऑखें बड़ी होती है किसी की छोटी, किसी के बाल लम्बे होते हैं, किसी के छोटे, किसी के घुँघराले तो किसी के सीधे। किसी का ओष्ठ काला तो किसी का लाल होता है। किसी की कमर मोटी होती है, तो किसी की पतली, किसी के नख खुदरे होते है, तो किसी के चिकने आदि इत्यादि। इन्हीं सभी लक्षणों एवं गुणों के आधार पर शरीर के विभिन्न अंगों का लक्षण का विचार किया जाता है। हम जानते हैं कि सृष्टि की क्षमता नारी के पास होती है। अत: सृष्टि, समाज व परिवार में स्त्रियों का विशेष योगदान है। अत: स्त्रियों की प्रधानता को देखते हुए ऋषियों ने उनके शरीर के विभिन्न अंगों का जो लक्षण कहा है, उसे यहाँ आप लोगों के ज्ञानार्थ वर्णन किया जा रहा है।

मानव शरीर के विभिन्न अंगों से अभिप्राय - शीर्ष (मस्तक), मुख, आँख, कान, दन्त, केश, हस्त, हृदय, ग्रीवा, उदर, छाती, स्तन, नख, पीठ, पैर, नितम्ब, गुह्यमार्ग, पादतल, अँगुली, जानु, उरु, जंघा आदि से हैं। कुछ विशेष एक-दो अंग को छोड़ दिया जाय तो पुरुष एवं स्त्रियों दोनों में ये सभी अंग होते हैं।

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

शीर्ष – मस्तक

मुख – मुँह

उदर – पेट

बाहु – भुजा या हाथ

कटि – कमर

कुक्ष – कोख

पाद- पैर

नख – नाखून

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. ख
3. ख
4. ग
5. क
6. ख
7. ख

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहत्पराशरहोराशास्त्र – मूल लेखक – आचार्य पराशर, टिकाकार – पं. पद्मनाभ शर्मा

जातक पारिजात – मूल लेखक – आचार्य वैद्यनाथ।

ज्योतिष रहस्य – जगजीवनदास गुप्ता।

3.9 सहायक पाठ्यसामग्री

वृहत्पराशरहोरा शास्त्र

जातक पारिजात

वृहत्संहिता

ज्योतिष रहस्य

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. मानव शरीर के विभिन्न अंगों से क्या अभिप्राय है।
2. नारियों के विभिन्न अंगों का लक्षण लिखिये।
3. स्त्री के मुख, नाक, ओष्ठ एवं कटि लक्षणों का फल लिखिये।
4. नारी के पादतल, केश, हस्त, उदर एवं कुक्ष का फल लिखिये।

इकाई - 4 शकुन फल विचार

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 शकुन परिचय

4.3.1 शकुन के भेद

4.3.2 ग्रामीण एवं जंगली जीवों का विभेद

4.4 जीवों द्वारा शकुन फल विचार

4.4.1 कौए द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुन

4.4.2 कुत्ते एवं अन्य पशु-पक्षियों द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुन फल विचार

4.5 यात्राकालिक शुभाशुभ शकुन विचार

4.6 सारांश

4.7 पारिभाषिक शब्दावली

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.10 सहायक पाठ्यसामग्री

4.11 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -202 के चतुर्थ खण्ड की चौथी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – शकुन फल विचार। इससे पूर्व आपने फलित ज्योतिष से जुड़े विभिन्न योगों, दशाफलादि तथा मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण सम्बन्धित विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'शकुन फल विचार' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

शकुन का शाब्दिक अर्थ होता है – पक्षी। 'शकुन शास्त्र' से अभिप्राय है- जीवों के अंगों के लक्षण के आधार पर किया जाने वाला शुभाशुभ फल सिद्धान्त। प्रधान स्कन्धत्रय के अतिरिक्त शकुन भी ज्योतिष शास्त्र का एक स्कन्ध के रूप में प्रचलित है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'शकुन' के बारे में एवं उसके शुभाशुभ फल विचारों के विविध पक्षों को समझने का प्रयास करते है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- शकुन को परिभाषित कर सकेंगे।
- शकुन के विभिन्न अवयवों को समझा सकेंगे।
- शकुन के शुभाशुभ फल का ज्ञान कर लेंगे।
- शास्त्रों एवं पुराणों के आधार पर शकुन के फल को समझा सकेंगे।
- शकुन के महत्व को निरूपति कर सकेंगे।

4.3 शकुन फल विचार

'शुभशंसि निमित्ते च शुकनं स्यात्रपुंसकम' इस वचन के अनुसार जिसमें कुछ लक्षणों को देखकर शुभाशुभ का विचार किया जाता है, उस शास्त्र को **शकुनशास्त्र** कहते है। शकुन का अर्थ पक्षी होता है, पक्षी से पशु तथा अन्य जीवों का भी बोध होता है। शकुन का दूसरा अर्थ निमित्त भी है, जिससे अंग-स्फुरण, छींक, पल्लीपतन, सरटाधिरोहण तथा अन्य लक्षणों द्वारा भविष्य का ज्ञान प्रात होता है। मनुष्यों के पूर्वजन्मार्जित जो शुभाशुभ कर्म हैं, उन कर्मो के शुभाशुभ फल को गमनकालिक शकुन प्रकाशित करता है। जैसे कि आचार्य वराहमिहिर का कथन है-

अन्यजन्मान्तरकृतं कर्म पुंसां शुभाशुभम् ।
यत्तस्य शकुनः पाकं निवेदयति गच्छताम् ।।

ज्योतिष में शकुन स्कन्ध का अप्रतिम स्थान है। ज्योतिषशास्त्र के प्रायः सभी स्कन्धों में शकुन का सर्वप्रथम प्राकटऋ हुआ होगा, क्योंकि जब आदि मानव ज्योतिष के गणित पक्ष से अनभिज्ञ रहा होगा, तब भी अंग- स्फुरण, पशु चेष्टा अथवा प्राकृतिक हलचलों से भविष्य का ज्ञान प्राप्त कर लेता होगा। अन्धकासुर के वध के समय भगवान् शंकर ने पशु–पक्षियों के अस्वाभाविक हलचल देखे थे, वे ही शकुन नाम से कहे गये हैं। पुनः तारकासुर से युद्ध के पूर्व स्वामि कार्तिकेय को भगवान् शंकर ने शकुन का उपदेश किया। जम्भासुर से युद्ध के लिए तैयार इन्द्र ने कश्यप ऋषि को तथा कश्यप ने गरूड जी को, गरूड ने अत्रि, गर्ग, भृगु, पराशर अदि मुनियों को शकुन का उपदेश किया है।

शकुन जानने वाले ज्योतिर्विदों को गणितादि की आवश्यकता नहीं पड़ती। पंचांग, फलित अथवा जन्मसमयादि के विना भी भविष्य का फल शकुन द्वारा जाना जाता है। वेद, पुराण, इतिहास, स्मृति तथा अन्य सभी भारतीय ग्रन्थों में कहीं न कहीं शकुन का वर्णन अवश्य प्राप्त होता है।

4.3.1 शकुन के भेद

अग्निपुराण में शकुन दो प्रकार के बतलाये गये हैं- दीप्त और शान्त। दैव का विचार करने वाले ज्योतिषियों ने सम्पूर्णं दीप्त शकुनों का फल अशुभ तथा शान्त शकुनों का फल शुभ बतलाया हैं। वेलादीप्त, दिग्दीप्त, देशदीप्त, क्रियादीप्त, रूपदीपत और जातिदीप्त के भेद से दीप्त शकुन छः प्रकार के बतलाये गये हैं। उनमें पूर्व-पूर्व को अधिक प्रबल समझना चाहिए।

षट्प्रकारा विनिर्दिष्टा शकुनानां च दीप्तयः।
वेलादिग्देशकरणरुतजातिविभेदतः।।
पूर्वा पूर्वा च विज्ञेया सा तेषां बलवत्तरो।।

दिन में विचरने वाले प्राणी रात्रि में और रात्रि में चलने वाले प्राणी दिन में विचरते दिखायी दें, तो उसे वेलादीप्त जानना चाहिए। इसी प्रकार जिस समय नक्षत्र, लग्न और ग्रह आदि क्रर अवस्था को प्राप्त हो जाँय, वह भी वेलादीप्त के ही अन्तर्गत आते हैं। सूर्य जिस दिशा को जाने वालें हो वह ‘धूमिता’ जिसमें विद्यामान हों, वह ‘ज्वलिता’ तथा जिसे छोड़ आये हों, वह ‘अंगारिणी’ मानी गयी हैं। ये तीन दिशाएँ ‘दीप्त’ और शेष पाँच दिशाएँ ‘शान्त’ कहलाती हैं। दीप्तदिशा में जगंली और जंगल में ग्रामीण पशु-पक्षी आदि विद्यामान हों, तो वह निन्दित देश है। इसी प्रकार जहाँ निन्दित वृक्ष हों, वह स्थान भी निन्द्य और अशुभ माना गया हैं।

दीप्तायां दिशि दिग्दीप्तं शकुनं परिकीर्तितम्।
ग्रामेऽरण्या वने ग्राम्यास्तथा निन्दितपादपः।।
देशे चैवाशुभे ज्ञेयो देशदीप्तो द्विजोत्तमः।।

अशुभ देश में जो शकुन होता है, उसे अग्निपुराण में 'देशदीप्त' कहा गया हैं। अपने वर्णधर्म के विपरीत अनुचित कर्म करने वाला पुरूष 'क्रियादीप्त' बतलाया गया हैं। उसका दिखायी देना क्रियादीप्त शकुन के अन्तर्गत आता हैं। फटी हुई भयंकर आवाज का सुनायी पड़ना 'रूतदीप्त' कहलाता हैं। केवल मांस भोजन करने वाले प्राणी को 'जातिदीप्त' समझना चाहिए। उसका दर्शन भी जातिदीप्त शकुन हैं। दीप्त अवस्था के विपरीत जो शकुन हो, वह 'शान्त' बतलाया गया हैं। उसमें भी उपर्युक्त सभी यत्नपूर्वक जानने चाहिए। यदि शान्त और दीप्त के भेद मिले हुए हों, तो उसे 'मिश्र शाकुन' कहते हैं। इस प्रकार विचारकर उसका फलाफल बतलाना चाहिए।

4.3.2 ग्रामीण एवं जंगली जीवों का विभेद

ग्रामीण एवं जंगली जीवों का विभेद बतलाते हुए अग्निपुराण में कहा गया है कि गौ, घोड़े, गदहे, कुत्तों, सारिका (मैना), गृहगोधिका (गिरगिट), चटक (गौरेया), भास (चील या मुर्गा) और कछुए आदि प्राणि ग्रामवासी कहे गये हैं।

गोऽश्वोष्ट्रगर्द भश्वानः सारिका गृहगोधिका।
चटका मासकूर्माद्याः कथिता ग्रामवासिनः।।

इसी प्रकार बकरा, भेड़, तोता, गजराज, सूअर, भैंसा और कौआ- ये ग्रामीण भी होते हैं और जंगली भी। इनके अतिरिक्त और सभी जीव जंगली कहे गये हैं। बिल्ली और मुर्गा भी ग्रामीण तथा जंगली कहे गये हैं। परन्तु उनके रूप में भेद होता हैं, इसी से वे सदा पहचाने जाते हैं।

दिन में और रात में चलने वाले जीवों का विभेद बतलाये हुए अग्निपुराण में कहा गया है कि गोकर्ण, मोर, चक्रवाक, गदहे, हारीत, कौए, कुलाह, कुक्कुभ, बाज, गीदड़, ख..ञरीट, वानर, शतघ्न, चटक, कोयल, नीलकण्ठ (श्येन), कपि...ल (चातक), तीतर, शतप, कबूतर, खंजन, दात्यूह (जलकाक), शुक, राजीव, मुर्गा, भरदूल और सारंग- ये दिन में चलने वाले प्राणी हैं।

गोकर्णशिखिचक्राह्वखरहारितवायसाः।
कुलाहकुक्कुभश्येनफेरुखंगनवानराः।।
शतघ्नचटकश्यामचाषश्येनकपिंगलाः।
तित्तिरिः शतपत्रश्च कपोतश्च तथा त्रयः।।
खंगरीटकदात्यूहशुकराजीवकुक्कुटाः।
भरद्वाजश्च सारंग इति ज्ञेया दिवाचराः।।

इसी प्रकार वागुरी, उल्लू, शरभ, क्रौ..., खरगोश, कछुआ, लोगशिका, और पिंगलिका- ये रात्रि में चलने वाले प्राणी बतलाये गये हैं। हंस, मृग, बिलाव, वृषभ, गोमायु, वृक, कोयल, सारस, घोड़ा,

गोघा और कौपीनधारी पुरूष - ये दिन और रात दोनों में चलने वाले हैं।

हंसाश्च मृगमार्जारनकुलर्क्षभुजंगमाः।
वृकारिसिंहव्याघ्रोष्ट्रग्रामसूकरमानुषाः।।
श्वाविदवृषभगोमायुवृककोकिलसारसाः।
तुरंगकौपीननरा गोध ह्युभयचारिणः।।

सम्प्रति उक्त जीवों के शुभाशुभ शकुन का विचार करते हुए अग्निपुराण में कहा गया है कि यदि युद्ध या युद्ध-यात्रा का समय ये सभी जीव झुण्ड बाँध कर सामने आवें, तो विजय दिलानेवाले गये हैं, किन्तु यदि पीछे से आवें, तो विजय दिलानेवाले बतलाये गये हैं, किन्तु यदि पीछे से आवें, तो मृत्युकारक माने गये हैं।

बलप्रस्थानयोः सर्वे पुरस्तात्संगचारिणः।
जयावहा विनिर्दिष्टा पश्चात्रिधनकारिणः।।

यदि नीलकण्ठ अपने घोसले से निकल कर आवाज देता हुआ सामने स्थित हो जाय, तो वह राजा को अपमान की सुचना देता हैं और ज बवह वामभाग में आ जाय, तो कलहकारक तथा भोजन में बाधा डालने वाला होता हैं। यात्रा के समय उसका दर्शन उत्तम माना गया है, उसके बायें अंग का अवलोकन भी उत्तम हैं। यदि यात्रा के समय मोर जोर-जोर से आवाज दे, तो चोरों के द्वारा अपने धन की चोरी होने का सन्देश देता है।

गृहाद्गम्य यदा चाषो व्याहरेत्पुरतः स्थिताः।
नृपावमानं वदति वामः कलहभोजने।।
याने तदर्दनं शस्तं सव्यमंगस्य वाप्यथ।
चौरैर्मोषमथाख्याति मयूरो भिन्नानिःस्वनः।।

प्रस्थानकाल में यदि मृग आगे-आगे चले, तो वह प्राण लेने वाला होता हैं। रीक्ष, चूहा, सियार, बाघ, सिंह, बिलाव, गदहे-ये यदि प्रतिकूल दिशा में जाते हों, गदहा जोर-जोर से रेंकता हो और कपिंचल पक्षी वायीं अथवा दाहिनी ओर हो, तो उसका फल निन्दित माना गया हैं।

यात्रा काल में तितर का दिखायी देना अच्छा नहीं हैं। मृग, सूअर और चितकबरे हिरन- ये यदि वायें होकर फिर दाहिने हो जाँय, तो सदा कार्यसाधक होते हैं। इसके विपरीत यदि दाहिनें से वायें चले जाँय, तो निन्दित माने गये हैं। बैल, घोडे, गीदड़, बाघ, सिंह, बिलाव और गदहे यदि दाहिने से बाये जाँय, तो ये मनोवांछित वस्तु की सिद्धि करने वाले होते हैं, यह समझना चाहिए।

वृषाश्चजम्बुकव्याघ्राः सिंहमार्जारगर्दभाः।

वांछितार्थकरा ज्ञेया दक्षिणाद्वामतो गताः।।

इसी प्रकार श्रृगाल श्याममृख, छुच्छु (छछूँदर), पिगला, गृहगोधिका, शूकरी, कोयल तथा पुल्लिंग नाम धारण करने वाले जीव यदि वाम भाग में हों तथा स्त्रीलिंग नामवाले जीव, मास, कारूष, बन्दर, श्रीकर्ण, छिŸवर, कपि, पिप्पीक, रूरू और श्येन-ये दक्षिण दिशा में हों, तो शुभ हैं। यात्रा काल में जातिक, सर्प, खरगोश, सुअर तथा गोधक नाम लेना भी शुभ माना गया हैं।

जातीक्षा (तिका) हिशशकोडगोधानां कीर्त्तनं शुभम्।

वहाँ बतलाया गया है कि रीक्ष और वानरों का विपरीत दिशा में दिखायी देना अनिष्टकारक होता हैं। प्रस्थान करने पर जो कार्यसाधक बलवान् शकुन प्रतिदिन दिखायी देता हैं, उसका फल विद्वानों पुरूष को उसी दिन के लिए बतलाना चाहिए। अर्थात् जिस दिन शकुन दिखायी देता है, उसी दिन उसका फल होता हैं।

पागल, भोजनार्थी बालक तथा वैरी पुरूष यदि गाँव या नगर की सीमा के भीतर दिखायी दें, तो उनके दर्शन का कोई फल नहीं होता हैं, ऐसा समझना चाहिए।

यदि सियारिन एक, दो, तीन या चार बार आवाज लगावे, तो वह शुभ मानी गयी हैं। इसी प्रकार पाँच और छः बार बोलने पर अशुभ और सात बार बोलने पर शूभ बतलायी गयी हैं। सात बार से अधिक बोले तो उसका कोई फल नहीं होता हैं।

एकद्वित्रिचतुर्भिस्तु शिवा धन्या रुतैर्भवेत्।
पंचभिश्च तथा पड्भिरधन्या परिकीर्त्तिता।।
सप्तभिश्च तथा धन्या निष्फला परतो भवेत्।।

सरंग के दर्शन का फल बतलाते हुए अग्निपुराण में कहा गया है कि यदि यात्रा के पहले किसी उत्तम देश में सारंग का दर्शन हो, तो वह मनुष्य के लिए एक वर्ष तक शुभ की सूचना देता हैं। उसे देखने से अशुभ में भी शुभ होता हैं। अतः यात्रा के प्रथम दिन मनुष्य ऐसे गुण वाले किसी सारंग का दर्शन करे तथा अपने लिए एक वर्ष तक उपर्युक्त रूप से शूभ फल की प्राप्ति होने वाला समझे।

प्रथमं सारंग दृष्टे शुभे देशे शुभं वदेत्।
संवत्सरं मनुष्यस्य ह्यशुभे च शुभं तथा।।
तथा विधं नरं पश्येत् सारंग प्रथमेऽहनि।
आत्मनश्च तथात्वेन ज्ञातव्यं वत्सरं फलम्।।

4.5 जीवों द्वारा शकुन फल विचार

4.4.1 कौए द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुन

कौए द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुनों का वर्णन करते हुए अग्निपुराण में कहा गया हैं कि जिस मार्ग से बहुतेरे कौए शत्रु के नगर में प्रवेश करें, उसी मार्ग से घेरा डालने पर उस नगर के ऊपर अघना अधिकार प्राप्त होता हैं। यदि किसी सेना या समुदाय में बायी ओर से भयभीत कौआ रोता हुआ प्रवेश करे, तो वह आने वाले अपार भय की सूचना देता हैं। छाया (तम्बू, रावटी आदि), अंग वाहन, उपानह, छत्र और वस्त्र आदि के द्वारा कौए को कुचल डालने पर अपने लिए मृत्यु की सूचना मिलती हैं। उसकी पूजा करने पर अपनी भी पूजा होती है तथा अन्न आदि के द्वारा उसका इष्ट करने पर अपना भी शुभ होता हैं।

छायांग वाहनोपानच्छत्रवस्त्रादिकुट्टने।
मृत्युस्तत्पूजने पूजा तदिष्टकरणे शुभम्।।

यदि कौआ दरवाजे पर बारंबार आया जाया करे, तो वह उस घर के किसी परदेशी व्यक्ति के आने की सूचना देता है। इसी प्रकार यदि वह कोई लाल या जली हुई वस्तु मकान के ऊपर डाल देता है, तो आग लगने की सूचना मिलती हैं।

प्रेषितागमकृत्काकः कुर्वन् द्वारि गतागतम्।
रक्तं दग्धं गृहे द्रव्यं क्षिपन् वह्निनिवेदकः।।

यदि कौआ मनुष्य के आगे कोई लाल वस्तु डाल देता हैं, तो उसके कैद होने की बात बतलाता हैं और यदि कोई पीले रंग की वस्तु सामने गिरता है, तो उससे सोने-चाँदी की प्राप्ति सूचित होती हैं, सारांश यह की वह जिस वस्तु को अपने पास ला देता हैं, उसकी प्राप्ति और द्रव्य को अपने यहाँ से उठा ले जाता है, उसकी हानि की संकेत करता हैं।

न्यसेद्रक्तं पुरस्ताच्च निवेदयति बन्धनम्।
पीतं द्रव्यं तथा रुक्म रूप्यमेव तु भार्गव।।
याच्चोपनयेद् द्रव्यं तस्य लब्धिं विनिर्दिशेत्।
द्रव्यं वापनयेद्यस्तु तस्य हानिं विनिर्दिशेत्।।

यदि कौआ अपने आगे कच्चा मांस लाकर डाल दे, तो धन की, मिट्टी गिरावे, तो पृथ्वी की और कोई रत्न डाल दे, तो महान् ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। यदि यात्रा करने वाले की अनुकूल दिशा (सामने) की ओर कौआ जाय, तो वह कल्याणकारी और कार्यसाधक होता हैं। परन्तु यदि प्रतिकूल

दिशा की और जाय, तो उसे कार्य में बाधा डालनेवाला तथा भयंकर जानना चाहिए। यदि कौआ सामने काँव काँव करता हुआ आ जाय, तो वह यात्रा का विघातक होने पर कार्य का नाश करता हैं। वामभाग में होकर कौआ यदि अनुकूल दिशा की ओर चले तो श्रेष्ठ और दाहिने होकर अनुकूल दिश की ओर चले, तो मध्यम माना जाता है, किन्तु वामभाग में होकर यदि वह विपरीत दिशा की ओर आ जाय, तो यात्रा का निषध करता हैं। यात्रा काल में घर पर कौआ आ जाय, तो वह अभीष्ट कार्य की सिद्धि सूचित करता हैं। यदि वह एक पैर उठाकर एक आँख से सूर्य की ओर देखे, तो भय देने वाला होता हैं। यदि कौआ किसी वृक्ष के खोखले में बैठकर आवाज दे, तो वह महान अनर्थ का कारण हैं। ऊसर भूमि में बैठा हो, तो भी अशुभ होता है, किन्तु यदि वह कीचड़ में लिपटा हुआ हो, तो उत्तम माना गया हैं।

एकाक्षिचरणस्त्वर्कं वीक्षमाणो भयावहः।
कोटरे वसमानश्च महानर्थकरो भवेत्।।
न शुभस्तूषरे काका पंग स तु शस्यते।।

जिसकी चोंच मे मल आदि अपवित्र वस्तुएँ लगी हो, वह कौआ दीख जाय, तो सभी कार्यो का साधक होता हैं। कौए की भाँति अन्य पक्षियों का भी फल जानना चाहिए।

अमेध्यपूर्णावदनः काकः सर्वार्थसाधकः।
ज्ञेयाः पतत्रिणोऽन्येऽपि काकवद् भृगुनन्दन।।

4.4.2 कुत्ते एवं अन्य पशु-पक्षियों द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुन

कुत्तों के द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुनों की चर्चा करते हुए अग्निपुराण में कहा गया हैं कि यदि सेना की छावनी के दाहिने भाग में कुत्तों आ जाँय, तो वे ब्राहाणों के विनाश की सूचना देते हैं। इन्द्रध्वज के स्थान में हों, तो राजा का और गोपुर (नगरद्वार) पर हों, तो नगराधीर की मृत्यु की सूचना देते हैं।

स्कन्धवारापसव्यस्थाः श्वानो विप्रविनाशकाः।
इन्द्रस्थाने नरेन्द्रस्य पुरेशस्य तु गोपुरे।।

भूँकता हुआ कुत्तों यदि घर के भीतर आवे, तो गृहस्वामी की मृत्यु का कारण होता हैं। वह जिसके बायें अंग को सूँघता हैं, उसके कार्य की सिद्धि होती हैं। यदि दाहिने अंग और बायीं भुजा को सूँघे, तो भय उपस्थित होता हैं। यात्री के सामने की ओर आवे, तो यात्रा में विघ्न डालने वाला होता हैं। यदि कुत्तों राह रोक कर खड़ा हो, तो मार्ग में चारो का भय सूचित करता हैं। मुँह में हड्डी लिये हो,

तो उसे देखकर यात्रा करने पर कोई लाभ नहीं होता तथा रस्सी या चिथड़ा रखने वाला कुत्तों भी अशुभसूचक होता हैं।

मार्गावरोधको मार्गे चौरान् वदति भार्गव।
अलाभोऽस्थिमुखः पापो रज्जुक्षीरमुखस्तथा।।

जिसके मुख में जूता या माँस हो, ऐसा कुत्तों सामने हो, तो शुभ होता हैं। यदि उसके मुँह में कोई अमांगलिक वस्तु तथा केश आदि हो, तो उससे अशुभ की सुचना मिलती हैं। कुत्तों जिसके आगे पेशाब करके चला जाता हैं, उसके ऊपर भय आता हैं। किन्तु मूत्र त्याग कर यदि वह किसी शुभ स्थान, शुभ वृक्ष तथा मांगलिक वस्तु के समीप चला जाय, तो वह उस, पुरूष के कार्य का साधक होता हैं। कुत्तों की भाँति गीदड आदि के विषय में भी समझना चाहिए।

अवमूत्र्याग्रतो याति यस्य तस्य भयं भवेत्।
यस्यावमूत्र्य व्रजति शुभं देशं तथा द्रुमम्।।
मंगल्यं च तथा द्रव्यं तस्य स्यादर्थसिद्धये।
श्ववच्च राम विज्ञेयास्तथा वै जम्बुकादयः।।

गौ आदि पशुओं के द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुन का उल्लेख करते हुए अग्निपुराण में कहा गया हैं कि यदि गौयें अकारण ही डकारने लगें, तो समझना चाहिए कि स्वामी के ऊपर भय आने वाला हैं। रात में उसके बोलने से चोरों का भय सूचित होता है और यदि वे विकृत स्वर में क्रन्दन करें, तो मृत्यु की सुचना मिलती हैं।

भयाय स्वामिनो ज्ञेयमनिमित्तं रुतं गवाम्।
निशि चौरभयाय स्याद्विकृतं मृत्यवे तथा।।

यदि रात में बैल गर्जन करे, तो स्वामी का कल्याण होता हैं और साँढ आवाज दे, तो राजा में बैल गर्जना करें, तो राजा को विजय प्रदान करता हैं। यदि अपनी दी हुई तथा अपने घर पर मौजूद रहने वाली गौएँ अभक्ष्य-भक्षण करें और अपने बछडे पर भी स्नेह करना छोड़ दें, तो गर्भक्षय की सूचना देने वाली मानी गयी हैं।

अभक्ष्यं भक्षयन्त्यश्च गावो दत्तास्तथा स्वकाः।
तयक्तस्नेहा स्ववत्सेषु गर्भक्षयकरा मताः।।

पैरों से भूमि खोदने वाली, दीन तथा भयभीत गौएँ भय लाने वाली होती हैं। जिनका शरीर भींगा हों, रोम-रोम प्रसन्नता से खिला हो और सीगों से मिट्टी लगी हुई हो, वे गौएँ शुभ होती हैं। विज्ञ पुरूष को भैंस आदि के सम्बन्ध में भी यही सब शकुन बतलाना चाहिए।

भूमिं पादैर्विनिघ्नन्त्यो दीना भीता भयावहाः।

आर्द्रङ्ग्यो हृष्टरोमाश्च श्रृ...लग्नमृदः शुभाः।।

महिष्याद्विषु चाप्येतत्सर्वं वाच्यं विजानता।।

घोड़े के द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुनों का कथन करते हुए अग्निपुराण में कही गया हैं कि जीन कसे हुए अपने घोडे पर दूसरे का चढना, उस घोडे का जल में बैठना और भूमि पर एक ही जगह चक्कर लगाना अनिष्ट का सूचक हैं। बिना किसी कारण के घोडे का सो जाना विपत्ति में डालने वाला हैं।

आरोहणं तथान्येन सपर्य्याणस्य वाजिनः।

जलोपवेशनं नेष्टं भूमौ च परिवर्तनम्।।

विपत्करं तुरङगस्य सुप्तं वाप्यनिमित्ततः।।

इसी प्रकार यदि अकस्मात् जई और गुड की ओर से घोडे की अरूचि हो जाये, उसके मुँह से खून गिरने लगे तथा उसका सारा बदन कापने लगे, तो ये अच्छे लक्षण नहीं हैं, उनके अशुभ की सूचना मिलती हैं। यदि घोडा बगुलों, कबूतरों और सरिकाओं से खिलवाड़ करे, तो मृत्यु का सन्देश देता हैं। उसके नेत्रों से आँसू बहे तथा वह जीभ से अपना पैर चारने लगे, तो विनाश का सूचक हैं। यदि वह बायें टाप से धरती खोदें बायी करवट से सोये अथवा दिन में नींद ले, तो शुभ कारक नहीं माना जाता हैं।

वामपादेन च तथा विलिखंश्च वसुन्धराम्।

स्वपेद् का वामपार्श्वेन दिवा वा न शुभप्रदः।।

जो घोड़ा एक बार मूत्र करने वाला हो, अर्थात् जिसका मूत्र एक बार थोडा सा निकल कर फिर रूक जाये तथा निद्रा के कारण जिसका मुँह मलिन हो, वह भय उपस्थित करने वाला होता हैं। यदि वह चढने न दे अथवा चढ़ते समय उलटे घर में चला जाये या सवार की बायीं पसली का स्पर्श करने लगे, तो वह यात्रा में विघ्न पड़ने की सूचना देता हैं। यदि शत्रु-योद्धा को देखकर हींसने लगे और स्वामी के चरणों का स्पर्श करे, तो वह विजय दिलाने वाला होता हैं।

भयाय स्यात्सकृन्मूत्री तथा निद्राविलाननः।

आरोहणं न चेट्दकृात्प्रतीपं वा गृहं व्रजेत्।।

यात्राविघातमाचष्टे वामपार्श्वं तथा स्पृशन्।

हेषमाणः शत्रुयोधं पादस्पर्शी जयावहः।।

हाथी आदि के द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुनों का वर्णन करते हुए वहाँ कहा गया हैं कि यदि हाथी

गाँव में मैथुन करे, तो उस देश के लिए हानि कारक होता हैं। हथिनी गाँव मे बच्चा दे या पागल हो जाय, तो राजा के विनाश की सूचना देती हैं।

ग्रामे व्रजति नागश्चेन्मैथुनं देशहा भवेत्।
प्रसूला नागवनिता मत्ता चान्ताय भूपतेः।।

यदि हाथी चढ़ने न दे, उलटे हथिसार में चला जाय या मद की धारा बहाने लगे, तो वह राजा का घातक होता हैं। यदि दाहिने पैर को बायें पैर पर रखे और सूँड से दाहिने दाँत का मार्जन करें, तो वह शुभ होता हैं।

वामं दक्षिणपादेन पादमाक्रमते शुभः।
दक्षिणं च तथा दन्तं परिमार्ष्टि करेण च।।

इस प्रकार अपना बैल, घोड़ा अथवा हाथी शत्रु में चला जाय, तो अशुभ होता हैं।

वृषोऽश्वाः कु´जरो वापि रिपुसैन्यगतोऽशुभः।।

यदि थोड़ी दूर में बादल घिर कर अधिक वर्षा करे, तो सेना का नाश होता हैं। यात्रा के समय अथवा युद्धकाल में ग्रह और नक्षत्र प्रतिकूल हों, सामने से हवा आ रही हो और छत्र आदि गिर जायँ, तो भय उपस्थित होता हैं। लड़ने वाले योद्धा हर्ष और उत्साह में भरें हों और ग्रह अनुकूल हों, तो वह विजय का लक्षण हैं।

खण्डमेघातिवृष्टया तु सेना नाशमावाप्नुयात्।
प्रतिकूलग्रहार्क्षात्तु तथा सम्मुखमारुतात्।।
यात्राकाले रणे वापि छत्रादिपतनं भयम्।
हृष्टा नराश्चानुलोमा ग्रहा वै जयलक्षणम्।।

यदि कौए और मांसाहारी जीव-जन्तु योद्धाओं का तिरस्कार करें, तो मण्डल का नाश होता हैं। पूर्व, पश्चिम एवं ईशान दिशा प्रसन्न तथा शान्त हों, तो प्रिय और शुभ फल की प्राप्ति कराने वाली होती हैं।

काकैर्योद्धाभिभवनं क्रव्याद्भिर्मण्डलक्षयः।
प्राचीपश्चिमकैशानी सौम्या प्रेष्ठा शुभा च दिक्।।

यात्रा के समय दिखायी देने वाले विभिन्न वस्तुओं के द्वारा शुभ और अशुभ शकुनों का उल्लेख करते हुए अग्निपुराण में कहा गया है कि क्षेत वस्त्र, स्वच्छ जल, फल से भरा हुआ वृक्ष, निर्मल आकाश, खेत में लगे हुए अन्न और काला धान्य-इनका यात्रा में दिखायी देना अशुभ हैं। रूई, तृणमिश्रित सूखा गोबर (कंडा), धन, अर, गृह, करायल, मूँड़, मुड़ाकर तेल लगाया हुआ नग्न

साधु, लोहा, कीचड़, चमडा, बाल, पागल मनुष्य, हिजड़ा, चाण्डाल, श्वपच आदि, बन्धन की रक्षा करने वाले मनुष्य, गर्भिणी स्त्री, विधवा, तिल की खली, मृत्यु, भुसी, राख, खोपड़ी, हड्डी और फूटा हुआ वर्तन-युद्ध यात्रा के समय इनका दिखायी देना अशुभ माना गया हैं।

कार्पासं तृष्णशुष्क´च गोमयं वै धनानि च।
अङारं गुडसर्जौ च मुण्डा भ्यक्त... नग्नकम्।।
अयः पडंक चर्मकेशौ उन्मत्तं च नपुंसकम्।
चाण्डालश्वपचाद्यानि नरा बन्धनपालकाः।।
गर्भिणी स्त्री च विधवाः पिण्डयाकादीनि वै मृतम्।
तुषभस्मकपालस्थिभिन्नभाण्डमशस्तकम्।।

वाद्यों का वह शब्द, जिसमें फटे हुए की भंयकर ध्वनि सुनायी पड़ती हो, अच्छा नहीं माना गया हैं। 'चले आओ' यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनायी पडें, तो उत्तम है। किन्तु पीछे की ओर से हो, तो अशुभ माना गया हैं। 'जाओ'- यह शब्द यदि पीछ की ओर से हो, तो उत्तम है, किन्तु आगे की ओर से हो, तो निन्दित होता हैं। कहाँ जाते हों ! ढहरो, न जाओ, वहाँ जाने से तुम्हें क्या लाभ है? - ऐसे शब्द अनिष्ट की सुनना देते हैं।

अशस्तो वाद्यशब्दश्च भिन्नभैरवजर्जरः।
एहीति पुरतः शब्दः शस्यते न तु पृष्ठतः।।
गच्छेति पश्चाच्छब्दोऽग्र्यः पुरस्तात्तु विगर्हिताः।
क्व यासि तिष्ठ मां गच्छ किन्ते तत्र गतस्य च।।

यदि ध्वजा आदि के ऊपर चील आदि मांसाहारी पक्षी बैठ जाँए, घोडे, हाथी आदि वाहन लड़खडा़कर गिर पड़े, हथियार टूट जाँय, द्वार आदि के द्वारा मस्तक पर चोट लगे तथा छत्र और वस्त्र आदि को कोई गिरा दे, तो ये सब अपशकुन मृत्यु का कारण बनते हैं।

अनिष्टशब्दा मृत्वर्थं क्रव्यादश्च ध्वजादिगः।
शिरोघातश्च द्वाराद्यैश्छत्रवासादिपातनम्।

यदि यात्रा के समय उक्त अपशुकल दिखायी दे, तो भगवान् विष्णु की पुजा और स्तुति करने से अमंगल का नाश होता हैं। किन्तु यदि दूसरी बार भी इन अपशकुनों का दर्शन हो, तो घर लौट जाना चाहिए।

हरिमभ्यर्च्य संस्तुत्य स्यादमङगल्यनाशनम्।
द्वितीयं तु ततो दृष्ट्वा विरुद्धं प्रविशेद्गृहम्।।

4.5 यात्राकालिक शुभाशुभ शकुन फल विचार

यात्रा के समय कुछ शुभ शकुनों का उल्लेख करते हुए अग्निपुराण में कहा गया हैं कि यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया हैं। भरे हुए घड़े का दिखायी देना तो बहुत ही उत्तम हैं। मांस, मछली, दूर का कोलाहल अकेला वृद्धपुरूष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दुर्वा, ताजा गोबर, वेश्या, सोना, चाँदी, रत्न बच, सरसों आदि औषधियाँ, मूँग, आयुधों में तलवार, छाता, पीढा, राजचिन्ह्, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दुध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभसूचक वचन, भक्त पुरूषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिलली की चमक तथा मन का सन्तोष-ये सब शुभ शकुन हैं।

श्वेताः सुमनसः श्रेष्ठाः पूर्णकुम्भो महोत्तमः।
मासं मत्स्या दूरशब्दा वृद्ध एकः पशुस्त्वजः।।
गावस्तुरंगमा नागा देवाश्च ज्वलितोऽनलः।
दूर्वार्द्रगोमयं वेश्या स्वर्णरूप्य च रत्नकम्।।
वचासिद्धार्थकौषध्यो मुद्ग आयुधखड्गकम्।
छत्रं पीठं राजलि... शवं रुदितवर्जितम्।।
फलं धृतं दधि पयो ह्यक्षतादर्शमाक्षिकम्।
शङ्ख इक्षुः शुभं वाक्यं भक्तवादित्रगीतकम्।
गम्भीरमेघस्तनितं तण्डत्तुष्टिश्च मानसी।।

सारांश रूप में वहाँ कहा गया है कि एक ओर सब प्रकार के शुभ शकुन और दूसरी ओर मन की प्रसन्नता - ये दोनों बराबर हैं। अर्थात् सभी प्रकार शुभ शकुनों के दिखायी पड़ने पर भी यदि यात्रा के समय मन प्रसन्न न हो, तो यात्रा नहीं करना चाहिए। जैसा कि अग्निपुराण का वचन हैं-

एकतः सर्वलिङ्गनि मनसस्तुष्टिरेकतः।

गरुड़पुराण में शुभाशुभ शकुन विचार

गरुड़पुराण में भी शुभाशुभ शकुन का विचार प्राप्त होता हैं, वहाँ कहा गया हैं कि यात्रा में यदि दाहिने हरिण, साँप, बन्दर, बिलाव, कुत्ता, सुअर, पक्षी (नीलकण्ठ आदि) नेवला तथा चूहा दिखायीं दे, तो यात्रा मंगलकारी होती हैं।

मृगाहिकपिमार्जारश्वानाः सूकरपक्षिणः।
नकुलो मूषकश्चैव यात्रायं दक्षिणे शुभः।।

इसी प्रकार विप्रकन्या, शंख, भेरी, पृथ्वी, वेणु (वंशी), जल से पुर्ण कुम्भ ली हुई स्त्री का दर्शन यात्रा

में शुभ होता हैं। इसी प्रकार यात्रा के समय वाम भाग में श्रृगाल, ऊँट, गदहा आदि का दिखाई देना शुभ का सूचक होता हैं। अशुभ शकुनों का उल्लेख करते हुए वहाँ कहा गया हैं कि यात्रा में कपास, ओषधि, तेल, दहकते हुए अँगारे, सर्प, बाल बिखरे लाल माला पहने और नग्न अवस्था में यदि कोई व्यक्ति दिखाई दे, तो अशुभ होता हैं।

विप्रकन्या शिवा एषां शङ्खभेरीवसुन्धरा।
वेणुस्त्रीपूर्णकुम्भाश्च यात्रायां दर्शनं शुभम्।।
जम्बूकोष्ट्रखराद्याश्च यात्रायां वामके शुभाः।।
कार्पासौषधितेलं च पक्वाङ्गार भुजङ्गमाः।
मुक्तकेशी रक्तमाल्यनग्नाद्यशुभमीक्षितम्।।

यात्राकालिक शकुन का उल्लेख करते हुए नारदपुराण में कहा गया हैं कि यात्रा काल में रत्ना नामक पक्षी, चूहा, सियारिन, कौआ तथा कबूतर-इनके शब्द वामभाग में सुनायी दे, तो शुभ होता हैं। छुछुन्दर, पिंगला (उल्लू), पल्ली (छिपकली) और गदहा-ये यात्रा के समय वामभाग मे हों, तो श्रेष्ठ हैं। इसी प्रकार कोयल, तोता और भरदूल आदि पक्षी यदि दाहिने भाग में आ जाँय, तो श्रेष्ठ है तथा यात्रा समय में कृकवास (गिरगिट) का दर्शन शुभ नहीं हैं।

रत्नाकुडयशिवाकाककपोतानां गिरस्तथा।
झझभुकहेमवक्षीरस्वराणां वामतो गतिः।।
पीतकारभरद्वाजपक्षिणां दक्षिणा गतिः।
चाषं त्यक्त्वा चतुष्पात्तु शुभदा वामतो मताः।।
कृष्णं त्यक्त्या प्रयाणे तु कृकलासेन वीक्षितः।।

वहाँ बतलाया गया हैं कि यात्रा काल में सुअर, खरगोश, गोधा (गोह) और सर्पों कि चर्चा शुभ होती हैं। किन्तु किसी भूली हुई वस्तु को खोजने के लिए जाना हो, तो इनकी चर्चा अच्छी नहीं होती हैं। वानर और भालुओं की चर्चा का विपरीत फल होता हैं।

वाराहशशगोधास्तु सर्पाणां कीर्तनं शुभम्।
हृतेक्षणं नेष्टमेव व्यत्ययं कपिऋक्षयोः।।

यात्रा में मोर, बकरा, नेवला, नीलकण्ठ और कबूतर दीख जाँय, तो इनके दर्शन मात्र से शुभ होता हैं, परन्तु लौटकर अपने नगर में आने या घर में रोदन शब्द रहित कोई शव (मुर्दा) सामने दीख पड़े तो यात्रा के उदेश्य की सिद्धि होती है। परन्तु लौटकर घर आने तथा नवीन गृह में प्रवेश करने के समय यदि रोदन शब्द के साथ मुर्दा दीख पड़े, तो वह घातक होता हैं।

मयूरच्छागनकुलचापपारावताः शुभाः।
दृष्टमात्रेण यात्रायां व्यस्तं सर्वं प्रवेशने।।
यात्रासिद्धिर्भवेद् दृष्टे शवे रोदनवर्जिते।
प्रवेशे रोदनयुतः शवः शवप्रदस्त।।

यात्रा के समय अपशकुन की चर्चा करते हुए नारदपुराण में कहा गया हैं कि यात्रा के समय पतित, नपुंसक, जटाधारी, पागल, औषधि आदि खाकर वमन (उलटी) करने वाला शरीर में तेल लगाने वाला, वसा, हड्डी, चर्म, अङ्गार (ज्वालारहित अग्नि), दीर्घरोगी, गुड़, कपास (रूई) नमक, प्रश्न (पुछने या टोकने का शब्द), तृण, गिरगिट, वन्ध्यास्त्री, कुबड़ा, गेरूवा वस्त्रधारी, खुले केश वाला, भूखा तथा नंगा- ये सब सामने उपस्थित हो जाँय, तो अभीष्ट सिद्ध नहीं होती हैं।

पतितक्लीबजटिलमत्तमत्तवान्तौषधादिभिः।
अभ्यक्तवसास्थिचर्माङगारदारुरोगिभिः।
गुडकार्पासलवणरिपुप्रश्नतृणोरगैः।
वन्ध्याकुजकिकाषायमुक्तकेशबुभक्षितैः।।
प्रयाणसमये नग्नैर्दृष्टैः सिद्धिर्न जायते।।

पुनः शुभ शकुन की चर्चा करने हुए वहाँ कहा गया हैं कि प्रज्वलित अग्नि, सुन्दर घोड़ा, राजसिंहासन, सुन्दरी स्त्री, चन्दन आदि की सुगन्ध, फूल, अक्षत, छत्र, चमार, डोली या पालकी, राजा, खाद्य पदार्थ, ईख, फल, चिकनी मिटटी, अन्न, शहद, घृत, दही, गोबर, चूना, धुला कलश, रत्न (हीरा मोती आदि), भृङागर, गौ, ब्राहमण, नगाड़ा, मृदङग, दुन्दुभि, घण्टा तथा वीणा (बाँसुरी) आदि वाद्यों के शब्द वेदमन्त्र एवं मंगल गीत आदि के शब्द - ये सब यात्रा के समय यदि देखने या सुनने में आवे, तो यात्रा करने वाले लोगों के कार्य सिद्ध करते हैं।

प्रज्वलाग्नीन् सुतुरगनृपासनपुराङगनाः।
गन्धपुष्पाक्षतच्छत्रचामारान्दोलिकं नृपः।
भक्ष्येक्षुफलमृत्स्नान्नमध्वाज्यदधिगोमयाः।।
मद्यमांससुधाधौतवस्त्रशङखवृषध्वजाः।
पुण्यस्त्रीपुण्यकलशरत्नभृङारगोद्विजाः।।
भेरीमृदङगपटहघण्टावीणादिनिःस्वनः।
वेदमंगलघोषाः स्युः यायिनां कार्यसिद्धिदाः।।

नारदपुराण में यात्रा के समय यदि कोई अपशकुन हो, तो उसका परिहार बतलाते हुए कहा गया हैं कि

यात्रा के समय प्रथम बार अपशकुन हो, तो खड़ा होकर इष्टदेव का स्मरण करके फिर चले। दुसरा अपशकुन हो, तो ब्राहाम्णों की पूजा (वस्त्र, द्रव्य आदि से उनका सत्कार) करके चले। यदि तीसरी बार अपशकुन हो जाय, तो यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए।

आदौ विरुद्धशकुनं दृष्ट्वा यायीष्टदेवताम्।
स्मृत्वा द्वितीये विप्राणां कृत्वा पूजां निवर्तयेत्।।

मूर्ति-प्रतिमाविकार

शकुन विचार के क्रम में आगे मूर्ति-प्रतिमा के विकार के शुभाशुभ का फल कथन करते हुए नारदपुराण में कहा गया है कि देवताओं की प्रतिमा यदि नीचे गिर पड़े, जले, बार-बार रोये, गावे, पसीने से तर हो जाय, हँसे, अग्नि, धुआँ, तेल, शोभित, दुध या जल का वमन करे, अधेमुख हो जाय तथा इसी तरह की अनेक अद्भुत बातें दीख पड़े, तो या प्रतिमा-विकार करलाता हैं यह विकार अशुभ फल का सूचक होता हैं।

देवता यत्र नृत्यन्ति पतन्ति प्रज्वलन्ति च।
मुहू रुदन्ति गायन्ति प्रस्विद्यन्ति हसन्ति च।
वमन्त्यग्निं तथा धूमं स्नेह रक्तं पयो जलम्।
अधोमुखाधितिष्ठन्ति स्थानात्स्थानं व्रजन्ति च।।
एवमाद्या हि दृश्यन्ते विकाराः प्रतिमासु च।।

इसी प्रकार शुभाशुभ विविध विकारों का उल्लेख करते हुए कहा गया हैं कि यदि आकाश में गन्धर्वनगर (ग्राम के समान आकार) दिन में ताराओं का दर्शन, उल्कापतन, काष्ठ, तृण और शोणित की वर्षा, गन्धर्वों का दर्शन, दिग्दाह, दिशाओं में धुत छा जाना, दिन या रात्रि में भूकम्प होना, बिना आग के स्फुलिङग (अंङगार) दीखना, बिना लकड़ी के आग का जलना, रात्रि मे इन्द्रधनुष या परिवेश की चिनगारियों का प्रकट होना आदि दिखायी देने लगे, गौ, हाथी और घोड़े के दो अरूणोदय- से प्रतीत हो, गाँव में गीदडों का दिन में बास हो, धुमकेतुओं का दर्शन होने लगे तथा रात्रि मे कौओं का और दिन में कबूतरों का क्रन्दन हो, तो ये भंयकर उत्पात की सूचना देते हैं। इसी प्रकार वृक्षों में बिना समय के फूल दीख पड़े, तो उस वृक्ष को काट देना चाहिए और उसकी शान्ति कर लेनी चाहिए। इस प्रकार के और भी जो बड़े-बड़े उत्पात दृष्टिगोचर होते हैं, वे स्थान (देश या ग्राम) का नाश करने वाले होते हैं।

महोल्कापतनं काष्ठतृणरक्तप्रवर्षणम्।
गान्धर्वदेहदिग्धूमं भूमिकम्पं दिवा निशि।।

अनग्नौच स्फुलिङागश्च ज्वलनं च विनेन्धनम्।
निशीन्द्रचापमण्डकं शिखरे श्वेतवायसः।
दृश्यन्ते विस्फुलिङागश्च गोगजाश्वोष्ट्रगात्रतः।
जन्तवो द्वित्रिशिरसो जायन्ते वापि योनिषु।
प्रातः सूर्याश्चतसृषु ह्यर्दितायुगपद्रवेः।
जम्बूकग्रामसंवासः केतूनां च प्रदर्शनम्।।
काकानामकुलं रात्रौ कपोतानां दिवा यदि।
अकाले पुष्पिता वृक्षा दृश्यन्ते फलिता यदि।
कार्यं तच्छेदनं तत्र ततः शान्तिर्मनीषिभिः।
एवमाद्या महोत्पाता बहवः स्थाननाशदाः।।

इस प्रकार के अन्य भी जो बड़े -बड़े उत्पात दृष्टिगोचर होते हैं, वे स्थान (देश या ग्राम) का नाश करने वाले होते हैं। कितने ही उत्पात घातक होते हैं, कितने ही शत्रुओं से भय उपस्थित करते हैं। कितने ही उत्पातों से भय, यश, मृत्यु, हानि, कीर्ति, सुख-दुःख और की प्राप्ती भी होती हैं। यदि बल्मीक (दीपक की मिट्टी के ढेर) पर शहद दीख पड़े, तो धन की हानि होती हैं। इस तरह के सभी उत्पातों में यत्नपूर्वक कल्पोक्त विधि से शान्ति अवश्य कर लेनी चाहिए।

केचिन्मृत्युप्रदाः केचिच्छत्रुभ्यश्च भयप्रदाः।
मध्याद् भयं यशो मृत्युः क्षयः कीर्तिः सुखासुखम्।।
ऐश्वर्यं धनहानिं च मधुच्छन्नं च वाल्मिकम्।
इत्यादि च सर्वेषूत्पातेषु द्विजोत्तम।।
शान्ति कुर्यात् प्रयत्नेन कल्पोक्तविधिना शुभम्।।

छींक के शुभाशुभफल-विचार

मनुष्य के जीवन में छींक द्वारा भी शुभ और अशुभ शकुन की सूचना मिलती हैं। पुराणों में हिक्का (छींक) के शुभशुभ फलों का विवेचन प्राप्त होता हैं। गरूणपुराण में छींक के शुभ-अशुभ फलों का वर्णन मिलता हैं। वहाँ कहा गया हैं कि पूर्व दिशा में छींक होने पर बहुत बड़ा फल प्राप्त होता हैं। अग्निकोण में छींक होने पर शोक और सन्ताप तथा दक्षिण में छींक होने पर हानि उठानी पड़ती हैं। नैर्ऋत्यकोण में छींक होने पर शोक और सन्ताप तथा में छींक होने पर मिष्ठान की प्राप्ति और उत्तर में छींक होने पर कलह होता हैं। ईशान कोण में छींक होने पर मृत्यु के समान कष्ट प्राप्त

होना बतलाया गया हैं।

हिक्काया लक्षणं वक्ष्ये लभेत्पूर्वे महाफलम्।

आग्नेये शोकसन्तापौ दक्षिणे हानिमाप्नुयात्।।

नैर्ऋत्ये शोकसन्तापौ मिष्टान्नं चैव पश्चिमे।

अर्थं प्राप्नोति वायव्ये उत्तरकलहो भवेत्।।

ईशाने मरणं प्राक्तं हिक्कायाश्च फलाफलम्।।

इसी प्रकार नारदपुराण में यात्रा के समय के छींक का शुभाशुभ फल कथन करते हुए कहा गया है कि यात्रा के समय सभी दिशाओं की छींक निन्दित हैं। गौ की छींक घातक होती हैं, किन्तु बालक, वृद्ध, रोगी या कफ वाने मनुष्य की छींक निष्फल होती हैं।

बोध प्रश्न -

1. जिसमें कुछ लक्षणों को देखकर शुभाशुभ का विचार किया जाय, उसे क्या कहते है?
   क. प्रश्न ख. शकुन शास्त्र ग. मुहूर्त्त घ. संहिता
2. शकुन का शाब्दिक अर्थ होता है?
   क. पशु ख. मानव ग. पक्षी घ. कीट
3. अंग स्फुरण निम्न में किसका अंग है?
   क. प्रश्न शास्त्र का ख. संहिता का ग. शकुन का घ. कोई नहीं
4. पल्लीपतन का अर्थ है?
   क. कीट का गिरना ख. छिपकली का गिरना ग. मनुष्य का गिरना घ. कुछ नहीं
5. अग्नि पुराण के अनुसार शकुन के कितने भेद है?
   क. २ ख.३ ग.४ घ.५
6. दैवचिन्तक ज्योतिषियों द्वारा शकुन के कुल कितने भेद कहे गये है?
   क.५ ख.६ ग.७ घ.८
7. दीप्त और शान्त निम्न में किसके भेद कहे गये है।
   क. शकुन के ख. प्रश्न के ग. ग्रह के घ. नक्षत्र के
8. यात्रा के समय गौ की छिंक का शकुन फल क्या है।
   क. शुभ ख. घातक ग. अशुभ घ. मृत्युदायक
9. गौ का अचानक डकारने का फल क्या है।
   क. स्वामी को सुख प्राप्ति ख. गौ स्वामी पर संकट आना ग. धन प्राप्ति घ. कोई नहीं

4.6 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि 'शुभशंसि निमित्ते च शुकनं स्यात्रपुंसकम' इस वचन के अनुसार जिसमें कुछ लक्षणों को देखकर शुभाशुभ का विचार किया जाता है, उस शास्त्र को **शकुनशास्त्र** कहते है। शकुन का अर्थ पक्षी होता है, पक्षी से पशु तथा अन्य जीवों का भी बोध होता है। शकुन का दूसरा अर्थ निमित्त भी है, जिससे अंग-स्फुरण, छींक, पल्लीपतन, सरटाधिरोहण तथा अन्य लक्षणों द्वारा भविष्य का ज्ञान प्रात होता है। मनुष्यों के पूर्वजन्मार्जित जो शुभाशुभ कर्म हैं, उन कर्मो के शुभाशुभ फल को गमनकालिक शकुन प्रकाशित करता है। ज्योतिष में शकुन स्कन्ध का अप्रतिम स्थान है। ज्योतिषशास्त्र के प्रायः सभी स्कन्धों में शकुन का सर्वप्रथम प्राकटऋ हुआ होगा, क्योंकि जब आदि मानव ज्योतिष के गणित पक्ष से अनभिज्ञ रहा होगा, तब भी अंग- स्फुरण, पशु चेष्टा अथवा प्राकृतिक हलचलों से भविष्य का ज्ञान प्राप्त कर लेता होगा। अन्धकासुर के वध के समय भगवान् शंकर ने पशु–पक्षियों के अस्वाभाविक हलचल देखे थे, वे ही शकुन नाम से कहे गये हैं। पुनः तारकासुर से युद्ध के पूर्व स्वामि कार्तिकेय को भगवान् शंकर ने शकुन का उपदेश किया। जम्भासुर से युद्ध के लिए तैयार इन्द्र ने कश्यप ऋषि को तथा कश्यप ने गरूड जी को, गरूड ने अत्रि, गर्ग, भृगु, पराशर अदि मुनियों को शकुन का उपदेश किया है।

शकुन जानने वाले ज्योतिर्विदों को गणितादि की आवश्यकता नहीं पड़ती। पंचांग, फलित अथवा जन्मसमयादि के विना भी भविष्य का फल शकुन द्वारा जाना जाता है। वेद, पुराण, इतिहास, स्मृति तथा अन्य सभी भारतीय ग्रन्थों में कहीं न कहीं शकुन का वर्णन अवश्य प्राप्त होता है।

4.7 पारिभाषिक शब्दावली

शकुन – शकुन का शाब्दिक अर्थ है –पक्षी। दूसरा अर्थ निमित्त भी होता है।

पल्ली – छिपकली

अश्व – घोड़ा

गज – हाथी

गौ – गाय

पंचांग – तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण के समूह को पंचांग कहते है।

ज्योतिर्विद – ज्योतिष शास्त्र को जानने वाला

निमित्त – कारण

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. ग
4. ख
5. क
6. ख
7. क
8. ख
9. ख

4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहत्संहिता –
वशिष्ठ संहिता –
नारद संहिता –
अग्नि पुराण
अद्भुतसागर
ज्योतिष रहस्य

4.10 सहायक पाठ्यसामग्री

वृहत्संहिता –
वशिष्ठ संहिता –
नारद संहिता –
अग्नि पुराण
अद्भुतसागर
ज्योतिष रहस्य

4.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1.शकुन से आप क्या समझते है। स्पष्ट कीजिये।

2. शकुन के प्रकारों का उल्लेख कीजिये।

3. पुराण आधारित शकुन फल लिखिये।

4. वशिष्ठ संहिता के आधार पर शकुन का शुभाशुभ फल लिखिये।

5. पल्लीपतन विचार का उल्लेख कीजिये।

6. इकाई पर आधारित पशु-पक्षीयों के शुभाशुभ शकुन विचार का फल लिखें।

इकाई – 5 शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 स्वप्न परिचय
5.3.1 स्वप्न के प्रकार एवं कारण
5.3.2 भारतीय स्वप्न विद्याओं की विशेषता
5.4 स्वप्नकमलाकर ग्रन्थानुसार स्वप्न के शुभाशुभ फल विचार
5.5 पुराण एवं अन्य आधारित शुभाशुभ स्वप्न फल विचार
5.6 सारांश
5.7 पारिभाषिक शब्दावली
5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर
5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
5.10 सहायक पाठ्यसामग्री
5.11 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -202 के चतुर्थ खण्ड की पाँचवीं इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – शुभाशुभ स्वप्न फल विचार। इससे पूर्व आपने शकुन फल विचार से जुड़े विषय का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'स्वप्न' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

स्वप्न मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। वस्तुत: प्रत्येक मानव अपने जीवन में कभी-न कभी एक बार स्वप्न अवश्य देखता है। वेद-वेदांगों एवं पुराणों में कथित स्वप्न फल विचार का इस इकाई में आप विधिवत् अध्ययन करेंगे।

आइए इस इकाई में हम लोग 'स्वप्न' तथा उसके शुभाशुभ फलों के बारे में जानने का प्रयास करते है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- स्वप्न को परिभाषित कर सकेंगे।
- स्वप्न के प्रकार को समझा सकेंगे।
- स्वप्न आने वाले कारकों को जान लेंगे।
- स्वप्न के शुभाशुभ फल की मीमांसा कर सकेंगे।
- वेद,पुराण तथा ज्योतिष शास्त्र के आधार पर शुभाशुभ स्वप्न फल विचार ज्ञान की प्राप्ति कर लेंगे।

5.3 स्वप्न परिचय

संस्कृत वाङ्मय में स्वप्न विद्या को परा विद्या का अंग माना गया हैं। अतः स्वप्न के माध्यम से सृष्टि के रहस्यों को जानने का प्रयास भारतीय ऋषि, मुनि और आचार्यों ने किया हैं। फलतः भारतीय मनीषियों की दृष्टि में स्वप्न केवल जाग्रत दृश्यों का मानसलोक पर प्रभाव का परिणाम मात्र नहीं हैं न तो कामज या इच्छित विकारों का प्रतिफलन मात्र है।

सामान्य रूप से वेदान्त की विधा में कहा जाए तो स्वप्न लोक की तरह या दृश्य लोक क्षणभंगुर हैं। इससे स्वप्न का मिथ्यात्व सिद्ध होता हैं। रज्जु में सर्प का भ्रम कहा जाए तो स्वप्न में भिखारी का राजा होना भी भ्रम मात्र ही हैं; परन्तु स्वप्न को आदेश मानकर राजा द्वारा अपने राज्य का दान, स्वप्न में अर्जुन द्वारा पाशुपतास्त्र की दीक्षा प्राप्ति आदि उदाहरण भी भारतीय संस्कृति में देखने को मिलते हैं।

त्रिजटा ने जो कुछ स्वप्न में देखा उसको अपूर्व प्रमाण मानकर श्री हनुमान् जी ने लंका दहन किया। ये सब ऐसे उदाहरण हैं जो स्वप्न में विद्या को दैविक आदेश या परा अनुसंधान से जोड़ते हैं। स्वप्न चिन्तन जब शास्त्र का रूप ग्रहण करता है तो निश्चित ही उसकी चिन्तना पद्धति मूर्त से अमूर्त काल में प्रवेश कर जाती हैं।

5.3.1 स्वप्न के प्रकार एवं कारण

स्वप्नकमलाकर ग्रन्थ में स्वप्न को चार प्रकार का माना गया हैं- (1) दैविक स्वप्न (2) शुभ स्वप्न (3) अशुभ स्वप्न और (4) मिश्र स्वप्न।

दैविक स्वप्न को उच्च कोटि को साध्य मानकर इसकी सिद्धि के लिए अनेक मंत्र और विधान भी दिये गये हैं। स्वप्न उत्पत्ति के कारणों पर विचार करते हुए आचार्यों ने स्वप्न के नौ कारण भी दिये हैं- (1) श्रुत (2) अनुभूत (3) दृष्ट (4) चिन्ता (5) प्रकृति (स्वभाव) (6) विकृति (बीमारी आदि से उत्पन्न) (7) देव (8) पुण्य और (9) पाप।

प्रकृति और विकृति कारणों में काम (सेक्स) और इच्छा आदि का अन्तर्भाव होगा। दैवी आदेश वाले स्वप्न उसी व्यक्ति को मिलते हैं जो वात, पित्त, कफ त्रिदोष से रहित होते हैं। जिनका हृदय राग-द्वेष से रहित और निर्मल होता हैं।

देव, पुण्य और पाप भाव वाले तीन प्रकार के स्वप्न सर्वथा सत्य सिद्ध होते हैं। शेष छः कारणों से उत्पन्न स्वप्न अस्थायी एवं शुभाशुभ युक्त होते हैं।

मैथुन, हास्य, शोक, भय, मूत्रमल और चोरी के भावों से उत्पन्न स्वप्न व्यर्थ होते हैं-

रतोर्हासाच्च शोकाच्च भयान्मूत्रपुरीषयोः।
प्रणष्टवस्तुचिन्तातो जातः स्वप्नो वृथा भवेत्।।

आचार्य बृहस्पति के मतानुसार दश इन्द्रियाँ और मन जब निश्चेष्ट होकर सांसारिक चेष्टा से, गतिविधियों से पृथक् होते हैं तो स्वप्न उत्पन्न होते हैं। इस परिभाषा के अनुसार विदेशी विचारकों के इस कथन को बल मिलता हैं जिसमें वे स्वप्न का मुख्य कारण जाग्रत अवस्था के दृश्यों को मानते हैं-

सर्वेन्द्रियाण्युपरतौ मनो ह्युपरतं यदा।
विषयेभ्यस्तदा स्वप्नं नानारूपं प्रपश्यति।।

आचार्य बृहस्पति द्वारा प्रदत्त स्वप्न की यह अवस्था सूचित करती हैं कि प्रत्यक्ष रूप से शरीर का कोई भी भाग जब तक काम करता रहेगा स्वप्न नहीं आयेगा। यहाँ तक कि मन को भी शिथिल होकर निद्रित होना आवश्यक हैं। बच्चे जब स्वप्न को देखकर हंसते या रोते हैं तब धीरे से उनके शरीर को छूने मात्र से स्वप्न भंग हो जाता हैं। कुछ लोगों का मानना हैं कि प्रगाढ़ निद्रा की

अवस्था में स्वप्न नहीं आते। यह सिद्धान्त वाक्य नहीं हैं। निद्रा की प्रगाढ़ता में भी स्वप्न की तरंगे उठती हैं।

स्वप्न देखने के लिए चाक्षुष प्रत्यक्ष कारणों का होना आवश्यक नहीं हैं। यह सत्य हैं कि स्वप्न में उन्हीं वस्तुओं का दर्शन होता हैं जिन्हें हम जाग्रत अवस्था में कभी न कभ देखे हुए होते हैं; परन्तु दुर्लभ ही सही पर वैसे भी स्वप्न आते हैं जिन्हें हम कभी पूर्व प्रत्यक्ष नहीं मान सकते। उदाहरण के तौर पर अदृष्य पूर्व भूमि, दूसरे लोक के दृश्य, आकाश गंगा आदि। स्वप्नों का अवतरण मानस लोक से ही होता है, पर दैविक स्वप्न में मन उपकरण बनता हैं। अतः स्वप्न को मानस से अतिरिक्त व्यापार या मानस का व्यापार दोनों ही नहीं की सकते। ऋषियों ने स्वप्न को उतना ही सहज माना हैं जितने प्राकतिक घटनाओं को जैसे- सूर्यादय, सूर्यास्त। पाप पुण्य से उत्पन्न स्वप्न 'अपुर्व घटना' की कोटि में आते हैं।

स्वप्न में आवाजें आती हैं। इन आवाजों का दृश्य विहीनता के बावजूद स्वप्न कोटि में रखा जा सकता हैं ओर ये आवाजें कभी-कभी पूर्ण सत्य भी सिद्ध होती हैं। ऐसे स्वप्नों को कर्णेन्द्रिय प्रधान स्वप्न कह सकते हैं। स्वप्न देखने में सर्वाधिक बिम्ब चाक्षुष ही होते हैं। शेष इन्द्रियाँ चाक्षुष बिम्बों का सहयोग मात्र करती हैं। अतः प्रयोग बनता हैं स्वप्नद्रष्टा, स्वप्नजीवी, स्वप्नलोक आदि। जन्मान्ध व्यक्तियों को जो स्वप्न आते हैं या आयेगें वे अधिक मात्रा में दृश्यविहीन होंगे। स्वप्न लाल, पीले, काले, नीले, उजले रंगो से युक्त भी हो सकते हैं और रंगविहीन भी। इस प्रकार या कहा जा सकता है कि दृश्य प्रतीकों के बिना भी स्वप्न आ सकते हैं। स्वप्न का दर्शन, स्वप्न का श्रवण और स्वप्न का स्पर्शन भी हो सकता हैं। स्वप्न में हम महसूस कर सकते हैं कि हमारे बगल में कोई सोया हुआ है और कभी-कभी उसे स्वप्न मे ही छूकर आश्वस्त भी हो लेते हैं। स्वप्न सृष्टि के उस अवस्था विशेष का नाम हैं जो जग्रत या चेष्टित अवस्था के विपरीत काल में ही अवतरित होता हैं। स्वप्न अवतरण के काल अपना विशेष महत्व रखते हैं। जिस काल में स्वप्न आ रहा है वह काल उस स्वप्न की चरितार्थता को सिद्ध करता हैं। अतः काल के क्षण, घंटे, प्रहर, संधिकाल भविष्यत् अनुमान या कथन के लिए महत्वपूर्ण नियामक बनते हैं। एक रात को चार खण्ड में बाँट कर स्थूलतः तीन-तीन घंटे का एक याम या खण्ड मान सकते हैं। रात्रि का प्रविभाग निम्नलिखित प्रकार के कर सकते हैं-

(1) प्रदोषकाल (प्रथम प्रहर) से तीन धंटे तक

(2) अर्द्धरात्रि से पूर्व (द्वितीय प्रहर) तीन घंटे तक

(3) अर्द्धरात्रि से बाद (तृतीय प्रहर) के तीन घंटे तक और

(4) सूर्यादय से पूर्व (चतुर्थ प्रहर) तीन घंटे तब

(1) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न एक वर्ष के अंदर अपना फल देता हैं। (2) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न छः मास के अंदर अपना फल देता हैं। (3) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न तीन मास के अंदर अपना फल देता हैं। (4) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न एक वर्ष के अंदर अपना फल देता। ब्राहामुहूर्त्त में देखा गया स्वप्न उसी दिन अपना फल देता हैं।

अनिष्टकारी स्वप्नों को देखकर जो व्यक्ति सो जाता हैं और बाद में शुभ स्वप्नों को देखता है वह अशुभ फल नहीं प्राप्त करता। अतः अनिष्ट स्वप्न को देख कर फिर से सो जाना चाहिए-

अनिष्टं प्रथमं दृष्ट्वा तत्पश्चात् स्वपेत् पुमान्।

आचार्य बृहस्पति के मतानुसार रात्रि के प्रथम प्रहर में देखा गया स्वप्न एक वर्ष में तथा द्वितीय प्रहर में देखा गया स्वप्न आठ मास के अंदर, तृतीय प्रहर में देखा गया स्वप्न तीन मास में, चतुर्थ प्रहर में देखा गया स्वप्न एक मास में तथा अरूणोदय बेला या ब्राहामुहूर्त में देखा गया स्वप्न दश दिन के अन्दर अपना फल देता हैं-

स्वप्ने तु प्रथमे यामे संवत्सरविपाकिनः।
द्वितीये चाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके।।
चतुर्थयामे यः स्वप्नो मासे स फलदः स्मृतः।
अरुणोदयवेलायां दशाहेन फलं भवेत्।।

सूर्योदय काल में स्वप्न देखकर जाग जाने के बाद वह स्वप्न अपना तत्काल फल देता हैं। दिन में मन में सोच कर सोने के बाद यदि उसी का स्वप्न निर्देशात्मकि आया तो समझें यह स्वप्न शीघ्र ही अपना फल देगा।

प्रातः स्वप्नश्च फलदस्तत्क्षणं यदि बोधितः।
दिने मनसि यद् दृष्टं तत्सर्वच लभेद् ध्रुवम्।। (ब्रह्मवैवर्तमहापुराणम्, 77/7)

कफ प्रधान प्रकृति वाला व्यक्ति जल तथा जलीय पदार्थों का सर्वाधिक स्वप्न देखता हैं। वातप्रधान प्रकृति वाला व्यक्ति हवा में उड़ता हैं और ऊँचाई पर चढ़ता तथा ऊँचाई से कूदता हैं। पितृ प्रकृति वाला व्यक्ति अग्नि की लपटों, स्वर्ण तथा ज्वलित चीजों को देखता हैं।

5.3.2 भारतीय स्वप्न विद्या की विशेषता

भारतीय स्वप्नविदों ने दुःस्वप्न नाशन के लिए कुछ अपूर्व मंत्रों तथा उपायों को खोज रखा हैं। स्वप्न शास्त्र के सभी ग्रन्थों में प्रायशः ये विधान दिये गये हैं। रोग और सूक्ष्म आत्माओं के दुष्प्रभाव से उत्पन्न दुः स्वप्न नाश के लिए वेदों में भी मंत्र दिये गये हैं। इन मंत्रों के प्रभाव से निश्चित ही लाभ मिलता हैं।

इन उपायों को देखने मात्र से प्रतीत होता हैं कि भारतीय ऋषियों ने स्वप्न को दैवत सृष्टि का अंश मान कर उसे मनुष्य के जन्मान्तरार्जित पुण्य-पापों का प्रदर्शक या सूचक तत्व माना हैं।

स्वप्न विद्या में तात्कालिक मृत्यु या शीघ्र आने वाली मृत्यु के लक्षणों को भी दिया गया हैं। इससे सिद्ध होता हैं कि अपमृत्यु के सूचक लक्षण चाहे वे जिस कारण से उत्पन्न होते हों स्वप्न की परिधि में आते हैं।

दुःस्वप्न, दुःस्वप्न नाश और आसन्न मृत्यु लक्षण स्वप्न विद्या के अन्तर्गत आने वाले विषय हैं।

कुछ स्वप्नों की व्याख्या उनकी प्रकृति के आधार पर की जा सकती हैं। सभी प्रकार के सफेद पदार्थ स्वप्न में दिखने पर शुभ फल देते हैं कपास, भस्म, भात और मट्ठा को छोड़ कर। इसी प्रकार काली वस्तुएं गो, हाथी, देवता, ब्राहाम्ण और घोड़ा छोड़कर सभी प्रकार का अनिष्ट फल देती हैं-

सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि
कार्पास भस्मौद्गतक्रवर्ज्यम्।
सर्वाणि कृष्णान्यतिनिंदितानि
गोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्ज्यम्।।

संसार में जितने शुभ पदार्थ हैं वे आवश्यक नहीं कि स्वप्न में दिखलायी पड़ने पर शुभ फल ही दें। ठीक इसी तरह सभी प्रकार के अशुभ पदार्थ स्वप्न में दृष्ट होने पर प्रायशः शुभ फल के सूचक होते हैं-

लौकिकव्यवहारे ये पदार्थाः प्रायशः शुभाः।
सर्वथैव शुभास्ते स्युरिति नैव विनिश्चयः।।

5.4 स्वप्नकमलाकर के अनुसार स्वप्न का शुभाशुभ फल विचार-

स्वप्नकमलाकरः के प्रथमः कल्लोलः में मंगलम् वस्तुनिर्देशात्मकम् -

श्रीनृसिंहं रमानाथं गोकुलाधीश्वरं हरिम्।
वन्दे चराचरं विश्वं यस्य स्वप्नायितं भवेत्।
स्वप्नाध्यायं प्रवक्ष्यामि मुहान्ते यत्र सूरयः।
नानामतानि संचिन्त्य यथाबुद्धिबलोदयम्।।

मैं (ज्योतिर्विद् श्रीधर) भगवान् नृसिंह, श्री रमानाथ (श्री रामचन्द्र) तथा गोकुलपति भगवान् श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ, जिनकी उत्पत्ति से यह समग्र चर अचर विश्व स्वप्नायित हो रहा हैं।

नाना प्रकार के मतों (स्वप्न सम्बन्धित सिद्धान्तों) को अपने शास्त्रज्ञान स्वरूप बल तथा बुद्धि के प्रयोग से चयनित कर स्वप्नाध्याय की रचना कर रहा हूँ, जिसकी व्याख्या में बड़े-बड़े विद्वान भी मोहित हो जाते हैं।

स्वप्नं चतुर्विधं प्रोक्तं दैविकं कार्यसूचकम्।
द्वितीयं तु शुभस्वप्नं तृतीयमशुभं तथा।।
मिश्रं तुरीयमाख्यातं मुनिपुंगवकोटिभिः।
तत्रादौ दैविकस्वप्ने मन्त्रसाधनमुच्यते।।

स्वप्न चार प्रकार के कहे गये हैं- (1) दैविक स्वप्न जो कार्यसूचक होता हैं (2) शुभ स्वप्न (3) अशुभस्वप्न तथा (4) मिश्र स्वप्न यानि शुभाशुभ स्वप्न ऐसा अनेक प्राचीन श्रेष्ठ मुनियों का मत हैं।

प्रथम दैविक स्वप्न के लिए मन्त्रों के साधन भूत उपायों को प्रदर्शित किया जा रहा हैं।

तदादौ काल-यामानां विचारं कुर्महे वयम्।
तत्र च प्रथमे यामे स्वप्नं वर्षेण सिध्यति।।

प्रथमतया स्वप्न फल विचार हेतु स्वप्न-काल का विचार करते हैं। प्रथम याम में देखा हुआ स्वप्न एक वर्ष में फलीभूत होता हैं। दिवा-रात्रि में कुल 8 याम होते हैं। तीन घण्टे का एक याम होता हैं रात्रि में प्रथम याम में देखा हुआ स्वप्न एक वर्ष बीतते-बीतते अपना फल देता हैं।

द्वितीये मासषट्केन षड्भिः पक्षैस्तृतीयके।
चतुर्थे त्वेकमासेन प्रत्यूषे तद्दिनेन च।।

रात्रि के द्वितीय याम में देखा हुआ स्वप्न छः मास के अन्दर अपना फल देता हैं और तृतीय याम में देखा हुआ स्वप्न तीन माय के अन्दर फलीभूत होता हैं। रात्रि के चतुर्थ प्रहर में देखा स्वप्न एक मास के अन्दर प्रत्यक्ष फल देता हैं। ब्राम्हामुहूर्त का दृष्ट स्वप्न उसी दिन अपना फल दिखाता हैं।

गोरेणूच्छुरेण चाथ तत्कालं जायते फलम्।
स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत्।।

गौओं के चरने जाते समय (सूर्यादय से तत्काल पूर्व) देखा हुआ स्वप्न तत्काल फल देता हैं। रात्रि में देखे हुए स्वप्न को प्रातःकाल अपने गुरू से शुभाशुभ ज्ञान हेतु कहना चाहिए।

तमन्तरेण मन्त्रज्ञः स्वयं स्वप्नं विचारयेत्।

यानि कृत्यानि भावीनि ज्ञानगम्यानि तानि तु।।

यदि गुरू (स्वप्नवेत्ता) न हो तो स्वयं मंत्रज्ञ व्यक्ति को स्वप्न फल का विचार करना चाहिए। भविष्य में घटने वाली घटनायें ज्ञान द्वारा जानी जाती हैं।

आत्मज्ञानाप्तये तस्माद् यतितव्यं नरोत्तमैः।
कर्मभिर्देवसेवाभिः कामाद्यरिगणक्षयात्।।

अतः आत्मज्ञान के लिये श्रेष्ठ व्यक्ति को अनवरत प्रयत्नशील रहना चाहिए। यह आत्मज्ञान कर्म, देव सेवा और कामादि शत्रुओं के समूह के दमन से प्राप्त होता हैं।

द्वितीयः कल्लोलः

(स्वप्न कमलाकर के प्रथम कल्लोल में स्वप्नसिद्धि के विविध मंत्र और उनकी प्रक्रिया का प्रतिपादन किया गया हैं। इन मंत्रो के माध्यम से भूत-भावि-वर्तमान तीनों प्रकार के स्वप्नों का रहस्य जाना जा सकता हैं। द्वितीय कल्लोल में स्वप्न की प्रकृति और उसका कारण वर्णित हैं। इस कल्लोल में मात्र शुभस्वप्नों का ही फल कहा गया हैं।)

स्वप्नफलद्रष्टुर्योग्यता-

अथ नानाविधान् ग्रन्थान् समालोच्यावलोडय च।
अस्मिन् द्वितीये कल्लोले शुभस्वप्नफलं ब्रुवे।।
यस्य चित्तं स्थिरीभूतं समाधातुश्च यो नरः।
तत्प्रार्थितं च बहुशः स्वप्ने कार्यं प्रदृश्यते।।

अब क्रम प्राप्त द्वितीस कल्लोल में अनेक प्रकार के ग्रन्थों की समीक्षा कर तथा उनका आलोडन कर शुभस्वप्नों के शुभफल को की रहा हूँ। जिस मनुष्य का चित्त स्थिर हैं तथा जिस मनुष्य का शरीर समधातु (वात-कफ-पित्त रूप त्रिधातु) हैं यानि वात-पित्त और कफ की मात्रा संतुलित हैं। (स्वस्थ व्यक्ति में धातु सम होता हैं।) उसके द्वारा इचिछत या प्रर्थित स्वप्न प्रायशः कार्य की सूचना दे देता हैं। आशय यह है कि स्वप्न में दैवी आदेश उसी व्यक्ति को मिलता हैं जिसकी चित्तवृत्तियाँ और शरीर दोनों ही स्वस्थ हों।

स्वप्नकारणम्:-

स्वप्नप्रदा नव भुवि भावाः पुंसां भवन्ति हि।
श्रुतं तथानुभूतं च दृष्टं तत्सदृशं तथा।।
चिन्ता च प्रकृतिश्चैव विकृतिश्च तथा भवेत्।
देवाः पुण्यानि पापानीत्येवं जगतीतले।।

मनुष्य के फल को प्रदर्शित करने वाने नौ भाव पुथ्वी पर प्रसिद्ध हैं जैसे- (1) श्रुत (सुना हुआ), 2. अनुभूत (अनुभव किया हुआ), 3. दृष्ट (देखा हुआ), 4. चिन्ता (मानसिक द्वन्द्व से उत्पन्न), 5. प्रकृति (स्वभाव के कारण उत्पन्न), 6. विकृति (जो मूल का विलोम हो), 7 देव (देवता से प्रेरित या दृष्ट) 8. पुण्य (जप, तप, धर्मादि से दृष्ट), 9. पाप (हत्या, षडयन्त्र एवं अपराध के कारण दृष्ट)। इन्हीं नौ भावों के अनुरूप किसी भी मनुष्य को स्वप्न दिखलाई पड़ते हैं।

तन्मध्य आद्यं षट्कं तु शिवं वाशिवमप्यथ।
अन्त्यं त्रिकं तथा नृणामचिरात्फलदर्शकम्।।
प्राज्ञेन पुरूषेणेहावश्यं ज्ञेयः स्वचेतसि।
स्वप्नो विचार्यस्तस्यार्थस्तथा चैकाग्रचेतसा।।

इनमें से प्रारम्भ के छः संख्या तक के स्वप्नभाव शुभ या अशुभ दोनों प्रकार क फल देते हैं। अंतिम तीन स्वप्नभाव मनुष्यों के लिए यथाशीघ्र फलदायक होते हैं। बुद्धिमान् मनुष्य को एकाग्रचित्त होकर अपने मन में दृष्ट स्वप्न और उसके भविष्यत् अर्थ को गंभीरतापूर्वक अवश्य विचारना चाहिए।

व्यर्थस्वप्नः-

रतेर्हासाच्च शोकाच्च भयान्मूत्रपुरीषयोः।
प्रणष्टवस्तुचिन्तातो जातः स्वप्नो वृथा भवेत्।।

रति (मैथुन), हास्य, शोक, भय, मुत्र-मल और प्रणष्ट (चोरी गयी वस्तु) की चिन्ता से उत्पन्न स्वप्न व्यर्थ चला जाता हैं; अर्थात् उस समय स्वप्न का कोई तात्विक अर्थ नहीं रहता।

धातुक्षोभजनितस्वप्नफलम्-

कफप्लुतशरीरस्तु पश्येद् बहुजलाशयान्।
नद्यः प्रभूतसलिला नलिनानि सरांसि च।।

जिस शरीर में कफ की अधिकता हो वह स्वप्न में जलाशया को देखता हैं। प्रभूत (अधिक) जल वाली नदियों तथा कमल से युक्त सरोवरों को देखता हैं।

स्फटिकै रचितं सौधं तथा श्वेतं च गहरम्।
तारागणं च चन्द्रं च तोयदानां च मण्डलम्।।
रसांश्च मधुरान् दिव्यान् फलानि विविधानि च।
आज्यं यज्ञोपकरणं यज्ञमण्डपमुत्तमम्।।

कफाधिक्य से युक्त शरीर को स्फटिक के बने भव्य भवन, उज्जवल गुफायें, तारागण, चन्द्रमा और मेघों की पंक्तियाँ दिखलाई देती हैं। अनेक प्रकार के मधुर रस, दिव्य विविध प्रकार के फल, घृत, यज्ञ

की सामग्री तथा उत्तम यज्ञमण्डप आदि दिखलाई पड़ते हैं।

शुभालङ्काकरशालिन्यः पृथुलस्तनमण्डलाः।
सुलोचनाः पीनशक्थि च परिशोभितमध्यमाः।।
श्वेतवस्त्रैः श्वेतमाल्यैर्विकासन्त्यश्च योषितः।
पित्तप्रकृतिको यश्च सोऽग्निमिद्धं प्रपश्यति।।

(कफ प्रकृति वाले पुरूष को) शुभ अलंकारों से युक्त गृहिणियाँ दिखाती हैं; जिनके स्मनमण्डल प्रशस्त होते हैं। वे सुन्दर आँखों वाली होती हैं और उनके भरपूर मांसल जंघे होते हैं एवं सुन्दर कटिभाग से जो सुशोभित हो रही हों (वे दिखलाई देती हैं) अपने श्रेव्त वस्त्रों और श्रेव्त मालाओं से प्रकाश फैलाती महिलायें दिखलाई पड़ती हैं। पित्त प्रकृति वाला शरीर (व्यक्ति) प्रज्वलित अग्नि देखता हैं।

विद्युल्लतायाश्च तेजस्तथा पीतां वसुन्धराम्।
निशितानि च शस्त्राणि दिशो दावानलार्दिताः।।
फुल्लास्त्वशोकतरवो गांगेयंर चापि निर्मलम्।
किच प्ररूढकोपः संघातपातादिकाः क्रियाः।।

पित्त प्रधान व्यक्ति को विद्युल्लता (आकाशीय तथा कृत्रिम) का तेज तथा पीली पृथ्वी, अत्यन्त तीक्ष्ण शस्त्र, दवानल से व्याप्त दिशायें (पित्त प्रकृति वाले को) दिखलाई पड़ती हैं। प्रफुल्ल अशोक के वृक्ष, गड्डा, से सम्बन्धित निर्मल भूमि, तटादि अथवा क्रोध से आविष्ट तथा संघात चोट चपेट के कारण स्वयं को ऊँचाई से गिरना दिखलाई देता हैं।

करोत्यात्मैवेति पश्येज्जलं चापि पिबेद् बहु।
वातप्रकृतिको यश्च स पश्येतुङगरोहणम्।।
तुङगद्रमांश्च विविधान् पवनेन प्रकम्पितान्।
वेगगामितुरङांगश्च पक्षिभिर्गमनं स्वयम्।।1

बहुत मात्रा में जल का पीना, जल देखना, पित्त प्रकृति वाला व्यक्ति स्वप्न में देखता हैं। जो वात प्रकृति वाला व्यक्ति होता हैं वह स्वयं को ऊँचे स्थल पर चढ़ता हुआ देखता हैं। उच्च विविध वृक्षों को हवा से प्रकम्पित होता देखता हैं। वेगशाली घोड़ो को देखख हैं तथा पक्षियों के साथ स्वयं का गमन (उड़ना) देखता हैं।

उच्चसौधान् विवादं च कलहं च तथात्मनः।
आरोहणं च डयनमिति प्रकृतितो भवेत्।।

स्वप्नमिष्टं च दृष्ट्वा यः पुनः स्वपिति मानवः।
तदुत्पन्नं शुभफलं स नाप्नोतीति निश्चितम्।।

स्वप्न में ऊँचा भवन, कलह, अपने से सम्बन्धित विवाद, (शिखरों पर) चढ़ना, उढ़ना आदि पित्त प्रकृति के कारण दिखलाई देता हैं। अभीष्ट स्वप्न को देखकर जो व्यक्ति पुनः सो जाता हैं तो उसे दृष्ट स्वप्न का फल प्राप्त नहीं होता। ऐसा निश्चित मत हैं।

अतो दृष्ट्वा शुभस्वप्नं सुधिया मानवेन वै।
सूर्यसंस्तवनैर्नेयावशिष्टा रजनी पुनः।।
देवानां च गुरूणां च पूजनानि विधाय सः।
शंभोर्नमस्क्रियां कुर्यात् प्रार्थयेच्च शुभं प्रति।।

अतः बुद्धिमान् मनुष्य को निश्चित रूप से शुभस्वप्न देखने के बाद शेष रात्रि जागरणपूर्वक तथा सूर्य संस्तवनपूर्वक व्यतीत करनी चाहिए। शुभस्वप्न देखने के उस व्यक्ति को देवताओं तथा गुरूजनों की पूजा करनी चाहिए। भगवान् शिव को विधिवत् प्रणाम कर शुभ फल की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करनी चाहिए।

शुभस्वप्नफलम्-

स्वप्नमध्ये पुमान् यश्च सिंहाश्वगजधेनुजैः।
युक्तं रथं समारोहेत् स भवेत् पृथवीपतिः।।
श्वेतेन दक्षिणकरे फणिना दंश्यते च यः।
पंचरात्रे भवेत्तस्य धनं दशसहस्रकम्।।

स्वप्न में जो व्यक्ति अपने को सिंह, घोड़ा, हाथी, बैल से युक्त रथ पर चढ़ा हुआ देखता हैं वह राजत्व को प्राप्त करता हैं। जिस व्यक्ति के दक्षिण हाथ में सफेद सर्प काटता हैं वह पाँच रात के अन्दर दश हजार धन प्राप्त करता हैं। (यहाँ दशसहस्रकम् उपलक्षण है जिसका अर्थ है विपुल धन)।

मस्तकं यस्य वै स्वप्ने यश्च स्वप्ने च मानवः।
स च राज्यं समाप्नोति च्छिद्यते वा छिनत्ति वा।।
लिङगच्छेदे च पुरूषो योषिद्धनमवाप्नुयात्।
योनिच्छेदे कामिनी च पुरूषाद्धनमाप्नुयात्।।

जो मनुष्य स्वप्न में मस्तक काटे या जिसका मस्तक काटा जाय वे दोनों ही राज्य प्राप्त करते हैं। स्वप्न में यदि पुरूष लिंग को काटता देखे तो वह स्त्रीधन प्राप्त करता हैं। यदि स्त्री योनि भंग देखे तो पुरूष धन (या पुरूष से धन) प्राप्त करती हैं।

छित्रा भवेद्यस्य जिह्वा स्वप्ने स पुरूषोऽचिरात्।
क्षत्रियः सार्वभौमत्वमितरो मण्डलेशताम्।।
श्वेतदन्तिनमारूह्य नदीतीरे च यः पुमान्।
शाल्योदनं प्रभुङ्क्ते वै स भुङ्क्ते निखिलां महीम्।।

जिस व्यक्ति की स्वप्न में जिह्म कट जाये तो वह पुरूष (यदि) क्षत्रिय हैं शीघ्र ही सार्वभौमराजत्व को प्राप्त करता हैं। क्षत्रिय से इतर वर्ण का व्यक्ति मण्डलेश बनता हैं (छिनजिह्म के दर्शन से)। उजले हाथी पर चढ़कर जो व्यक्ति नदीतट पर दूध भात खाता है वह समग्र पृथ्वी का भोग करता है अर्थात् राजत्व प्राप्त करता हैं-

सूर्याचन्द्रमसोर्बिम्बं समग्रं ग्रसते च यः।
स प्रसह्य प्रभुङ्क्ते वै सकलां सार्णवां महीम्।।
यः स्वदेहोत्थितं मांसं परदेहोत्थितं च वा।
स्वप्ने प्रभुङ्क्ते मनुजः स साम्राज्यं समश्नुते।।

जो व्यक्ति स्वप्न में सूर्य और चन्द्रमा का संपूर्ण विम्ब ग्रस लेना हैं वह बलपूर्वक समुद्र सहित समग्र पृथ्वी का भोग करता हैं। जो व्यक्ति स्वप्न में अपने शरीर का मांस अथवा दूसरे के शरीर का मांस खाता है वह सामा्रज्य को संप्राप्त करता हैं।

प्रासाद श्रृङगमासाद्यास्वाद्य चात्रं स्वलंकृतम्।
अगाधेऽम्भसि यस्तीर्यात्स भवेत् मृथिवीपतिः।।
छर्दि पुरीषमथवा यः स्वदेत्र विमानयेत्।
राज्यं प्राप्नोति स पुमानत्र नास्त्येव संशयः।।

राजभवन के उच्च श्रृंग (चोटी) पर चढ़ कर जो व्यक्ति उत्तम पक्वान्न को खाता है अथवा जो व्यक्ति स्वप्न में अगाध जल में तैरता दिखलाई देता हैं वह पृथिवीपति यानि राजा होता हैं, स्वप्न में जो व्यक्ति वमन और विष्ठा को स्वाद लेकर खाता है, उसकी अभक्ष्य मानकर अवज्ञा नहीं करता वह व्यक्ति राज्य को प्राप्त करता हैं। इसमें संदेह नहीं हैं।

मूत्रं रेतः शोणितं च स्वप्ने खादति यो नरः।
तैरङागभ्यञजनं यश्च कुरुते धनवान् हि सः।।
नलिनीदलशय्यायां निषण्णः पायसाशनम्।
यः करोति नरः सोऽत्र प्राज्यं राज्यं समश्नुते।।

जो व्यक्ति स्वप्न में मूत्र, रेत (वीर्य या रज) एवं रक्त को खाता है तथा शरीर के अंगों में

उबटन या तेल लगाता हैं वह धनवान् होता हैं। कमल के पत्रों पर बैठकर जो व्यक्ति खीर को खाता है वह प्रकृष्ट एवं विशाल राज्य को प्राप्त करता हैं।

फलानि च प्रसूनानि यः खादति च पश्यति।
स्वप्ने तस्याङगणे लक्ष्मीर्लुठत्येव न संशयः।।
यः स्वप्ने चापसंयोगः बाणस्य कुरुते सुधीः।
सर्वं शत्रुबलं हन्यात्तस्य राज्यमकण्टकम्।।

स्वप्न में जो व्यक्ति फलों और फूलों को खाता है या देखता है, उसके आँगन में लक्ष्मी लोटती हैं। इसमें संदेह नहीं करना चाहिए। स्वप्न में जो व्यक्ति धनुष की डोरी पर बाण का संधान करता हैं वह अपने शत्रुओं को मारकर निष्कंटक राज्य प्राप्त करता हैं।

स्वप्ने परस्य योऽसूयां वधं बन्धनमेव च।
यः करोति पुमान् लोके धनवान् जायते तु सः।।
स्वप्ने यस्य जयो वै स्याद्रिपूणां च पराजयः।
स चक्रवर्ती राजा स्यादत्र नास्त्येव संशयः।।

जो दूसरे से द्वेष करता हैं, वध या बन्धन करत हैं वह धनवान् होता हैं। स्वप्न में जीत हो व शत्रु की हार तो निश्चय ही व्यक्ति चक्रवर्ती राजा बनता हैं।

रौप्ये वा का´चने पात्रे पायसं यः स्वदेन्नरः।
तस्य स्यात् पार्थिवपदं वृक्षे शैलेऽथवा स्थिरः।।
शैलग्रामवनैर्युक्तां भुजाभ्यां यो महीं तरेत्।
अचिरेणैव कालेन स स्याद्राजेति निश्चितम्।।

चाँदी या सोने के पात्र में जो व्यक्ति खीर का आस्वाद लेता है वह राज्यत्व को प्राप्त करता हैं। ठीक यही फल (राज्यत्व) वृक्ष या पर्वत पर स्वप्न में चढ़ने का होता हैं। पर्वत-जंगल से युक्त पृथ्वी को अपनी भुजाओं से तैरकर जो व्यक्ति पार करता हैं वह शीघ्र ही राज्यत्व को प्राप्त करता हैं।

यः शैलंगङगमारूह्योत्तरति श्रममन्तरा।
स सर्वकृतकृत्यः सन् पुनरायाति वेश्मनि।।
विषं पीत्वा मृति गच्छेत् स्वप्ने यः पुरुषोत्तमः।
स भोगैर्बहुभिर्युक्तः क्लेशाद् रोगाद् विमुच्यते।।

तृतीयः कल्लोलः

अशुभस्वप्नफलम्-

अतः परं प्रवक्ष्यामि स्वप्नानां फलमन्यथा।
यतो ज्ञास्यन्ति भूलोकेऽशुभं यत्स्वल्पबुद्धयः।।
आयुधानां भूषणानां मणीनां विदू्रमस्य च।
कलकानां च कुप्यानां हरणं हानिकारकम्।।

शुभ स्वप्न प्रकरण के पश्चात् स्वप्न के अन्यथा फल को कहूँगा जिसे जानकर अल्पबुद्धि वाले मनुष्य पृथ्वी लोक में अशुभ फल को जान सकेंगे। स्वप्न में हथियारो, आभूषणों, मणियों, मूँगा, स्वर्ण तथा ताम्बे का हरण या चोरी अशुभ फल (हानि) को देता है।

हास्ययुक्तं नृत्यशीलं वित्रस्तं केशवर्जितम्।
स्वप्ने यः पश्यति नरं स जीवेन्मासयुग्मकम्।।
कर्णनासाकरादीनां छेदनं पङकमज्जनम्।
पतनं दन्तकेशानां बहुमांसस्य भक्षणम्।।

हँसता हुआ, नृत्य करता हुआ, लम्बे चौड़े तथा बालरहित मनुष्य को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है वह दो मास तक जीवित रहता है। कान, नाक, भुजाओं का कट जाना, कीचड़ में डूबना, दाँतों और बालों का गिरना, अत्यधिक मांस खाना-

गृहप्रसाद-भेदं च स्वप्नमध्ये प्रपश्यति।
यस्तस्य रोगबाहुल्यं मरणं चेति निश्चयः।।
अश्वानां वारणानां च वसनानां च वेश्मनाम्।
स्वप्ने यो हरणं पश्येत्तस्य राजभयं भवेत्।।

मकान (घर) का राजमहल का फट जाना जो व्यक्ति स्वप्न के बीच देखता है वह अनेक रोगों से घिर जाता है अथवा उसकी मृत्यु हो जाती हैं। ऐसा निश्चित समझना चाहिए। घोड़ो का, हाथियों का, वस्त्र का तथा भवन स्थान आदि का हरण (लूटपाट) जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है उसको राजभय उत्पन्न होता हैं।

स्वस्यवपत्नभिहारे च लक्ष्मीनाशो भवेद् धु्रवम्।
स्वप्यापमाने संक्लेशो गोत्रस्त्रीणां च विग्रहः।।
स्वप्नमध्ये यस्य पुंसो ह्रियते पादरक्षणम्।
पत्नी च म्रियते यस्य च स्याद्देहेन पीड़ितः।।

जो व्यक्ति स्वप्न में अपनी पत्नी का हरण देखता है उसका धन निश्चित नाश को प्राप्त करता है। अपना (स्वयं का) अपमान देखना क्लेश उत्पन्न करता है तथा संगोत्रा महिलाओं से कलह

कराता हैं। जो स्वप्न में अपने जूता की चोरी देखता है अथवा पत्नी की मृत्यु (स्वप्न में) देखता है उसका शरीर रोग से पीड़ित हो जाता हैं यानि वह व्यक्ति शरीर कष्ट को प्राप्त करता हैं।

स्वप्ने हस्तद्वयच्छेदः यस्य स्यात्स नरो भुवि।
माता-पितृ-विहीनः स्याद् गवां वृन्दैश्च मुच्यते।।
दन्तपाते द्रव्यनाशः नासाकर्णप्रकर्तने।
फलं तदेव व्याख्यातमत्र नास्त्येव संशयः।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति के दोनों हाथ कट जाते हैं वह पृथ्वी पर माता-पिता से हीन हो जाता हैं। साथ ही उसका गायों का समूह भी नष्ट हो जाता हैं। यदि स्वप्न में दाँव गिरे तो धन नाश होता हैं, नाक-कान कटने पर भी धननाश समझना चाहिए। इस स्वप्न के फल में तनिक भी सन्देह नहीं करना चाहिए।

चक्रवातं च यः पश्येदङेग वातं च यः स्पृशेत्।
शिखा चोत्पाटयते यस्य स म्रियेताचिराद्ध्रुवम्।।
स्वप्नमध्ये यस्य कर्णे गोमीगोधाभुजङगमाः।
प्रविशन्ति पुंसां कर्णे रोगेण स विनश्यति।।

5.5 पुराण आधारित शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

अग्निपुराण के अनुसार शुभाशुभ स्वप्न फल -

क्रम	स्वप्न	स्वप्नफल
1.	नाभि के अतिरिक्त अंगों से तृण व वृक्ष का उगना	अशुभ सूचक
2.	सिर पर कांस्य या सीसा का टूटना	अशुभ सूचक
3.	मुण्डन देखना	अशुभ सूचक
4.	अपने को नग्न देखना	अशुभ सूचक
5.	मलिन वस्त्र पहनना	अशुभ सूचक
6.	उबटन लगाना	रोग ग्रस्त होना
7.	कीचड़ में फँसना	विपत्ति में फंसना
8.	ऊँचाई से गिरना	विपत्ति में फंसना
9.	अपना विवाह देखना	विपत्ति में फंसना

10.	गीत गाना	अशुभ सूचक
11.	वीणा बजाते हुए मजाक करना	अशुभ सूचक
12.	हंसी-मजाक करना	अशुभ सूचक
13.	झूला झूलना	अशुभ सूचक
14.	कमल पुष्प प्राप्त करना	अशुभफलकारी
15.	लोहा या लौहसामग्री प्राप्त करना	अशुभफलकारी
16.	सर्प मारना	अशुभफलकारी
17.	लाल पुष्प से लदा वृक्ष देखना	अशुभफलकारी
18.	चाण्डाल का देखना	अशुभफलकारी
19.	सूअर, कुत्ता, गदहा, ऊँट पर चढ़ना	मृत्युभय उत्पन्न होना
20.	पंक्षियों का माँस खाना	मृत्युभय उत्पन्न होना
21.	तेल पीना, खिचड़ी खाना	मृत्युभय उत्पन्न होना
22.	माता के पेट में प्रवेश करना	विपत्तिकारी
23.	चिता पर चढ़ना या लेटना	मृत्युभयकारी
24.	इन्द्रध्वज को टूटते देखना	विपत्तिकारी, राज्यनाशक
25.	सूर्य-चन्द्रमा का टूटकर गिरते देखना	विपत्तिकारी
26.	दिव्य अन्तरिक्ष तथा भूमिज उत्पात को देखना	अशुभसूचक
27.	देवता, ब्राहमण और राजा को क्रोधित देखना	अशुभसूचक
28.	स्वप्न में नाचना तथा हँसना	अशुभसूचक
29.	स्वप्न में अपना विवाह देखना	अशुभसूचक
30.	विवाह का गीत सुनना	अशुभसूचक
31.	तंत्रीवाद्य (वीणा) रहित अन्य वाद्यों को बजाना	अशुभसूचक
32.	जलस्त्रोत को नीचे गिरते देखना	अशुभसूचक
33.	गोबर सने जल में स्नान करना	विपत्तिकारक
34.	कीचड़ के जल से स्नान करना	विपत्तिकारक
35.	स्याही से स्नान करना	अशुभसूचक
36.	कुमारी कन्या का आलिंगन करना	विपत्तिकारक
37.	पुरुषों का मैथुन देखना	अशुभसूचक

38.	अपने अंगों को अलग होते देखना	अशुभसूचक
39.	उल्टी-दस्त देखना	अशुभसूचक
40.	दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान करना	मृत्युभयकारी
41.	अपने को रोगग्रस्त देखना	मृत्युभयकारी
42.	फलों का नाश देखना	अशुभसूचक
43.	धातु छेद या नाश देखना	अशुभसूचक
44.	ग्रहों को टूटते देखना	रोगविपत्ति में फँसना
45.	घर में झाड़ू लगाना	रोगविपत्ति में फँसना
46.	पिशाच, राक्षस, बंदर, चाण्डाल के साथ खेलना	रोगविपत्ति में फँसना
47.	शत्रु से पराजित होते देखना	अशुभसूचक
48.	शत्रु द्वारा विपत्ति में फँसना	अशुभसूचक
49.	दुर्व्यसन (नशाखोरी) में फँसना	अशुभसूचक
50.	कषाय वस्त्र पहनना	अशुभसूचक
51.	कषाय वस्त्र से खेलना	अशुभसूचक
52.	तेल पीना, तेल में स्नान करना	विपत्ति में फँसना
53.	लाल फूल की माला पहनना	अशुभसूचक
54.	रक्त चन्दन का लेप करना	अशुभसूचक
55.	स्वप्न में पर्वत, महल, हाथी, घोड़ा बैल पर चढ़ना	शुभफलकारी
56.	आकाश में सफेद फूल एवं सफेद वृक्षों को देखना	शुभफलकारी
57.	नाभी में तृण एवं वृक्ष उत्पन्न होना देखना	शुभफलकारी
58.	शरीर में अनेक भुजाओं को उत्पन्न होना देखना	शुभफलकारी
59.	अनेक शिर को देखना	शुभफलकारी
60.	सफेद बाल को देखना	शुभफलकारी
61.	सफेद पुष्पमाला धारण करना	शुभफलकारी
62.	सफेद वस्त्र धारण करना	शुभफलकारी
63.	चन्द्रमा-सूर्य-ताराओं को पकड़ना	शुभफलकारी
64.	चन्द्र-सूर्य-तारा को साफ करना	शुभफलकारी
65.	इन्द्रध्वज का आलिंगन करना	शुभफलकारी

66.	ध्वज फहराना	शुभफलकारी
67.	पृथ्वी से फूटती जलधारा को पकड़ना	शुभधनदायी
68.	जलधारा को रोकना	शुभधनदायी
69.	शत्रुओं को पराजित करना	विजय एवं धनदायी
70.	कलह तथा जुआ में विजयी होना	विजय एवं धनदायी
71.	युद्ध में विजयी होना	विजय एवं धनदायी
72.	ताजा माँस खाना	शुभ एवं धनदायी
73.	खीर खाना	शुभ एवं धनदायी
74.	रक्त (खेन) को देखना	शुभ एवं धनदायी
75.	रक्तस्नान करना	शुभ एवं धनदायी
76.	सोम-लता का रसपान करना	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
77.	रक्तपान करना	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
78.	मदिरा पान करना	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
79.	दूध पीना	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
80.	पृथ्वी पर अस्त्र चलाना	विजय एवं समृद्धि पाना
81.	निर्मल आकाश देखना	शुभफलकारी
82.	भैंस-गाय-सिंहनी-हथिनी-घोड़ी के स्तनों को मुख से पीना	राज्यतुल्य समृद्धि प्राप्ति
83.	देवता-ब्राहमण-गुरु को प्रसन्न देखना	धनसमृद्धि की प्राप्ति
84.	स्वयं का जलाभिषेक देखना	राज्यतुल्य समृद्धि प्राप्ति
85.	श्रृंगी द्वारा दुग्धाभिषेक देखना	राज्यतुल्य समृद्धि प्राप्ति
86.	चन्द्रमा से बहते जल द्वारा अपना अभिषेक देखना	राजत्व प्राप्ति
87.	अपनी मृत्यु देखना	शुभत्वप्राप्ति, आयुवृद्धि
88.	दूसरे द्वारा अग्नि प्राप्त करना	राज तथा धनप्राप्ति
89.	अग्निदेव द्वारा गृहदाह देखना	शुभत्व प्राप्ति
90.	छत्र तथा चामरों को प्राप्त करना	राजत्व प्राप्ति
91.	वीणावादन द्वारा अपना अभिवादन देखना	राज तथा शुभत्वप्राप्ति
92.	स्वप्न के अन्त में राजा-हाथी-घोड़ा-स्वर्ण-वृष-गो को देखना	पुत्रप्राप्ति की सूचना
93.	बैल तथा हाथी पर चढ़ना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक

94.	छत तथा पर्वत पर चढ़ना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक
95.	वृक्ष पर चढ़ना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक
96.	स्वप्न में रोना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक
97.	गोघृत तथा विष्ठा का शरीर में लेपन करना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक
98.	अगम्या स्त्री के साथ गमन करना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक

मत्स्यपुराण के अनुसार स्वप्न का शुभाशुभ फल विचार

99.	घोड़ों को मारना	अशुभ-पराजयसूचक
100.	आकाशमण्डल को लाल देखना	अशुभ-पराजयसूचक
101.	भालू पर चढ़ना	मृत्यु-पराजयसूचक
102.	जलाशय में स्नान करके यात्रा करना	मृत्यु-पराजयसूचक
103.	मकानों को ढहते देखना	अशुभ-धनहानिसूचक
104.	मकानों की धुलाई पुताई देखना	अशुभ-धनहानिसूचक
105.	भालू तथा मनुष्य के साथ क्रीड़ा करना	अशुभसूचक
106.	परस्त्री से अपमानित होना	अशुभसूचक
107.	परस्त्री के कारण रोग होना	अशुभ एवं रोग सूचक
108.	परस्त्री से क्रीड़ा करना	अशुभ एवं रोग सूचक
109.	पृथ्वी तथा समुद्र को ग्रास बनाना	शुभ एवं राजप्रदायी
110.	पृथ्वी एवं आकाश को आँतों से लपेटना	राजत्वसूचक
111.	गायों को जल से स्नान करना	राज्यलाभसूचक
112.	पर्वत शिखर तथा चन्द्रमा पर से गिरना	राज्यलाभसूचक
113.	अपना राज्याभिषेक देखना	राज्यलाभसूचक
114.	जल में तैरना	सम्पत्तिप्राप्ति सूचक
115.	पहाड़ा लाँधना	सम्पत्तिप्राप्ति सूचक
116.	हाथी-घोड़ा-गाय का घर में प्रसव देखना	संतान, धनप्राप्ति सूचक
117.	शुभ एवं पूज्य स्त्रियों को प्राप्त करना तथा उनका आलिंगन करना	शुभसूचक
118.	जंजीर से शरीर को बाँधा जाना	शुभ एवं राज्यप्राप्तिसूचक
119.	जीवित राजा से मिलना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति
120.	जीवित मित्र से मिलना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति

121.	जलाशयों को देखना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति
122.	देवताओं को देखना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार शुभाशुभ स्वप्न फल विचार -

123.	गाय-हाथी-घोड़ा-राजमहल-पर्वत तथा वृक्षों पर चढ़ना	धनलाभकारी
124.	भोजन करना, रोना, गोद में वीणा लेकर बजाना	कृषिभूमि का लाभ
125.	शस्त्र और अस्त्र से घायल होना	धनप्राप्तिकारक
126.	शरीर में फोड़ा होना	प्रबल धनागमकारी
127.	शरीर में क्रिमी (कीड़ा) पड़ना	प्रबल धनागमकारी
128.	विष्ठा और खून से सन जाना	प्रबल धनागमकारी
129.	अगम्यागमन करना	सुन्दरपत्नी प्राप्त कारक 24,
130.	मूत्र-मल से सन जाना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
131.	वीर्यपान (भक्षण) करना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
132.	नरक में प्रवेश करना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
133.	नगर में प्रवेश करना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
134.	रक्त-समुद्र-अमृत को पीना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
135.	हाथी-राजा-स्वर्ण-बैल-गाय को प्राप्त करना	कुटुम्बकीर्तिविपुलधनलाभ 24,
136.	दीपक-अन्न-कन्या-फल-फूल-छत्र-ध्वज -रथ को देखना	कुटुम्ब-कीर्ति-विपुलधनलाभ
137.	जल से भरा घड़ा देखना	श्रीवृद्धिकारक
138.	ब्राहमण-शुभअग्नि (हवन) फूलपान, मंदिर को देखना	श्रीवृद्धिकारक
139.	सफेद अन्न देखना	श्रीवृद्धिकारक
140.	नट तथा वेश्या को देखना	श्रीवृद्धिकारक
141.	गोदुग्ध-गोघृत देखना	धन एवं पुण्यप्राप्तिकारक
142.	खीर-कमलपत्र-दही-दूध-घी-मधु (पंचामृत) तथा शुभमिष्ठान्न (मालपूआ, मोहनभोग आदि)	राजपद की सुनिश्चितप्राप्ति
143.	पक्षियों का मांस खाना	अत्यधिक एवं शुभवार्ताप्राप्ति
144.	छत्र-पादुका प्राप्त करना	धन-धान्यप्राप्ति
145.	निर्मल एवं तीक्ष्णतलवार को देखना	धन-धान्यप्राप्ति
146.	आसानी से नदी पार करना	प्रधान (उच्च) बनना

147. फलदार वृक्ष देखना — निश्चित धनप्राप्ति
148. सर्पद्वारा काटा जाना — अर्थलाभ
149. सूर्य-चन्द्रमा के मण्डल को देखना — रोग-कारगार मुक्ति
150. घोड़ी-मुर्गी-क्रौंची को देखना — सुन्दरपत्नी प्राप्तिकारक
151. जंजीर से बंधा देखना — प्रतिष्ठा एवं पुत्रप्राप्तिकारक
152. नदीतट पर दही-भात तथा खीर को कमलपत्र पर खाना — राजा बनने की सूचना
153. फटे कमलपत्र पर खाना — राजा बनने की सूचना
154. जोंक-बिच्छू-सर्प को देखना — धन-पुत्र-विजय-प्रतिष्ठालाभ
155. सिंहधारीपशु, दाँत से काटने वाले पशु, सुअर, वानर से पीड़ित होना — राजा होकर विपुल धनलाभ
156. मछली-माँस-मोती-शंख-चंदन-हीरा को देखना — विपुलधनप्राप्तिकारक
157. मदिरा-खून-स्वर्ण देखने के बाद विष्ठा देखना — धनप्राप्तिकारक
158. शिवलिंग-शिवप्रतिमा देखना — विजय एवं धनप्राप्तिकारक
159. फला-फुला बिल्ववृक्ष देखना — धनप्राप्तिकारक
160. फला-फुला आम्रवृक्ष देखना — धनप्राप्तिकारक
161. जलती अग्नि (हवनाग्नि) देखना — श्री-लक्ष्मी प्राप्ति

स्वप्नकमलाकर (द्वितीय कल्लोल) के अनुसार शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

162. सिंह, अश्व, गो, हाथी युक्त रथ पर चढ़ना — राजा बनने की सूचना
163. दाहिने हाथ में सफेद सर्प द्वारा काटा जाना — पाँच रात के अन्दर 10 हजार स्वर्णमुद्राप्ति
164. मस्तक काटना या कटना — राज्य प्राप्ति
165. लिंग कटना — स्त्री प्राप्ति
166. योनि कटना — पुरुष प्राप्ति
167. जिहा कटना — सार्वभौम राज्यप्राप्ति
168. नदी तट पर सफेद-हाथी पर चढ़कर दूध-भात खाना — समस्त पृथ्वी का अधिपति बनना
169. सूर्य, चन्द्र के सम्पूर्ण बिम्ब को खा जाना — बलपूर्वक राज्य जीतना
170. मनुष्य का मांस खाना — साम्राज्य लाभ
171. महल के कंगूरे पर चढ़ना — राजा बनने का योग
172. अगाध जल में तैरना — राजा बनने का योग

173.	विष्टा या वमन खाना	राज्य प्राप्ति
174.	मूत्र, रज, वीर्य या रक्त को खाना	धनवान् होने का योग
175.	मूत्र, रज, वीर्य, रक्त को शरीर में लपेटना	धनवान् होने का योग
176.	कमल के पत्ते पर बैठकर खीर खाना विशाल	राज्य की प्राप्ति
177.	फल, फूल खाना	धनी होना
178.	धनुष की डोरी पर बाण चढ़ाना	शत्रुसंहार एवं निष्कंटक राज्य
179.	दूसरे से द्वेष करना, मारना या बंदी बना लेना	धनवान् होने का योग
180.	स्वर्ण या चाँदी के पात्र में खीर खाना	राज्यत्व लाभ
181.	वृक्ष या पर्वत रोहण	राज्य लाभ
182.	पर्वत, ग्राम एवं वन को तैरना	शीघ्र राज्य लाभ
183.	पर्वतशिखर पर चढ़कर आसानी से उतरना	सकुशल घर लौटना
184.	विष पीकर मरना	क्लेश रोग से मुक्ति
185.	रोली लगाकर विवाह देखना	धनधान्य प्राप्ति
186.	खून में स्नान या खून पीना	धनी होना
187.	सिर काटना या कटना	1 हजार स्वर्णमुद्रा लाभ
188.	स्वयं या दूसरे की जिह्व पर लिखना	विद्या प्राप्ति एवं धार्मिक राजा बनना
189.	पुरुष अपने को स्त्री रूप में देखे	उत्तम प्रीति की प्राप्ति
190.	स्त्री अपने को पुरूष रूप में देखे	उत्तम प्रीति की प्राप्ति
191.	पागल हाथी पर बिना डरे चढ़ना	अतुल धन प्राप्ति
192.	घोड़े पर चढ़कर दूध पीना	राजा बनने की सूचना
193.	पहले राजा, पुनः चोर, पुनः राजा	राजा या राज्यतुल्य बनना
194.	अंगों में मूत्र-विष्ठा से सन जाना	राजत्व प्राप्ति की सूचना
195.	शमशान में अपना घर देखना	राजत्व प्राप्ति की सूचना
196.	सफेद बैल की गाड़ी पर चढ़कर पूर्व या उत्तर जाना	राजत्व प्राप्ति की सूचना
197.	शरीर को बालरहित देखना	लक्ष्मी प्राप्ति की सूचना
198.	पुराना घर ढहाकर नया बनाना	रोगनाश
199.	नीले रंग की गाय, धनुष या जूता प्राप्त करना	विदेश से घर लौटना
200.	गुदामार्ग से जलपान करना	विपुल धन-धान्य प्राप्त करना

201.	पैर से मस्तक तक बेड़ी से बंधना	पुत्ररत्न की प्राप्ति
202.	गाँव या नगर को घेरना	गाँव या मण्डल का मुखिया बनना
203.	खाई में गिरकर निकलना	सद्बुद्धि की प्राप्ति
204.	गोद में फल फूल देखना	प्रतिदिवसीय धनप्राप्ति
205.	मक्खी, मच्छर, खटमल से घिरना	सुंदर, उत्तम पत्नी की प्राप्ति
206.	नदी, कमल, उद्यान या पर्वत देखना	शोक मुक्त होना
207.	पीला फल, लाल फूल मिलना	स्वर्णलाभ
208.	पद्मरागमणि (पुखराज) प्राप्त करना	लक्ष्मी, सरस्वती को प्राप्त करना
209.	श्वेत वस्त्र युक्त नारी देखना	लक्ष्मी आगमन
210.	कुंडल, मोती-माला, मुकुट देखना	राजा बनने का योग
211.	सफेदवस्त्र धारिणी द्वारा आलिंगन	अपूर्व लक्ष्मी प्राप्ति
212.	मृत्यु एवं रुदन देखना	सुखों से घिरना
213.	आंगन में कोई अंजली में फूल इकट्ठा करे	लक्ष्मी तथा राज्य की प्राप्ति

शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

क्रम संख्या	शुभ स्वप्न	क्रम संख्या	अशुभ स्वप्न
1.	ब्राहमण बालक को देखना	1.	अत्यन्त वृद्धा और काले शरीर वाली या नंगी स्त्री का नाचना
2.	आभूषणों से विभूषित, पति पुत्रों से युक्त या सफेद वस्त्रवाली सुन्दरी स्त्री देखना	2.	खुले केशवाली शूद्रा या विधवा देखना
3.	ब्राहमण, राजा, देवता, गुरु	3.	सिर और छाती पर ताड़ के या कोई भी काले रंग के फलों का गिरना
4.	सफेद कमल, सरोवर, राजहंस	4.	मैला कुचैला, विकत आकार तथा रूखे केशवाले म्लेच्छ या गलित कुष्ट से युक्त नंगा शूद्र देखना
5.	सूर्य, चन्द्र, तारे, इन्द्र-धनुष	5.	सधवा, पुत्रवती, सती स्त्री या शिखा खोले ब्राहमण का रोष, कुपित गुरु, संन्यासी या वैष्णव को देखना
6.	फल फूलयुक्त आम, नीम, नारियल, विशाल मदार या केला का वृक्ष	6.	घड़े का फोड़ा जाना

7.	सफेद साँप का काटना	7.	अंगार, भस्म या रक्त की वर्षा
8.	महल, पर्वत, वृक्ष, सिंह, हाथी, घोड़ा या नाव देखना या उन पर चढ़ना	8.	वानर, कौवा, कुत्ता, भालू, सुअर, गदहा, बैल, भैंस गीध, कंक, घड़ियाल, सियार देखना
9.	वीणा बनाना	9.	नंगी स्त्री का नृत्य
10.	प्रियान्न दही, दूध, खीरादि खाना	10.	अपने शरीर में किसी का तेल लगाना
11.	स्वयं के अंगों में कोड़े या विष्टा लगना	11.	नृत्य गीत युक्त विवाहोत्सव देखना
12.	रोते रहना	12.	सूर्य चन्द्र निस्तेज या ग्रहण लगा हुआ देखना
13.	हाथों में सफेद धान्य, सफेद फूल दिखाई देना	13.	उल्कापात, धूमकेतु, भूकम्प, राष्ट्र-विप्लव, आँधी, तूफान आदि उत्पात देखना
14.	अपने को चंदन-चर्चित देखना	14.	वृक्ष की डालियाँ, पर्वत-श्रृंग, सूर्य-चन्द्र-मण्डल या तारे टूटते दिखाई देना
15.	अपने को समुद्र में देखना	15.	हाथ से दर्पण, दण्डादि का गिरकर टूटना
16.	रक्त से स्नान, शरीर में रक्त लगा देखना	16.	गले का हार या माला आदि का टूटना
17.	अपना अंग छिन्न-भिन्न या क्षत-विक्षत देखना	17.	काले वस्त्रयुक्त किसी व्यक्ति को अपना आलिंगन-चुम्बर करते देखना
18.	अपने शरीर में मेद या पीव लिपटा देखना	18.	काली प्रतिमा देखना
19.	सोना, चाँदी, सफेद मणि रत्न, मोती, मानिक, भरे हुए कलश का जल देखना	19.	भस्म-पुंच, हड्डियों का ढेर, ताड़ का फल, केश, नाखून, कौड़ियाँ, कवाईत, बुझे अंगार (कोयला) देखना
20.	बछड़ा सहित गऊ, साँड, मोर, तोता, सारस, हंस, चील खंजरीट देखना	20.	मरघट, चिता पर रक्खा मुरदा, कुम्हार का चाक, तेलो का कोल्हू, अधजले या सूखे काठ, कुश, तृण, चलता हुआ धड़, मुरदे का चिल्लाता हुआ मस्तक, आग से जला हुआ स्थान देखना
21.	देव-पूजा, वेद-ध्वनि का शुष्क श्रवण, प्रतिमा, श्रीकृष्ण की प्रतिमा, शिव-लिंग देखना	21.	भस्मयुक्त सूखा तालाब, जली मछली, लोहा, दावा-नल से जलकर बुझा हुआ वन देखना

5.6 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि संस्कृत वाङ्मय में स्वप्न विद्या को परा विद्या का अंग माना गया हैं। अतः स्वप्न के माध्यम से सृष्टि के रहस्यों को जानने का प्रयास भारतीय ऋषि, मुनि और आचार्यों ने किया हैं। फलतः भारतीय मनीषियों की दृष्टि में स्वप्न केवल जाग्रत दृश्यों का मानसलोक पर प्रभाव का परिणाम मात्र नहीं हैं न तो कामज या इच्छित विकारों का

प्रतिफलन मात्र है।

सामान्य रूप से वेदान्त की विधा में कहा जाए तो स्वप्न लोक की तरह या दृश्य लोक क्षणभंगुर हैं। इससे स्वप्न का मिथ्यात्व सिद्ध होता हैं। रज्जु में सर्प का भ्रम कहा जाए तो स्वप्न में भिखारी का राजा होना भी भ्रम मात्र ही हैं; परन्तु स्वप्न को आदेश मानकर राजा द्वारा अपने राज्य का दान, स्वप्न में अर्जुन द्वारा पाशुपतास्त्र की दीक्षा प्राप्ति आदि उदाहरण भी भारतीय संस्कृति में देखने को मिलते हैं। त्रिजटा ने जो कुछ स्वप्न में देखा उसको अपूर्व प्रमाण मानकर श्री हनुमान् जी ने लंका दहन किया। ये सब ऐसे उदाहरण हैं जो स्वप्न में विद्या को दैविक आदेश या परा अनुसंधान से जोड़ते हैं। स्वप्न चिन्तन जब शास्त्र का रूप ग्रहण करता है तो निश्चित ही उसकी चिन्तना पद्धति मूर्त से अमूर्त काल में प्रवेश कर जाती हैं। **स्वप्नकमलाकर** ग्रन्थ में स्वप्न को चार प्रकार का माना गया हैं- (1) दैविक स्वप्न (2) शुभ स्वप्न (3) अशुभ स्वप्न और (4) मिश्र स्वप्न।

दैविक स्वप्न को उच्च कोटि को साध्य मानकर इसकी सिद्धि के लिए अनेक मंत्र और विधान भी दिये गये हैं। स्वप्न उत्पत्ति के कारणों पर विचार करते हुए आचार्यों ने स्वप्न के नौ कारण भी दिये हैं- (1) श्रुत (2) अनुभूत (3) दृष्ट (4) चिन्ता (5) प्रकृति (स्वभाव) (6) विकृति (बीमारी आदि से उत्पन्न) (7) देव (8) पुण्य और (9) पाप।

प्रकृति और विकृति कारणों में काम (सेक्स) और इच्छा आदि का अन्तर्भाव होगा। दैवी आदेश वाले स्वप्न उसी व्यक्ति को मिलते हैं जो वात, पित्त, कफ त्रिदोष से रहित होते हैं। जिनका हृदय राग-द्वेष से रहित और निर्मल होता हैं।

बोध प्रश्न –

1. भारतीय संस्कृत वांग्मय में स्वप्न को किसका अंग माना गया है।
   क. अविद्या का ख. परा विद्या का ग. पुराण का घ. रामायण का
2. स्वप्न उत्पत्ति के कुल कितने कारण कहे गये हैं।
   क. १० ख.११ ग. ९ घ.१२
3. स्वप्नकमलाकर के अनुसार स्वप्न को कितने प्रकार का कहा गया है-
   क. ३ ख.४ ग.५ घ.६
4. सफेद कमल के पुष्प को स्वप्न में देखना कैसा माना गया है।
   क. शुभ ख. अशुभ ग. मिश्रित घ. कोई नहीं
5. स्वप्न में मस्तक कटना का क्या फल है।
   क. राज्य हरण ख. राज्य प्राप्ति ग. शत्रु दमन घ. शत्रु वृद्धि

6. श्वेत सर्प द्वारा काटे जाने का स्वप्न फल क्या है।
   क. राज्य प्राप्ति ख. पुत्र प्राप्ति ग. स्त्री प्राप्ति घ. कोई नहीं
7. अग्नि पुराण के अनुसार उबटन लगाने का स्वप्न फल क्या है।
   क. रोग ग्रस्त होना ख. विवाह होना ग. मित्र प्राप्ति घ. धन प्राप्ति
8. ब्राह्मण बालक को स्वप्न में देखने का क्या फल है –
   क. अशुभ ख. शुभ ग. मिश्रित घ. कोई नहीं

5.7 पारिभाषिक शब्दावली

परा विद्या – भारतीय संस्कृत वांगमय में परा विद्या के चतुर्दश प्रकार है।

स्वप्न – परा विद्या का एक अंग है।

सृष्टि – समस्त चराचर प्राणी, अन्तरिक्ष आदि का समूह।

मनीषा – ऋषि चिन्तन

रज्जु – रस्सी

अपूर्व – पूर्व में होने वाली घटना का आभास

त्रिदोष – कफ, पित्त एवं वात्त।

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. ख
4. क
5. ख
6. ख
7. क
8. ख

5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ब्रह्मवैवर्त पुराण – मूल लेखक- वेदव्यास

अग्नि पुराण – वेदव्यास

मत्स्य पुराण – वेदव्यास

स्वप्न कमलाकर – मूल लेखक - आचार्य श्रीधर।

स्वप्न विद्या - लेखक- आचार्य कामेश्वर उपाध्याय।

ज्योतिष रहस्य – जगजीवन दास गुप्त।

5.10 सहायक पाठ्यसामग्री

ऋग्वेद -

अथर्ववेद-

सामवेद -

महाभारत -

रामायण-

रामचरितमानस -

ब्रह्मवैवर्त पुराण -

अग्नि पुराण -

मत्स्य पुराण -

स्वप्न कमलाकर -

स्वप्न विद्या - लेखक- आचार्य कामेश्वर उपाध्याय।

5.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. स्वप्न से आप क्या समझते है।
2. स्वप्न कितने प्रकार के होते है। स्पष्ट रूप से लिखिये।
3. अग्नि पुराणोक्त स्वप्न का शुभाशुभ फल लिखिये।
4. स्वप्नकमलाकर में कथित शुभाशुभ स्वप्न फल का वर्णन कीजिये।
5. ब्रह्मवैवर्त पुराण में उद्धृत शुभाशुभ स्वप्न फल का वर्णन कीजिये।
6. मत्स्य पुराण में उद्धृत शुभाशुभ स्वप्न फल का वर्णन कीजिये।